उत्खनित इतिहास

विश्व के अठारह पुरावशेष-स्थलों का सचित्र सर्वेक्षण

उत्खनित इतिहास

[विश्व के अठारह पुराशेष-स्थलों का सचित्र सर्वेक्षण

लेखक
सर लियोनार्ड वुली

अनुवादक
रमेश वर्मा

This book is Hindi version of Sir
Leonard Woolley's famous book
HISTORY UNEARTHED

1969

आत्माराम एण्ड सस

दिल्ली , नई दिल्ली , जयपुर लखनऊ चण्डीगढ

UTKHANIT ITIHAS

(History Unearthed)

by

Sir Leonard Wolley

Price . Rs. 30 00

प्रकाशक रामलाल पुरी, संचालक,
आत्माराम एण्ड संस,
काश्मीरी गेट, दिल्ली-6

शाखाएँ हौज खास, नई दिल्ली
विश्वविद्यालय क्षेत्र, चण्डीगढ
धमानी मार्केट, जयपुर
17, अशोक मार्ग, लखनऊ

मूल्य रुपये 30 00

मुद्रक
भारत मुद्रणालय, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

क्रम

यह ग्रन्थ एक चित्रमय पुस्तक है जिसका पाठ्याश न्यूनतम रखा गया है। इस पुस्तक के आयोजन के पीछे एक निश्चित लक्ष्य था प्राचीन इतिहास के हमारे ज्ञान मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अशदान देने वाले समस्त ससार के अठारह पुरातात्विक उत्खननो का विवरण प्रस्तुत करना, तथा यह दिखाना कि ये अशदान किस सीमा तक आधुनिक क्षेत्र-कार्य की वैज्ञानिक विधियो के कारण हुए थे। गत शताब्दी के दौरान, जब वैज्ञानिक उत्खनन की कला का विकास हुआ था, बहुत अधिक काम हुआ है, और मेरी-सीमा अठारह स्थलो तक थी, इसलिए चुनाव बडी कडाई से करना पडा। मैंने महत्त्वपूर्ण खोजो की एक लम्बी सूची बनायी, और लगभग फौरन मुझे लगा कि वे सदैव दोनो शर्तो को पूरा नही करती, कुछ ने इतिहास मे तो महती अभिवृद्धि की थी, किन्तु वैज्ञानिक विधियो का आश्रय नही लिया था, कुछ स्थलो के वैज्ञानिक उत्खनन के फलस्वरूप हमारे इतिहास के ज्ञान की कमियाँ तो अवश्य दूर हुई हैं लेकिन वे स्वय अत्यधिक महत्त्वपूर्ण न थे। कुछ बातो को एकदम छोड देना पडा। 'मृत सागरीय भरगोल' बेहद दिलचस्प है, लेकिन उत्खनन की कथा से सम्बद्ध नही है, समान महत्त्व के अमरना घाटी के पत्रो की भाँति, उन्हे भी अकस्मात् किसानो ने पाया था और पुरावशेषो के बाजार मे फेरी लगाकर बेचा था; और तब उनके मूल्य को समझा गया तथा उनकी बिक्री होने लगी। दक्षिणी फ्रास और स्पेन के गुहा-चित्रो को मैंने वेमन से छोड दिया, क्योकि उनकी खोज मे सही मानो मे पुरातात्विक कार्य

नही करना पडा था। पम्पियार्ड के उत्खनन को—जो वोरबास के अन्तर्गत पुरावशेषो के यत्र-तत्र 'सग्रह' स आरम्भ होकर आज तक, जब सतर्क विधियो से केवल सग्रहालयो के प्रदर्शों की सख्या ही नही बढती वरन् अतीत का मजीव चित्र उपस्थित होता है, लगभग डेढ शताब्दी से जारी है—भी मैंने बेमन से ही छोडा है।

इसके विपरीत, मैं मेसोपोटामिया मे लायार्ड और मिकीनी व त्राय मे श्लीमान की खोजो को नही छोड सकता था। निस्सदेह, उन्होने अपना काम उन दिनो मे किया था जब जनरल पिट-रिवर्स ने वेसेकस मे अपने उत्खननो से आधुनिक क्षेत्र-पुरातत्व की नीव नही रखी थी। वे अपनी समझ के अनुसार खुदाई करते थे और अकसर उनके तरीके बहुत ही घटिया होते थे, किन्तु उनकी उपलब्धियाँ असाधारण थी और जनसामान्य को इतनी रुची कि पुरातत्व के प्रति जिस सामान्य रुचि पर आज का पुराविद् निर्भर है उसका प्रारम्भ शायद तभी हुआ था। स्मरणीय है कि निनेवे मे लायार्ड द्वारा उत्खनित 'बाढ' फलको पर जॉर्ज स्मिथ के प्रकाशन से प्रेरित होकर 'डेली टेलीग्राफ' ने उसी स्थल के लिए एक और अभियान का खर्च उठाया, और मिकीनी के उत्खनन के श्लीमान के विवरण के साथ ग्लैड-स्टोन की भूमिका थी।

मिस्र ने मेरे सामने एक समस्या खडी कर दी। प्राचीन मिस्री इतिहास के बारे मे हम जो कुछ जानते हैं—और हम काफी जानते है—वह लगभग सम्पूर्ण नील नदी की घाटी मे हुई अनेकानेक 'खुदाइयो' मे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्राप्त हुआ है। लेकिन वे 'खुदाइयाँ' अधिकाशत परस्पर पूरक हैं, प्रत्येक 'खुदाई' का चित्र को पूरा करने मे अशदान है लेकिन समग्र इतिहास का उद्घाटन किसी से नही होता, अत. किमी एक का चुनाव पक्षपातपूर्ण लग सकता है। मैंने तूतनखामन की ममाधि को इसलिए शामिल किया है कि हॉवर्ड कार्टर की खोज विशिष्ट लक्ष्योन्मुख गभीर पुरातात्विक सिद्धान्त का प्रतिफलन है, और इसलिए भी कि उसकी विधियो के कारण एक युग विशेष की मिस्री कला के अपूर्व नमूने सुरक्षित रह सके हैं, और फिर, तूतनखामन को छोडा भी कैसे जा सकता था?

शायद मेरी सबसे बडी परेशानी नयी दुनिया के पुरातत्व के सम्बन्ध मे थी। मिस्र की भाँति, वहाँ भी काफी श्रमसाध्य काम किया गया है और ऐजटेक, मय तथा पेरू सस्कृतियो के बारे मे विशद ज्ञान अर्जित हुआ है। काफी ममय तक स्थिति यह थी कि कुछ विशेपज्ञो को छोडकर अन्य इतिहासकार इस विपय को महत्त्व नही देते थे। तर्क यह था कि स्पेनी विजयो के ज़माने मे भी पाषाण काल मे रहने वाले उन लोगो की उपलब्धियाँ अनेक दृष्टियो से चाहे जितनी विशिष्ट हो, किन्तु वे मृत हो चुके थे और उनकी कृतियाँ भी उनके साथ मर चुकी थी, आधुनिक ससार पर उनका तनिक भी निर्माणात्मक प्रभाव नही पडा था, उनकी कलाएँ हमारी उत्सुकता को बढाने वाली और हमारी निष्पक्ष प्रशसा की अधिकारिणी तो है, किन्तु विश्व इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नही है। यह निष्कर्ष ममय-पूर्व था। उन प्राचीन कलाओ के वन्ध्या होने का कारण यह था कि वे विस्मृति के गर्भ मे थी अब वे पुन: प्रकाश मे आकर सुपरिचित बन गयी हैं। जिस तरह प्राचीन यूनान की कलाओ और साहित्य की पुनर्खोज के फलस्वरूप मध्ययुगीन इटली मे पुनर्जागरण का आविर्भाव हुआ था,

उसी प्रकार सम्भव है कि अमरीका के अतीत के कोषो से उत्प्रेरित होकर अभी भी वे लोग, जिनकी धमनियो मे पुराना रक्त प्रवाहित है, कुछ ऐसा सृजन कर सके जो पुरानी दुनिया के लोगो के लिए असभव है। मध्य और दक्षिणी अमरीका की सस्कृतियो का समुचित मूल्याकन न करने का मेरा वास्तव मे कोई इरादा न था ; मेरी समस्या थी एक ऐसे उत्खनन का चुनाव जिसने इतिहास मे क्रान्तिकारी योग दिया हो। वस्तुतः, प्रमुख स्मारको की खोज मे उत्खनन का अश गौण रहा है। मेक्सिको और पेरू के स्मारक आज परवर्ती इमारतो मे दीखते है। अधिकाश मय स्मारक धरती की सतह पर है लेकिन वे घने ऊष्ण कटिबन्धीय जगलो मे खो गए थे, इसलिए उनकी खोज (अग्कोर के भव्य खण्डहरो की भाँति) उत्खनन नही वरन अन्वेषण का विषय थी। उनके बारे मे हमारी जानकारी की आधार-भूमि पर्यटको ने प्रस्तुत की थी। अग्रेज मॉड्स्ले एक ऐसा ही पर्यटक था, जिसने गत शताब्दी के अन्त मे अनेक स्थल देखे थे और अनेक नक्काशियाँ व अभिलेख पाए थे जिनकी छाप वह अपने साथ लाया था। आज के जमाने मे हवाई फोटोग्राफ, जिनमे पेडो से भी ऊँचे खडहर स्पष्ट दीखते है, विद्वानो को उनके लक्ष्य तक पहुँचाते है। अनेक 'खुदाइयो' (कभी-कभी तो अत्यन्त नगण्य गाँवो या कब्रिस्तानो के स्थलो पर 'खुदाइयाँ' हुई है) मे लोगो के परस्पर सहयोगपूर्ण काम के कारण महत्त्वपूर्ण परिणाम निकले है, प्रत्येक महान् अमरीकी सस्कृति मृद्भाड बनाने की कला मे प्रवीण थी और इस कला के तुलनात्मक काल-क्रम निर्धारण मे विशेषत महत्त्व के निष्कर्ष निकले है, लेकिन इस पुस्तक के उद्देश्य के साथ उनका कोई सम्बन्ध नही है। सचमुच, यहाँ पर चुनाव करते समय मुझे बडा कष्ट हुआ।

अनेक उत्खननो को छोडने के लिए तो मैं केवल क्षमा-प्रार्थी हूँ। चूँकि मेरे अठारह स्थल सम्पूर्ण ससार में वितरित होते थे, इसलिए एक देश के एक या दो से अधिक स्थलो के विवरणो की गुजाइश न थी। अनानूलिया और प्राचीन हित्तियो के इतिहास के सम्बन्ध में मेरे पास कई विकल्प थे उनके साम्राज्य की राजधानी बोगाज़काय, कुल्तीपी जिसके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अत्यन्त आकर्षक लेखाजोखा था, अलाका होयूक जिसकी प्रागैतिहासिक समाधियाँ आश्चर्यजनक थी, और कारकेमिश जहाँ बहुसख्यक अभिलेख और मूर्तियाँ थी। सभी ने हमारे ज्ञान में काफी अभिवृद्धि की थी, और बोगाज़काय को (जहाँ विंकलर का प्ररम्भिक कार्य उत्खनन का निम्नतम कोटि का नमूना था) छोड-कर सभी का अधिकाश महत्त्व आधुनिक पुरातात्विक विधियो के कारण है। परवर्ती ग्रामीण स्थल करतीपी के चुनाव का कारण यह था कि अन्य स्थलो पर प्राप्त बहुसख्यक हित्ती अभिलेखो की, जो पुराविदो के लिये एक बडी समस्या थे, चाबी वही मिली थी। मेसोपोटामिया की अनेक 'खुदाइयो' मे से मैंने ऊर का चुनाव इसलिए नही किया है कि मैंने स्वय वहाँ काम किया था, बल्कि इसलिए किया है कि वह पहला स्थल था जिसमें आदिकाल तक का निरन्तर रिकार्ड मौजूद था और पहले के अज्ञात युगो का अपेक्षया शुद्ध काल-निर्धारण किया जा सका था। उत्तरी सीरिया के लिये, एम० पैरेट के मारी के अत्यधिक सफल उत्खनन को—जहाँ मन्दिर और महल बाबुली शैली मे थे, और सुन्दर भित्तिचित्र थे और, सबसे बढकर, राजनीतिक अभिलेखागार मे एक प्राचीन पूर्वी राज्य के प्रशासन के सभी विवरण मौजूद थे—शामिल करने की मेरी योजना थी, लेकिन मारी के स्थान

पर उगरित का ही चुनाव करना पडा, क्योकि वहाँ सुपरिचित बाबुली प्रभाव से अलग अधिक स्वतत्रता-पूर्वक सभ्यता का विकास हुआ था।

पुरातत्व का अभिमानपूर्ण दावा है कि उसने समस्त ससार मे मानव की प्रगति के इतिहास मे नये अध्याय जोडे है और ऐसा पुराविदो के शोध मे वैज्ञानिक विधियो को लागू करने के कारण सभव हो सका है। और छोडे गए स्थलो के बावजूद मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक मे सग्रहीत 'खुदाइयाँ' पुरातत्व के इस दावे को प्रमाणित करने को काफी हैं। और मुझे आशा है कि वैज्ञानिक पुरातत्व के आविष्कार से पहले के दो उत्खननो को शामिल करके मैंने सिद्ध कर दिया है कि विधि अनिवार्य होते हुए भी स्वय पूर्ण नही है, वस्तुओ, स्तरीकरण और मिट्टी के कण-आकारो के श्रम-साध्य रिकार्ड मे इतिहास के निर्माण के लिये आवश्यक है कि पुराविद् मे कल्पनाशीलता और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि हो, और इन्ही गुणो के बल पर श्लीमान जैसे व्यक्तियो ने विज्ञान की कमी को पूरा किया था।

मेरा पाठ्याश बहुत सीमित है, इसलिए प्रत्येक विषय की सक्षिप्त भूमिका मे मैंने आवश्यक पृष्ठभूमि का सक्षिप्त विवरण देने तथा इतिहास मे उत्खनन के वास्तविक अशदान की मुख्य बात या बातो के प्रस्तुतीकरण का प्रयास किया है, इससे अधिक के लिए स्थान भी न था। चित्रो का उद्देश्य कथा कहना है, वे ही पुस्तक के सार है और मित्रो ने उन्हे प्रदान करके जिस उदारता का परिचय दिया है उनके लिए मैं निस्सदेह आभारी हूँ। उनका औदार्य और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योकि उत्खनित इतिहास वैज्ञानिक पुस्तक नही है, लेकिन यदि इसे पढकर कुछ पाठक पृष्ठ 171-172 पर प्रस्तुत मूल ग्रथो को देखेंगे और जो कुछ यहाँ असमुचित रूप से सक्षेप मे लिखा है उनके सम्पूर्ण और विस्तृत विवरणो से लाभ उठाएँगे, तो प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य सफल समझूँगा।

असुर (असीरिया) साम्राज्य की राजधानी, कलाह, के आधुनिक रूप मोसुल के दक्षिण-पूर्व मे स्थित ढूह निम्रूद की खुदाई दो बार हुई है। उन्नीसवी शताब्दी के पाँचवे दशक मे लायार्ड ने पहली बार इस स्थल की खोज, पहचान और खुदाई की थी। लगभग पूरी एक शताब्दी बाद ईराक स्थित 'ब्रिटिश पुरातत्व स्कूल' ने प्रोफेसर एम० ई० एल० मैलोवान के नेतृत्व मे काम को जारी रखा। इस अन्तराल मे वैज्ञानिक उत्खनन की एक पूरी तकनीक का विकास हो गया था, इसलिये एक ही स्थल पर नयी और पुरानी विधियो का अन्तर स्पष्ट दीखता है।

हेनरी लायार्ड सबसे बढकर एक अत्युत्साही व्यक्ति था। उसने पश्चमी एशिया मे खूब—और कभी-कभी जान की बाजी लगाकर—भ्रमण किया था। इन यात्राओ के दौरान वह अरबी पोशाक पहनने, और अरबी भाषा बोलने लगा तथा क्रमश उसने अरब लोगो के सद्भाव और सम्मान को प्राप्त कर लिया। उन्ही दिनो फ्रास-निवासी बॉता अपने कुयुजिक और खुर्साबाद के सफल उत्खननो द्वारा असीरियाई पुरातत्व की नीव डाल रहा था, लायार्ड ने बॉता से मित्रता कर ली तथा बॉता की खोजो ने लायार्ड को उत्प्रेरित किया—वस्तुत. बॉता की खोजे किसी भी व्यक्ति के लिए प्रेरणाप्रद थी। एक शुभ घटना ने उसकी आकाक्षा का प्रवर्धन किया। वह कुस्तुनतुनिया स्थित ब्रिटिश राजदूत सर स्ट्रैटफोर्ड कैनिग के नाम एक सरकारी पत्र लेकर वहाँ गया था, और चूंकि उसकी स्थानीय

जानकारी तत्कालीन जारी सन्धिवार्ताओ मे उपयोगी थी इसलिए वह गोपनीय परामर्शदाता के पद पर दो साल के लिए वही रह गया। लेकिन पुरातत्व के प्रति उसका उत्साह इतना सक्रामक था कि इगलैण्ड वापस जाते समय कैनिग ने निम्रूद मे काम शुरु करने के लिए अपने पास से धन दिया।

1846 की शरद् ऋतु मे लायार्ड ने कुछ अरब कामगारो को साथ लेकर उस स्थल की खुदाई आरम्भ की, जहाँ, उसका विश्वास था कि, कभी एक महान् नगर बसा था। उसका विश्वास सत्य सिद्ध हुआ। पहले ही दिन, दो अलग-अलग स्थानो पर खुदाई करने पर उसे असुर सम्राटो के दो मुख्य प्रासाद मिले। शुरू-शुरू मे तो उसे अभिलेख ही मिले, लेकिन नवम्बर के अन्त तक उत्कीर्ण शिलापट्ट और मूरतें भी प्राप्त हुई। लेकिन उसके सामने बडी दिक्कतें थी। स्थानीय अधिकारी काम मे बाधक थे, यहाँ तक कि उनके कारण कुछ समय तक काम रुका रहा। धन भी कम होता जा रहा था। कैनिग ने ब्रिटिश सग्रहालय के ट्रस्टियो तथा ट्रेजरी (वित्त मत्रालय) से अपील की, लेकिन कोई परिणाम न निकला। लायार्ड के काम की रिपोर्टें लन्दन पहुँचने पर ही उसके काम का महत्व समझा गया, लेकिन मजूरी फिर भी सिर्फ 2,000 पौंड की मिली। अनुदान बिना शर्त नही था। सग्रहालय को प्रदर्शनी के लिए वस्तुएँ चाहिए थी, लायार्ड बाध्य हो गया कि वह 'कम से कम समय और धन खर्च करके अधिकाधिक सख्या मे सुपरिरक्षित कलाकृतियाँ प्राप्त करे', यदि उन दिनो वैज्ञानिक विधियाँ ज्ञात भी होती—जो मालूम नही थी—तो भी ट्रस्टियो की माँग के कारण उन्हे छोड देना पडता। लायार्ड को इस प्रकार अपने ऊपर लादे गए काम की असन्तोषप्रद प्रकृति का पूरा पता था। उसने लिखा था: 'मुझे मिला हुआ धन इतना कम था कि मुझे अपनी पहले की उत्खनन-योजना—अर्थात्, प्रकोष्ठो के बगल-बगल खाइयाँ खोदकर, बीच की मिट्टी को हटाए बिना, सम्पूर्ण शिलापट्टो को उघार देने की योजना—के अनुसार ही काम करने को बाध्य होना पडा। अत, बहुत कम प्रकोष्ठो का पूर्णत अन्वेषण किया जा सका और सभव है कि अनेक छोटी किन्तु महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ निरन्वेषित ही रह गयी हो। मुझे निर्देश था कि अन्वेषण के बाद इमारत को फिर मिट्टी से दबा दिया जाय, ताकि अनावश्यक व्यय न हो। इसलिये दीवारो के निरीक्षण, अभिलेखो की नकल और मूर्त्तियो के रेखाकन के बाद, मैं प्रकोष्ठो को बाद की खुदाई से प्राप्त मलबे से ढक देता था।' सौभाग्यवश, लायार्ड एक अच्छा चित्रकार था और उसके सतर्क रेखाकनो से हमे उच्चित्रो की, जिनमे से अधिकाश अब बिल्कुल विनष्ट हो गये हैं, अच्छी जानकारी होती है। स्पष्टत, वहाँ पर सुरग खोदने की विधि अपनायी गयी थी तथा दीवारो के कोणो की माप के लिए 'क्रॉस-मेजर' नही लिये गए थे, इसलिये विशुद्ध आयोजना भी सभव न थी (यद्यपि लायार्ड ने यथासभव आयोजना की थी) और समुचित लेखा-जोखा नही रखा जा सकता था, साथ ही प्रकोष्ठो के बीच मे बहुत कुछ निरन्वेषित रह गया था (और लायार्ड ने स्वय यही असन्तोष प्रकट किया था)। इसके अतिरिक्त, पुरावशेषो के परिरक्षण की विधियाँ भी तब तक ज्ञात न थी, मूल्यवान वस्तुएँ 'छूते ही या वायु के सम्पर्क मे आते ही टुकडे-टुकडे हो जाती थी', जबकि आज एक भी वस्तु नष्ट नही हो सकती, यह एक दुखद कथा है, जिसे लायार्ड स्पष्टत स्वीकार करता है। किन्तु एक हानि का उसे भी पता न था। निम्रूद मे काम
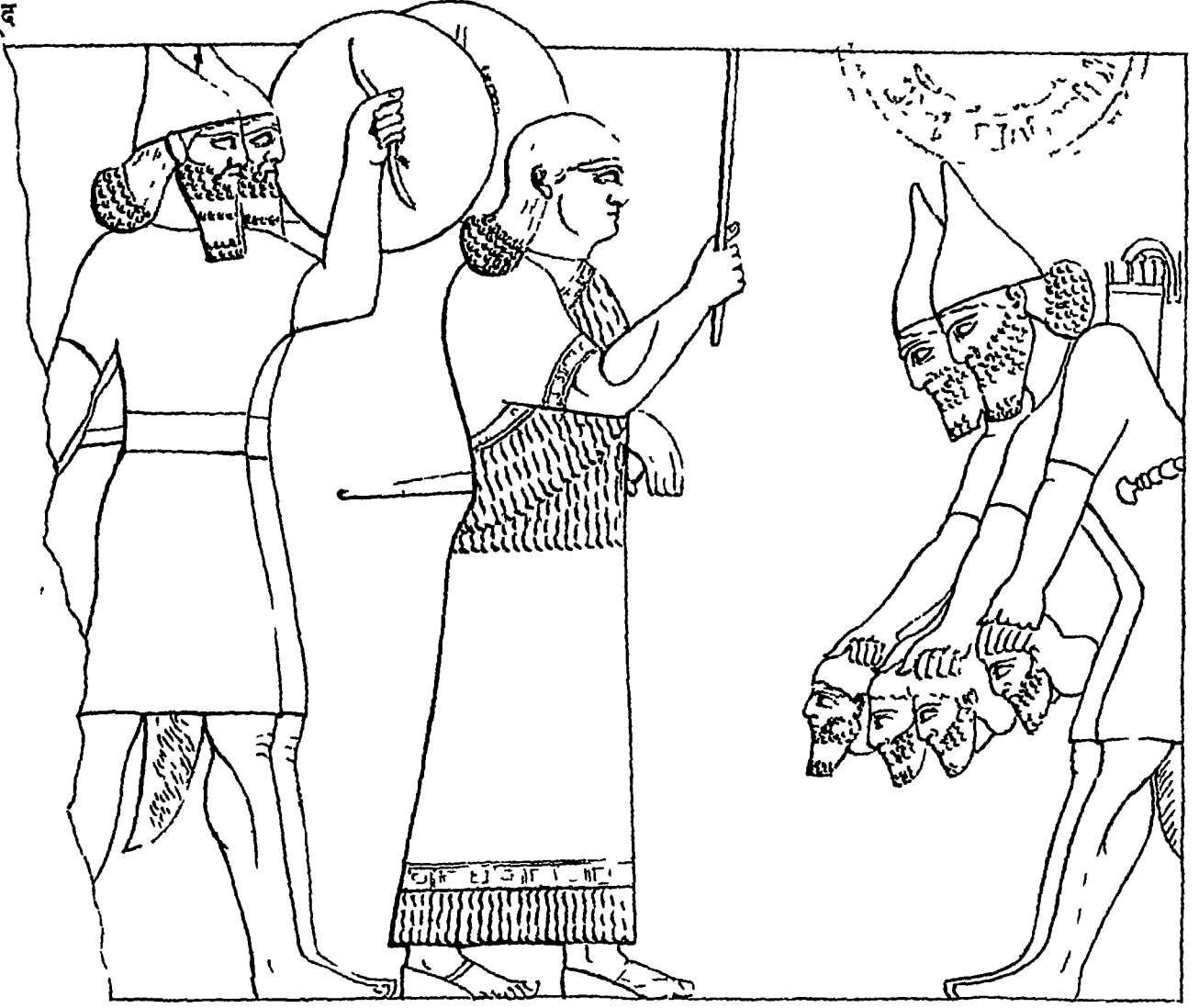
(1) लायार्ड द्वारा क्षेत्र में बनाया गया एक मूल चित्र ।

करते समय तक वह नही जानता था कि अभिलिखित मृद्फलक क्या है, वह उन्हे 'असाधारण ढग से अलकृत मृद्भाड खड' मात्र समझा था । निनेवे के उत्तरकालीन उत्खननो मे उसने राजसी पुस्तकालय का पता लगाया तथा लगभग 24,000 पूर्ण या खडित मृद्फलक लन्दन लाया, जब कि निम्रूद से एक भी नही आया था, कुछ मृद्फलक तो अवश्य वहाँ रहे होगे और सिर्फ यही सोचा जा सकता है कि उन्हें मलवा समझ कर फेक दिया गया ।

निम्रूद मे जिस पद्धति से उत्खनन हुआ था, उसकी भर्त्सना स्वय लायार्ड ने सबसे पहले की थी, तक फिर निम्रूद मे लायार्ड के उत्खनन का परिणाम क्या हुआ ?

उसने वाइविल मे वर्णित कलाह् के स्थल को खोज निकाला तथा पहचाना था और उसके काफी राजमी प्रासादो की खुदाई की थी; उसे वहुसख्यक मूर्तियां मिली थी और सर्वोत्तम-परिरक्षित मूर्तियो को वह लन्दन ले गया था— सैंकडो टन भार की खूबसूरत नक्काशियाँ जो तभी से ब्रिटिश सग्रहालय की गर्व की वस्तुएँ हैं—तथा ब्रिटिश जनता के समक्ष पहली वार आसुर कला को प्रस्तुत किया था। विशाल तोरण-मूर्तियाँ और असुर नासिर पाल ('ओल्ड टेस्टामेट' का 'पुल') के कार्यों को दिखाने वाले दीवार-उच्चित्रो की पक्तियाँ सामान्य जन की कल्पना को भी स्पर्श कर सकी, तथा अनेक व्यक्तियो के लिए तो सर्वोत्कृष्ट कृति 'काला ओवेलिस्क' थी, जिसमे शाल्मन असुर तृतीय को इसरायल के जेहू राजा से कर ग्रहण करते हुए दिखाया गया है। ऐसी वस्तुएँ सार्वकालिक अमूल्य निधियाँ तो थी ही, किन्तु उनसे एक तात्कालिक लाभ भी हुआ। उन्होने लोगो की रुचि को जागृत कर दिया, जिसके फलस्वरूप लायार्ड स्वय तथा अन्य लोग काम को आगे वढा सके, जो कम सुफल-दायक सिद्ध नही हुआ, लायार्ड ने अपने क्षेत्र-कार्य तथा रालिन्सन ने क्षेत्र-कार्य मे प्राप्त अभिलेखो की सफल व्याख्या द्वारा असुरविद्या की नीव डाली।

1949 मे ईराक स्थित 'ब्रिटिश पुरातत्व स्कूल' ने निम्रूद मे नये सिरे से उत्खनन का निश्चय किया, इस निश्चय से अनेक विद्वानो को आश्चर्य भी हुआ। जिस स्थान पर लायार्ड की उपलब्धियाँ इतनी अधिक थी, वहाँ पर कुछ और पाने का प्रयास निश्चयत आस्थापूर्ण कार्य था, किंतु उसका औचित्य क्या था ? सवसे पहले तो, लायार्ड-चित्रित प्रासादो के नक्शे अपूर्ण थे और आसुर राजसी प्रासादो के खाको के बारे मे वहुत कुछ जानना शेष था। इसी प्रकार लायार्ड ने परस्पर लगभग 300 गज़ की दूरी पर स्थित दो प्रासादो के भागो को, और बाद मे उनमे से एक के समीप नवू देवता के मन्दिर के ध्वसावशेषो को खोद निकाला था, किन्तु आज स्थल रूपरेखा का महत्त्व अधिक समझा जाता है, और इन तथा अन्य इमारतो के सम्बन्ध को स्थापित करना था। इसके अतिरिक्त, कालक्रम का प्रश्न—जिन ढाई शताब्दियो तक कलाह् असुर साम्राज्य की राजधानी थी, उनके दौरान निर्मित विभिन्न भवनो के शुद्ध तिथि-निर्धारण की समस्या—भी थी। अन्त मे, केवल तीन अभिलिखित मृद्फलको को निम्रूद मे मिला वताया जाता था (वे लायार्ड को नही मिले थे) और, प्रोफेसर मैलोवान के शब्दो मे, 'विश्वास नही होता कि किसी समय नवू मन्दिर मे स्थित धार्मिक पुस्तकालय मे से कुछ भी शेप नही रह गया है।' इन सभी समस्याओ के समाधान के लिए आधुनिक विधियाँ आवश्यक थी, और परिवर्तित परिस्थितियो की विशिप्टता है कि लायार्ड के स्थल-मानचित्र को अव हवाई फोटोग्राफो द्वारा अनुपूरित किया गया है।

एक अन्तर से स्पप्ट है कि क्षेत्र पुरातत्व के उद्देश्यो का पुनरभिविन्यास किस प्रकार हुआ है। लायार्ड सर्वोत्तम अन्वेपित स्मृति चिन्ह तो अपने साथ लन्दन ले गया, और शेप को दफन कर गया था। आज वहाँ के उच्चित्र अपने मूलस्थान मे ही नही हैं, वरन् उन्हे उनके उपयुक्त सेटिंग

मे फिर लगा दिया गया है, और निम्रूद पहुँचने वाले दर्शक राजप्रासाद के को ठीक वैसे ही देख सकते है जैसे वह असुर सम्राट् के समय मे दीखता था ।·प्र भी साफ दीखता है—एक विशाल सुरक्षात्मक दीवार से घिरा हुआ डेढ वर्गमील का क्षेत्र, जिसके दक्षिण-पश्चिम मे दजला नदी से चालीस फुट की ऊँचाई तक उठा हुआ ऐक्रोपोलिस है, जिसकी कच्ची ईंटो की चहारदीवारी पानी की तरफ विशाल पत्थरो के घाट पर टिकी है। लगभग 800 ईसा पूर्व तक मन्दिर, प्रासाद तथा अधिक महत्त्व के अफसरो के भवन ऐक्रोपोलिस मे केन्द्रित थे, परवर्ती समय मे नये राजसी भवन नगर के बाहरी भाग मे फैल गये, जहाँ पार्क थे तथा चिडियाघर तक था। एक नये और विशिष्ट अभिलेख मे असुर नासिर पाल द्वारा अपने प्रासाद के निर्माण तथा कार्य-समाप्ति पर दिये गये भोज का वर्णन है—'सभी देशो के चौंसठ हजार पाँच सौ चौहत्तर सुखी व्यक्तियो को मैंने दस दिन तक भोज कराया, शराब पिलाई, स्नान कराया और सम्मानित किया, और तब शान्ति और सुखपूर्वक उनके घरो की ओर रवाना कर दिया।' इसी अभिलेख मे चिडियाघर के जानवरो की सूची भी दी गयी।

मृद्फलको की प्राप्ति की आशा पूरी हुई। उत्तर-पश्चिमी प्रासाद के प्रशासनिक विभाग से कराधान और व्यापार, कृषि, पुनर्स्थापन योजनाओ, तथा असुर राज्य व सूबो के सम्बन्ध मे सम्राट् के नाम प्रशासनिक प्रश्नो की रिपोर्टो से सम्बद्ध बहुसख्यक प्रलेख मिले, नबू मन्दिर से भजन, मत्र और शुभाशुभ लक्षण, तथा चिकित्सा सम्बन्धी पाठ्य मिले, तथा मन्दिर के साथ जुडे हुए सिंहासन-कक्ष से अब तक ज्ञात सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण फलक प्राप्त हुए, जिनमे असुर सम्राट् ईसरहैडन द्वारा ईरान तथा अन्य पडोसी राज्यों के शासकों के साथ की गयी सन्धियो का वर्णन है। नये उत्खननो मे प्राप्त अभिलेखो से विभिन्न भवनो का कालक्रम सन्तोषप्रद ढग से स्थापित किया जा सका है, तथा असुर साम्राज्य के परवर्ती काल के बारे मे शुद्ध और विस्तृत जानकारी के फलस्वरूप हमारे ज्ञान मे वृद्धि हुई है; मैलोवान के कथनानुसार, मृद्फलको से हमे 'शासको और शासितो उनकी समृद्धि और गरीबी, उनके विवेक और अविवेक के बारे मे नयी दृष्टि' प्राप्त होती है।

और कला के प्रति अशदान भी कम महत्त्वपूर्ण नही है। लायार्ड अपने साथ कुछ नक्काशी-दार हाथीदाँत की वस्तुएँ, जो टूटी-फूटी और खराब दशा मे थी, लाया था। उनमे से अठारह को मरम्मत करके प्रदर्शित किया गया। लायार्ड के बाद, लोफ्टस ने 1854-5 मे निम्रूद मे एक मौसम का कार्य किया था और उसे अधिक सख्या मे हाथीदाँत की वस्तुएँ मिली थी। 'मिले-जुले, निस्तप्त और अक्सर मुश्किल से पहचाने जा सकने वाले खडो का यह विशाल ढेर' ब्रिटिश सग्रहालय मे लग-भग एक शताब्दी तक भडार मे पडा रहा; तब उन्हे साफ करके एक-दूसरे मे बैठाने का काम हाथ मे लिया गया, किन्तु काम समाप्त हो जाने पर भी सग्रह का अधिकाश कला-प्रेमियो से अधिक अध्येताओ की पसन्द का था बहुत कम नमूने अपनी असली शक्ल के आसपास पहुँच सके थे। आधुनिक उत्खननो से बहुसख्यक अमूल्य हाथीदाँत की नक्काशियाँ प्राप्त हुई हैं। इनमे से अनेक खडित हैं; 612 ईसा पूर्व मे जब मीडीज ने कलाह के प्रासादो को ध्वस्त किया और जला डाला था,

तभी सैनिकों ने सोने की तलाश करते हुए इन्हे विनष्ट कर दिया था। किन्तु सतर्क उत्खनन और वैज्ञानिक उपचार द्वारा इन्हे सुरक्षित रखा गया है और इन प्राचीन श्रेष्ठ कृतियो की तकनीक और डिज़ायन को हम देख सकते हैं। और निम्रूद की सर्वोत्तम नयी हाथीदाँत की कृतियो से, जिनमे स्वर्ण और रगीन पत्थरो का जडाऊ काम है, पहली बार हमे पता चला है कि सिदो और टायर के कुशल शिल्पी कितना भव्य प्रभाव उत्पन्न कर सकते थे।

(2) परम आदरणीय एस० सी० मलान लायार्ड के उत्खनन देखने गये थे और उन्होंने कई रेखाचित्र अंकित किये थे जिनमें सम्पादित कार्य की प्रकृति स्पष्ट परिलक्षित है। यह चित्र लायार्ड का है जिसमें वह एक उच्चित्र की नकल कर रहा है। लायार्ड ने अपनी पुस्तक में लिखा है—'दिन में जब मैं किसी और काम में व्यस्त न होता था तब भूमिगत गलियारों में प्राप्त पत्थर की नक्काशियों के चित्र बनाया करता था।'—और यह चित्र उक्त कथन का सबूत है। सौभाग्यवश लायार्ड एक कुशल रेखाकार था, इसलिए अनेक उत्कीर्ण शिला-पट्टों को फिर दफनाए जाने के बावजूद उनका रिकार्ड मौजूद है।

(3) जहा पर खडहरों को ढके रहने वाले मलवे की पर्त कम मोटी थी, वहा पर खाइया अक्सर खुले आकाश के नीचे होती थी। इस चित्र में एक प्रवेश द्वार दिखलाया गया है जिसके दोनो ओर विशाल परवदार बैल है। बैलों के निचले हिस्से मात्र खुले हैं और उनसे परे एक शिला-पट्ट पर एक परवदार मानवाकृति उत्कीर्ण है तथा दायीं ओर अग्रभाग में शिला-पट्ट पर क्षैतिज बहती हुई नदी एव दोनों किनारों पर दृश्य उत्कीर्ण है। अनगढ और असतर्क होते हुए भी रेखाचित्र उत्खननों की असन्तोषजनक प्रकृति का पर्याप्त प्रमाण है किन्तु यह खुदाई निम्रूद की नही बल्कि निनेवे की है।
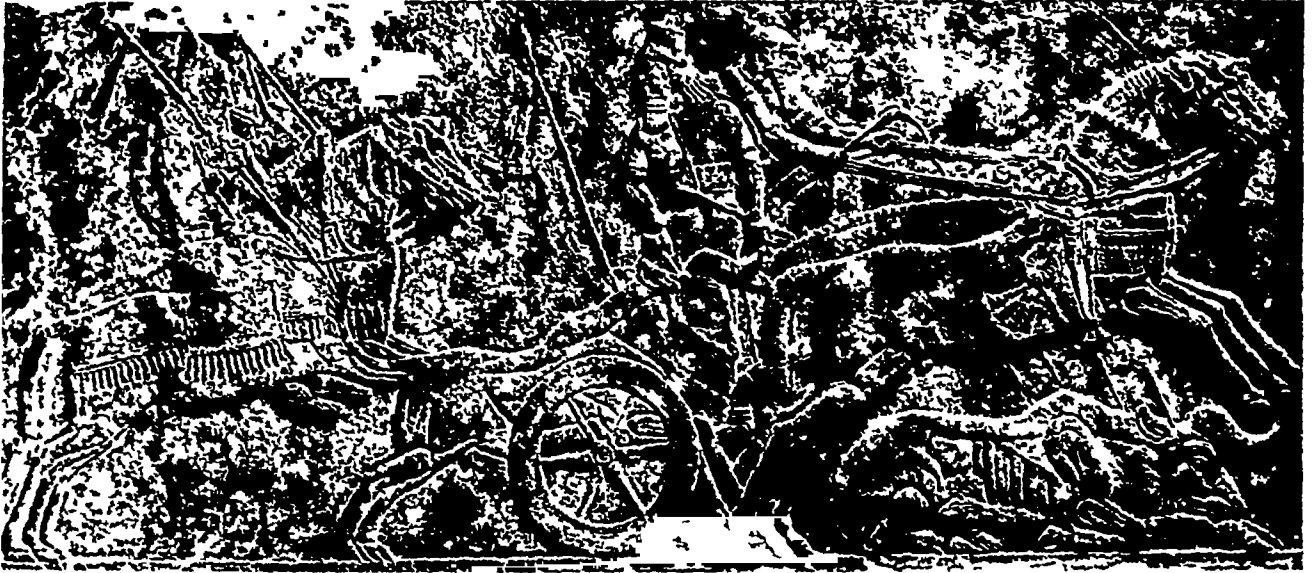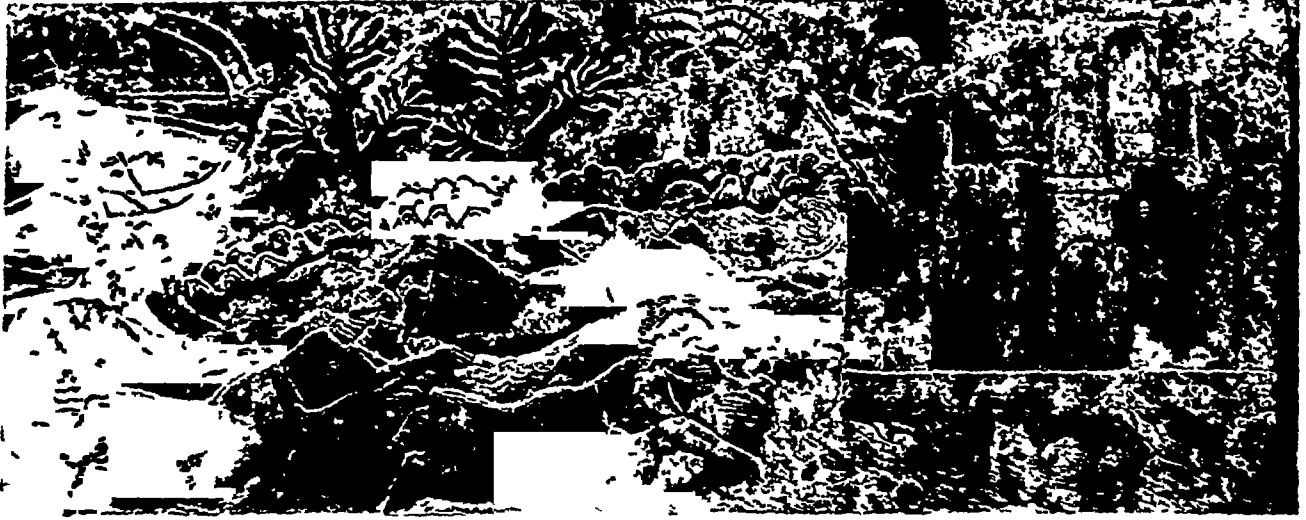
(4) लायार्ड अन्वेषित और अब ब्रिटिश संग्रहालय में मौजूद असुर बनि-पाल का एक दीवार-उच्चित्र। किसी नदी के तट पर बने शत्रु-नगर पर असुर सेनाओं का आक्रमण। रक्षक सैनिक फसीलों पर तैनात हैं, शत्रु की स्थल सेना के बचे-खुचे सिपाही हवा-भरी मश्कों के सहारे तैर कर नदी पार करके असुरों से बचना चाहते हैं। असुरों के धनुर्धर जंगलों से भरे तट से उन पर शर संधान रहे हैं।

(5) आखेट का अन्त। असुर बनि-पाल अपने रथ पर आसीन जंगली बैलों को खदेड़ रहा है, तीरों से बिंधकर एक बैल धराशायी हो गया है, दूसरा बैल पीछे से रथ पर झपटा है, जिसे राजा ने अपने भाले को उसकी गर्दन में भोंक कर मार डाला है।

(6) निम्रूद की कुछ समय पहले की खुदाइयों में प्राप्त असुर नासिरपाल का विशाल प्रस्तर-पट्ट। शीर्ष पर राजा की आकृति तथा उसके रक्षक देवों के चिह्न हैं। पाठ्य में उसकी विजयों का संक्षिप्त वर्णन और फिर उसके प्रासाद के निर्माण का, जिसमें युद्धबन्दियों को काम पर लगाया गया था, विस्तृत विवरण है। बाद में उन्हें नये नगर में प्रथम नागरिकों के रूप में बसाया गया। तब जिले की सिंचाई के लिए खोदी गयी नहर का तथा बगीचों का, जिनमें विजित देशों से लाये गये बयालीस जातियों के फलधारी व गोंद वाले वृक्षों को लगाया गया था, वर्णन है। इसके बाद राजा की आखेट-कुशलता तथा उसके चिड़ियाघर में मौजूद जीवित जानवरों का वर्णन है। अन्त में, विशाल दावत का विवरण है, जो यरुशलम के मन्दिर के निर्माण के उपलक्ष्य में राजा सुलेमान द्वारा दी गयी दावत के विवरण से काफी मिलता-जुलता है। (1 किंग्स 8, 65)

(7) निम्रूद में लायार्ड को प्राप्त सर्वोत्तम वस्तु शायद शाल मनेसर द्वितीय का 'काला सूक्ष्माकार स्तम्भ' है। बीस लघु उच्चित्रों की शृङ्खला और एक दीर्घ अभिलेख के माध्यम से असुरराज को विदेशी शासकों से मिलने वाली भेंटें दिखायी गयी है, उन शासकों में इजरायल का राजा जेहू जिसे 'ओमरी-पुत्र' कहा जाता था भी शामिल था और वह सोना-चाँदी लाया था। यहाँ पर उसे अपने स्वामी को अभ्यर्थना करते हुए दिखाया गया है (ऊपर से दूसरी पंक्ति देखिए)।

(8) सभवत घोडे के साज के लिए हाथीदांत का आभूषण, जिस पर मिस्री पत्रा और स्फिक्स उत्कीर्ण हैं । स्फिक्स मिस्री नहीं (जो नर होता है) वरन् मिस्री मूल का सारियाई रूपान्तर है।

(9) निम्रूद की 'मोना लिजा', हाथीदांत में उत्कीर्ण एक असाधारणत विशाल और सुन्दर नारी शीश जो किसी फर्नीचर (जैसे सिंहासन के पीछे के भाग) मे लगाने के लिए बनाया गया है। यह प्रासाद के एक कुए की तलहटी में मिला था, इमारत की लूट पाट के समय इसे कुए में फेंक दिया गया था, कुए का कुछ कीचड अब भी इस पर चिपका है। अनेक लघुतर शीश भी मिले थे जिनमे विभिन्न जातियों की स्त्रियों की विशिष्टताए है।

(10) हाथीदात की बनी एक गाय की आकृति इसी प्रकार की आकृतियों से पता चलता है कि पूर्ण उत्कीर्णन में गाय की टांगों के बीच के स्थान में एक बछड़ा भी था, गाय अपना मुह घुमाकर बछड़े के शरीर के पिछले भाग को चाट रही है। गाय का अपूर्व सहानुभूतिपूर्ण अकन महत्त्व-पूर्ण है।

11) निम्रूद में लायार्ड को प्राप्त अनेकानेक हाथीदात के खडो को ब्रिटिश सग्रहालय में अत्यधिक धैर्यपूर्ण श्रम के फलस्वरूप यथास्थान रखकर इन खुदे हुए दिलहों का रूप दिया गया है। ये दिलहे शायद मूलत लकडी की पेटी या योद्धा के तरकस को शोभित करते थे। दोनो पार्श्व पट्टियो मे से प्रत्येक मे ऊपर एक देवता है तथा नीचे एक दाढीविहीन सभासद या काचुकीय, बीच के खड में ऐसे दो सभासद आमने-सामने दिखाए गए है। चित्र आठवें शताब्दी ईसा पूर्व की आसुर शैली में है।
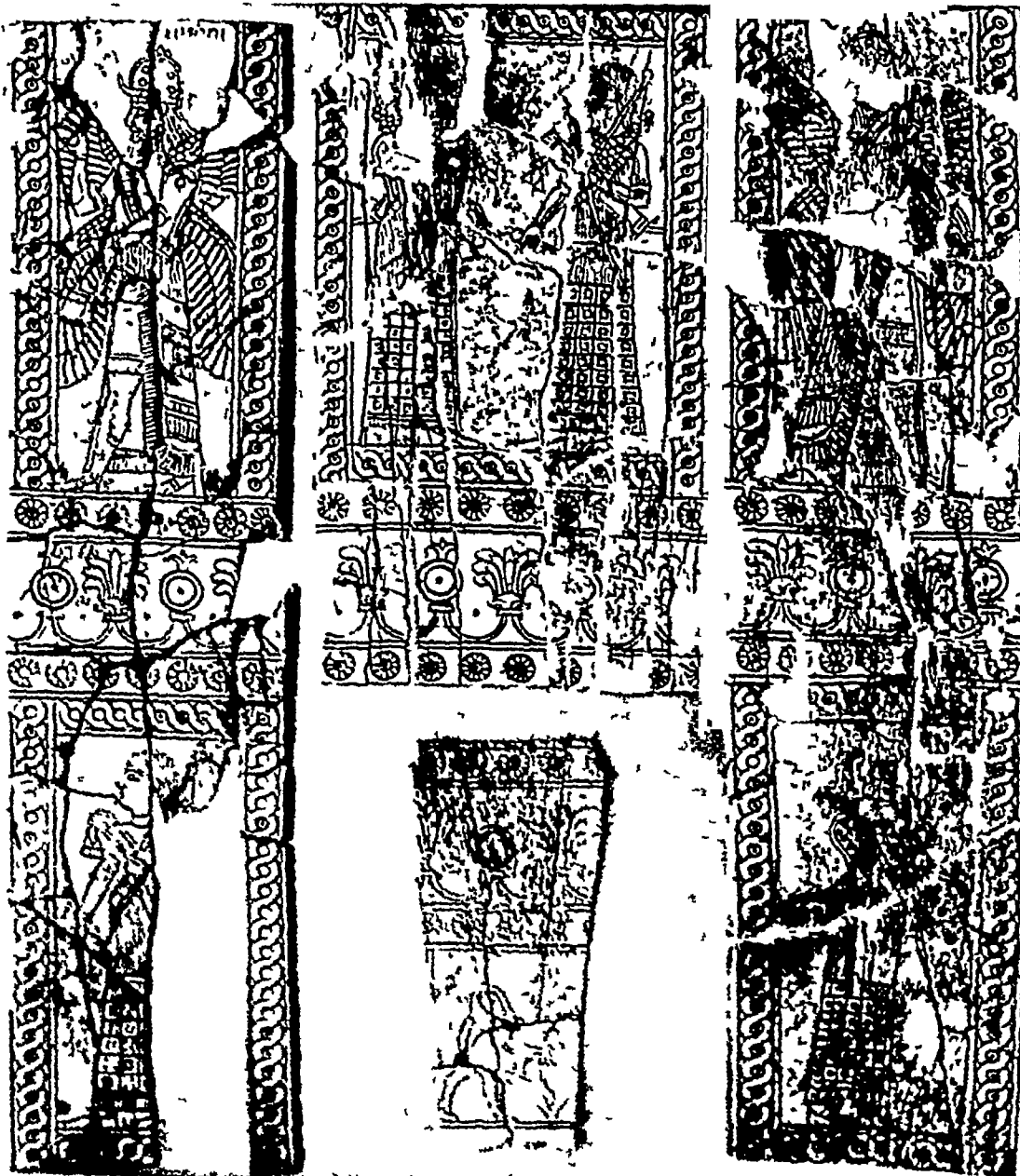
त्राय और मिकीनी

नवम्बर 1876 मे हेनरी श्लीमान ने मिकीनी मे खुदाई करते हुए यूनान के राजा को तार दिया कि उसने अगामेम्नन का शरीर खोज निकाला है। इस घटना से पाँच साल पहले, हिसार्लिक के टीले (जिसे उसने ठीक ही प्राचीन त्राय समझा था) पर खुदाई करते हुए उसने 'प्रियम का खजाना' खोद निकाला था, प्रियम को पराजित और त्राय का विनाश करने वाली यूनानी सेना के सेनानायक के मकबरे मे रखा कही अधिक कीमती खजाना अब उसके सामने था। उसके जीवन की महत्त्वाकाक्षा पूर्ण हो गयी थी।

हेनरी श्लीमान जर्मनी के एक गरीब पादरी का बेटा था। बचपन मे उसे होमर लिखित कथायें सुनने को मिली थी। दस साल की उम्र तक पहुँचते पहुँचते उसने त्राय के महासमर की घटनाओ पर लैटिन भाषा मे एक निबन्ध लिख डाला था। चार साल बाद, गांव की दूकान मे मोदी के सहायक की नौकरी करते हुए, उसने शराब के नशे मे चूर एक आदमी को मूल ग्रीक मे होमर का पाठ करते हुए सुना और यद्यपि एक भी शब्द उसकी समझ मे न आ सका फिर भी ध्वनि और छन्द के सौन्दर्य से उसकी आँखें भर आयी। उसने अपने पिता से वादा किया था कि वह त्राय के ध्वसावशेषो की खुदाई करेगा, और यही लक्ष्य हमेशा उसके सामने रहा। उसने अपने-आप ज्ञानार्जन किया तथा सात विदेशी भाषाएं अच्छी तरह सीखी। इसी बीच उसने एक व्यापारिक फर्म मे नौकरी कर ली थी, जिसके प्रतिनिधि की हैसियत मे उसे रूस भेजा गया। आखिरकार वह काफी सम्पत्ति

अर्जित करने मे सफल हुआ। उसने आधुनिक और प्राचीन दोनो ग्रीक भाषायें सीख ली और मूल होमर को बार-बार पढा। यात्राएँ करते हुए वह अरबी भाषा भी सीखने लगा और 1859 मे पहली बार एथेन्स पहुँचा। तब उसने और यात्राएँ की, और धन कमाया तथा अपने पचासवे वर्ष मे त्राय की खुदाई शुरु कर दी।

श्लीमान के सभी सपने उत्खननो की उपलब्धियो के रूप मे साकार हो गये, उसने होमर का त्राय पा लिया था, उसने त्राय के राजा प्रियम का खजाना भी पा लिया था, और साथ ही उसे अविश्वास एव उपहास का पात्र भी बनना पडा। कुछ आलोचको ने कहा कि यह त्राय नही हो सकता, क्योकि कवि की कल्पना से परे इस नाम की कोई जगह कभी थी ही नहीं; यह त्राय नही हो सकता, दूसरो ने कहा, क्योकि असली त्राय का स्थान कही और है, और प्रियम तो कल्पना-मात्र था ही। किन्तु श्लीमान अडिग रहा। उसने कहा --'कुआरी धरती से निकले हुए इस नगर को मैं होमर का इलियन समझता हूँ' (यहा वह गलती पर था)। उसने त्राय के राजा को प्रियम कहा, 'क्योकि जिस परम्परा की अनुगूंज होमर है उसमे त्राय के राजा को प्रियम कहा गया है, लेकिन ज्यो ही सिद्ध हो जायेगा कि होमर तथा परम्परा गलत थे और त्राय के अन्तिम राजा का नाम "स्मिथ" था, मैं फौरन उसे स्मिथ कहने लगूंगा।' त्राय के बारे मे विद्वानो मे मतवैभिन्न्य हो सकता है, किन्तु मिकोनी की ऐतिहासिक सत्ता तथा ठौर-ठिकाना सन्देह से परे है। अत: श्लीमान ने अपना ध्यान मिकोनी की ओर किया और एक बार फिर उसे महती सफलता मिली।

श्लीमान स्पष्टत अधिक उत्साही व्यक्ति था। वह एक ऐसे क्षेत्र मे अगुआ था जिसके बारे मे कुछ भी मालूम नही था और उसका निर्देश करने वाले नियम न थे। कारण, पुराविदो द्वारा वैज्ञानिक विधि जैसी किसी चीज के विकास से बहुत समय पहले उसने अपना कार्य किया था। उसने अपने काम का पूरा विवरण रखा था, लेकिन चूँकि उसे मालूम ही न था कि किस चीज की तलाश उसे करनी चाहिए, इसलिए उसके रिकार्ड अपूर्ण थे। उसने 'स्तरो' को महत्त्वपूर्ण मानने मे विवेक और सामान्य बुद्धि का परिचय दिया, किन्तु इनकी शुद्ध व्याख्या करने मे वह असफल रहा। यही कारण है कि उससे अनेक गलतियां हुई। हिसारलिक के टीले मे अध्यारोपित नगरो मे से एक को उसने होमर का त्राय कहा और उसका चुनाव गलत सिद्ध हुआ, उसका विश्वास था कि मिकोनी मे उसने अगामेम्नन का मकबरा पा लिया था और मकबरा अगामेम्नन से शताब्दियो पहले का था, उन्ही स्थलो पर श्लीमान के समय मे अज्ञात विधियो और साधनो के बल पर काम करने वाले परवर्ती विद्वानो ने सिद्ध कर दिया है कि श्लीमान को अपने जिन दो दावो पर सबसे ज्यादा भरोसा और अभिमान था वे वास्तव मे अशुद्ध थे।

लेकिन इन गलतियो ने श्लीमान की उपलब्धि कम नही हो जाती। उसने वह कर दिखाया था जो उससे पहले किसी ने सोचा तक न था, और जिस समय विद्वानो (विशेषत जर्मन विद्वानो) ने ससार को लगभग विश्वास दिला दिया था कि यूनानियो का वीर काल एक कवि की कल्पना-मात्र था और उसके योद्धा एक गीत नाट्य के पात्र भर थे उसी समय श्लीमान ने सिद्ध कर दिया कि वीर-

काल एक ठोस यथार्थ था। आलोचको ने त्राय मे प्राप्त अवशेषो को एशियाई अजूबे मात्र कहकर नज़र-अन्दाज़ कर दिया था, लेकिन मिकीनी यूनान मे था और सिह द्वार से बाहर खडे पत्थरो के वृत्त के भीतर श्लीमान द्वारा अन्वेषित प्रस्तर समाधियो को दूसरी शताब्दी ईस्वी मे पॉसानियस जैसे यूनानी लेखक ने देखा और अगामेम्नन व उसके दरबारियो की समाधियाँ कहा था, अर्थात् परम्परा का ऐतिहासिक आधार था अवश्य। पॉसानियस के समय मे भी, परम्परा इतिहास पर हावी तो हो गयी थी किन्तु उसे झुठला न सकी थी। समाधिया अगामेम्नन से अधिक प्राचीन हैं, लेकिन मिकीनी सभ्यता (जिसकी समाधिया वे है) होमर-पूर्व सभ्यता है जिससे होमर के काव्य मे वर्णित काल की सभ्यता का विकास हुआ था, और कवि पूर्ववर्त्ती काल की बात केवल इसीलिए करता है कि उसमे महानतर कला का जन्म हुआ था।

व्यक्तिवाचक सज्ञाओ के उलझन भरे सवाल को छोड दें तो हम श्लीमान से सहमत हो सकते हैं कि उसने होमरी काव्य के ससार के उद्घाटन की अपनी महत्त्वाकाक्षा पूरी कर ली थी। उसकी खुदाइयो से यूनानी इतिहास के ऐसे युग का चित्र उभरा जिसका अब तक आभास तक न था। कट्टर पुरातनवादी अब भी कह सकते थे कि मिकीनी का प्राचीन यूनान के साथ कोई सम्बन्ध न था—कि वहाँ की भौतिक सभ्यता गैर-यूनानी लोगो की थी और विशुद्ध यूनानियो के प्रायद्वीप मे प्रवेश से पहले ही विनष्ट हो गयी थी, किन्तु इतना तो था ही कि महान् यूनानी महाकाव्य की पीठिका के रूप मे उसकी दिलचस्पी स्थायी थी, और शुरू से ही इसी साहित्यिक दिलचस्पी के प्रति श्लीमान आकर्षित था।

परवर्ती उत्खननो से श्लीमान की यह सामान्य धारणा पुष्ट हुई है कि मिकीनी मे उसे प्राप्त खजाने होमर द्वारा वर्णित खजानो के समान और इसीलिए असली यूनानी परम्परा के अग थे। मिकीनी मे ही, श्लीमान के काम को जारी रखते हुए स्वर्गीय प्रोफेसर वेस ने एक वणिक्-गृह के ध्वसावशेष मे 'लीनियर बी' लिपि मे अभिलिखित वैसे ही मृद्फलक पाये हैं जैसे इवान्स ने क्नासस मे परवर्ती स्तरो मे पाये थे। और अब यह सिद्ध हो चुका है कि जिस भाषा मे वे लिखे गये थे, वह ग्रीक भाषा का ही एक प्रारम्भिक रूप था। कारण, इसी प्रकार के फलक यूनान की मुख्य भूमि पर अन्यत्र एक महानतम होमरी नायक नेस्टर के स्थान पाइलस पर भी मिले है, मिकीनी के गर्त मकबरो और 'इलियद' का परस्पर सम्बन्ध निर्विवाद है। मकबरे त्राय के महासमर से पुराने हैं और महासमर की याद अतीत मे धुधला चुकी थी तब होमर का महाकाव्य रचा गया, किन्तु कडी कायम है।

यूनानी प्रागैतिहास के क्षेत्र मे श्लीमान अगुआ था। जिस युग का उद्घाटन उसने किया था। उसके बारे मे तनिक भी ज्ञान न था, और अपनी खोज की तिथि निर्धारण का कोई उपाय उसके पास न था, इसलिए गर्त मकबरे को अगामेम्नन की समाधि समझने की उसकी गलती नितान्त स्वाभाविक और उसके कार्य के महत्त्व को कम नही करती, वस्तुत अनेक वर्ष बीतने तथा काफी पुरातात्विक कार्य होने के बाद ही यह गलती सिद्ध की जा सकी। शायद यह गलती भी शुभ थी, क्योकि

उसी के कारण उसे अपने महान् कार्य के लिए मान्यता प्राप्त हुई। उसकी सफलता आकस्मिक न थी। उसने वर्षों अपनी योजनाएँ बनायी थी और समस्याओ पर विचार किया था, उसने सहज बुद्धि तथा विवेक दोनों का सहारा लिया था तथा सतर्कतापूर्वक किन्तु सोत्साह कार्य किया था। बेशक उसकी तकनीक आज जैसी न थी, लेकिन अपने अधिकाश उत्तराधिकारियो की तुलना मे वह पुरातत्व के अधिक योग्य था, क्योंकि आज के पुराविदो के बारे मे लिखा गया है कि उनके कैम्पो मे सूचक कार्डो लाग-बुको, सर्वेक्षण, आलेखन और फोटोग्राफी के बढ़िया उपकरणो के प्रदर्शन आत्मविश्वास और गर्व से किए जाते थे। बस, कार्य के मूल सिद्धान्तो को ग्रहण नहीं किया जाता था।"[1]
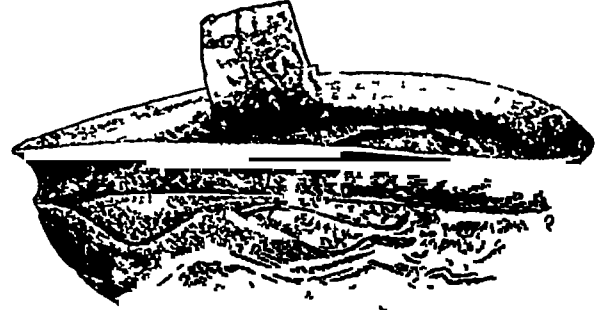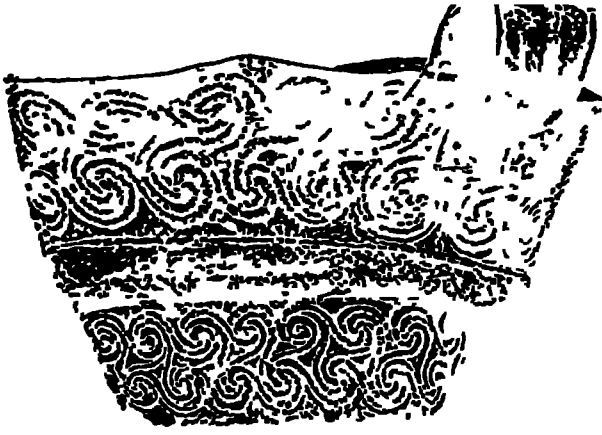
(12–13) जिन वस्तुओं को समाधि से हटाकर अधिक कुशल चित्रकारों द्वारा अंकित किया जा सकता था, वे सचमुच ज्यादा अच्छी तरह चित्रित हैं। 'प्रथम समाधि' से प्राप्त सोने के प्यालों के ये दो रेखाचित्र वस्तुस्थिति का सही-सही निरूपण करते हैं, हालाँकि धातु का समस्त सौन्दर्य, जो फोटो-ग्राफ में ठीक आता है, सावधानी से तैयार इंग्रेविंग में खोदा गया है।

(14) इस हास्यास्पद प्रयास से स्पष्ट है कि किसी पुराविद्‌ के लिए अपनी खोजों का चित्रात्मक रिकार्ड तैयार करना कितना कठिन काम था। 'प्रथम समाधि' में तीन शव थे, जिनमें से तीसरा एक सोने का मुखौटा और सोने का कवच पहने था, इन्हें अलग करने पर पाया गया कि सिर बहुत अच्छी तरह परिरक्षित था हालांकि शरीर दबाव के कारण चपटा और काफी क्षत हो गया था। श्लीमान ने तत्काल एक यूनानी तेल चित्रकार को बुला भेजा, जिसने यह विलक्षण 'पोर्ट्रेट' तैयार कर दिखाया।

(15) श्लीमान की पुस्तक के पृष्ठ 289 पर दिये गये 'प्रथम समाधि' में प्राप्त सोने के मुखौटे के रेखाचित्र की तुलना यहा प्रकाशित फोटोग्राफ से करने पर पता चलता है कि फोटोग्राफी के उपयोग से पुरातत्व को कितना लाभ हुआ है, श्लीमान के समय में भी कैमरे का प्रयोग किया जाता था और अनेक रेखाचित्र फोटोग्राफों से बनाये गये थे, लेकिन फोटोग्राफों की प्रतिकृति तैयार करने का तरीका नहीं मालूम था।

(16) 'चौथी समाधि' में कब्रिस्तान की कुछ श्रेष्ठतम वस्तुएं मिली। धड के साथ मिली वस्तुए स्थल पर मिली वस्तुओं में सर्वश्रेष्ठ थीं, लेकिन आश्चर्य की बात है कि पाच शवों में से एक के चेहरे को ढकने वाला सोने का मुखौटा 'प्रथम समाधि' में प्राप्त मुखौटे की तुलना में अत्यन्त निम्न कोटि का था।

(17) सर्वाधिक असाधारण थे कांसे के छुरे, जिनके फलों पर पच्चीकारी थी। इनकी तकनीक अपूर्व है। आक्सीकरण द्वारा कांसे का रंग कालापन लिए हुए भूरा कर दिया जाता था, जड़ावट का काम सोने से—दो रंगों में, अधिक गहरा लाल रंग तांबा मिलाकर प्राप्त किया जाता था—और चांदी से होता था, तथा स्याह नक्काशी का भी थोड़ा काम होता था। हथौड़ी से चीजों को जड़कर पानी चढ़ा दिया जाता था और तब उन पर विवरण तराश दिये जाते थे। युद्धास्त्रों का श्रेष्ठ अलंकरण मिकीनी के अतिरिक्त यूरोपीय पुनर्जागरण में ही उपलब्ध है। प्रदर्शित वस्तुएं बड़ी खूबी से बनायी गयी हैं। रूपहली नदी में मछलियां तैर रही हैं और उनके किनारे बिल्लियां चिड़ियों का शिकार कर रही हैं—यह दृश्य, संभव है, क्रीत में मिन्नेस के प्रासाद में एक भित्तिचित्र था। हिरनों का पीछा करते हुए शेर बिलकुल यथार्थ मालूम पड़ते हैं और बड़ी कुशलता से फल की आकृति के अनुकूल संरचित हैं। शेर के शिकार का दृश्य भी, जिसमें बैल के चमड़े की आठ-के-आकार की विशाल ढालें लिए योद्धा (क्नोसस के भित्तिचित्र, चित्र 61 से तुलना कीजिए) अपने घायल किन्तु फिर भी भयानक शिकार के साथ जीवन-और-मृत्यु के संघर्ष में रत हैं, कम कौशलपूर्ण नहीं है।
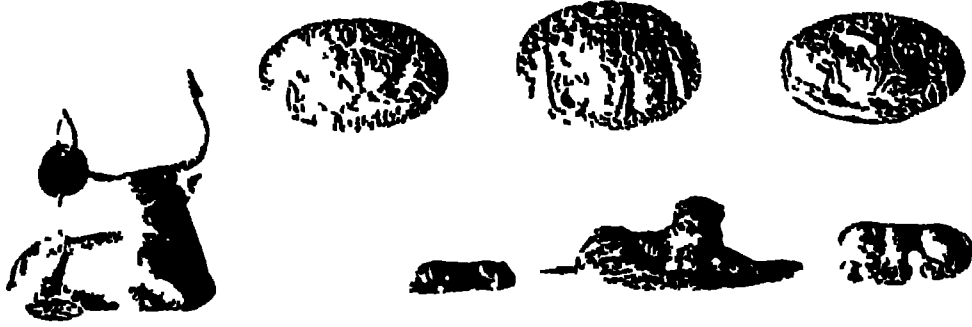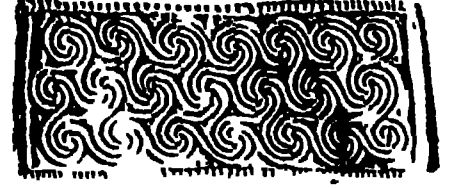
(18) उत्खचित सुवर्ण मुद्राओं में अत्यन्त सूक्ष्म उत्कीर्णन-कार्य है। छ मुद्रायें यहाँ प्रदर्शित है। समुद्‌भृत स्वर्ण-फलक भी, जो कभी सूक्ष्म पशु आकृतियो और कभी सर्पिल जैसे रूपाकारो से अलकृत हैं, उतने ही श्रेष्ठ है। छोटी-छोटी तावीजे, जो वास्तव में पशुओ की आकृतियां थीं, योद्धाओ के वस्त्रो की शोभा थी।

(19) अनेक शवों पर स्वर्ण-किरीट थे, यह किरीट सर्वाधिक अलकृत है। सोने की एक-दो फुट से भी ज्यादा लम्बी चादर, जिस पर वृत्ताकार पैटर्न समुद्‌भृत है, असली किरीट है, और उसके ऊपरी किनारे पर कुछ छोटे-छोटे समुद्‌भृत फलक ऊपर-नीचे लगे है ताकि उन पर बनी डिजायने अच्छी लगें।
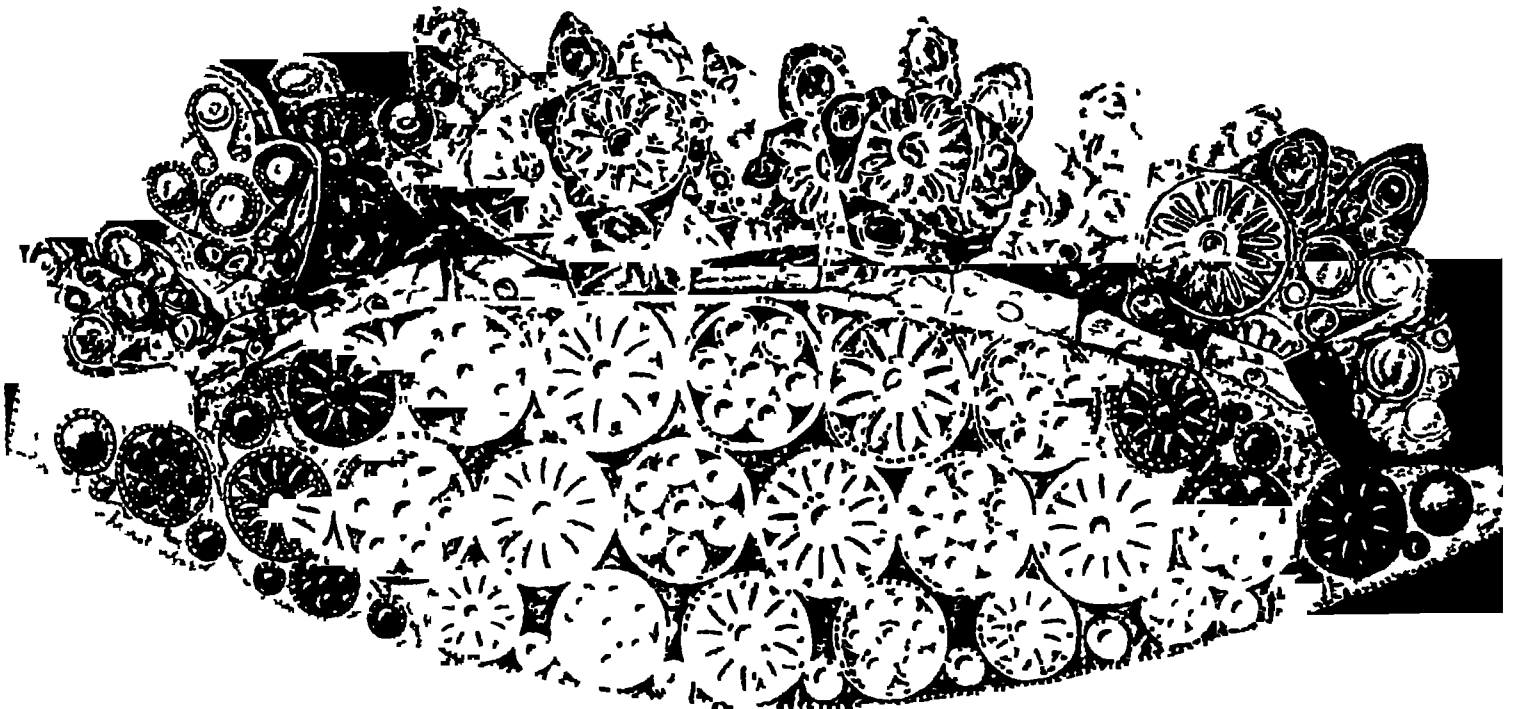
(20) एक सुन्दर वस्तु थी चांदी का बना यह गाय का सिर, जिसके कुछ भाग पर सोने का पत्र चढा है और सींग सोने के है। यह लगभग बोस इच लम्बा है। यह एक सस्कार पात्र था, जिसे सिर पर बने एक छेद से भरा और थूथन पर छोटे-से सूराख से खाली किया जाता था। कनोसस के प्रासाद से भो इसो तरह का काले पत्थर का बना पात्र मिला है।
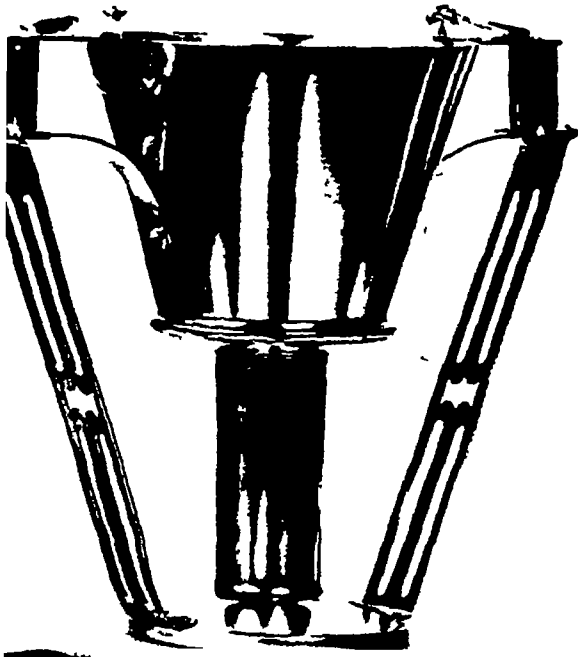
(21) श्लीमान को अपनी जिस खोज से सबसे ज्यादा खुशो मिलो थो, वह था एक सोने का प्याला जो यहा दिखाया गया है। यह एक स्तम्भपादयुक्त चषक है जिसको बाट से दो हैडिल बाहर निकले हैं और खुले पट्टे उनसे आरम्भ होकर वृत्ताकार आधार तक पहुचते है, तथा प्रत्येक हैंडिल पर एक सोने की बत्तख है। होमर का नेस्टर के स्वर्ण-चषक का विवरण—'जिसे वृद्ध घर से अपने साथ लाया था, बहुत सुन्दर प्याला जिस पर सोने की कीलें जडी थीं, और इसके चार हैडिल थे जिनमें से प्रत्येक पर दो सोने की बत्तखे झुकी हुई थीं'—इस चषक के कितना अनुरूप है। श्लीमान ने तर्क किया कि मिकीनी के चषक में दो दुहरे हैडिल है, जो चार के बराबर है, और फिर अन्तर सिर्फ यही है कि नेस्टर के चषक में दो नहीं बल्कि चार बत्तखें थीं। इस प्रकार, 'चतुर्थ समाधि' में 'इलियड' के साथ हमारा सीधा सम्पर्क होता है।

मेडन कैसिल

हम देख चुके है कि वैज्ञानिक पुरातत्व से पहले निम्र्‌द और मिकीनी के उत्खननो मे अद्‌भुत सफलता प्राप्त हुई थी और प्रकाश मे लायी गयी अपूर्व वस्तुओ ने इतिहास मे एक नया अध्याय जोडा था। मेडन कैसिल मे इसके ठीक विपरीत हुआ। यहाँ पर मिट्‌टी का एक विशाल धुस्स था जिससे कलात्मक महत्त्व की एक भी वस्तु का मिलना लगभग असभाव्य था, उत्खनन का एकमात्र उद्देश्य टीलो और खाइयो की प्रकृति और इतिहास का पता लगाना था, और ऐसा आधुनिक पुराविद् के समस्त धैर्य एव सूक्ष्म दृष्टि से बडे पैमाने पर काम करके ही किया जा सकता था। रिकार्ड की प्राप्ति केवल यही सिद्ध करके की जा सकती थी कि खरिया का एक भराव दूसरे से पुराना है; कि खाइयो की बदली हुई कतार का अर्थ प्रतिरक्षा की परिवर्तित पद्धति है, तिथि-क्रम जानने के लिए मृद्‌भाड के प्रत्येक अश (और अगर मिले तो किसी सिक्के) को सावधानी से दर्ज करना तथा, अन्य स्थलो पर प्राप्त मृद्‌भाडो से तुलना करके, शुद्ध समय क्रम मे रखना अनिवार्य था, ताकि जिस स्तर मे वह मिला हो उसके काल और सस्कृति का निर्धारण किया जा सके, काम अत्यधिक सतर्कतापूर्वक किया जाना चाहिए था, वरना करने का कोई मतलब ही न था।

काम सचमुच अत्यधिक सतर्कतापूर्वक किया गया। डाक्टर आर० ई० एम० व्हीलर, श्रीमती टेसा व्हीलर और लेफ्टिनेंट-कर्नल सी० डी० ड्रू लगभग सौ सहायको और विद्यार्थियो के साथ, लन्दन की 'सोसायटी ऑफ ऐण्टिक्वैरीज' के तत्त्वावधान मे, चार साल तक खुदाई करते रहे,

जिसमे 5,350 पौंड से अधिक व्यय हुआ, और सोसायटी द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट उनकी सफलता का रिकार्ड है। काफी आश्चर्यजनक रिकार्ड है यह। इससे पहले इस मौके के बारे मे जानकारी लगभग नही के बराबर थी लेकिन रिपोर्ट से स्पष्ट हो गया कि यह एक महत्त्वपूर्ण धुस्स था। 1865 मे किन्ही कनिंगटन महोदय ने कुछ खुदाई की थी और 'रिजवे पत्थरो का एक धुस्स', 'एक-दो प्राचीन ब्रिटिश झोपडियो की नीवें', कई उत्तर रोमक सिक्के, एक भाले का फल, और एक रोमक काटा (या सेफ्टी पिन), मृद्भाडो के खड आदि पाये थे। उन्होने फसीलो के भीतर एक 'रोमक मकान' का भी आशिक उत्खनन किया था। उनके बेपरवाह और अव्यवस्थित रिकार्ड को जनसामान्य के इस विश्वास का प्रमाण मान लिया गया कि मेडन कैसिल एक रोमक कैम्प था। बस इतना ही 'मालूम' था, और यह सब गलत था। अब, 1934 से 1937 के बीच किये गये काम के फलस्वरूप, इगलैड के इतिहास का एक पूर्ण और विलक्षण अध्याय हमे उपलब्ध है, खरिया मिट्टी के छीजे हुए ढहो और भराव की हुई खाइयो से आधुनिक पुराविद् इतना कुछ उद्घाटित कर सके हैं।

ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दी मे उत्तर पाषाण काल के कुछ लोग दक्षिणी इगलैड की उच्चतर भूमि पर खेती करते थे। वे जगलो से भरे दलदल के (जहाँ आज डारचेस्टर स्थित है) पास वाली चपटी पहाडी के पूर्वी छोर पर रहते थे। अपनी झोपडियो के झुड के चारो ओर उन्होने दुहरी खाई खोद डाली थी, जिसका उद्देश्य शत्रुओ को दूर रखना नही बल्कि अपने जानवरो को भीतर रखना था। उन्होंने खरिया मिट्टी की सतह पर खाना बनाने के गड्ढे भी खोद लिये थे। और काफी समय तक वे वही रहे। लेकिन उनकी सख्या धीरे-धीरे घटने लगी, खाइयो मे आदमियो द्वारा जलायी गयी आग की राख तथा खरिया मिट्टी की दीवारो के छीजने से वे लगभग पुर गयी, और अन्त मे लोग बस्ती से भाग गए। लेकिन उसे भुलाया नही गया। बारह एकड के बाडे के केन्द्र से शुरू होकर, पहाडी की ऊपरी समोच्च रेखा के साथ-साथ एक लम्बा टीला है और उसके दोनो ओर दो खाइयाँ हैं, यह टीला खरिया मिट्टी तथा खाइयो से निकली मिट्टी से बना है। यह पाँच फुट से अधिक ऊँचा, लगभग साठ फुट चौडा और कम से कम 1,790 फुट लम्बा था, उसके पूर्वी छोर पर एक कब्र थी जिसमे एक आदमी की लाश थी—उसकी मौत के बाद उसके हाथ, पैर और सिर को काट दिया गया था और मस्तिष्क निकालने के लिए खोपडी खोल दी गयी थी। इगलैड मे ज्ञात सबसे बडे 'लबस्तूप'(लाग बैरो) मे हमारे नवपाषाण युगीन पूर्वजो के किसी भयानक, शायद मानवभक्षी, सस्कार का प्रमाण मिला था। और इस विलक्षण अन्त्येष्टि क्रिया के फौरन बाद (शायद उससे आकर्पित होकर ?) पाषाण युग के लोग वापस आ गये, उन्होने अपनी झोपडियाँ खडी की और 'लाग बैरो' की खाइयो की छाँह मे रसोई की आग जलाना शुरू कर दिया। लेकिन वे शान्तिप्रिय लोग थे, या फिर उस अल्प जनसख्या वाले इलाके मे उन्हे आक्रमण का भय न था, क्योकि उन्होने पुराने गाँव के गिर्द के टीले और खाइयो की मरम्मत तक नही की। उनके वहाँ रहने के दौरान दुनिया बदल रही थी और उत्तर पाषाण युग का स्थान कास्य युग ले रहा था। 'लाग बैरो' की खाइयो के भराव के दौरान नवपाषाण युगीन मिट्टी के बर्तनो के टुकडो मे पूर्व विकसित कास्ययुगीन सस्कृति के

गिलासो और हसलीदार या खाचेदार भोजन-पात्रो के खड मिल गये और फिर कास्ययुगीन खडो की सख्या कही अधिक हो गयी । यह सव इतना शीघ्र हुआ कि हमे केवल एक वात माननी पडती है यह नही कि पुराने ग्रामवासियो ने अपने पडोसियो द्वारा निर्मित ज्यादा अच्छे वर्तनो का प्रयोग शुरू कर दिया, वल्कि यह कि कास्ययुगीन 'वीकर' जन नवपापाण युगीन जनो के साथ या उन्हे हटाकर स्वय वहाँ रहने लगे । लेकिन वे ज्यादा समय तक वहाँ नही रहे । 'लाग वैरो' का निर्माण अधिक-से-अधिक 2,000 ईसा पूर्व मे हुआ लगता है और उसके दो-तीन शताब्दियो वाद 'वीकर लोग' आ गए, लेकिन लगभग 1,500 ईसा पूर्व तक वे जा चुके थे । प्रमाणित किया जा सकता है कि लगभग उसी समय इगलैड की जलवायु में परिवर्तन हुआ और वह अधिक शुष्क हो गयी । जो पहले कभी दलदल या पास-पक थे अव मानव के निवास योग्य हो गये तथा निचली भूमि पर खेती के लायक क्षेत्र वढ गया, अत मानव पहाडियो से नीचे उतर आया । कास्ययुगीन चरवाहे तक भी शायद खरिया मिट्टी के ढलवानो की मीठी घास चराने के लिए अपने जानवरो को ले जाते रहे होगे, लेकिन गॉव अव मैदानो पर वसे थे, लगभग 1,200 साल तक मेडन कैसिल वीरान रहा ।

लगभग 300 ईसा पूर्व मे फिर परिवर्तन होने लगे । कृपक जन की सख्या वहुत अधिक हो गयी थी । यूरोप महाद्वीप से भी वहुसख्यक लोग आ गए थे, जो पहले तो खाली जमीन पर शान्ति-पूर्वक वस गए लेकिन एक समय आया जव जगली घाटियो की कृषि योग्य धरती के छिटपुट खड इतने अधिक लोगो के लिए अपर्याप्त हो गए । और इसी समय फिर मौसम वदला तथा ज्यादा नम जलवायु मे ढलवानो की खुली जगहो पर फिर से बस्तियाँ वसाना आसान हो गया ।

कास्य युग वीत चुका था और यूरोप अव पूर्व लौह युग मे था । नारमडी से झुड के झुड 'शरणार्थी' आप्रवासी(लौहयुगीन जन, जिनकी सस्कृति का उद्गम स्थान आस्ट्रिया मे हालस्टाट था) वेसेक्स के तट पर उतरे और मेडन कैसिल मे वस गए । लेकिन वे परेशानियो से घिरे रहने वाले लोग थे, इसलिये यूरोपीय ढग पर अपनी वस्ती के गिर्द फसील वनाने लगे । इसके लिए उन्होने नव-पापाण युगीन गाँव को ही चुना लेकिन उसका क्षेत्रफल वढाकर उन्होने लगभग सोलह एकड कर लिया । फिर इस क्षेत्र को उन्होने मिट्टी और खरिया की दस या वारह फुट ऊँची दीवार से घेर दिया, दीवार को सहारा देने के लिए उन्होने दोनो ओर पॉच-पाँच फुट की दूरी पर दस इच मोटे खम्भे गाड दिए । दीवार के सामने एक समतल पटरी थी और तव पचास फुट चौडी व वीस फुट गहरी खाई । दोनो सिरो पर एक-एक प्रवेशद्वार था, पूर्वी छोर पर दो फाटक युक्त एक दुहरा तथा पश्चिमी छोर पर इकहरा । पूर्वी प्रवेशद्वार के वाहर एक पक्का क्षेत्र था जिसमे जानवरो के वाडे थे, यह शायद वाजार था । फसीलों के भीतर के मकान खरिया मिट्टी मे खोदे हुए गड्ढे थे, जिन्हे छा दिया गया था।

वस्तुत , इस गढ पर किसी भी शत्रु का हमला नही हुआ और दीवारे टूट-फूट गयी, ऐसा पचास सालो के भीतर हो गया होगा । लेकिन जनसख्या और वढी तथा पुरानी सीमाएँ कम पड गयी तो 200 ईसा पूर्व के आसपास 'शहर' को पश्चिम की ओर फैलाकर छियालीस एकड जगह और

घेर ली गयी, पुराने और नये दोनो खण्डो को दीवार और खाई से घेर दिया गया। इसके लिए नया तरीका अपनाया गया। दीवार को सहारा देने के लिए लकडी के खम्भे (जो निष्फल सिद्ध हुए थे) नही लगाये गए और न समतल पटरी छोडी गयी। नयी फसील खरिया के ककडो और मिट्टी का ढेर मात्र था जिसका वाहरी ढलान ही आगे खाई के ढलान मे बदल गया था, इस तरह एक वडा ढाल वन गया था जो किसी आकस्मिक आक्रमण को रोकने को पर्याप्त था और उस पर चढते-चढते आक्रमणकारी इतना थक जाता कि पूरी तरह प्रतिरक्षाकारियो की दया पर आश्रित हो जाता। अगर पहले नही, तो अव एक गढगज द्वारा प्रवेशद्वारो को सुदृढ बनाया गया, टीले और खाई की मुख्य रेखा से आगे को निकला हुआ टीले और खाई का एक त्रिकोण बनाया गया जिसमे दो रास्ते थे जिनके दोनो ओर दो अहाते थे जहाँ से आक्रमणकारियो पर दोनो तरफ से हमला किया जा सकता था।

पहली शताब्दी ईसा पूर्व के लगभग मध्य मे कुछ नये लोग मेडन कैसिल पहुँचे और उनकी सख्या प्रत्यक्षत कम होते हुए भी उन्होने पुराने निवासियो को अपने अधीन कर लिया। उन्होने सबसे पहले सुरक्षात्मक प्रवन्ध को वदला। उन्होने मुख्य फसील को मूल से दूने पैमाने पर दुबारा बनाया और उसके खरिया तथा मिट्टी के ढलानो को भीतरी दीवारो से मजबूत बनाया, उसके भीतरी पार्श्व के ऊपरी भाग को पहले खरिया तथा बाद मे चूनिया पत्थर से दृढ किया गया। बाहरी पार्श्व चालीस अश के कोण पर ढलवाँ होता हुआ खाई मे मिल गया था और इस तरह अस्सी फुट लम्बा एक फिसलनदार ढलान बन गया था। किले के उत्तरी भाग के सीधे ढाल पर, क्रमश काफी चौडी हो गयी खाई से परे टीले और खाई की एक कतार और जोड दी गयी। दक्षिण की समतल पटरी पर भी टीले और खाईयो की दो नयी कतारे वना दी गयी। मिट्टी के ढूहो के एक जटिल तत्र बनाकर दोनो प्रवेशद्वारो की सुरक्षा का प्रवन्ध भी किया गया। अब प्रतिरक्षात्मक पक्तियो की कुल चौडाई उत्तर मे लगभग 100 गज़ तथा दक्षिण मे (जहाँ आक्रमण का ज्यादा खतरा था) 140 गज़ थी। इसका कारण स्पष्ट है। नवागन्तुक गोफन चलाने वाले लोग थे और गोफन-पत्थर की मार 200 गज़ तक थी, इस प्रकार, जिस क्षण शत्रु गढ पर चढना शुरू करता था, उसी क्षण से वह गोफन की मार के भीतर आ जाता था और जव तक वह स्वय काफी ऊपर न चढ जाता था उसके अपने पत्थर वस्ती के भीतर न पहुँच सकते थे, नये अस्त्रो के कारण नयी प्रतिरक्षात्मक चाले अनिवार्य थी।

सभव है कि नवागन्तुक ब्रिटैनी के वेनेती कवीले के लोग थे, टीन के व्यापारियो के रूप मे जिनका सम्वन्ध कार्नवाल के साथ काफी समय से था। 56 ईसा पूर्व मे उन्होने रोम का प्रतिरोध किया था जिसके लिए सीजर उन्हे दडित करना चाहता था, इसी दड से वचने के लिए उन्हे किसी नये घर की तलाश थी और उन्होने डार्सेट के अधिक उपजाऊ मैदानो का चुनाव किया। वेनेती कवीले के लोग गोफन चलाने मे कुशल थे और ब्रिटैनी मे वहुपद प्रतिरक्षात्मक पक्तियो का महत्त्व समझ चुके थे। यही कारण है कि मेडन कैसिल मे उनके द्वारा किये गए परिवर्तनो की व्याख्या आसानी से की जा सकती है।

इसके बाद कोई परिवर्तन नही हुआ । ईसा सन् के प्रारभ के लगभग बीस साल बाद, बेल्गी कबीले के लोग (जो केण्ट और ससेक्स मे बसे थे लेकिन क्रमश पश्चिम की ओर फैलते जा रहे थे) टेस्ट नदी के काँठे मे पहुँचे और फिर थोडा और आगे बढकर वेसेक्स मे पहुँच गए । उनकी इस बाध्यता का कारण शायद काल्चेस्टर के क्यूनो बेलिनस (शेक्सपियर का सिम्बेलीन) की विस्तारवादी महत्त्वाकाक्षाये थी । 25 और 30 ईस्वी के बीच उन्होने मेडन कैसिल पर कब्जा कर लिया, जैसा कि मृद्‌भाडो और बेल्गियाई सिक्को दोनो से सिद्ध है । प्रतिरक्षा पक्तियो का पुनर्निर्माण फौरन किया गया । वेनेतियो द्वारा बनायी गयी खाइयो और फसीलो को मुख्य पक्ति के समान विशाल पैमाने पर पुनर्निर्मित किया गया । प्रवेशद्वार तक पहुँचने के लिए सडके बनायी गयी जो विशालकाय उपदुर्गों के, जिसमे मिट्टी के चबूतरे और मीनारे शामिल है, बीच टेढी-मेढी जाती थी, और दीवारो पर भी भारी पत्थरो का इस्तेमाल खूब किया गया था । भीतरी परकोटे के ऊपरी भाग मे मजबूत खम्भो और रुकावटो का पैलिसेड था । सम्पूर्ण नगर पर सामरिक अनुशासन का प्रभाव था । दीवारो के भीतर के सम्पूर्ण क्षेत्र मे, ऊपर की झोपडियो के पास या नीचे अनेकानेक प्रकार के गड्ढे—रहने के गड्ढे, भडार-गड्ढे, रसोई-गड्ढे और मल त्याग के गड्ढे—भरे पडे थे, अब वे सभी पूर दिये गये । जहाँ पर कभी अजब बेतरतीबी थी वहाँ अब सब कुछ साफ हो गया, और सारी जगह पर नयी झोपडियाँ उठायी गयी । लेकिन जल्दी ही यह भी समाप्त हो गया । 47 ईस्वी मे रोम का भावी शासक वेस्पासियन अपनी सेनायें लेकर डार्सेट पर चढ आया । रोमक तोपखाने मे लोहे-लगे बैलिस्ता तीर थे, जिनकी मदद से वे मेडन कैसिल के पूर्वी द्वार तक जा पहुँचे । यहाँ पर कुछ झोपडियाँ प्रवेशद्वार के बाहर खडी की गयी थी, रोमको ने उन्हे आग लगा दी और, उनके धुएँ मे छिपते हुए, फाटको पर हल्ला बोलकर वस्ती मे प्रवेश किया और निवासियो की हत्या आरम्भ कर दी । तब फाटको को तोड-फोड और पैलिसेडो को गिराकर वे अपने कैम्प को वापस लौट गए और बचे हुए निवासी रात भर अपने मृत साथियो की लाशो को दफनाते रहे, उन्नीस शताब्दियो के बाद उत्खनको ने इन्ही कब्रो को पाया, जो विनष्ट प्रवेशद्वारो के बाहर झोपडियो की गर्म राख मे जल्दी-जल्दी खोदी गयी थी । आगे भी लगभग बीस साल तक कुछ लोग अब असुरक्षित नगर मे रहे, लेकिन जब नीचे के मैदान मे रोमक डार्चेस्टर बसा, तो मेडन कैसिल को आखिरी बार हमेशा के लिए त्याग दिया गया । तीन सौ साल बाद, रोमक युग के अन्त से तत्काल पहले, किसी ने मेडन कैसिल मे एक छोटा-सा रोमक-केल्टिक मन्दिर और उसके पास एक मामूली-सा पादरी का घर बनवा दिया, ये दोनो चीज़े एक जगह पर थी जिसके पास शायद एक पुरानी झोपडी रही होगी । बस इतना ही, और इससे मेडन कैसिल की निर्जनता बढ ही गयी थी । यही वह 'मकान' था जिसके बल पर कनिंगटन महोदय ने मेडन कैसिल को रोमक कैम्प मान लिया था ।

निस्सदेह, इतिहास के पुनर्निर्माण मे उत्खनको ने मृद्‌भाडो के वर्गीकरण और तिथि-निर्धारण तथा कास्ययुगीन धुस्सो आदि से प्राप्त समानान्तर उदाहरणो के लिए इगलैंड और यूरोप के अनेक अन्य उत्खननो के परिणामो का उपयोग किया था । किन्तु यदि मेडन कैसिल मे नितान्त

वैज्ञानिक ढग से उत्खनन-कार्य न किया गया होता, तो अन्य उत्खननो के परिणाम व्यर्थ ही होते। ढूहो और खाइयो के उलझे हुए जाल के उद्घाटन के वाद ही किसी एक युग की प्रतिरक्षा-प्रकृति की स्थापना की जा सकी, और प्रत्येक मृद्भाडो के टुकडो के स्तर तथा इमारत-निर्माण के साथ उसके सम्वन्ध का पता चल जाने पर ही उसे तिथि या सस्कृति के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया जा सका। जो भी हो, इतिहास की पूर्णता पुरातात्विक विधियो के महत्त्व की अद्भुत साक्षी है।
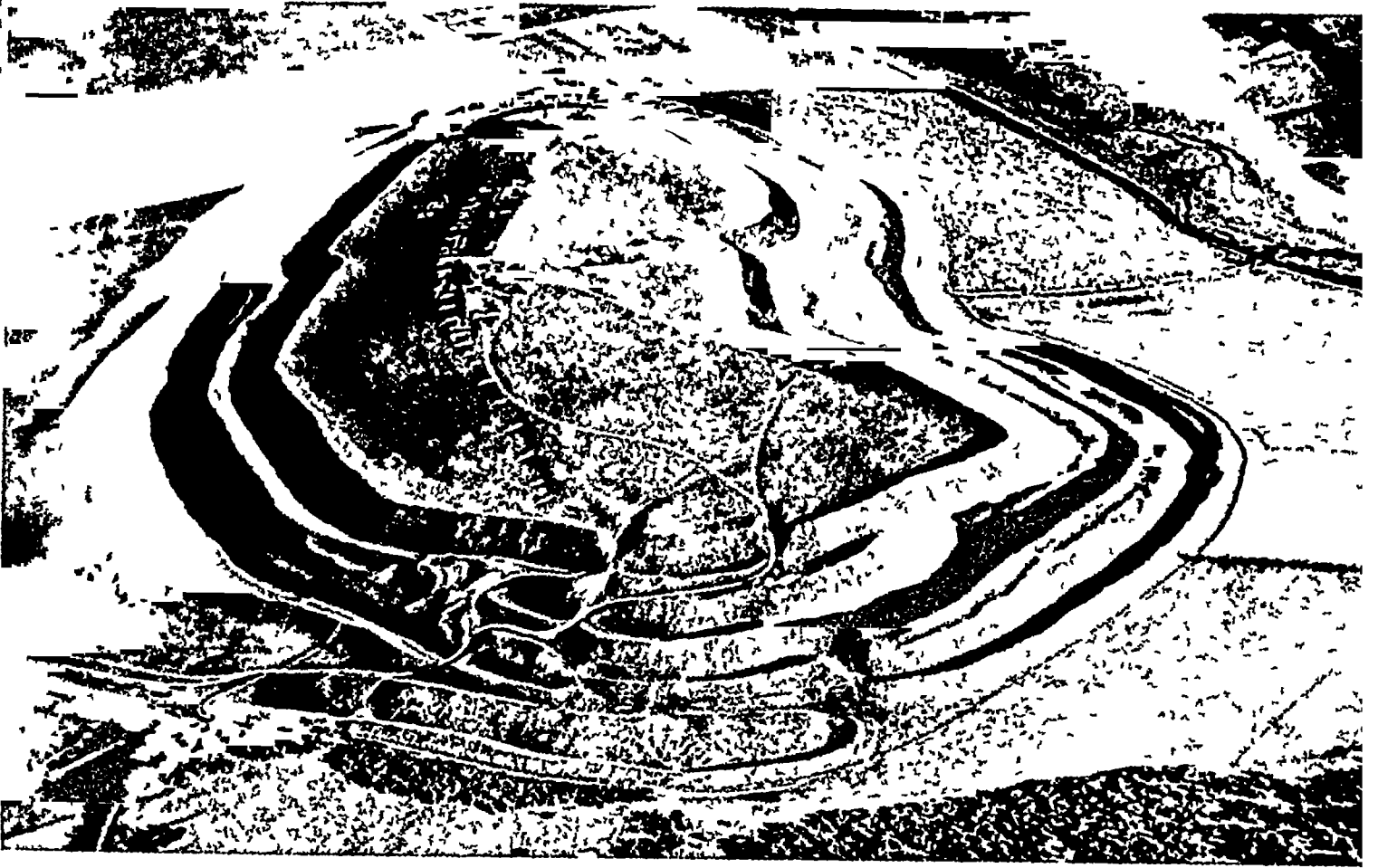
(22) पश्चिम की ओर से लिया गया मेडन कैसिल का हवाई फोटो। इसमें डारचेस्टर के दो मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित चपटी पहाडी पर और उसके गिर्द मिट्टी के भरावों का सामान्य खाका दीख रहा है, यहाँ के मिट्टी के भराव शायद इंग्लैड के सबसे अधिक प्रभावशाली भराव है। टीले और खाइयां आखिरी समय, रोमक आक्रमण से तत्काल पहले, के है, तथा इससे पहले के सुरक्षात्मक बाध बेल्जिक किले की मजबूत रेखाओ के नीचे दब गए हैं। स्पष्ट दीखता है कि उत्तरी छोर पर, जहा पहाडी का ढलान ज्यादा तीखा है, दो विशाल खाइया काफी समझी गयी थीं, लेकिन दक्षिणी ढलान पर, जो अपेक्षया कम तीखा था, अधिक सुरक्षा की दृष्टि से तीसरी खाई भी खोद दी गयी है।

चपटी पहाडी के आर-पार सफेद पट्टिया उत्खनकों द्वारा खोदी गयी खाइया हैं ताकि नवपाषाण काल के विशाल 'लम्बस्तूप' की दिशा पहचानी जा सके।

(23) किले के उत्तरी छोर पर भीतरी खाई की विशालता इस फोटो से स्पष्ट है। मौसम के प्रभाव से परकोटे गिर गए है और उनके मलबे से खाई सात फुट से ज्यादा भर गई है। लेकिन उनकी वर्तमान दशा से भी स्पष्ट है कि इन सुरक्षा-कार्यवाहियों में कितना अधिक श्रम लगा होगा।
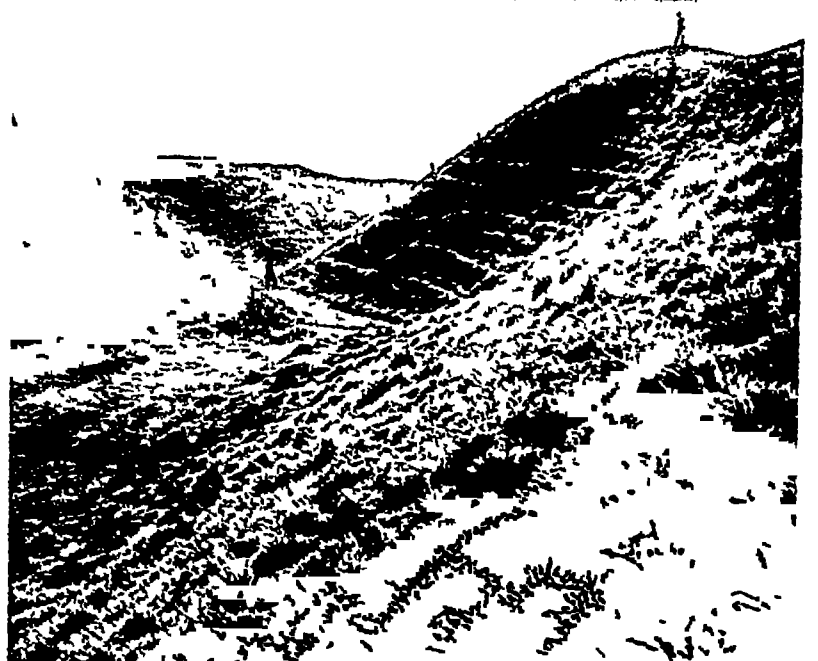
(24) लौहकाल की प्रथम अवस्था में 'पूर्वी प्रवेश-पथ का अधूरा बाहरी बुर्ज। खरिया चट्टानों और मिट्टी की दीवार मूलत दस-बारह फुट ऊँची थी और उसे मजबूत खम्भों और लकडी के पटरों से मजबूती प्रदान की गई थी (लकडी के पटरे अब नहीं है, लेकिन खम्भों के निशान साफ हैं), और भीतरी टीले को साधे रहती थी। सामने समतल रास्ता है और फोटोग्राफ के निचले भाग में विशाल खाई की बाट है।
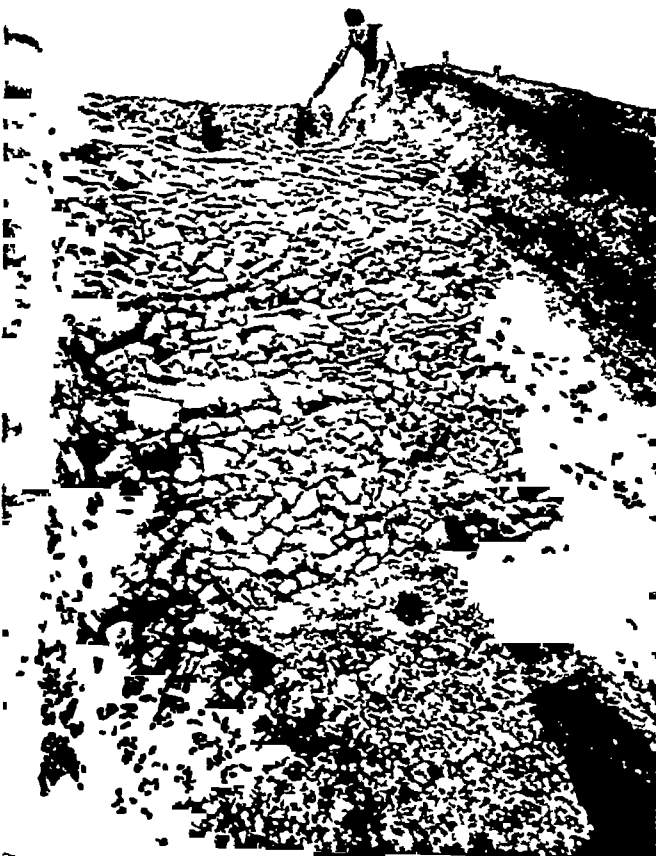
(25) लोहकालीन स्वामित्व की अन्तिम अवस्था के मुख्य परकोटे के भीतरी ढलान का एक अश। टीले की ऊँचाई अब आठ फुट बढा दी गयी थी और खरिया-चट्टानों से बनी भीतरी दीवारों के जरिये नये भराव को मजबूत बनाया गया था। टीले का असली सतही ढलान फोटो के दायीं ओर दीखता है, बायीं ओर खम्भों के गड्ढे और पत्थर के टुकडों की दीवारें है, जो पुराने पर-कोटे पर भराव के दौरान उसे अपनी जगह पर स्थिर रखती थीं, इसके पीछे टीले के क्रोड में बनी अगली भीतरी दीवार है और ऊपर एक आदमी लकडी के कटघरे के गड्ढों को दिखा रहा है—इन कटघरों को बेल्जियों ने अन्तिम अवस्था में परकोटे के शीर्ष पर खडा किया था।

(26) कहा गया है कि सुरक्षात्मक भरावो की गहराई किले की सेनाओं द्वारा प्रयुक्त शस्त्रों की प्रकृति पर निर्भर थी। वेसेकस में नवागन्तुकों का मुख्य अस्त्र गुलेलें थीं, इसलिए उन्हे चलाने के लिए काफी स्थान और उपयुक्त दूरी आवश्यक थे। गोलियो का सग्रह भी आवश्यक था, और सुरक्षात्मक दीवार पर जगह-जगह पर गुलेल-पत्थरो के ढेर लगे थे, इस चित्र में पूर्वी प्रवेश-पथ के पास का एक ऐसा सग्रह प्रदर्शित है—इसमें 20,000 से अधिक पत्थर थे।

(27) बुर्ज और पूर्वी प्रवेश-पथ के दक्षिणी सिहद्वार के बीच युद्ध का कब्रिस्तान है। जिस दिन रोमियों ने किले पर कब्जा किया था, उसी रात बचे-खचे बेल्गियो ने द्वार की रक्षा में खेत रहे अपने साथियों को यहीं दफनाया था। यह चित्र दक्षिण से लिया गया है, बीच वाला तल लगभग बेल्गी सडक का तल ही है जिसमें कब्रें खोदी गयी थीं। दायी ओर एक कर्मचारी पूर्व लौहकाल की सडक पर खडा है और उससे परे परकोटे का खम्भों और पत्थरों से बना पुश्ता है, जो प्रवेश-पथ के दोनों ओर है।
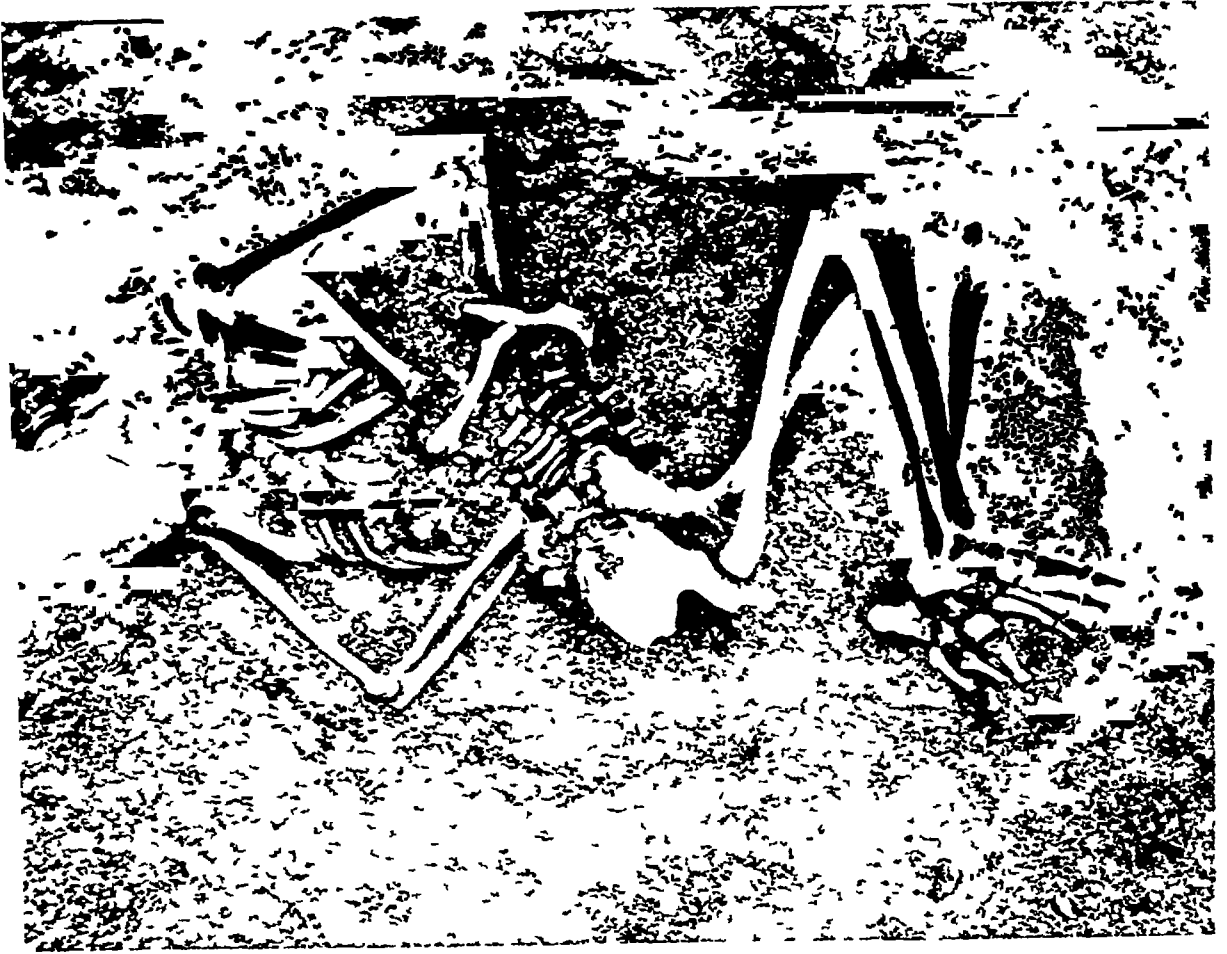
(28) युद्धकालीन कब्रिस्तान की एक कब्र। कंकाल एक स्त्री का है जिससे पता चलता है कि या तो स्त्रियों ने सुरक्षा में भाग लिया था या विजय के बाद निवासियों का हत्या-काण्ड हुआ था। हाथ शरीर के पीछे टेढ़े हो गये हैं—शायद उसकी मृत्यु के समय हाथ बँधे हुए थे—और लगता है कि सिर पर लगी तीन चोटों के फलस्वरूप, जिससे सिर की हड्डी कट गई थी उसकी मृत्यु हुई थी। उसके बायें हाथ में बकरे की टाँग है, यह और इस तरह की अनेक लाशों का दफन आधी रात को गोपनीयता और शीघ्रता में हुआ था और मृत व्यक्तियों को कोई सम्मानजनक उपहार, उनकी लम्बी यात्रा के लिए कोई सम्बल, देने का करुण प्रयास यह हड्डी है।

(29) बचे-खुचे लोगों ने, जो अब भी नष्ट-भ्रष्ट किले में थे, पूर्वी प्रवेश-पथ के दक्षिणी सिंहद्वार से एक नयी सड़क बनायी। फोटोग्राफ में निचले तल वाली सतह (जिस पर A अंकित है) बेल्गी सड़क की है और उसके दायीं ओर बगल की दीवार के अवशेष हैं। आदि रोमक काल की सड़क की सतह पर B अंकित है, और स्पष्ट दीखता है कि यह असवेष्टित पत्थरों पर आधृत है, रोमी सिपाहियों ने जब पार्श्व-दीवारों को तहस-नहस किया था तो इन पत्थरों को निकाल फेंका था, और वे आज वहीं पड़े हैं जहाँ गिरे थे।

पृष्ठभूमि में पत्थरों की एक अनगढ़ दीवार है, जो दक्षिणी सिंहद्वार को बन्द करने के लिए उत्तर रोमक काल में बनायी गयी थी, यह शायद रोमक मन्दिर के समय में ही बनी थी।

(30) चौथी शताब्दी ईस्वी के आधी बीत चुकने के फौरन बाद बहुत समय से वीरान पड़ी पहाड़ी पर सामान्य रोमक-केल्टिक किस्म का एक छोटा-सा मन्दिर बनाया गया, जिसका वर्गाकार उपासनागृह सोलह फुट लम्बा और सोलह फुट चौड़ा था, और जो एक बरामदे से घिरा था, बरामदे की दीवारें नीची थीं और उन पर शायद लकड़ी के छोटे-छोटे खम्भे थे। मन्दिर के पास एक छोटी दो कमरों की इमारत थी, जो मन्दिर के पुजारी का निवास थी, तथा मन्दिर के दूसरी ओर एक अण्डाकार झोपड़ी थी जो शायद किसी प्राचीनतर मन्दिर की जगह पर थी। फोटोग्राफ में मन्दिर और उससे परे पुजारी का घर दीखते है, तथा जमीन पर प्राचीन लौहकाल के अनेकानेक गड्ढे हैं। मेडन केसिल की दीवारों के भीतर निर्मित आखिरी इमारत यह मन्दिर था और यह भी अधिक समय तक नहीं रहा। शायद थियोडोसियस के शासनकाल (383-95 ई०) में इसकी कुछ मरम्मत हुई थी, लेकिन यहाँ प्राप्त लगभग सौ सिक्कों में अन्तिम सिक्का ऑनॉरियस (393-423 ईस्वी) का था, और इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि रोमक शासन के पतन के बाद मन्दिर में कोई नहीं रह गया और मेडन केसिल पुन निर्जन हो गया।
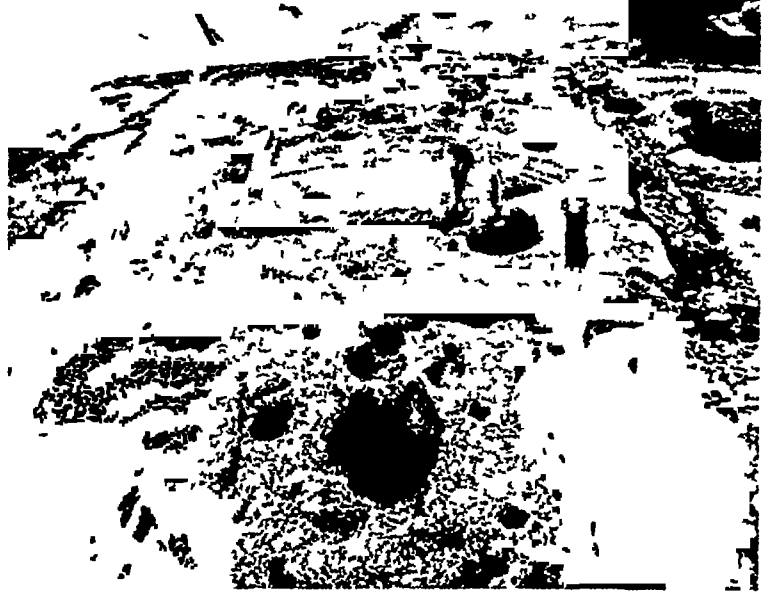
(31) एक ही कब्र में दफन दो आदमियों में से एक का सिर तीन जगह कटा था, और एक चौकोर सिरे वाला तीर भी उसकी खोपड़ी में घुस गया था—यह शायद किसी रोमक गुलेल का प्रहार था। दूसरे आदमी की रीढ़ में लोहे का बाण घुसा हुआ था, तीर सामने से, हृदय के तनिक नीचे से, शरीर में प्रवेश कर गया था। तब सिर पर तलवार के एक वार से उसका काम तमाम कर दिया गया

फायूम श्रौर श्राक्सीरिंकस

मिस्री पपीरस पर लिखी हुई पहली ग्रीक हस्तलिपि 1778 मे यूरोप पहुँची । वह किसानो को फायूम मे मिली थी । फायूम नील नद के पश्चिम मे एक विशाल गर्त है जहाँ पुराने ज़माने मे मोएरिम झील का पानी लहराता था । लेकिन ताल्मी के समय मे जिसका पानी निकाल कर नियन्त्रित किया गया था और वह धनधान्य से पूर्ण एक कृषिप्रधान सूवा बन गया था, जिसमे कस्वे, गाँव और ग्रामीण मन्दिर जगह-जगह पर थे। यह आज भी एक समृद्ध और आवाद प्रदेश है और इसे 'भूरे लीवियाई रेगिस्तान पर हरी कालीन' कहा जा सकता है । ग्रीक हस्तलिपि एक पुराने नगर के खडहरो मे मिली थी, वह वहाँ पर प्राप्त कुल लगभग पचास कुडलियो मे से एक थी, शेष को किसानो ने जला दिया था 'क्योकि उन्हे उनकी सुगन्ध बहुत अच्छी लगी थी! ' और सौ साल तक यही क्रम चलता रहा—ऐसी कोई चीज मिलते ही वे फौरन जला डालते ।

लेकिन 1877 मे हस्तलिपियो का एक ढेर—शायद ग्रीको-रोमक युग के किसी सरकारी अभिलेख-दफ्तर से फेकी गयी रद्दी— प्रान्तीय राजधानी आर्सिनो के खडहरो मे मिला, और वियना वर्लिन, आक्सफोर्ड, लन्दन और पेरिस मे उनकी विक्री होने लगी । बस, निवासी काम मे जुट गए और वीस साल तक फायूम के स्थलो को मथते रहे । अनेक खनको की दिलचस्पी मूर्तियो और मूरतो मे अधिक थी क्योकि वे ज्यादा आसानी से बिकती थी । वे हस्तलिपियो जैसी चीज़ो को नही सम्हालते थे और जव सम्हालते भी थे तो खनन से प्राप्त अच्छी वस्तुएँ ही सुरक्षित रह पाती थी, क्योकि पपीरस वेहद भगुर होते है और खनको के तरीके विल्कुल अपरिष्कृत थे । लेकिन 1888-90 मे, मिस्र मे आधुनिक पुरातत्व का जनक फ्लाइडर्स पेट्री हवारा मे, जो झील के पानी को नियन्त्रित करने वाले ताल्मी वाध (नक्शे देखिए[1]) के पास स्थित है, खुदाई कर रहा था कि उसे पपीरस मिले । उसकी

1 सामने पृष्ठ पर दिए रेखा मापचित्र स्थल की स्थिति और विस्तार वताते हैं।

खोज ने एक नये युग का सूत्रपात किया। 1895-96 मे 'मिस्र समन्वेषण फंड' ने एक नया दल फायूम को रवाना किया जिसका एक मात्र उद्देश्य पपीरसो को खोदना था। उसके बाद तो, ग्रेनफेल और हंट —वे तो एक प्रकार जन-श्रुतियो के पात्र बन गये—ने पहले फायूम और फिर बेहनेसा (काहिरा से 120 मील दक्षिण मे रेगिस्तान के पश्चिमी छोर पर स्थित, प्राचीन आक्सीरिकस) मे वर्षों खुदाई का काम जारी रखा।
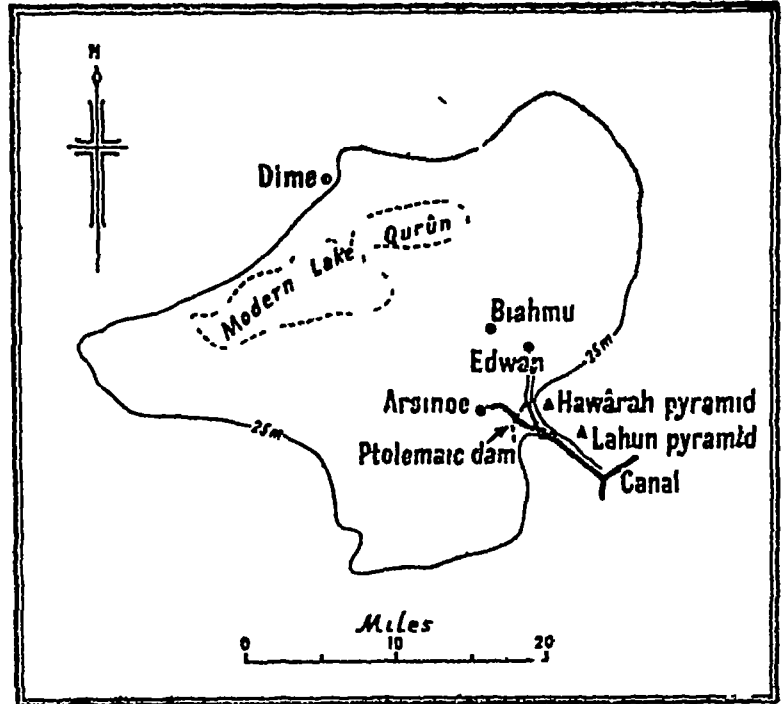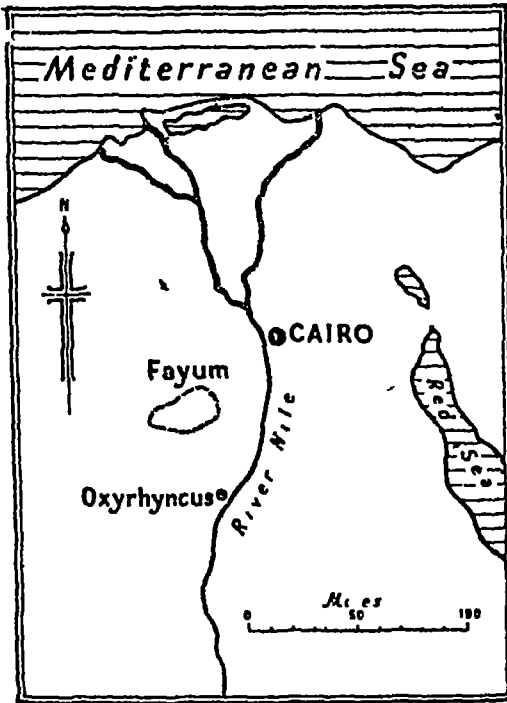
अधिकतर पपीरस घरो के खडहरो या नगर के कूडा-ढेरो मे मिले है। कही-कही पर, विशेषत पादरियो के घरो मे, शायद गोदाम थे जहाँ हस्तलिपियाँ रखी जाती थी; अधिकतर तो, घर छोडते समय लोग पत्रो को वही छोड जाते थे, फिर दीवारें गिर पडी और फर्श पर पडा हुआ कूडा उनमे दब गया और इस तरह बचा रह गया। जाहिर है कि लोग हमेशा अपनी चीजे छोड नही जाते थे, लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता था जैसे दीमे नामक गाँव मे हुआ। दीमे काफी दूर स्थित औरपीने के पानी तथा जमीन की सिंचाई के लिए सिर्फ एक नहर पर आश्रित था। सहसा नहर सूख गयी तो वहाँ के निवासी जल्दी में भाग गये। यही कारण है कि दीमे मे आधुनिक उत्खनक को बेशुमार पपीरस मिले है।

'रद्दी कागज़' की तलाश मे किसी नगर के कूडे के ढेर की खुदाई आशावादिता की अति की सूचक हो सकती है और यह भी सच है कि खोज निष्फल भी सिद्ध हो सकती है, लेकिन जल्दी ही ग्रेनफेल और हट ने सीख लिया कि थोडा काम करके ही उत्खनक जान सकता है कि खुदाई से कोई लाभ होगा या नही। पता नही किस कारण पपीरस एक विशेष प्रकार के कूडे मे ही, खनक जिसे वहुत थोडे अनुभव के वाद ही पहचानने लगता है, अच्छी दशा मे मिलते हैं, कूडे के ढेर मे ऐसी परत न हो तो वह काम वन्द कर देता है, परत होती है तो वह खोदता जाता है और अधिकतर अपने उद्देश्य मे सफल होता है।

लेकिन पपीरस अन्य स्रोतो से भी प्राप्त होते है।

फ्लाइडर्स पेट्री ने गुरोव मे, और वाद मे ग्रेनफेल और हट ने उस-अल-वरकत मे, ताल्मी युग के कब्रिस्तान पाए, जिनमे मृत व्यक्तियो को पुराने मिस्री ढग से मसाले लगाकर साँचे मे ढले और खचित ममी-मजूपाओ मे रख दिया गया था। इनका परीक्षण करने पर पेट्री ने पाया कि मजूषाओ के सिर और वक्ष को ढकने वाले खड एक प्रकार की दपती से वनाए गये थे, सवसे पुरानी मजूषा मे लिनेन के कपडे थे जो एक साँचे पर चिपका और दवा दिये गये थे और फिर गच से ढककर रग दिये गये थे, वाद मे, पपीरस को भी इसी प्रकार चिपकाया, लेपित और रजित किया गया, लेकिन और वाद मे, पपीरस के तख्तो को सिर्फ भिगोकर आपस मे दवा दिया गया—सतर्कतापूर्वक काम करने पर इन तख्तो को अलग किया जा सकता था, तथा जहाँ पर पपीरस समतल था (जैसे वक्ष को ढकने वाले खडो मे) वहाँ महत्त्वपूर्ण पाठ्य सामग्री मिल सकती थी। और यह सामग्री पुरानी रद्दी मात्र न थी। ग्रेनफेल ने लिखा 'मिस्री महाब्राह्मण ममी-मजूपा वनाने से पहले, अपने किसी पडोसी की रद्दी की टोकरी माँगकर उसके कागज़ो की पेपर-मैशी वना डालता था ताकि वह हाथ की मजूषा को वना सके, यही कारण है कि किसी एक ममी से प्राप्त पपीरस एक ही सग्रह के है।'

तावूतो को खड-खड करके प्राचीन हस्तलिपियो की प्राप्ति निश्चय ही पुरातत्व का एक अजूवा है, लेकिन अभी तो इससे भी वडा अजूवा वाकी था। पूरे प्राचीन फायूम मे घडियाल की पूजा की जाती थी, तथा ग्रेनफेल और हट एक ऐसे कब्रगाह का पता लगा सके, जिसमे इन पूज्य जानवरो को, ठीक ढग से मसाले लगाकर, धार्मिक सस्कार के साथ दफनाया गया था। शवलेपकारक, जानवरो की अतडियाँ निकालने के वाद, उनकी शक्ल वनाये रखने के लिए, उनके भीतर पपीरस भर देते थे। कहा जाता है कि सैम्सन को एक सिंह की लाश के भीतर शहद मिला था, लेकिन घडियाल के पेट से ग्रीक काव्य को वाहर निकालना आज के विद्वान् का ही काम है।

लेकिन ममियो, घडियालो और कूडे के ढेरो ने हमारे ज्ञानकोष मे क्या अशदान दिया?

फायूम मे पहले मौसम के परिणामो की रिपोर्ट मिलने पर प्रोफेसर सेस को उन दिनो की याद आ गयी, जव कुस्तुनतुनिया के पतन के फलस्वरूप ग्रीक साहित्य इटली पहुँचा और पुनर्जागरण का आरम्भ हुआ। उन्होने लिखा . 'सौभाग्यशाली पुराविद् को उस युग के प्राचीन ग्रीक पपीरस मिले है, जिसकी कल्पना अत्यधिक आशावादी विद्वान् भी नही कर सकता था; उसे मिला है,

निजी पत्राचार जो ताल्मी वश के प्रारम्भिक दिनो मे मिस्र मे यूनानी अधिवासियो के सामाजिक इतिहास पर प्रभाव डालता है, वसीयतो के रिकार्ड जिनसे यूनानी कानून की विशेष जानकारी होगी, निजी आय-व्यय का व्योरा जिससे तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के फायूम मे चीजो की कीमतो और कर-व्यवस्था का ज्ञान होता है, यूरीपिदीज के गुमशुदा नाटक का एक अश, तथा प्लेटो कृत "फीदो" की अमूल्य प्रति के अश जिन्हे प्लेटो के थोडे समय बाद ही लिखा गया होगा।'

फायूम के नगर छोटे-छोटे थे, और उनके निवासी, जो अधिकाशत किसान थे, साहित्य मे ज्यादा दिलचस्पी नही रखते रहे होगे। ग्रेनफेल और हट तब आक्सीरिंकस पहुँचे, जो एक महत्त्व-पूर्ण नगर था और जहाँ अमीर आदमी रहते थे जिनके अपने पुस्तकालय भी शायद रहे हो। साधारण पुराविद् के लिए इससे अधिक निराशाजनक स्थल नही हो सकता था। शताब्दियो से वेहनेसा (आधुनिक नगर) के निवासी अपने मकान बनाने के लिए इन खडहरो से पत्थर और ईटे लाते रहे थे। पुरानी इमारतो की एक भी दीवार या दीवार की नीव सही-सलामत नही रह गयी थी, वस, कूडे के ढेरो को नही छुआ गया था। ग्रेनफेल और हट ने वही खुदाई शुरू की। उन्हे सदा एक विचित्र रग की परत की तलाश थी जो, अनुभव ने उन्हे सिखाया था, सफलता की सूचक थी। और उनकी सफलता अद्भुत थी। एक दिन छत्तीस टोकरियाँ अभियान के खेमे मे लायी गयी, सब मे पपीरस की कुडलियाँ, जिनमे से कुछ तो तीन से दस फुट तक लम्बी थी, भरी थी। उसके अगले दिन पचीस टोकरियाँ आयी। एक बार तो कूडे के बीचोबीच सिर्फ पपीरस कुडलियो की एक मोटी परत मिली। कुडलियो को फाड दिया गया था ताकि टोकरियो मे ज्यादा कुडलियाँ समा सके। पुरानी टोकरियाँ तक कूडे मे फेक दी गयी थी और उनके भीतर भी पपीरस थे। आश्चर्यजनक उपलब्धि थी!

आक्सीरिंकस का एक भी पपीरस ताल्मी युग का न था, सबसे पुराना मिस्र पर रोम की विजय के समय का था और अन्तिम आठवी या नवी शताब्दी ईस्वी का। स्वभावत, 'रद्दी कागज़' सभी प्रकार का था और तब से अब तक प्रकाशित दर्जनो जिल्दो मे हर किस्म के प्रलेख मिलते है। ज्यादा जेब-खर्च और केक की माँग करते हुए स्कूल के विद्यार्थी का पत्र, एक अनुबन्ध-पत्र (550 ईस्वी का) जिसके अनुसार घोडो को दौडना सिखाने वाले एक व्यक्ति ने फ्लेवियस सेरेनस के दौडाक घोडो का भार सम्हाला था, सम्पत्ति के एजेण्टो की रिपोर्टे तथा उन्हे दिये गये हुक्म, वसीयतनामे, पुलिस के हुक्मनामे, 'सीजर के नाम प्रर्थनापत्र'—शायद ऐसी ही चीजो की आशा तो की जा सकती थी। लेकिन, पुराविदो की आशा के अनुरूप, रोमक नगर के कुछ निवासी साहित्यिक अभिरुचि के भी थे। होमर के पृष्ठ पर पृष्ठ जिनके बल पर प्राप्त पाठ्य की पुष्टि या सशोधन हुआ, प्रारम्भिक ग्रीक गीतकारो, सैफो और अल्कीम, की नयी कविताएँ, महान् नाटककारो और वक्ताओ के अश, प्राचीन साहित्य के अध्येता के लिए तो यह सोने की खान थी। लेकिन कुछ निवासी ईसाई थे और वह भी इतने पहले; सन्त मैथ्यू की इजील के पहले अध्याय की एक प्रति, जिसे शायद तीसरी शताब्दी ईस्वी मे लिखा गया था, सन्त मार्क की इजील का अनुवाद (पाँचवी, छठवी शताब्दी) का, लेकिन फिर भी प्राचीनतम पाठ्यो मे से एक है। लेकिन सामान्यजन की दृष्टि मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थी एक वस्तु,

जो तत्काल 'लॉजिया, सेयिंग्स ऑफ जीसस' नाम मे ख्यात हो गयी । मुख्य अग, जो पहले फलक मे दिखाया गया है, महात्मा ईसा की कहावतो के सग्रह का एक पृष्ठ था, शायद इसी प्रकार के सग्रहो का उपयोग करके इजील लेखको ने ईसा के धर्म के इतिहास को व्यवस्थित किया होगा, पुराविदो के अनुसार, प्रलेख 240 ईस्वी से कुछ पहले का है, और इसलिये उसमे ताजी याददाश्त होनी चाहिए । अधिकाश परिरक्षित कहावतें हमारी परिचित हैं, क्योकि धर्म-ग्रथो मे लिखी बातो को हम कितनी ही बार दोहराते हैं; लेकिन एक कहावत सर्वथा नवीन है 'ईसा मसीह कहते है, जहाँ कही दो आदमी साथ होते हैं वे ईश्वर के बिना नही होते, और जहाँ कही एक अकेला होता है, मैं कहता हूँ, मैं उसके साथ हूँ । पत्थर उठाओ तो तुम मुझे वहाँ पा लोगे, लकडी चीरो तो वहाँ मैं मौजूद हूँ ।'

(32) यह है आक्सीरिंकस में, पहले मौसम में, प्राप्त विख्यात पपीरस। यह एक पुस्तक का एक पृष्ठ है, नीचे की एक-दो पंक्तिया गायब है, और एक तरफ लिखावट के अधिकाश को खूब घिसा और एक अश तो मिटा दिया गया है। पहले उद्धृत सूक्ति दाहिनी ओर, दूसरी पक्ति से प्रारम्भ होती है। अगली सूक्ति है, 'यीशु कहते हैं, पैगम्बर अपने देश में नहीं पूजा जाता और चिकित्सक अपने परिचितों का इलाज नही कर पाता।'

(33) अगले मौसम में ग्रेनफेल और हट ने 'यीशु की सूक्तियो' के एक अन्य सग्रह का यह अंश पाया। इस अश में बयालीस अपूर्ण पंक्तिया है, जो दूसरी शताब्दी के प्रारम्भ में तैयार की गई देशो की सर्वेक्षण-सूची की पुश्त पर लिखी गई थी, यह एक कुण्डली, और शायद काफी लम्बी कुण्डली थी। सूक्तिया लगभग 250 ईस्वी में लिखी गई थीं। पाठ्य एक भूमिका से प्रारम्भ होता है, 'ये शब्द हैं जिन्हें यीशु महान ने और टॉमस से कहा था, और यीशु ने उनसे कहा था—"इन शब्दो पर ध्यान देने वाला व्यक्ति अमर रहेगा"।' चूंकि प्रत्येक पक्ति आधे से अधिक सुरक्षित नहीं है, इसलिए उनका शुद्ध पाठ सदेहास्पद है, लेकिन पहली सूक्ति को काफी ठीक अभिव्यक्त किया जा सकता है—'यीशु कहते है, के अन्वेषी को प्राप्ति से पहले अपनी खोज बन्द नहीं करनी चाहिए, और जब वह पालेगा तो चकित रह जाएगा, चकित्त ही वह ईश्वर के साम्राज्य में पहुँचेगा और वहाँ पहुँचकर विश्राम करेगा।'

अंयाङ्

सौ वर्ष पहले चीन मे औषधिविज्ञान पन्द्रहवी शताब्दी के यूरोपीय औषधिविज्ञान जैसा था—थोडे-से विज्ञान और वहुत-से जादू-टोने का सम्मिश्रण। कभी कैमिस्ट खुद दवा तैयार करता था, तो कभी दवा के विभिन्न अवयवो को डाक्टर या मरीज़ को वेच देता था जो उन्हें मिलाकर दवा तैयार कर लेते थे, मिश्रण मनचाहा हो सकता था, लेकिन उसके विभिन्न अवयव वही होते थे जो अनुभव या अन्धविश्वास द्वारा मान्य थे। भेपजग्रथ की एक अत्यधिक गुणकारी औपधि का नाम था 'ड्रैगन की हड्डियाँ', और इस तरह की दवाइयाँ स्वभावत विरल और कीमती थी।

लगभग 1860 मे, चीनी सूवे होनन ह्सियाओ तुन के किसानो को अपने खेतो मे अजीव-सी हड्डियो के टुकडे मिलने लगे जिनकी सतह वहुत चिकनी और चमकदार थी। उनमे अडाकार खाचे और अग्रेजी के T के आकार की दरारे थी। किसी-किसी मे अजीव ज्यामितीय-से चिन्ह और नन्ही तस्वीरें तक खुदी थी। ली नामक एक किसान ने निश्चय किया कि ये ड्रैगन की हड्डियो के अलावा और कुछ नही हो सकती। इसलिए जितनी हड्डियाँ वह इकट्ठी कर सकता था उतनी इकट्ठी करके एक कैमिस्ट के पास वेचने ले गया। कैमिस्ट ने इतने वढिया अवशेपो को फौरन खरीद लिया। तीस साल तक ली खूव वढिया व्यापार करता रहा और कैमिस्ट को भी फायदा होता रहा, क्योकि स्नायविक वीमारियो के लिए इन हड्डियो का चूर्ण रामवाण समझा जाता था।

लेकिन 1899 मे एक चीनी पुरावेत्ता ने एक दूकान मे कुछ हड्डियाँ देखी जो चूर्ण नही की

गयी थी, और पाया कि उनपर खचित विचित्र चिन्ह् वास्तव मे लिखावट है—चीनी लिखावट, लेकिन इतनी पुरानी किस्म की लिखावट, जिसे न वह खुद पढ सका न कोई और। वे कहाँ से आयी थी किसी को नही मालूम था, क्योकि ली ने अपने व्यापार का राज गुप्त रखा था, लेकिन चूँकि खचित हड्डियाँ वैज्ञानिक दिलचस्पी की चीज़े थी इसलिए विद्वान् उन्हे फौरन खरीद लेते थे। तीस साल के लगातार अध्ययन के बाद ही उनके अभिलेखो की पूरी व्याख्या हो सकी।

वे प्राचीन 'आप्त अस्थियाँ' थी। जिस सवाल का जवाब चाहिए हो उसे एक पुजारी किसी हड्डी या कछुए की पीठ पर खोद देता था। तब वह कुछ जगहो पर खाचे बनाने के बाद उसे तपाता था। इससे हड्डी (या पीठ) फट जाती थी, और दरार के फटने की दिशा से वह 'हाँ' या 'नही' मे उत्तर मालूम करता था। कभी-कभी पुजारी हड्डी पर ही उत्तर लिख देता था और साथ मे जोड देता था कि उत्तर सत्य सिद्ध हुआ। अब तक हजारो हड्डियो को रासायनिक प्रयोगशाला से बचाया जा चुका था और वे सब राजकीय अभिलेखागार की थी—वे सब राजा के प्रश्न थे, जिनमे राजनीति या युद्ध या (अधिकतर) फसल सम्बन्धी प्रश्न थे, जिनमे पूछा गया था कि मौसम कैसा रहेगा और कैसी फसल होने की आशा है; और आप्त पुरुषो से इस प्रकार के प्रश्न पूछने वाले राजा शाड् वश के थे, जिसका आधिपत्य चीन के इस भाग पर 1765 और 1123 ईसा पूर्व के बीच था। चीन के इतिहास के प्रति इसके महत्त्व को आसानी से प्रदर्शित किया जा सकता है। 1911 मे, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय मे चीनी भाषा के प्रोफेसर ने 'द सिविलाइज़ेशन ऑफ चाइना फ्रॉम द अर्लियेम्ट टाइम्स' नामक पुस्तक प्रकाशित की तो इतिहास का आरम्भ 1000 ईसा पूर्व से किया; इसके बावजूद उनका 'सामन्त युग' का, जो 220 ईसा पूर्व तक था, वर्णन केवल कुछ पृष्ठो मे किया गया है। एक अन्य विद्वान् लिखित 'द ऐशेट हिस्टरी ऑफ चाइना' पर एक पुस्तक की समीक्षा करते हुए उसी प्रोफेसर ने लिखा कि यह पुस्तक '221 ईसा पूर्व तक के अविश्वसनीय युगो का सक्षिप्त परिचय है, जिसमे काफी पुरातात्विक जानकारी सग्रहीत है, और सामान्य पाठक की दृष्टि से इतिहास के सबसे ज्यादा अनाकर्षक युग को अत्यन्त आकर्षक ढग से प्रस्तुत किया गया है।' पचीस वर्ष बाद, 1936 मे, डाक्टर क्रील ने 'द बर्थ ऑफ चाइना' पर,अपनी पुस्तक मे शाड् युग (1765-1123 ईसा पूर्व) पर दो सौ से अधिक पृष्ठ लिखे और उनका विवरण अत्यन्त रोचक है। ज्ञान और दृष्टिकोण मे हुई यह क्रान्ति अधिकाशत 'आप्त अस्थियो' के कारण हुई।

हि्सयाओ तुन के किसानो को जब यह पता लगा कि उनके खेतो मे मिली हड्डियाँ औषधि से अधिक कीमती पुरावशेषो के रूप मे है, तो वे सतह की हड्डियो को बीनने तक ही सीमित न रहकर खुदाई भी करने लगे और खुदाई मे उन्हे आशातीत उपलब्धि हुई। आप्त अस्थियाँ राजकीय अभिलेखागार की थी, इसी तथ्य से अनुमान लगाया होगा, जो अब सिद्ध हुआ, कि जिस स्थल पर वे पायी गयी थी वही पर शाड् राजाओ की राजधानी अयाड् या (बाद मे) लिन् स्थित थी। किसानो ने इमारतो के अवशेषो पर जरा भी ध्यान नही दिया, लेकिन और गहराई तक खोदने पर उन्हे मकबरे मिले, जिनमे अनेक किस्म की नियामते भरी पडी थी। काँसे के बेहद खूबसूरत बर्तन तो बहुसख्यक मिले;

उनमे वडी सफाई और कौशल से अलकरण उत्कीर्ण था और किसी-किसी पर तो ऐतिहासिक अभिलेख भी था। ये वस्तुएँ अनधिकृत खुदाई से मिलती थी और मिलने के समय उनकी दशा के बारे मे किसी भी तरह नही जाना जा सकता था (वस्तुत, काफी समय बाद ही विद्वानो को मालूम हो सका कि पीकिङ्ग की दुकानो मे मिलने वाली सुन्दर वस्तुएँ अयाङ् से आती थी), इसलिए उनका ऐतिहासिक महत्त्व काफी घट जाता था, और उनके तिथि-निर्धारण के सम्बन्ध मे भी मतभेद था। लेकिन अन्त मे, सचाई सब पर जाहिर हो गयी, और 1928 मे अमरीका की 'फ्रीयर गैलरी ऑफ आर्ट' तथा चीन के 'राष्ट्रीय गवेपणा सस्थान' द्वारा अयाङ् स्थल के लिए नियमित अभियानो का भेजना आरम्भ हुआ। किसानो (या 'डाकुओ') ने देखा कि उनकी सम्पत्ति का स्रोत ही छिनने वाला है तो उन्होने शुरू से ही विरोध किया और उत्खनको के काम मे बाधा पडी। फिर 1936 मे जापान का आक्रमण हो गया, और तब हुआ गृहयुद्ध, खोदना असभव हो गया। लेकिन तब तक बहुत कुछ किया जा चुका था और जब परिस्थितियाँ अनुकूल हुईं तो चीन की सरकार ने कार्य का पुनरारम्भ किया, जो अब भी जारी है।

(34) शाङ् लोगों के आगमन से पूर्व चीन का यह भाग अभी पापाण काल में ही था। उत्खननों के फलस्वरूप इन बर्बरों के मकान मिले है—गोलाकार गड्ढे, जो लट्ठो के सहारे नरकुल या चटाई से छा दिये गये थे। इस चित्र में ऐसा गड्ढा दिखाया गया हे तथा खम्भों के सूराख व बीच की अगीठी भी दीख पड रही है। पृष्ठभूमि में बर्तनों जैसी चीजें भी खम्भों के सूराख हैं, उत्खनन अधिक गहरे स्तरों में किया जाने लगा तो इन सूराखों के चारों ओर खुदाई करके इन्हें सावधानी से सुरक्षित रखा गया है।

(35) एक राजसी समाधि के भीतर का दृश्य। दो सीढियोदार मार्ग जमीन में खोदे गये एक वर्गाकार गड्ढे मे पहुँचाते है, और उसके बीच में राजा के अन्त्येष्टि संस्कार का गड्ढा है। गड्ढे के चारों ओर तथा सीढियों पर मृतकों को दिये गये उपहार तथा राजा के साथ दूसरे संसार की यात्रा करने वाले राज-परिवार के सदस्यों के शव पडे हैं।

(36) ये है ज्याड् की 'आन्त अस्थियों के नमूने। सूराखों या दरारों से पता चलता है कि प्रश्नों के उत्तर देने वाली दरारों की उत्पादक आग कहां लगाई गई थी।
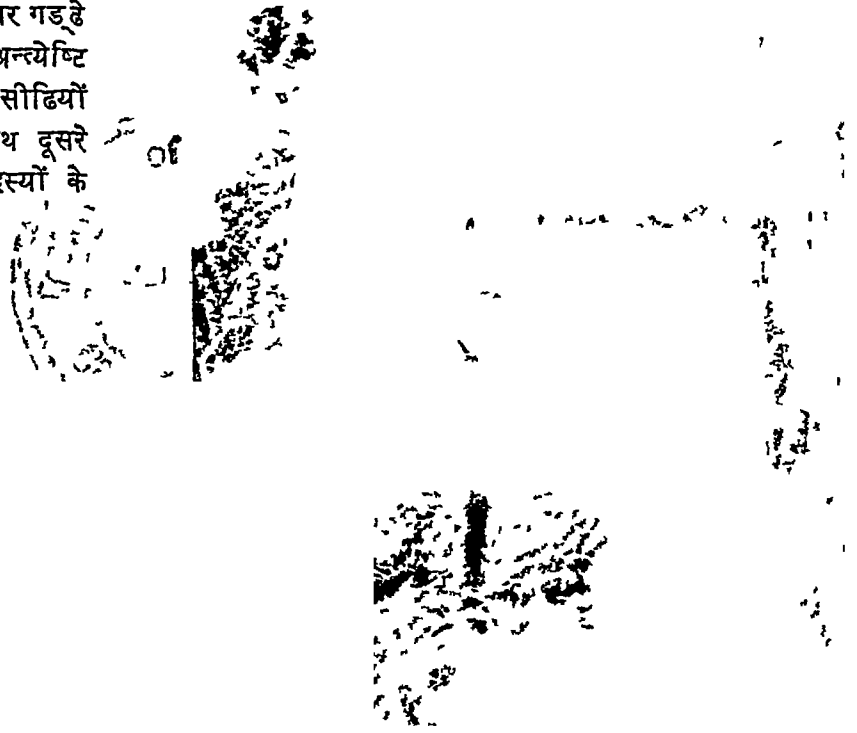
(37) चित्र 35 में भीतरी गड्ढे के बायीं ओर दिखाई पड़ने वाली सफेद वस्तु है वज्रमणि का पूर्णत: उत्खचित विशाल और सुन्दर खण्ड। यह कहना मुश्किल है कि यह किस काम आता था, किन्तु चीनियों को वज्रमणि सदैव अत्यधिक प्रिय था और इतनी खूबसूरती से तराशा हुआ श्वेत खंड किसी भी राजा को अभिमानपूर्ण सम्पत्ति हो सकती थी।
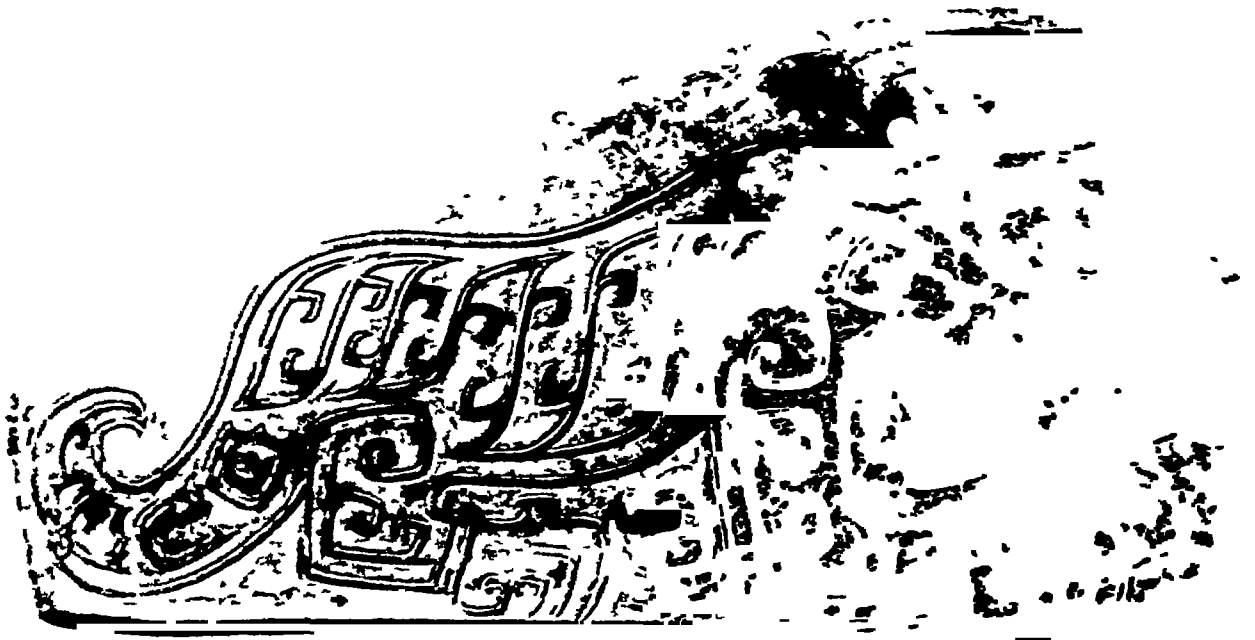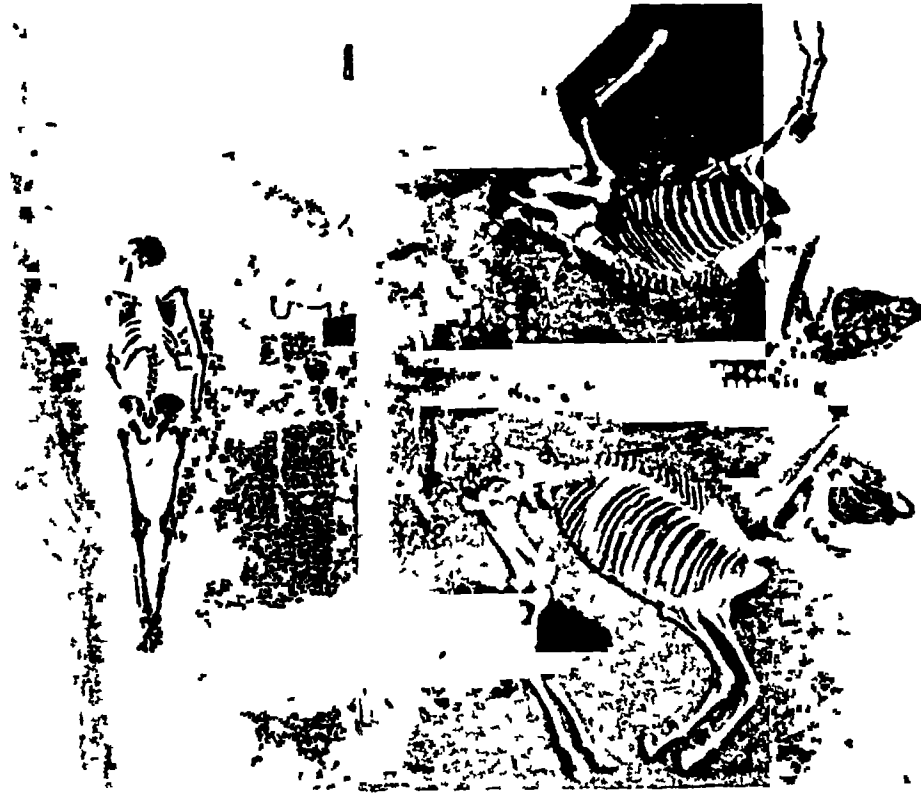
(38) बाद की कुछ कब्रों में राजा को उसके घोडों से खींचे जाने वाले रथ में ही दफना दिया गया था। इस चित्र में घोडों और सारथि के ककाल दिखाई पडते है और यद्यपि रथ का लकडी का ढाचा पूर्णत नष्ट हो चुका है फिर भी मिट्टी पर छोडा हुआ उसका निशान बिल्कुल साफ है। यह रथ दो-पहियों वाला एक वाहन था, जिसका भारी द ड पहियो से पीछे निकला रहता था ताकि रथ का ढांचा सतुलित रहे।

(39) रास में बड़ी-बडी गुरिया लगी होती थीं (यह प्रचलन ऊर में भी था) और घोडो की गर्दनों पर एक लम्बी-सी चीज—एक कांसे का काटा—उठी रहती थी, इस काटे के शीर्ष पर एक घुडो होती थी, जो शायद सजावट मात्र के लिए थी।
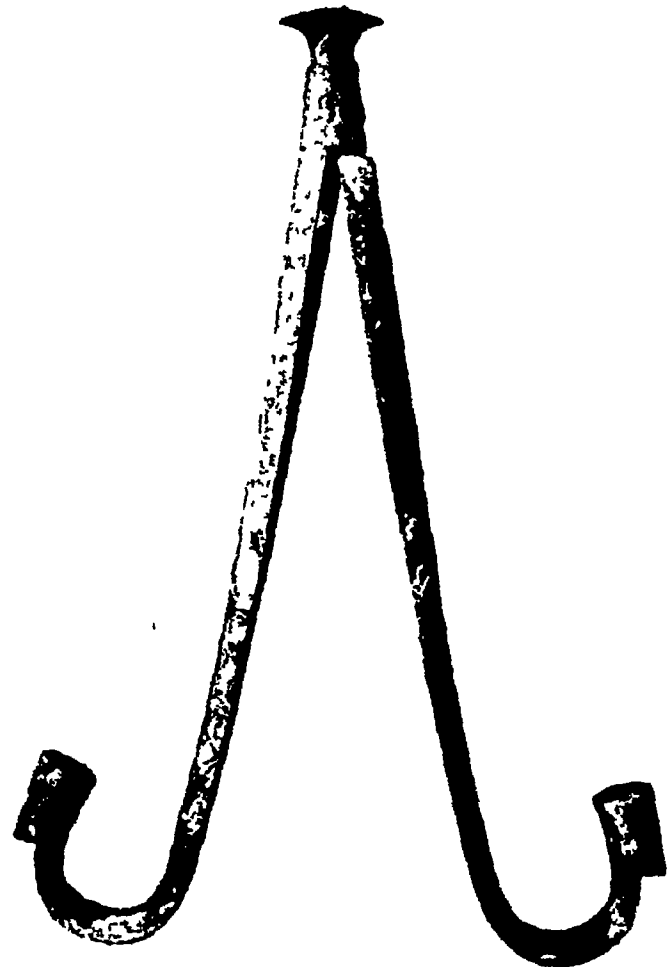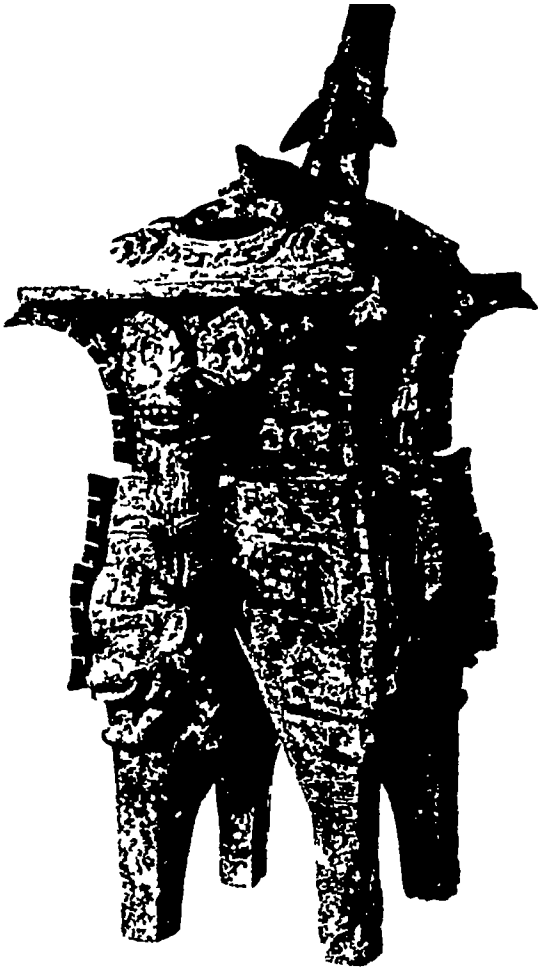
(4ᴦ) अयाङ् की समाधियों में प्राप्त सर्वोत्कृष्ट वस्तुए
थी कांस्य के पात्र। इनका एक नमूना यहा प्रस्तुत है। इन
सभी पात्रों पर हर जगह बढिया पेटर्न खुदे हुए हैं औ
कभी-कभी बडी आकृतिया भी हैं। ये कांसे की ढलाई
की तकनीक के श्रेष्ठतम उदाहरण है, और कोई भी
परवर्ती कलाकृति इतनी ही या अधिक अच्छी नहीं है।

(41) कासे का यह अपूर्व सस्कार-पात्र किसी सुनियोजित
उत्खनन में नहीं मिला, वरन् समाधि के डाकुओं ने इसक
अपहरण कर लिया था (और ऐसा अक्सर होता है), यह
कारण है कि इसके बारे में कोई भी जानकारी हमें नहीं है
फिर भी, शैली को दृष्टि में रखते हुए इसे निस्सकोच
अयाङ् का बताया जा सकता है। इसकी सतह इतन
अधिक परिरक्षित है कि पुराने चीनी कास्य ढालने वाल
की साहसपूर्ण और सूक्ष्म कारीगरी और उनकी डिजाय
की सुन्दरता स्पष्ट दीखती है।

(42) सभव है कि कांसे को ढालने की तकनीक चीनिय
ने अन्य लोगों से सीखी हो, लेकिन उन्होंने इसका उपयो
अपनी विशिष्ट कला में किया। यही कारण है, कि चि
40 में प्रदर्शित कांस्य पात्र की विचित्र टांगों का स्पष्टी
करण इस प्रकार के मिट्टी के बर्तन को देखते ही हो जात
है, नुकीले आधार वाले तीन बर्तनों को एक कोण पर इस
तरह जोड दिया गया कि एक तिपाई-सी बन जाय। इस
किस्म की चीजें चीन में पाषाणकाल से चली आती थीं।
कारीगरों ने धातु का उपयोग सीख लिया तो वे उसी से
पारम्परिक एव अनिवार्यत चीनी आकृतियों का निर्माण
करने लगे।
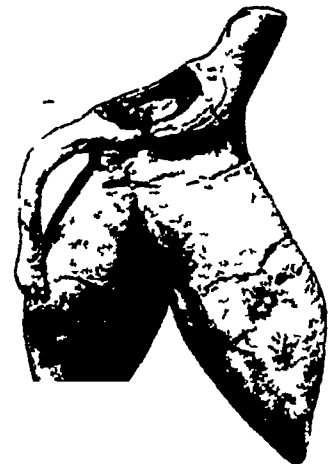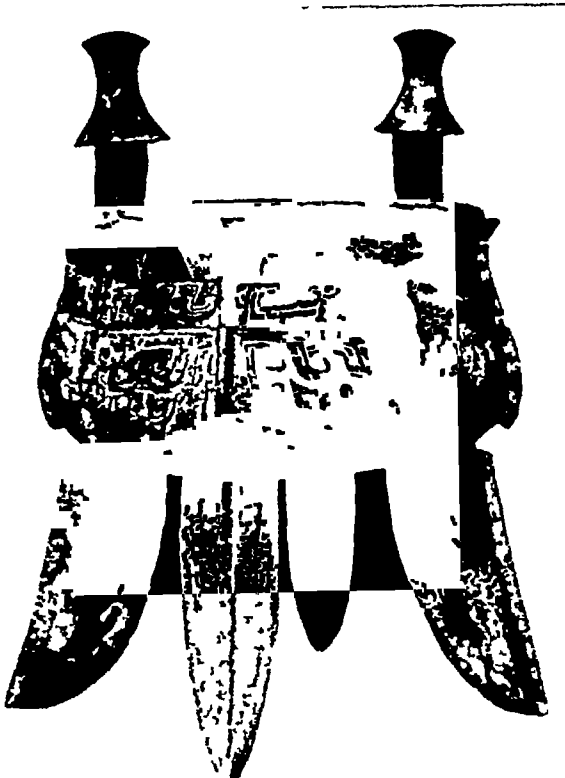
क्नोसस

पिछली शताब्दी के नवें दशक के प्रारम्भ मे श्लीमान ने, जिसने कुछ समय पूर्व ही त्राय और मिकीनी मे चमत्कार दिखाया था, अपना रुख क्रीत की ओर किया। यह आकर्षण अशत यूनानी कथाओ (जिनमे मिनोई सभ्यता का तनिक भी जिक्र न था) से हुआ और अशत भौगोलिक उपादानो से। लेकिन राजनीतिक कठिनाइयो के कारण वह खुदाई न कर सका। 1893 मे आर्थर इवान्स ने यूनानी समाज के सामने एक चमत्कारपूर्ण खोज प्रस्तुत की, उसने सिद्ध किया कि अनेकानेक उत्कीर्ण मुद्रा-प्रस्तर, जो यूनानी पेलोपोनेस मे निर्मित समझे जाते थे, वास्तव मे क्रीत मे उपजे थे, उन पर उसने चित्रात्मक लिपि देखी और उसे विश्वास हो गया कि प्रागैतिहासिक क्रीत मे लिखने की कला ज्ञात थी। श्लीमान को जिन तर्को ने प्रभावित किया था वे इवान्स को भी ठीक लगे—वह भी पता लगाना चाहता था कि मिनोस और दिदालस तथा विख्यात भूलभुलैया की परम्पराओ के पीछे क्या है, साथ ही, लिपि के आदिरूप की तलाश भी उसे थी। इन्ही कारणो से वह क्रीत पहुंचा। उसने तय किया कि कैण्डिया के पीछे एक टीला, जहाँ पर श्लीमान के समय मे ही सतह पर कुछ वस्तुएँ मिली थी, सबसे ज्यादा अच्छा है, उसने क्नोसस के स्थल को खरीद लिया, और 1900 मे, जब परिस्थितिया अधिक शान्तिपूर्ण हो गयी, उत्खनन कार्य प्रारम्भ कर दिया।

पहले ही मौसम मे अद्भुत खजाने मिले, जिनमे वहुसख्यक मृद्फलक भी शामिल थे जिन पर अज्ञात लिपि मे कुछ लिखा हुआ था। ये फलक कच्ची मिट्टी के थे लेकिन जिस आग ने इमारत को ध्वस्त कर दिया था उसी मे ये सौभाग्यवश पक कर कडे हो गए थे। आगे के मौसमो मे क्नोसस मे कुल मिलाकर 1600 से अधिक मृद्फलक मिले। द्वीप के दक्षिणी भाग मे स्थित फीस्टस मे तथा मालिया मे और फलक मिले। यूनान की मुख्य भूमि पर आर्कोमीनस, पाइलस और मिकीनी मे भी फलक खोदकर निकाले गए। अब स्पष्ट था कि मिनोई क्रीतवासियो ने लिखावट की किसी प्रणाली का आविष्कार किया था जो कालान्तर मे समस्त मिकीनी साम्राज्य मे फैल गयी थी।

इवान्स ने तीन अलग-अलग लिपिया पहचानी। सबसे पुरानी विशुद्ध चित्रलिपि थी, और इससे दो किस्म की प्रवाही लिपियो का विकास हुआ था। उनमे से एक थी 'लीनियर ए', जिसका उपयोग क्नोसस मे उसके स्वर्ण युग से लगभग 1400 ईसापूर्व तक, जब मिकीनियो ने क्रीत पर आधिपत्य जमा लिया, होता था, दूसरी, 'लीनियर बी', को मिकीनियो ने स्वीकार कर लिया था और यूनान की मुख्य भूमि पर तथा क्रीत मे अपने पतनकाल (लगभग 1200 ईसा पूर्व) तक प्रयोग किया था। इस प्रकार इवान्स ने अपनी महत्त्वाकाक्षा को प्राप्त कर लिया था। उसने दिखा दिया कि श्लीमान द्वारा अन्वेपित मिकीनी सभ्यता का स्रोत क्रीत था और सिद्ध कर दिया कि दोनो सभ्यताओ मे लिखने की कला प्रचलित थी।

इवान्स की खोजो द्वारा प्रकाशित मिनोई सभ्यता ने ससार को चकित कर दिया। इस सभ्यता के कुछ तत्त्व मिस्र के थे और कुछ एशिया के, लेकिन क्रीतवासियो ने इन सभी ऋणदानो का पूर्णत परिपाक करके इन्हे एक मौलिक और विशिष्ट कला मे वदल दिया था। वास्तु की दृष्टि से, क्रीत का कोई प्रासाद किसी अन्य देश के प्रासाद के समान न था, उसकी डिजायन और तकनीक भव्य तथा द्वीप की जलवायु और वहाँ के निवासियो की जीवन-पद्धति के अनोखे ढग से अनुरूप थी। कुछ चीजो जैसे जल-निस्सारण और जल-सम्भरण—का प्रवन्ध तो इतना वढिया था जो यूरोप मे उन्नीसवी शताब्दी ईस्वी तक कही सम्भव नही हो सका। प्रासाद का अलकरण श्रेष्ठतम होता था। दीवारे भित्तिचित्रो से सज्जित थी। ये चित्र चित्रकला के श्रेष्ठतम उदाहरण थे, जिनकी मूल प्रवृत्ति परवर्त्ती मेसोपोटामिया के दिखावटी अहकार तथा समकालीन मिस्र के दूसरी दुनिया के प्रति पूर्वग्रह एव आध्यान से नितान्त भिन्न थी, और जीवन की खुशियो की साक्षी थी। मिनोई कला—हाथीदात या कास्य की कोमल नक्काशियो या चित्रित भाडो मे प्रदर्शित—सदैव क्रीत की अपनी विशिष्टता लिए हुए है, उसमे सौंदर्य के प्रति वेलाग प्रेम, एक ठोस सौंदर्यवोध दीखता है, जो अक्सर पुरानी दुनिया की अन्य सभ्यताओ मे परिलक्षित नही होता।

क्नोसस ने दुनिया की आँखे खोल दी। लेकिन सवाल उठा—इसका महत्त्व क्या है ? यह

एक छोटे से द्वीप और अपेक्षया अल्प कालावधि तक सीमित, मानव की बुद्धि की एकान्त उपलब्धि मात्र है, या मानव की प्रगति के इतिहास मे योग भी देती हैं ? इवान्स का दृढ विश्वास था कि क्नोसस ने मानव-प्रगति मे निश्चित योग दिया है, कि वह यूनान का पूर्वज था जिसकी उपलब्धियो के आधार पर ही क्लासिकल युग के आश्चर्यों की व्याख्या सभव है। पाचवी शताब्दी ईसापूर्व की यूनानी कला का आदि स्रोत दूसरी सहस्राब्दी की क्रीती कला थी। अनेक पुराविद् शुरू से इवान्स से सहमत थे, लेकिन पुराने स्कूल के पुरावेत्ता को उसके दावे अतिशयोक्तिपूर्ण मालूम पडते थे, उनके लिए तो जिस तरह एथेन्स शस्त्रास्त्रयुक्त ज्यूस के सिर से निकल पडा था, उसी तरह प्राचीन यूनान की सभ्यता किसी अन्य प्राचीनतर सभ्यता से उद्भूत नही वरन् छठवी शताब्दी की ऐटिक मेधा के कारण स्वजन्मा थी। मुझे एक घटना याद है। इवान्स एक विख्यात पुराविद् को अपनी बात समझाने की कोशिश कर रहा था। उसने उनके सामने क्नोसस से प्राप्त कीमती वस्तुएँ, जो उस समय अश्मोली सग्रहालय मे थी, प्रदर्शित की। विद्वान् महोदय सुनते रहे और फिर कुछ अनुग्रह एव कुछ अवज्ञा से मुस्कराकर, शेक्सपियर जैसे श्लेष मे बोले, 'हाँ, इवान्स, चीज मामूली है किन्तु मिनोई है!' उनकी दृष्टि मे, क्नोसस एक विदेशी और अलग-थलग जगह थी, इसलिए उनकी दिलचस्पी की हकदार न थी. मान लिया कि क्रीत ने मिकीनी का निर्माण किया, लेकिन इससे क्या; मिकीनी की हस्ती तक यूनानियो ने मिटा दी थी और, कथाओ को नजरअन्दाज कर देने पर भी, परवर्ती इतिहास पर मिकीनी का चिन्ह तक शेष नही रहा; मिकीनी और प्राचीन यूनान तथा क्रीत और प्राचीन यूनान मे तो निस्सदेह कोई समानता न थी।

तब 1953 मे, अप्रत्याशित घटित हुआ। माइकेल वेन्त्रिस एक वास्तुक था जिसकी पुरातत्व मे विशेष रुचि थी। उसने घोषणा की कि जॉन चैडविक के साथ मिलकर उसने क्रीती 'लीनियर बी' लिपि के रहस्य का उद्घाटन कर लिया है, रहस्यमय मृद्फलको को पढा जा सकता था और जिस भाषा मे वे लिखी गयी थी वह थी ग्रीक।

समस्त ससार के विद्वानो ने निरपवाद रूप से वेन्त्रिस के निष्कर्षों को स्वीकार कर लिया है और इसके परिणाम व्यापक हैं। हम अभी तक नही जानते कि विशुद्ध क्रीती 'लीनियर ए' लिपि की भाषा भी ग्रीक ही है या नही, लेकिन इसके बावजूद इवान्स का विचार सत्य सिद्ध हो चुका है। 1400 ईसा पूर्व से बहुत पहले, यूनान के मिकीनियो ने, जो शायद उस समय मिनोस के अधीन थे, क्रीती कला को इतना हृदयगम कर लिया था कि अक्सर आधुनिक पुराविदो के समक्ष एक समस्या आ खडी होती है. वे सहसा निर्णय नही कर पाते कि मिकीनी, तिराइन्स या पाइलस मे उत्खनित किसी वस्तु का निर्माण स्थानीय था या क्नोसस से उसका आयात हुआ। जहाँ तक मृद्भाडकला जैसी लघु कलाओ का सम्बन्ध है, उनकी कारीगरी अनिवार्यत स्थानीय थी, और अनुकृति मात्र से आरम्भ होकर

वह एक पृथक् सम्प्रदाय मे बदल गयी, जिसे क्रीती के मुकाबले मे मिकीनी कहा जाता है, लेकिन यह मूल की ही एक शाखा मात्र है। 1400 ईसा पूर्व मे जब मिकीनियो ने मिनोई आधिपत्य को उतार फेंका, तब उन्होंने अपनी राजनीतिक शक्ति मुख्य भूमि के नगरो मे स्थानान्तरित कर दी, लेकिन वहाँ पर भी उन्होंने जिस सस्कृति को बनाए रखा वह मूलत क्रीती थी। और वे स्वय यूनानी थे। इस महत्त्वपूर्ण खोज के फलस्वरूप क्नोसस और एथेन्स को मिलाने वाली कडी जुड गयी है।
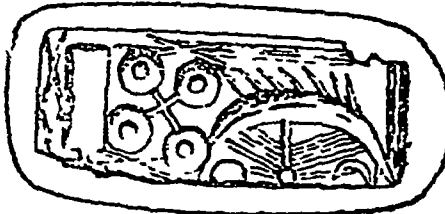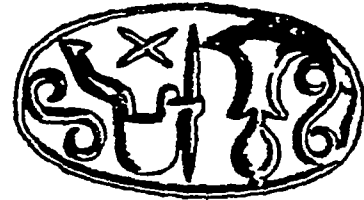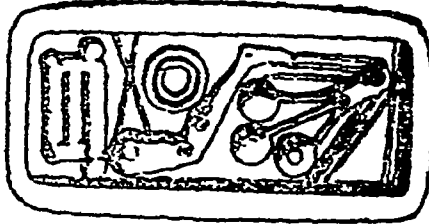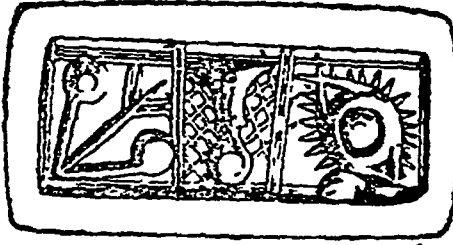
(44-45) छ: वर्ष के उत्खनन के बाद, 1900 में, इवान्स की खोज सफल हुई, ढेर के ढेर अभिलिखित मृद्फलक प्राप्त हुए। अधिकाश मृद्फलक 'लीनियर बी' नामक लिपि में, जो क्नोसस में प्रचलित तीसरे प्रकार की लिखावट थी, लिखित थे, और अधिक्तर राजप्रासाद की सम्पत्ति की सूची—अनाज, औजार, रथ या रथ के हिस्सों के रिकार्ड, या राज्य की सेवा में तैनात स्त्री-पुरुषों की नामावली थे। यहां प्रदर्शित दो में से बडा फलक अलग किस्म का है और इवान्स ने सुझाव रखा कि यह शायद अनुबन्ध या कानूनी कागज है।
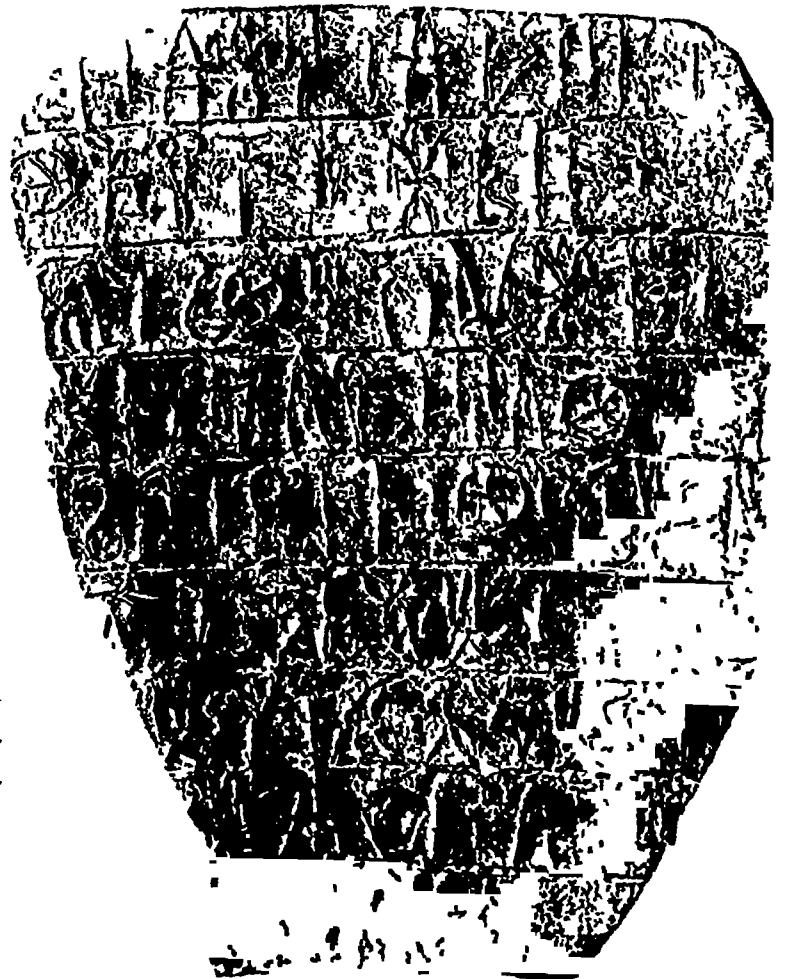
(43) ये हैं कुछ क्रीती मुद्रायें जिन पर पैटर्न उत्खचित है। इन्हीं पटर्नों को इवान्स ने चित्रलिपि में लिखे हुए चित्रलेख माना। और इसी प्रेरणा से उसने क्रीत में खुदाई की।

(47) पश्चिमी द्वारमडप के इस पुनर्नियोजित रेखाचित्र में दिखाया गया हे कि प्रासाद का अन्तर्भाग मूलत केसा दिखाई देता था। दीवारों ओर छतों पर खुशनुमा चित्र बनाये गये थे—उनमें से एक बेलयुद्ध का दृश्य भी था।

(46) मिनोई वास्तु के वेभव और महत्त्व का प्रदर्शन इस चित्र में होता है जो प्रासाद के 'विशाल सोपान' के सामने वाले बरामदे का है। लकड़ी के शुडाकार खम्भे आधार की अपेक्षा शीर्ष पर अधिक मोटे हैं—कठोर मिट्टी पर लकडी के क्षय से बने सूराखों के प्लास्टर 'कास्ट' लेकर उनकी आकृति का निर्णय किया गया था। दीवार की आधी ऊचाई पर सर्पिल अलकरण की एक पट्टी है जिसके ऊपर अगरेजी के अक आठ के आकार की ढालें दीख रही हैं—इन्हीं ढालों को क्रीती सिपाही लेते थे। बेल के चमडे से बनी चितकबरी ढालें यहां पर तो सिर्फ चित्रित हैं, लेकिन कई बार अलंकरण की ऐसी पट्टी पर असली ढालें भी लटकाई जाती थीं। सारा स्थान खुशनुमा गीन था।

(48) टूटकर गिरे हुए भित्ति चित्रों के टुकडों को यथा-स्थान जोडना एक मुश्किल काम था; बहुत कुछ अश एकदम गायब हो गया था, चूर-चूर हो गया था। कुछ पुनर्नियोजन को तो सदा जरूरत पडी, लेकिन सम्पूर्ण दृश्य भी प्राप्त हुए, जिनसे प्रासाद के अलकरण का पूरा पता लगता है। इस चित्र में एक महिला वृषयोद्धा बैल को पीठ के ऊपर से उछलकर जमीन पर उतर रही है।

(49) यह जगली कुकुम के फूल तोडकर डलिया भरने वाले एक बालक का लुभावना चित्र है। मिनोइयों का प्रकृति-प्रेम इस चित्र में स्पष्ट है। घर से बाहर के प्राकृतिक जीवन के अनेक दृश्यों तथा समुद्री दृश्यों में भी, जिनमें मछलियाँ, अष्टपाद और नॉटिलस का यथार्थ अकन है, उनका प्रकृति-प्रेम इतना ही स्पष्ट है।
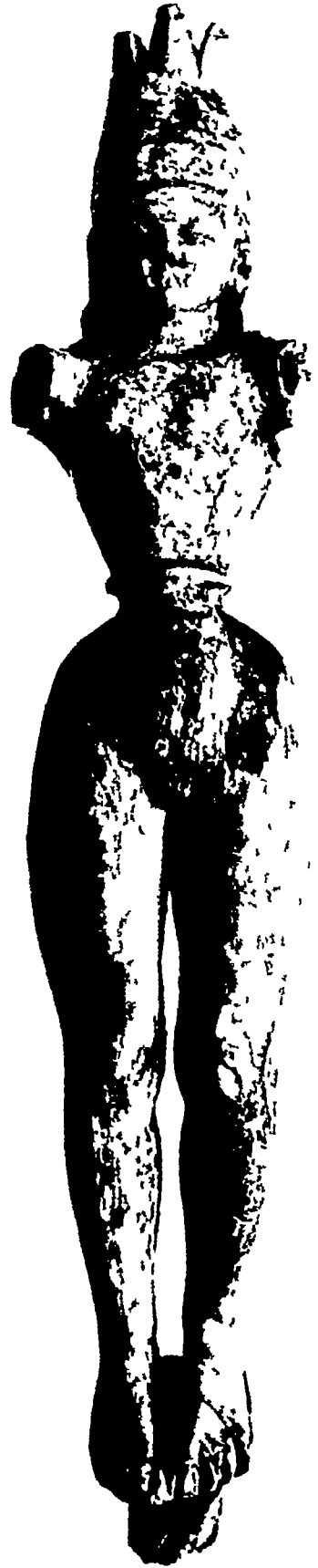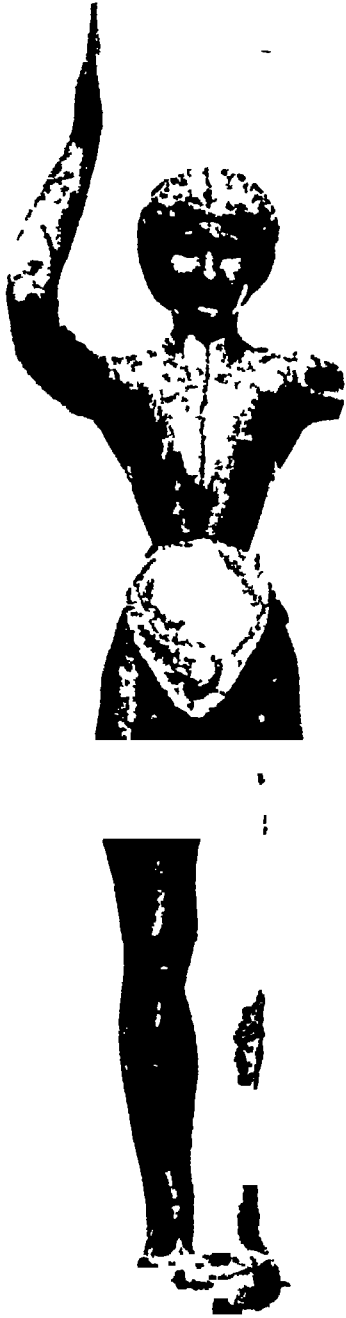
(50) भित्ति चित्रकार गीले प्लास्टर पर रंग लगाता था, इसलिए तेजी से काम करना और गलतिया न करना उसके लिए आवश्यक था, क्योंकि एक बार खींची हुई रेखा को मिटाना या बदलना किसी भी प्रकार सम्भव न था। इसीलिए चित्र प्रभाववादी रेखाचित्र मात्र है। मिनोई शिल्प की सुकुमारता सोने और हाथीदात की मूरतों में देखी जा सकती है। इतने बहुमूल्य पदार्थ केवल सर्वोत्तम कलाकारों को सौपे जाते थे और ये छोटी-छोटी मूरतें—इनकी ऊचाई लगभग छः इच है—क्रीती कला की महान कृतिया हैं।

बाल-देवता की यह मूर्त्ति हाथीदात में तराशी गई है और सोने के पत्तर का लंगोट पहने है (शायद टोपी भी, जो अब अप्राप्य है, सोने की थी)। यह लघु-मूर्त्तिकला का अपूर्व नमूना है। अत्यधिक पतली कमर परम्परा की देन है—सौन्दर्य के क्रीती आदर्श में कमर का पतलापन अनिवार्य था, इसके अतिरिक्त मूर्त्ति में कोई पुरानापन नहीं है।

(51) एक अन्य मूरत भी बाल-देवता की है, लेकिन इस बार देवता की उम्र बहुत कम है, वह फूले गालो वाला बच्चा है, सोने का लगोट और किरीट, जो कभी उसके शरीर पर थे, अब अप्राप्य है। वह पजो के बल खडा है, उसका शरीर पीछे को तनिक झुका है, उसकी बाहें (एक अप्राप्य है) मानो आराधनार्थ ऊपर उठी है। प्रत्येक विवरण अत्यन्त कलात्मक ढग से पूरा किया गया है और कलाकार के उद्देश्य को न पहचान पाना असम्भव है—उसकी दृष्टि में देवता का शरीर एक छोटे बच्चे-सा है, लेकिन छिपी शक्ति और दृढता के कारण वह मानव-मात्र से ऊपर उठ जाता है।

(52) दूसरी ओर, 'फसल काटने वाले किसानों के पात्र' के मनोरजन मग्न किसान सर्वथा मानवीय है। यह सगमूसा का पात्र है, जिसपर ग्रामवासियों का एक जुलूस सुन्दरतापूर्वक तराशा गया है। जुलूस का नेता एक अजीबोगरीब वस्त्रधारी वृद्ध है और उसके साथ एक सिर-मुडाये आदमी है जो एक तरह का झुनझुना बजा रहा है, तथा पीछे चलने वाले लोग गला फाडकर चिल्ला रहे है। हर क्रीती गाव में मनाया जाने वाला 'फसल घर में' नामक त्यौहार मनाया जाता था और वही इस पात्र पर दिखाया गया है, सर्वथा यथार्थता और तनिक परिहास की चाशनी सहित।

(53, 54) प्रासाद के एक कोश में प्राप्त मिट्टी और चीनी मिट्टी की रंगीन वस्तुओं के उच्चित्रों में भी यथार्थ चित्रण है। मेमनों सहित बकरी एक अत्यन्त विशेष कृति है, निम्न उच्चित्रण में, इसका प्रतिरूपण निर्दोष है, एकीकरण कौशलपूर्ण है तथा कलाकार ने सहानुभूतिपूर्वक प्रकृति का निरीक्षण किया है। इस दृश्य की कोमलता की तुलना 'बैलों के खेल' के जिसकी परम्परा का सूत्रपात मिनोतोर की कथा से हुआ है, उतने ही यथार्थ (किन्तु अधिक आयोजित) निरूपण से की जा सकती है। यहां पत्थर के एक उत्कीर्ण पात्र पर, बैल शक्ति और उग्रता का प्रतीक है तथा नट एक खतरनाक छलांग में उसे पार कर रहा है।

खल्दियों का ऊर

ऊर के उत्खननो का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि मेसोपोटामिया का कालनिर्दिष्ट इतिहास पाच सौ साल और पीछे खिसक गया तथा अब तक सर्वथा अज्ञात काल की सस्कृति का पता राजसी मकबरो की आश्चर्यजनक समृद्धि मे लगा । उसके बाद से, ऊर तथा अनेक अन्य उत्खनित स्थलो से, हमे इससे भी पहले के काल के बारे मे बहुत कुछ पता चला है; एक ओर प्रागैतिहासिक सस्कृतियो का क्रम तो स्पष्टत निर्धारित किया जा चुका है पर उनकी निश्चित तिथियो के बारे मे अब भी मतभेद है, किन्तु दूसरी ओर ऊर का प्रथम वश, जिसे पहले पौराणिक कल्पना मात्र समझा जाता था, इतिहास की सीमा मे आ गया है । मेसोपोटामिया के प्राग्-इतिहास को पुरातत्व के अनुसार चार कालो मे विभाजित किया गया है और अन्तिम काल को 'आदि राजवश काल' कहा जाता है , इसी काल का अन्तिम समय मानव के नदी घाटी पर आवास के परवर्ती युग मे, जब सुमेरी सभ्यता अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी, लगभग 2600 ईसा पूर्व से हमारे लिखित इतिहास का अब आरम्भ होता है । और इसी कारण यह अत्यधिक मूल्यवान है— अनेकानेक कलाकृतियो का विशुद्ध काल-निर्धारण सम्भव है, जो इस ज्ञान की अनुपस्थिति की दशा मे लगभग असम्भव हो जाता ।

1919 मे, डाक्टर हाल ने, ऊर के एक वाहरी उपनगर उवैद घाटी नामक एक छोटे से स्थल पर खुदाई करते हुए, अनेक वढिया कास्य उच्चित्र पाये। इस तरह के उच्चित्र पहले कभी देखे तक न गये थे। 1923-24 मे, उनके काम को जारी रखते हुए, हमे अनेक अन्य वस्तुएँ तथा मन्दिर की अभिलिखित आधार-शिला मिली, जिसमे उस समय तक अविश्वसनीय ऊर के प्रथम राजवश के एक राजा का नाम लिखा था। इससे हमे सभी प्राप्त वस्तुओ के काल का पता चल गया, अव हमारे पास राजवश की ऐतिहासिकता का पुष्ट प्रमाण था और इमारत का अलकरण उस समय की श्रेष्ठ कला का साक्षी था।

वाद मे हमने ऊर की राजसी श्मशान-भूमि खोद निकाली। वहाँ पर सोने, चाँदी और कीमती पत्थरो की वहुत सी चीजे मिली। ऐसा सौभाग्य पुराविदो को वहुत कम प्राप्त होता है। और यहाँ पर भी इन वस्तुओ ने ऐतिहासिक प्रलेखो की महत्ता ग्रहण कर ली, क्योकि उनका भी काल-निर्धारण किया जा सकता था। जिस जमीन पर कब्रें खोदी गयी थी उसकी ढलवाँ सतह पर कूडा-करकट, टूटी-फूटी ईंटो और मिट्टी के वर्तनो के टुकडो की एक पर्त मिली। सघन और एक समान यह पर्त किसी इमारत या किन्ही इमारतो की है जो इस ढाल पर खडी थी और जिन्हें जानवूझ कर गिरा दिया गया था। अनेक वर्तनो के मुँह पर मिट्टी के ढक्कन थे। इन्ही मे ऊर के प्रथम राजवश के पहले राजा मेस-अन्नी-पद्द (जिसका नाम हमे अल उवैद के मन्दिर मे पहले ही मिल चुका था) और उसकी पत्नी निन-तुर-निन की मुहरें भी शामिल हैं, और इन्ही के साथ हमे खुद निन-तुर-निन की असली नीलम की मुहर भी मिली। इस तरह कूडे की पर्त का काल-निर्धारण ठीक ठीक किया जा सका था और उसमे दवी हर चीज स्पष्टतः उतनी ही या उससे अधिक पुरानी थी।

उसमे दवी थी सोलह राजाओ और रानियो तथा उनके सैकडो प्रजा-जनो की कब्रें। राजाओ-रानियो तथा प्रजाजनो की कब्रो का अन्तर स्पष्ट था। साधारण स्त्री-पुरुषो की लाशें पकायी हुई मिट्टी या लकडी या वेंत के तावूतो मे रखकर या सिर्फ नरकुल की चटाई मे लपेट कर दफना दी जाती थी; लेकिन प्रत्येक के लिये अलग से एक गहरा गड्ढा खोदा गया था और वे अलग-अलग रखी गयी थी। धनवानो की कब्रो मे सोने-चाँदी की वहुसख्यक वस्तुएँ थी और धनहीनो की कब्रो मे सिर्फ एक या दो मिट्टी के वर्तन, लेकिन इतना ज़रूर था कि व्यक्ति की सामाजिक स्थिति के अनुसार धार्मिक भावना से केवल उसके लिये ही चढी गयी थी। लेकिन जिन्हे मैंने 'राजसी समाधि' नाम दिया था, वे विल्कुल अलग थी। कब्र का मामूली गड्ढा वदल कर एक वडा गड्ढा हो गया था जिसकी तलहटी पर एक समाधि-प्रकोष्ठ या कई समाधि-प्रकोष्ठो वाला 'घर' पत्थर और ईंटो से वनाया गया था, इसमे राजसी शव तथा उसके साथ एक या अधिक वैयक्तिक अनुचरो के शव रख कर प्रकोष्ठ का द्वार ईंट या पत्थर से वन्द कर दिया जाता था। फिर, वाहर के गड्ढे मे मृत शासक के दरवारियो और नौकरो—वढिया दरवारी वस्त्र तथा सोने और इन्द्रगोप और नीलम के किरीट पहने स्त्रिया, अफसर जिनके सुनहरे अस्त्र उनके उच्च पद के साक्षी थे, वीणा और

रुपहली वासुरी धारी सगीतज्ञ, पहरेदार सिपाही, तथा खच्चर या वल जुता हुआ राजसी रथ—के शरीर मिले थे। लेकिन अन्त यही नही था। गड्ढे मे वैठे हुए लोग जव नशा पीने के वाद मदहोश होकर सो जाते थे और उन्हें मिट्टी से लाद दिया जाता था, तब भी सस्कार पूरा नही होता था। जव एक तल तक मिट्टी पहुँच जाती थी तो उसे पीट-पीट कर समतल कर दिया जाता था और इस तरह तैयार फर्श पर फिर अन्त्येष्टि की दावत होती थी और उसमे भाग लेने वाले आदमियो को मिट्टी डालकर दफन कर दिया जाता था। ऐसा थोडी-थोडी दूर पर किया जाता था, यहाँ तक कि गड्ढा पूरा भर जाता था और शायद उस पर पूजागृह वना दिया जाता था।

मुझे पूरा विश्वास था कि ये उन राजाओ और रानियो की समाधियाँ थी जो प्रथम राजवश से तत्काल पहले, जव मेस-अन्नी-पद्द ने सम्पूर्ण सुमेर को अपने अधीन कर लिया था (हमे एक ऐसे व्यक्ति की मुहर सचमुच मिली, जो स्वय को 'राजा मेस-कलम-दुग' कहता था) ऊर के नगर-राज्य पर शासन करते थे। और मुझे यह देखकर अफसोस हुआ कि मेरा दृष्टिकोण विवाद का विषय वना दिया गया। अपने निष्कर्ष मे मैंने विशुद्ध रूप से पुरातात्विक प्रमाणो का आश्रय लिया था, और अव पुरातात्विक प्रमाणो पर ही सन्देह किया गया था।

विद्वानो ने तर्क किया कि ये राजसी समाधियाँ नही हो सकती क्योकि किसी भी साहित्यिक कृति मे नही कहा गया है कि राजा की अन्त्येष्टि के साथ मानव-वलि भी होती थी, इसलिये यह नही कहा जा सकता कि प्राचीन सुमेरियो मे ऐसी कोई प्रथा थी। ये राजा नही हो सकते क्योकि सुमेरी राजाओ की सूची मे उनके नाम नही मिलते। दूसरी ओर, सुमेरी वर्ष का सवसे बड़ा धार्मिक उत्सव वसन्तोत्सव था जिसमे धरती पर उपज वढाने वाले देवी-देवता का विवाह रचाया जाता था, जाडे मे प्रकृति की मृत्यु और वसन्त मे उसका पुनर्जन्म का विचार तथा वसन्तोत्सव दोनो के वल पर मानव-वलि हो सकती थी (जैसा अन्य पश्चिमी एशियाई देशो मे हुआ था); मानव पति और पत्नी को दैवी दम्पति के रूप मे रखा और वाद मे कत्ल कर दिया जाता था, और वैसे तो पारम्परिक दूल्हा राजा स्वय होता था किन्तु इस वलि के लिये उसके स्थान पर एक अन्य व्यक्ति को मरवा दिया जाता था। अत, तर्क था कि, ऊर की समाधियाँ वस्तुत राजाओ की समाधियाँ ही नहीं है।

मेरे दृष्टिकोण से अन्य पुराविद् सहमत थे, किन्तु साहित्यिक विद्वान् साधारणत असहमत। विशुद्ध पुरातात्विक प्रमाणो के अध्ययन और मूल्याकन का अभ्यास उन्हे न था, और हर नुक्ते पर उनके सिद्धान्त के विरोधी ये सारे प्रमाण उनके लिये अकारण वहुत महत्त्वपूर्ण वन गये। वेशक उतना ही सच यह भी हो सकता है कि मैने, अपने प्रशिक्षण-जन्य पक्षपात के कारण, अपने तर्क पर वहुत जोर दे साहित्यिक प्रमाण को गौण वना दिया हो, जो कुछ भी हो, समझौते की सूरत नजर नही आती थी और सकट काफी कष्टप्रद था। तव, 1944 मे, डाक्टर क्रैमर ने एक वहुत प्राचीन कीलाकार लेखपट्टी का प्रकाशन किया। अव यह फिलाडेल्फिया के विश्वविद्यालय सग्रहालय मे है और अपूर्व है क्योकि इसमे सुमेर की राजसी अन्त्येष्टि का विवरण है। गीत है—'भाग्य के विस्तर पर वह

लेटा है, उठ नही सकता। खडे हुए लोग मौन नही हैं, बैठे हुए लोग मौन नही हैं, वे विलाप कर रहे है।' कारण, मृत राजा अकेला नही वरन् अपने सारे लश्कर के साथ है जिसमे 'उसकी प्रिय उपपत्नी, उसका सगीतकार प्रिय विदूषक, प्रिय प्रमुख भृत्य, घर के लोग, राजमहल के कर्मचारी, प्यारा कारिन्दा,' शामिल हैं। यह, निस्सदेह, वही सस्कार है जो राजसी समाधियो मे प्राप्त वस्तुओ से मिला था। लिखित प्रमाणो से पुरातत्व का यह दावा भी सत्य सिद्ध हो जाता है कि वह मिट्टी की साक्षी से ऐतिहासिक तथ्यो को उजागर कर सकता है।

(55) जार की काग पर ऊर के राजा मेस-अन्नी-पद्द का मुद्रा की छाप।

(56) 'ऊर के राजा मेस-अन्नी-पद्द के बेटे ऊर के राजा आन्नीपद्दद ने अपनी देवी निनखरसग के लिए इसका निर्माण कराया' उबेद घाटी में प्राप्त पत्थर की छोटी-सी आध रशिला पर उपरोक्त वाक्य लिखा था और इसी से ऊर के प्रथम राजवंश की ऐतिहासिकता प्रमाणित हुई। प्राचीन सुमेरी राज ओं की सूचियों में प्रथम राजवंश के पहले राजा के रूप में मेस-अन्नी-पद्द का नाम मौजूद था, लेकिन सूचियों के शुरू के हिस्सों की स्पष्ट असम्भावनाओं के कारण (राजाओं के शासनकाल एक हजार या उससे भी अधिक वर्षों के लिए थे) विद्वानों ने ऊर के प्रथम राजवंश को मान्यता देने से इनकार कर दिया था।
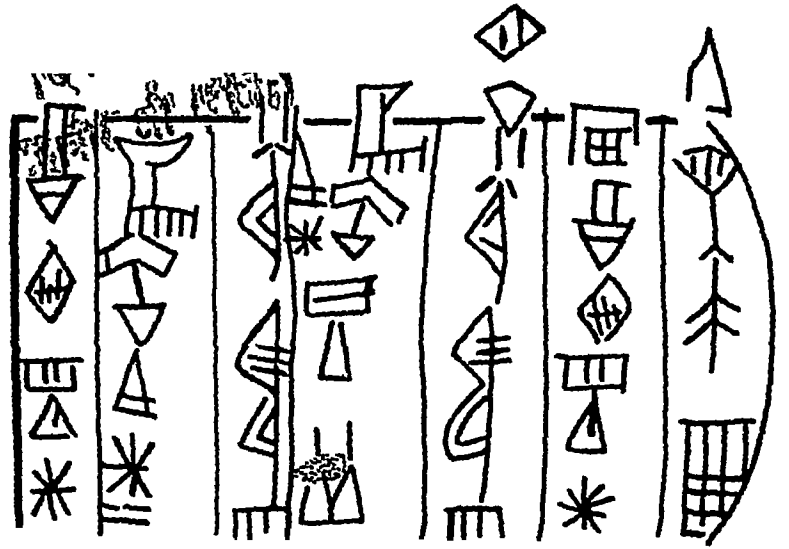
(57) मसन्नीपद्द की रानी निन-तुर-निन के नीलम पर व्यक्तिगत मुद्रा की छाप। ये राजसी कब्रिस्तान के ऊपर की कूड़े की पर्त में मिली थीं और समाधियों के काल-निर्धारण की अन्तिम सीमायें इनसे मिलीं, इनमें से अन्तिम अनिवार्यतः राजा के शासन काल से पहले की थी।

(58) उबैद के मन्दिर के अग्रभाग को अलकृत करने वाला ताम्र उच्चित्र। इससे पता चलता है कि ऊर के प्रथम राजवंश के काल में सुमेरी लोग कला और शिल्प के कितने उच्च-स्तर पर पहुँच चुके थे।

(59) राजसी शतरंज जैसे खेल की बिसात का एक अंश। पशुओं के चित्रों को सीपी-फलकों पर अंकन की विधि इस प्रकार थी पीठिका को काटकर अलग करके विवरण खोद दिये जाते थे और तब गहरी जगहों को काले मसाले या कभी-कभी काले और लाल मसाले से भर दिया जाता था।

(60) सुवर्ण पात्र। कुशलतर शिल्पियों को ही यह बहु-मूल्य धातु सौंपी जाती थी और चूंकि समय के साथ-साथ सोना क्षत या विनष्ट नहीं होता, इसलिए कलाकार की कृति अब भी वैसी ही है, जैसी अपने निर्माण के समय थी। किसी भी काल या देश में सोने का काम इतना अच्छा नहीं किया गया, जितना सुमेरियों द्वारा 2700 ईसापूर्व में किया गया यह काम था।
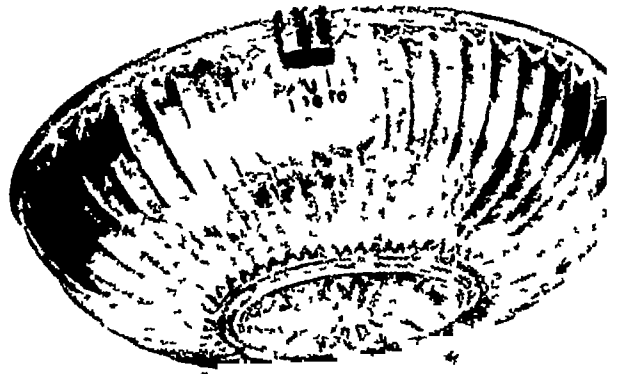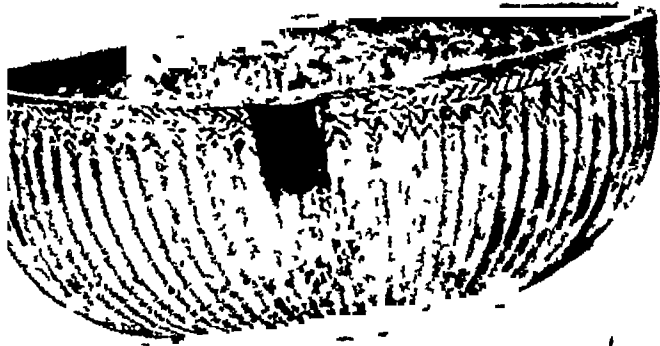
(61, 62) 'ऊर का ध्वज'। इस पच्चीकारी के काम में युद्ध-रत सुमेरी सेना और एक दावत में अपनी विजय के लिए आनन्द मनाते हुए सुमेरी राजा को दिखाया गया है। यह काम शंख, नीलम और गुलाबी चूनिया पत्थर से किया गया है। मोजेक के सभी अवशिष्ट खंड यहां अपने मूल-क्रम में परिरक्षित हैं, इतना अवश्य है कि जातुक और लकडी, जिसमें इन्हें जडा गया था, जब मिट्टी हो गयी, तो मिट्टी के दबाव के कारण वे कुछ अव्यवस्थित अवश्य हुए। ईसा से तीसरी सहस्राब्दी पूर्व की आरम्भिक शताब्दियों में सुमेरी जन-जीवन का इतना अच्छा चित्रण किसी अन्य वस्तु में नहीं है।

मोअन-जो-दड़ो
(सिन्धु घाटी के नगर)

सन् 1856 की बात है। विलियम ब्रण्टन ईस्ट इडियन रेलवे को बना रहा था। वह अपनी लाइन के नीचे बिछाने के लिए हडप्पा के पास एक ध्वस्त रेगिस्तानी नगर से लाखो ईटे ले गया। आर्कियोलॉजिकल सर्वे के निदेशक जनरल कनिघम को उसी स्थल से कुछ मुहरे और छोटी-छोटी वस्तुए मिली, उन्होने इन चीजो की नवीनता और महत्ता को माना, लेकिन 1920 तक कुछ किया नही गया। उसी वर्ष सर जॉन मार्शल ने अपहृत टीलो पर उत्खनन आरम्भ किया। 1922 मे आर्कियोलॉजिकल सर्वे के एक सदस्य आर० डी० बनर्जी ने वहाँ से 350 मील पश्चिम मे उसी तरह के एक अन्य स्थल, मोअन-जो-दडो, की खोज की और वहाँ पर भी मार्शल ने उत्खनन कार्य आरम्भ किया, जिसे बाद मे मैंके तथा फिर मार्टिमर ह्वीलर ने जारी रखा।

दोनो ही स्थलो पर आरम्भिक खुदाइयाँ वैज्ञानिक मानदडो पर खरी न उतरती थी; 'आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' के पास आधुनिक विधियो मे प्रशिक्षित कर्मचारी न थे, स्तर-विन्यास को समुचित मान्यता न दी जाती थी और काफी ऐतिहासिक महत्त्व नजरअन्दाज किया जाता था। फिर भी इन प्रारम्भिक उत्खननो का अपना महत्त्व है। काम एक बडे क्षेत्र मे काफी तेजी से हुआ था जिसके फलस्वरूप ससार के सामने एक प्रभाववादी, और कुछ विवरणो मे अशुद्ध, चित्र आया। इतने बडे पैमाने पर किये गये काम की ओर सबका ध्यान आकर्षित हुआ; यदि इतने बडे पैमाने पर उत्खनन न हुआ होता तो शायद उसे नजरअन्दाज कर दिया जाता। लेकिन हुआ यह कि सिंधु घाटी सभ्यता को यकायक और विवश होकर प्राचीन ससार की एक महान् सभ्यता मान लिया गया। स्पष्टत उसके बारे मे अधिक शुद्ध जानकारी आवश्यक थी, जो स्थलो पर आधुनिक वैज्ञानिक विधियो के उपयोग से ही (क्योकि स्थलो की सम्भावनाए अब भी काफी थी) प्राप्त हो सकती थी।

वह चित्र, जिसकी रूपरेखा 1922 के उत्खननो से बनी थी, क्या था ?

पाकिस्तान (पश्चिमी) के आर-पार फैले सिंध के विशाल मैदानो मे, जो अब अधिकतर सूखे रेगिस्तान बन गये हैं, दो नगरो के खडहर मिले; ये नगर पहले ज्ञात नगरो से सर्वथा भिन्न थे। दोनो नगरो मे मजबूत दीवारो वाले दुर्ग थे जिनमे शोभा-यात्रा के चबूतरे और कीर्तिद्वार थे। सार्वजनिक

इमारतें अनेक प्रकार की थी और पकाई हुई ईंटो से वनी थी (पत्थर कभी नही प्रयोग किया गया), इन्ही मे से एक था मोअन-जो-दडो स्थित एक विशाल पक्का तालाव जिसके गिर्द छायादार रास्ता था, एक विशाल छायादार आगन था जो शायद कोई धर्म-शिक्षागृह था और अस्सी फुट लम्वा, अस्सी फुट चौडा चौकोर खम्भो वाला हाल था। मन्दिर या राजप्रासाद को नही पहचाना जा सका। दुर्ग के नीचे लगभग वर्गाकार शहर फैला था जिसकी लम्वाई-चौडाई एक मील थी। नगर चौडी सडको से, जो एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी, अनेक खडो मे वटा हुआ था, प्रत्येक खड 1200 फुट लम्वा और 800 फुट चौडा था और उसमे रहने के घर वने थे। हर खड मे पतली सडको और गलियो का जाल-सा विछा था, जिनके कारण हर मकान तक पहुचना आसान था। उच्च वर्ग के मकान पकी ईंटो से मजवूती से वने थे, जिनकी सपाट दीवारें सडको की ओर थी और कमरे एक भीतरी आगन मे खुलते थे। एक ही तरह के वने हुए छोटे-छोटे मकानो की कतारें भी थी, जो दासो के निवास-सी दीखती है। सडकें कच्ची थी लेकिन उनके नीचे ईंटो से वनी नालिया थी, वे डाटवाली थी और उनमे आदमियो के उतरने के लिए छेद थे, घरो के गुसलखानो से आने वाली नालिया इन्ही वडी नालियो मे गिरती थी। सडको के किनारे-किनारे ईंटो के बने पीपे थे जिनमे घरो से कूडा फेंका जाता था इससे सफाई और स्वास्थ्य के प्रति उनकी जागरूकता प्रकट होती है जो किसी अन्य समय मे भारत मे नही दीखती।

अनेक छोटे स्थलो के परीक्षण से सिद्ध हुआ है कि पश्चिम से पूर्व तक, अर्थात् वलूचिस्तान के सागर-तट से शिमला पहाडियो की तराई तक, लगभग 1,000 मील के क्षेत्र मे एक ही सभ्यता का विस्तार था। मोअन-जो-दडो और हडप्पा एक महान् देश के प्रमुख नगर थे। और सभ्यता ऊँचे दर्जे की थी। वे लोग भवन-निर्माता मात्र न थे। उन्हे लिखने की कला आती थी; बहुसख्यक मुहर-पत्थरो पर विचित्र चित्र-लिपि मे अभिलेख हैं जिन्हे आज पढा नही जा सकता—उनकी व्याख्या का कोई सुराग तक नही मिला है। वे तावे और कासे का प्रयोग करते थे और धातु ढालने व आभूषण वनाने मे निपुण थे। उत्खनित वस्तुओ से पता चलता है कि उनकी कलात्मक उपलब्धियाँ भी अत्यन्त श्रेष्ठ थी। वे वणिक थे, और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार करते थे—वस्तुत, सिंघु घाटी मे, जहा प्रकृति की ओर से पत्थर या धातुए कुछ भी नही मिले है, इतनी उन्नत सभ्यता वाणिज्य के विना सम्भव ही न थी।

लेकिन जब यह सभ्यता पहली वार प्रकाश मे आयी थी तो भारत की किसी और चीज से इसका सम्वन्ध नही मालूम पडता था। यह अनादि थी—यह यकायक प्रकट हो जाती है, पूर्णत निर्मित और परिपक्व इसका कोई इतिहास न था क्योकि इसके सम्पूर्ण जीवनकाल (और यह जीवनकाल काफी लम्वा रहा होगा क्योकि मोअन-जो-दडो की इमारतो की मरम्मत या पुर्ननिर्माण कम से कम नौ वार हुआ था) मे किसी परिवर्तन, उत्थान या पतन का चिह्न तक नही दीखता इसका अन्त अवश्य हुआ—भयानक अन्त, जो मोअन-जो-दडो की सडको पर विछी लाशो से सिद्ध है—लेकिन इसी विपत्ति के वाद यह मानो गायव हो गयी और वाद के युगो मे उसका एक भी चिह्न तक शेष
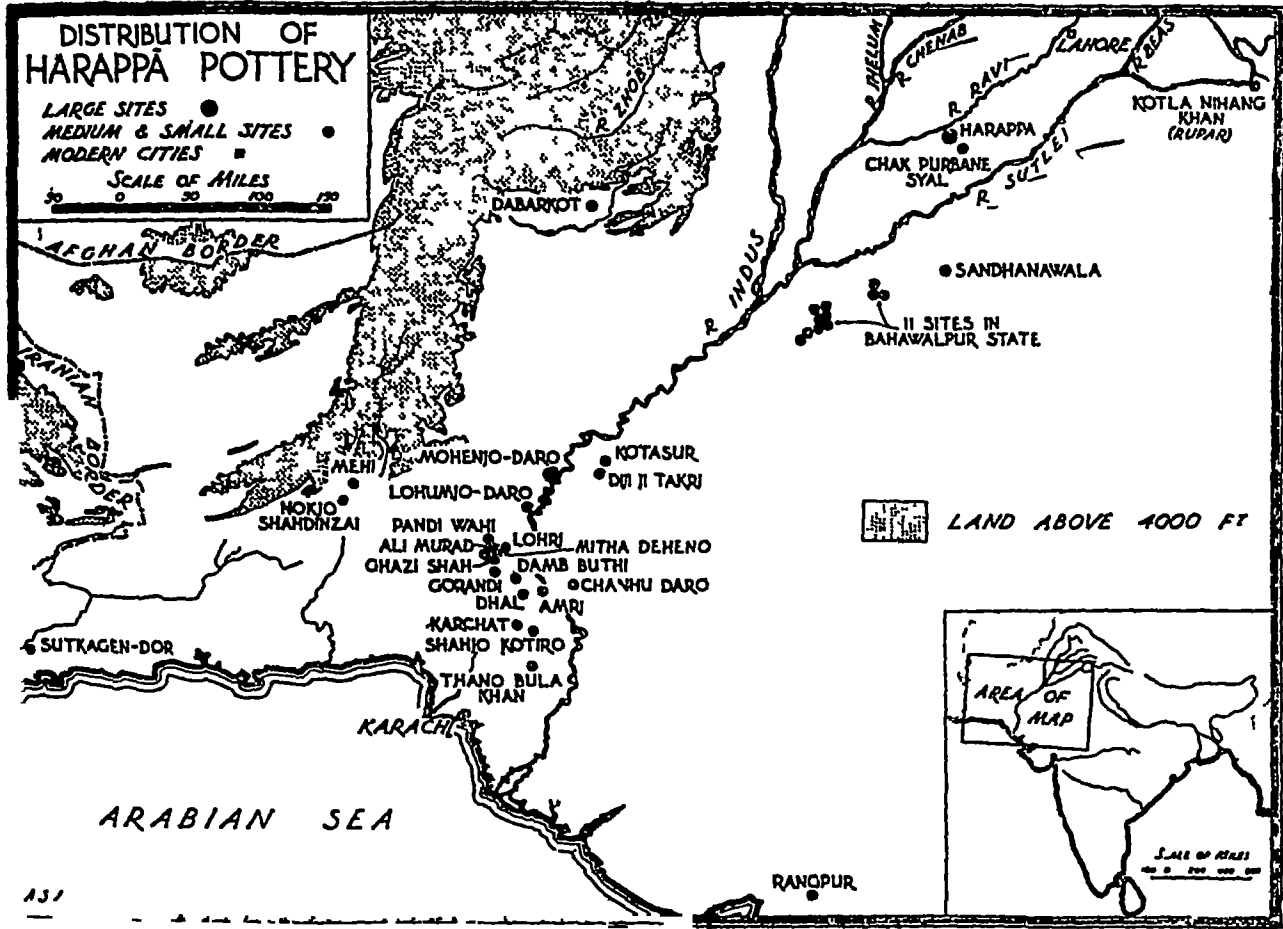
न रह गया; और अन्त में, इसका समय भी ज्ञात न था, साहित्यिक कृतियो अथवा सास्कृतिक सम्बन्धो की अनुपस्थिति मे इसका काल-निर्धारण असम्भव था ।

किन्तु भारतीय पुरातत्व द्वारा प्रस्तुत इस गूढ पहेली का समाधान प्रस्तुत किया सुदूर मेसोपोटामिया के उत्खननो ने । पहले कीश और ऊर तथा बाद मे अन्य स्थलो पर, मोअन-जो-दड़ो जैसी पत्थर की मुहरे मिली, जिन पर सिंधु घाटी की विचित्र चित्रलिपि मे अभिलेख थे । इनमे से अधिकाश मुहरो का काल लगभग चौबीसवी शताब्दी ईसापूर्व निर्धारित किया गया, एक उससे भी दो सौ बरस पहले की थी और एक अन्य 1500 ईसा पूर्व की कब्र से मिली थी । यह था कालक्रम का प्रमाण जो भारत मे नही मिल सका था; इस रहस्यमय सभ्यता को 2500 और 1500 ईसा पूर्व के बीच का समझना चाहिए—नगरो के अनेक बार पुनर्निर्माण तथा रस्मी लिखावट के विकास के लिए भी इतनी अवधि ठीक मालूम पडती है । हम अब भी नही जान सके थे कि इस सस्कृति का जन्म कैसे हुआ, लेकिन इसके मरण की तिथि से नया ज्ञान मिला है ।

लगभग 1500 ईसापूर्व मे, आर्यों ने उत्तर-पश्चिम से आकर, भारत पर आक्रमण किया होगा। महान् काव्य 'ऋग्वेद' मे, जिसे विद्वानो ने काव्यात्मक गर्वोक्तिया मात्र मानकर अमान्य ठहरा दिया था, भारत की आदि कथाएँ सुरक्षित हैं। उनमे आर्यों की विजय का वर्णन है तथा आर्य देवता इन्द्र को 'प्राचीन दुर्गों का विनाशक' कहा गया है जो 'दुर्गों को वैसे ही ढहा देता है जैसे समय बीतने पर कपडा नष्ट हो जाता है'। तिथि और भाषा की समानान्तरता इतनी निकट है कि आकस्मिक नही कही जा सकती, और हम आर्यों की विजय के साथ हडप्पा और मोअन-जो-दडो के पतन का सम्बन्ध निस्सकोच जोड सकते हैं। और अब हम देख सकने है कि प्राचीनतर सभ्यता उतनी अनुर्वर न थी जितनी पहले मालूम पडती थी। आधुनिक हिन्दू धर्म मे आर्य देवताओ के साथ-साथ दूसरी परम्परा से उद्भूत देवता भी हैं। स्वय शिव को मोअन-जो-दडो की एक मुहर पर तीन सिरो वाले और सश्रृंग देवता के रूप मे पहचाना जा सकता है। मातृदेवी का अधिक महत्त्व था। पवित्र पीपल वृक्ष आज के समान ही पूज्य था, और नादिया आज के हिन्दुओ की भाति सिंधु घाटी के निवासियो का भी घनिष्ठ था। ध्यानलीन योगी को भी हडप्पा की कला मे अभिव्यक्ति मिली है।

सिंधु घाटी के उत्खनन के फलस्वरूप उत्तरी भारत का इतिहास अब तीसरी शताब्दी ईसापूर्व के बजाय तीसरी सहस्राब्दी ईसापूर्व से शुरू होने लगा है, और जहाँ कभी रिक्ति थी वहाँ अब इतिहास का एक नया अध्याय है जो परवर्ती विकास का तारतम्य बिठाता तथा काल्पनिक और अविश्वसनीय को तथ्यपूर्ण और विश्वसनीय सिद्ध करता है।
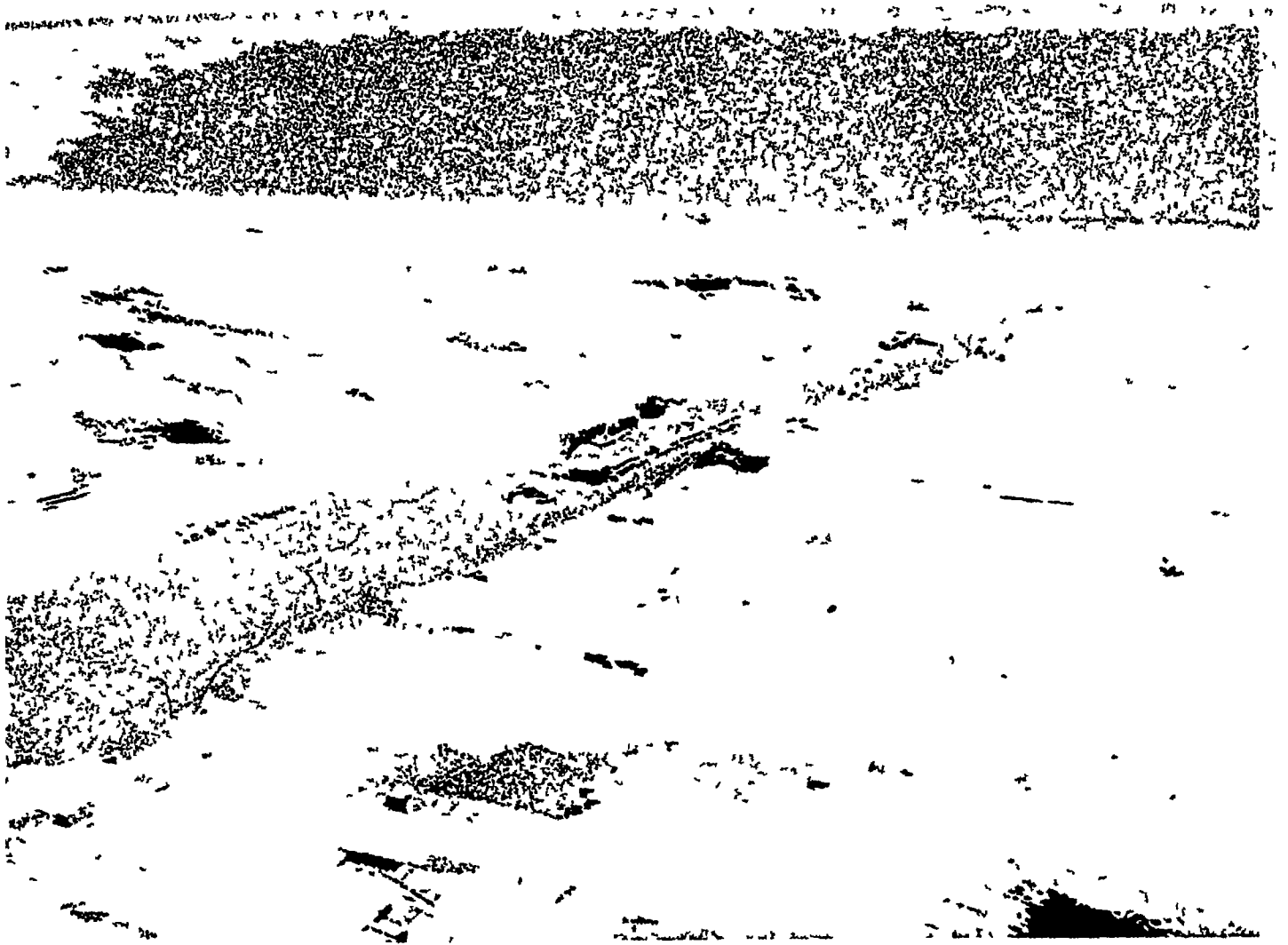
(63) मोअन-जो-दड़ो; पहली सडक का दृश्य। इससे नगर के नक्शे का अनुमान होता है। स्पष्ट है कि यहां पर कोई बस्ती अकस्मात् नहीं बस गयी थी वरन् पूर्व निश्चित योजना के अनुसार एक नगर का निर्माण किया गया था। सिंधु घाटी सभ्यता की हर चीज़ से यही लगता है कि वहां निरंकुश शासन था, शायद उदार किन्तु कठोर और दृढ़।

(64) नगर की एक अपेक्षया छोटी गली। घर की दीवार के पास भूमिगत नाली थी, जिसका ढकना हटा दिया गया है। घर की दीवार में ऊपरी मंजिल की सफाई के लिए एक परनाला है, जो उचित आकार के 'कुंड' में गिरता है ताकि पानी दीवारों की नींवों से अलग रहे।

(65) नगर का विशाल तालाब तथा उसके चारों ओर के कमरे। पकायी हुई ईंटों और मसाले का प्रयोग मैसोपोटामिया की गृह-निर्माण कला की याद दिलाता है। शायद इसे सीखा भी पश्चिम से गया था।

(66) एक मुख्य पुलिया, जिसकी महराबदार छत दीख रही है। नालियो और मोरियों की यह व्यवस्था एक ही शासक द्वारा सुनियोजित नगर-निर्माण का प्रमाण है, यह इस तथ्य का भी प्रमाण है कि स्वास्थ्य-रक्षा सम्बन्धी इतना विकसित दृष्टि-कोण फिर कभी भारतीय म्युनिसिपल अधिकारियो का नहीं हो सका।

(67) मोअन-जो-दडो का विनाश कैसे हुआ? यहा, सडकों पर आक्रमणकारी आर्यों द्वारा मारे गये अभागे नागरिकों के ककाल पडे हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के हिंसात्मक पतन का इससे अधिक स्पष्ट प्रमाण नहीं हो सकता।

(68) सैलखडी की मूरत के इस खंड से मेसोपोटामियाई प्रभाव झलकता है, क्योंकि वस्त्र की तिनपतिया खुदाई सुमेरी प्रस्तर-पात्रों पर बनाया जाने वाला सुपरिचित अभिप्राय है। लेकिन सिर विशुद्ध भारतीय है। अधमुदी और नमित तथा नाक को नोक की ओर उन्मुख आखे किसी योगी का ध्यान का आभास देती है।
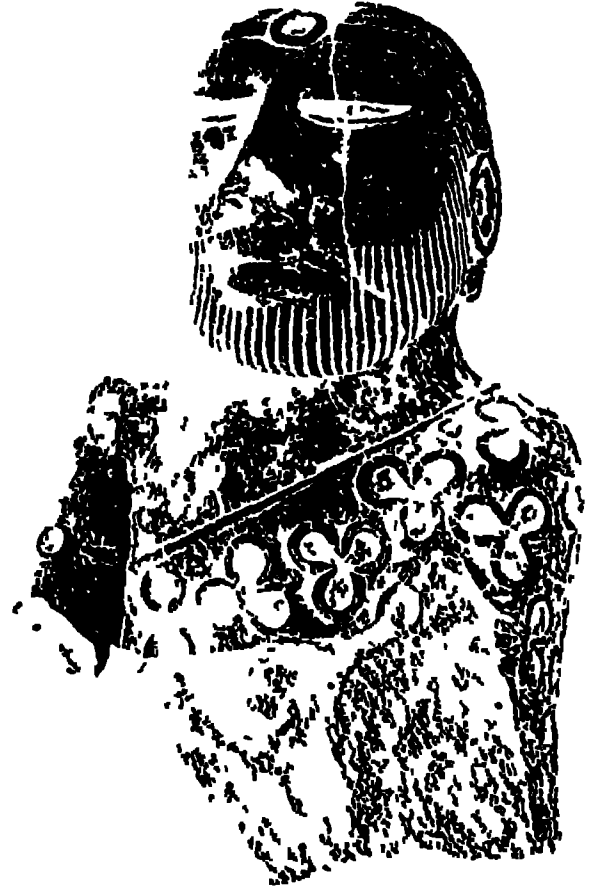
(69, 70) एक नर्त्तकी की इस निरूढ किन्तु यथार्थवादी मूरत में भी चारुता है। यहा पर प्रयुक्त माध्यम कास्य है, और इस छोटी-सी मूरत में धातु ढालने वाले के कौशल तथा कलाकार की प्रज्ञा दोनों स्पष्ट हैं।
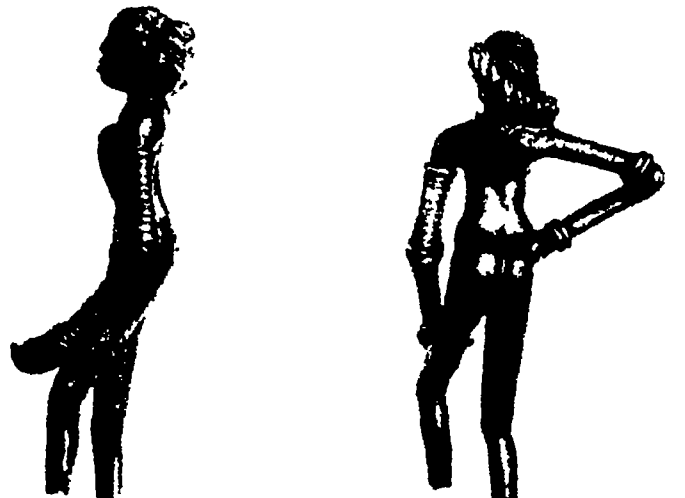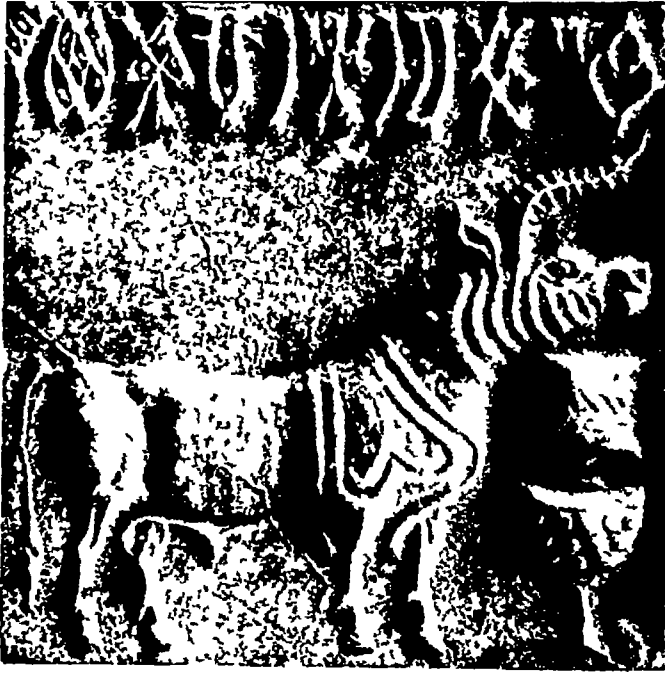
(71) केवल मोअन-जो-दडो में बारह सौ से अधिक मुद्रायें मिली थीं, लेकिन उन पर प्रदर्शित चीजें सख्या में कम थीं, विषय-वस्तुए निश्चित थी, जो बार-बार बनायी जाती थीं, और विवरण में भिन्न होते हुए भी अनिवार्यत एक जैसी थीं, उन्हें मौलिकता प्रदान करने वाली चीज अभिलेख है। अभिलेख में मुद्रा के स्वामी का नाम दिया गया है, और आकृति उसके द्वारा आवाहित देवता की मूर्त्ति या चिह्न है। सर्वाधिक प्रचलित चिह्न एकशृंगीय अश्व है, अक्सर उस पर जीन कसी होती है, और कभी-कभी गले में माला पडी होती है और उसके सामने आमतौर पर एक धूपदान जैसी चीज होती है। यह निश्चय ही पूज्य पशु है।

(72, 73) अपनी नांद के पास खडा दीखने वाला छोटे सींगों वाला बैल भी बहु-प्रचलित है। विशेष धार्मिक वस्तुए इसके साथ सम्बद्ध नही है, लेकिन वे कूबड और लम्बे सींगों वाले ब्राह्मणी बैल से सम्बद्ध भी नहीं हैं, शायद इन पशुओं का, जो प्राचीनकाल की भांति आज भी पवित्र माने जाते है, देवत्व इनमें ही निहित था और बाह्य चिह्नों की इन्हें आवश्यकता न थी। हाथी, शेर और गैंडा भी हैं लेकिन अपेक्षया कम ये सभी पशु हिन्दुओं के धर्म में नही तो अधविश्वास मे उपस्थित है, और ये शायद मूलत पूज्य थे।

(74) यह है योगासन में त्रिमूर्त्ति शृंगीय आराध्य देव, जो शिव के आदि रूप के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता। हडप्पा और मोअन-जो-दडो के सभी निवासी आर्यों द्वारा क़त्ल नहीं किये गये थे, बचे हुए निवासी जो अब गुलाम थे, अपने धर्म पर अडिग रहे, और उनके देवता क्रमश भारत की मिश्रित जनता के देवकुल मे सम्मिलित हो गये और आज भी पूजे जाते है।

(75) मुद्राये सामान्यत वर्गाकार ओर बटन के आकार की है। ऐसी एक मुद्रा यहा दिखायी गयी है।

तूतनखामन की समाधि

फराऊन तूतनखामन की समाधि को प्रकाश मे लाने वाले पुरातात्विक उत्खनन ने जन-सामान्य की जितनी अधिक और स्थायी दिलचस्पी जगायी थी, वैसा किसी दूसरे उत्खनन मे कभी नही हुआ। समाधि का सर्वप्रथम और सर्वोपरि महत्त्व इसमे था कि अत्यधिक सख्या मे सुन्दर वस्तुएँ उसके भीतर मिली—यह ससार की कलानिधि मे अपूर्व योगदान था, जिसकी प्रशसा उचित ही थी।

दूसरी ओर, यह भी है कि समाधि की खोज से मिस्र के इतिहास मे किसी नये तथ्य का समावेश नही हुआ है। समाधि मे पारम्परिक अन्त्येष्टि सम्बन्धी अभिलेखो के अतिरिक्त कुछ नही मिला। इस महत्त्वहीन किशोर फराऊन (मृत्यु के समय उसकी उम्र सिर्फ लगभग अठारह साल थी) के अल्प शासनकाल मे कोई महत्त्वपूर्ण घटना नही घटी थी, इतिहासज्ञो को पहले से ही मालूम था कि तूतनखामन ने अपने श्वसुर अखेनतन द्वारा प्रचारित अतन पूजा को अमान्य ठहराया था और उसके शासनकाल मे थीबिज के अमन पुजारियो ने अपनी पहले जैसी शक्ति फिर प्राप्त कर ली थी। इतना जरूर है कि यही एक राज-समाधि है जो लगभग पूरी-की-पूरी मिली है और किसी फराऊन के अन्त्येष्टि सस्कार की भव्यतम उदाहरण है, किन्तु लिखित प्रलेखो, भित्ति-चित्रो और उन्चित्रो तथा अपहृत कब्रो की अवशिष्ट वस्तुओ से हमे इस सस्कार का ज्ञान पहले से था, हाँ, फर्नीचर के चित्रो के स्थान पर असली वस्तुओ की प्राप्ति से सन्तोष तो जरूर मिला, लेकिन कोई नया ज्ञान नही मिला।

संसार को आकर्षित करने वाली सबसे पहली बात थी खोज की नाटकीय प्रकृति। दीर्घकालीन और धैर्यपूर्ण खोज वास्तव मे एक आस्थापूर्ण कार्य था, जिसके फलस्वरूप एक ऐसी अपूर्व वस्तु मिली जैसी पहले कभी नही मिली थी। यह विलक्षण वस्तु थी प्राचीन मिस्र के एक राजा का सम्पूर्ण शव। मिस्र को सदैव रहस्य और रोमास का देश समझा गया है और इम समाधि मे रोमास सजीव हो उठा था। दूसरी बात थी उसमे प्राप्त वस्तुओ की, जो आज काहिरा सग्रहालय के अनेक कमरो मे अटी पडी है, वेशुमार कीमती। यह एक विचित्र ढग से मिला-जुला सगह था। अत्य-

धिक सुन्दर वस्तुओ के साथ-साथ अत्यन्त रुचिहीन वस्तुएँ भी थी, एक ओर अतिश्रेष्ठ तकनीक थी, तो दूसरी ओर वेढगी और वेपरवाह कारीगरी। लेकिन उम समय की उत्तेजना मे लोगो ने श्रेप्ठ और तुच्छ का विभेद न करके हर चीज को भव्य मान लिया, तूतनखामन का नाम, जिसका अर्थ पहले पेशेवर मिस्र विद्याविशारदो तक के लिए भी नही था, अव पूरे यूरोप और अमरीका मे 'घरेलू शव्द जैसा परिचित' वन गया। कहा जा सकता है पुरातत्व मे इस प्रसिद्ध समाधि का अशदान यही सार्वजनीन प्रतिक्रिया थी।

गत शताब्दी के मध्य मे, रालिसन और लायार्ड की मेसोपोटामिया की खोजो ने उस समय काफी दिलचस्पी पैदा की थी, लेकिन यह दिलचस्पी केवल कुछ लोगो तक ही सीमित थी जो क्रमश समाप्त हो गयी। 1870 मे, श्लीमान की त्राय और मिकीनी की खुदाइयो का आकर्षण मुख्य रूप से होमरी विद्वानो के लिए था, जनसामान्य के लिए यह आकर्पण आशिक ही था, क्योकि उन दिनो शिक्षा की आधारशिला होमरी काव्य पर रखी जाती थी। अब पहली वार, एक पुरातात्विक उत्खनन समाचारपत्रो का प्रमुख समाचार वन गया, पहली वार अखवारो के मामूली पाठक को अहसास हुआ कि क्षेत्र-पुरातत्व और उसकी वैज्ञानिक विधियो (क्योकि केवल इन्ही विधियो के कारण ऐसे परिणाम प्राप्त हो सकते थे) की रोमाचक सभावनाए कितनी अधिक है। उत्खनन केवल सयोग नही है। लॉर्ड कारनरवॉन और हॉवर्ड कार्टर एक तर्कयुक्त सिद्धान्त के आधार पर वर्षों धैर्यपूर्वक काम करते रहे थे। तव कही समाधि के द्वार खुल सके थे और अनेक वहुमूल्य चीजें उन्हें ढेर की ढेर दीखी थी। उन भगुर वस्तुओ को एक-एक करके उठाने मे वडी साव-धानी वरतनी पडी थी और जटिल रिकार्ड रखने पडे थे ताकि समय ने जो कुछ विगाडा था उसे फिर ठीक-ठीक स्थापित किया जा सके। इसके अलावा, यह कोई अल्पकालिक रोमाचकारी घटना न थी। समाधि मे काम धीरे-धीरे, महीनो नही वर्पों तक चलता रहा था, लेकिन हमेशा नयी वस्तुए मिलती जाती थी जो आगे उत्खनन को प्रेरित करती थी, और यही देर इस वात का सवूत थी कि वैज्ञानिक विधि और समाधि की वेतरतीव डकैती मे फर्क है। आखिरकार अन्तिम रहस्य भी उद्घाटित हो गया तथा तूतनखामन का सोने का तावूत और उसकी 'ममी' के असली चेहरे पर आवृत्त सोने का मुखौटा भी मिल गए। उनके सौन्दर्य ने चकित ससार को रोमाचित कर दिया। उस समय तक यह भी निर्विवाद मान लिया गया कि पुरातत्व ऐतिहासिक शोध की एक गम्भीर शाखा है, उसकी अपनी विशिष्ट तकनीक है, और उसके परिणाम महत्त्वपूर्ण तथा जनसामान्य की रुचि के हो सकते है।

जनता के दृष्टिकोण मे यह परिवर्तन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। बहुत समय तक पुरातत्व को अमीरो का शौक या अधिक-से-अधिक अहानिकारक पागलपन समझा जाता रहा था, वस्तुत लॉर्ड कारनरवॉन से अपरिचित किमी व्यक्ति को 'राजाओ की घाटी' मे उनका यह कार्य स्वय सनक से कम न था। लेकिन जव एक स्थल उन्हे मिल गया और वडे पैमाने पर पाँच हफ्ते की खुदाई के फलस्वरूप एक 'ममी' विल्ली मिली, तो उन्होने जोर देकर कहा कि अधिकारियो ने ठीक कहा -। और

एक कुशल निर्देशक के बिना इससे अधिक की आशा नही की जा सकती। और जनता तो समय से वेहद पीछे थी, गत पचास वर्षों के दौरान उत्खनन विधिया अधिकाधिक व्यवसायी होती गयी थी, और सर फ्लाइडर्स पेट्री ने एक शौक को विज्ञान का रूप दे दिया था, लेकिन तथ्यो का ज्ञान केवल कुछ जानकारो को था। अव तूतनखामन की खोज को मिले प्रचार के कारण तथ्यो की जानकारी सब को हो गयी। यही वह समय था जब निजी सरक्षक समाप्त होने वाले थे और उन पर आश्रित क्षेत्र-पुराविदो के सामने अपने व्यवसाय की समाप्ति का खतरा पैदा हो गया था, लेकिन तभी जनसामान्य ने महसूस कर लिया कि पुरातत्व तो वस्तुतः उनकी ही चीज है और उसे अवलम्ब मिलना ही चाहिए। 'राजाओ की घाटी' की उस अपूर्व समाधि को खोलने पर ससार भर मे काफी समय तक एक सनसनी बनी रही थी और पुरातात्विक शोध को आज मिलने वाला प्रोत्साहन इसी सनसनी का परिणाम है।
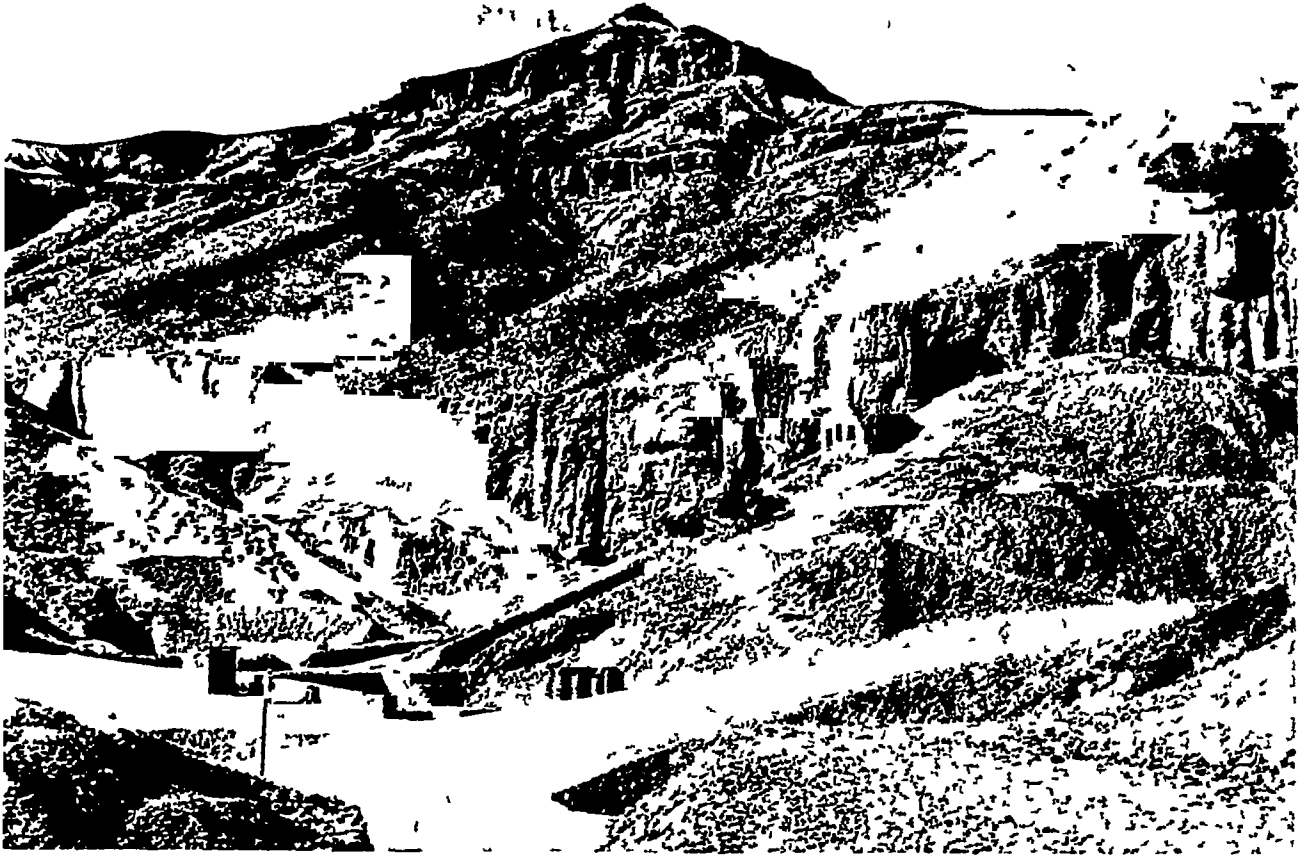
(76) 'राजाओं की घाटी'। थीब्ज के सामने नील नदी के पश्चिम में स्थित इस वीरान घाटी में अठारहवें और उन्नीसवें राजवंशों के फरऊनों को दफन किया गया था, केवल नास्तिक अखनातन ने अपनी समाधि थीब्ज मे, जिसे वह घृणा करता था, दूर अमरना की घाटी में बनवायी थी। लगभग सभी मिल चुकी थीं—विशाल भूमिगत समाधियां हज़ारों साल पहले डाकुओं द्वारा लूटी गयी। हॉवर्ड कार्टर को विश्वास था कि तूतनखामन का भी अवश्य ही इसी पारम्परिक घाटी में दफनाया गया होगा। पाच साल तक वह काम में लगा रहा, बगल की घाटी में भरे हजारों टन चूनिया पत्थर के टुकड़े हटाता रहा, लेकिन सब व्यर्थ गया, छठे साल, जिस समय लॉर्ड कारनरवॉन का धैर्य टूट चुका था (सच तो यह है कि उनके अनुसार उत्खनन का अन्तिम सप्ताह था), बगल की वादी के मुह पर, रामसेज़ षष्ठम की विख्यात वीथी-समाधि के समीप समाधि का प्रवेश द्वार मिल गया। फोटोग्राफ में रामसेज की समाधि का प्रवेश-द्वार और उसके नीचे तूतनखामन की समाधि में पहुचने वाले ढलुआं रास्ते के जिसे चट्टान से काट कर बनाया गया था, खुले भाग के गिर्द नीची दीवार बना दी गई है।

(77) राजवंश के पहले फराऊनों की समाधियों की तुलना में तूतनखामन की समाधि बिल्कुल मामूली थी, जिसमें सिर्फ चार प्रकोष्ठ थे जो एक के भीतर एक खुलते जाते थे, जिसकी दीवारें उच्चित्रों से अलंकृत न थीं और कमरे अनाकर्षक ढंग से अटे पड़े थे। डाकू दो बार उसमें प्रवेश कर चुके थे, लेकिन अधिक लूट पाट नहीं कर पाए थे, लेकिन वे अपने पीछे चीजों को बेहद अस्तव्यस्त दशा में छोड़ गये थे, और पुजारियों ने, जिन्हें नुकसान पूरा करके समाधि को फिर मुहरबन्द करना था, चीजों को एक के ऊपर एक लाद दिया ताकि उनके चलने-फिरने की जगह हो सके। यहां, प्रवेश-प्रकोष्ठ में रथ, कोच, आलमारियां, तिपाइयां, पत्थर के बर्तन आदि सभी बिखरे पड़े हैं, लेकिन इन सारी चीजों को हटाकर दरवाजा खोला गया तो उत्खननकर्ताओं के सामने क्या दृश्य था।

(78) 'मै आपके शत्रुओं को आपके चरणों पर झुकाकर ही दम लूँगा।' यह घुटने टेकने की गद्दी का ऊपरी भाग है, जिसकी डिजाइन में विदेशी शत्रु जमीन पर पडे हैं और उनके हाथ पीछे बँधे हैं। लिनेन की पीठिका पर बहुरगी गुरियों को टांककर यह डिजायन तैयार किया गया था। पुराविद्‌ की अत्यधिक कुशलता और अटूट धैर्य का ही परिणाम था कि इतनी कोमल वस्तु को बचाया जा सका।

(79) तूतनखामन की ममी का सोने का मुखौटा। यह युवा राजा का वास्तविक आकार का तथा स्पष्टत यथातथ्य पोर्ट्रेट है और सोने के पत्तर का बना है। शिरस्त्राण पर गहरे नीले काच जड़े है तथा हार में नीलम, हरा फेलस्पार और बिल्लौर, इसके अलावा इन्द्रगोप का आभास देने के लिए लाल रग का भी प्रयोग है। हमें ज्ञात मिस्री कलाकृतियों में से इसी कृति में कलाकार ने जीवन्त मानव की विशिष्टता को अक्षुण्ण रखते हुए देवता स्वरूप मृतकों की कालातीत भव्यता प्रदान की है। तूतनखामन की समाधि में यह अन्तिम खोज वस्तुत: अद्वितीय है।

(80) मजूषा, जिसमें मृत राजा की देह अवस्थित थी। साढे छ फुट ऊँची यह मजूषा लकड़ी की बनी है और इस पर जैसो (एक प्रकार का प्लास्टर) व सोना मढा गया है। वेसहारे खडी सरक्षिका देवियां भी इसी प्रकार बनायी गयी थीं। दो दिलहों के किरीट सर्पों (जिनमें गहरे नीले रग की चीनी मिट्टी और कांच जटित हैं) तथा देवियों की आंखों (जो काली-सफेद रजित है) के अतिरिक्त सम्पूर्ण मजूषा सुवर्ण की भव्य झिलमिलाहट है, भव्य किन्तु अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक सयमित।

एक रोचक बात यह भी है कि देवी की मूर्तियों की शैली अमरना घाटी की शैली के समान है, लेकिन पारम्परिक धर्म की आराध्य देवियों के रूप में अमरना घाटी के देवकुल में सम्मिलित नहीं है। मजूषा अवश्य ही अन्त कालीन कृति है, जिसे 'धर्मान्तरित' फराऊन द्वारा विनियुक्त नास्तिक सम्प्रदाय में दीक्षित कलाकारों ने निर्मित किया था।
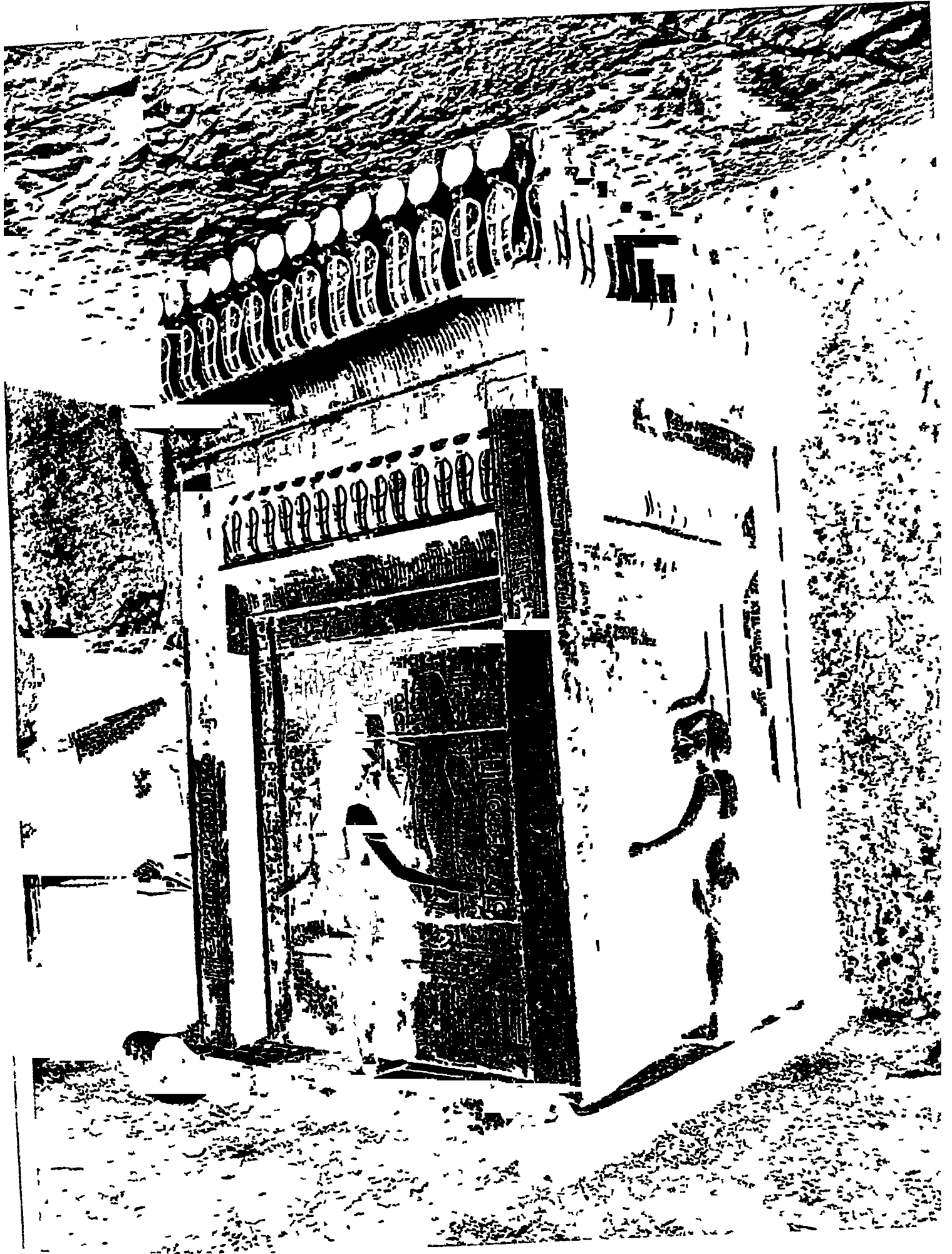
(81) 'सुवर्ण सिंहासन' का पिछला पेनेल एक महान् कलाकृति है। फर्श सोने के पत्र का वर्ग है, जिसकी प्रत्येक भुजा लगभग २० इंच है। कुछ विवरण, जैसे सूर्य का गोला और चित्रलेख, उद्‌भृत हैं, किन्तु अधिकांश काम जड़ाऊ है। तूतनखामन और उसकी पत्नी की मांसलता लाल कांच की है, उनके बाल नीली चीनी मिट्टी के हैं तथा वस्त्र चांदी के, राज-दम्पति के मुकुट, रिबन और कालर, मेज और उस पर पड़े हुए गजरे, तथा पूरे चित्र का सुन्दर चौखटा सफेद पत्थर और काली व आसमानी चीनी मिट्टी के बने हैं। रंगों की संख्या से जिस चटक-मटक का अनुमान होता है उसे कलाकार ने किसी प्रकार पैदा नहीं होने दिया है और एक अपूर्व सुन्दर कृति का निर्माण किया है।

सिंहासनारूढ होते ही मिस्री फराऊन अपनी अन्त्येष्टि की तैयारी में व्यस्त हो जाता था। 'सुवर्ण सिंहासन' विशुद्ध अमरना घाटी की शैली में है, और सूर्य का गोला, जिसकी किरणों का अन्त मानवीय हाथों के रूप में होता है, अखनातन के सम्प्रदाय का, जो तूतनखामन के शासनकाल में एक अभिशाप बन गया था, विलक्षण चिन्ह है। स्पष्टत इसका निर्माण प्रारम्भिक काल में (जब वह विद्रोही नहीं बना था) हुआ था लेकिन चूंकि उसके जीवनकाल में राजकीय कार्यों के लिए नहीं बल्कि उसकी समाधि के लिए इसे बनाया गया था, इस लिए इसकी धर्म विरोधी विशिष्टता पर ध्यान नहीं दिया गया।

जेरिको

गत नव्वे वर्षो के दौरान, जेरिको मे कम-से-कम चार बार खुदाई हुई है और स्पष्ट दीखता है कि आज की अधिक उन्नत विधियो और पुरातत्व के सग्रहीत ज्ञान के कारण किस तरह पहले के पुराविदो द्वारा प्रस्तुत आजमायशी निष्कर्षों मे सुधार हुआ है। जेरिको का नाम लेते ही अधिकाश व्यक्तियो को जोशुआ और किलेबन्द नगर पर अद्भुत विजय की कथा याद आ जाती है।

कथा का प्रभाव उत्खनको पर भी पडा था, और जब नगर की ध्वस्त तथा टूटी-फूटी दीवारे उन्हे मिली तो उन्होने उन्हे ही हिब्रू आक्रमणकारियो की विजय का प्रमाण मान लिया ।

अब यह सिद्ध किया जा सकता है कि इजराइलियो के जार्डन मे पहुँचने से लगभग दो शताब्दी पहले—शायद मिस्रियो ने—इन दीवारो का ध्वस किया था । जोशुआ ने जिस नगर मे आग लगा दी थी उसके एक घर का हिस्सा भर रह गया है, शेष सब कुछ अनेक शताब्दियो के दौरान, जब स्थल अरक्षित पडा रहा है, हवा और मौसम द्वारा विनष्ट किया जा चुका है । खुदाइयो से 'ओल्ड टेस्टामेट' की जोशुआ की कथा पर कोई प्रकाश नही पडता, और न कभी पड सकता है, लेकिन इतना जरूर मालूम हो गया है कि अब्राहम और अन्य सतो को सैकडो वर्षों पहले ज्ञात फिलिस्तीन के नगर किस तरह के थे ।

जेरिको मे किये गये कार्य के रोमाचक होने के कारण दूसरे हैं । विधिपूर्वक, एक-एक स्तर करके, जोशुआ के समय के एकमात्र अवशेष के नीचे, पचास फुट की गहराई की अछूती चट्टानो तक खुदाई करके, मिस कैथलीन केन्यन ने अविश्वसनीय प्राचीन दीवारो से घिरा हुआ शहर खोद निकाला है । सबसे ऊपर 'मध्य कास्य युग' की लगभग 1600 ईसापूर्व की इमारते थी जिन्हे सतो ने देखा था; उसके नीचे 1900 और 2300 ईसापूर्व के बीच के 'अन्तरिम युग' के मकान थे, इसके बाद 'आदि कास्य युग' की कम-से-कम तीन अवस्थाये थी । मिस केन्यन ने इस प्रकार खुदाई करते हुए पाया कि 3100 ईसापूर्व के आसपास की सबसे पुरानी बस्ती को पत्थरो और ईंटो के परकोटे से घेरा गया था और उसपर थोडी-थोडी दूर पर अर्धवृत्ताकार मीनारें थी । तब नव-पाषाण काल आया । सबसे ऊपर की दो परतो मे गोल ईंटो के, जिनका उपयोग मेसोपोटामिया मे किया गया था, मकान थे, छोटे-छोटे घर थे, जिनमे रहने वालो के औजार और अस्त्र सभी पत्थर के बने थे—जैसे, चकमक पत्थर के चाकू, छेनी और हसिए तथा ज्वालामुखी शैल की सानें—तथा मिट्टी के वर्तन उसी प्रकार के थे जैसे सीरिया और मेसोपोटामिया के नवपाषाणकालीन स्थलो से प्राप्त हो चुके थे और जिन्हे 4500 ईसापूर्व का माना जाता था । उससे पहले, टीले पर अपेक्षया अधिक जगली लोग रहते थे, वे किसान थे, जो, ऐसा लगता है, घर न बनाकर पैंतालीस फुट ऊँची पहाडी पर तम्बू या खोखे डालकर रहते थे, वे कही और आए थे और अपने साथ ऐसे मिट्टी के वर्तन लाए थे जो उत्तर नवपाषाण कालीन गृह-वासियो के वर्तनो से बिलकुल भिन्न थे—जेरिको मे प्राप्त ये प्राचीनतम वर्तन क्रीम के रग के थे और चकमदार लाल रग से उन पर अलकरण था । कारण, उनके आने से पहले, जेरिको के निवासी उस सस्कृति-स्तर पर नही पहुच सके थे जब आदमी ने पकायी हुई मिट्टी के वर्तन वनाना सीखा, अपने पत्थर के औजारो से वे मुलायम पत्थरो को छीलकर या लकडी को काटकर प्याले आदि वनाते थे, वकरी की खाल से वोतलें, और सरकडो को बुनकर डलिया या चटाईया वनाना भी उन्हे आता था, लेकिन मिट्टी के वर्तन वनाने की कला अज्ञात थी । इमके वावजूद, वे सिर्फ जगली न थे । वे ईंटो से वने मकानो मे रहते थे, मकानो की दीवारो और फर्शों पर क्रीम या गुलावी रग का प्लास्टर चढाया जाता था जो चमकाने वाले पत्थरो से रगड-

रगडकर चमकीला और लगभग जलाभेद्य बना दिया जाता था। वे अपनी बस्ती को बडे-बडे पत्थरो से बनी विशाल दीवार से घेरते थे, पत्थर आधा मील दूर स्थित एक पहाड की तलहटी से लाये जाते थे, जिससे सिद्ध होता है कि उनका समाज सगठित और अनुशासित था। वे मृतको को घरो के फर्श के नीचे गाड देते थे, लेकिन गाडने से पहले खोपडिया उतार लेते थे और उनके आधार पर मृतको के पोर्ट्रेट प्लास्टर से बनाते थे, जिनका कोई न कोई धार्मिक महत्त्व अवश्य रहा होगा।

वे उस स्थान पर बहुत समय तक रहे, क्योकि उन्नीस स्तरो को अलग-अगल पहचाना जा चुका है और प्रत्येक स्तर मे उसकी इमारतो के अवशेष मिले है—लेकिन प्रश्न यह है कि वे कितने समय तक रहे और कब ? इस प्रश्न का उत्तर पुरातत्व नही दे सकता, लेकिन दो पृथक् स्तरो से प्राप्त कोयले के दो नमूनो का काल-निर्धारण 'कार्बन 14' विधि से (जिसमे रेडियमधर्मिता की हानि की माप की जाती है) लगभग 5850 और लगभग 6250 ईसापूर्व किया गया, इसलिए दोनो ही तिथिया 'चमकीले फर्श' वाले लोगो के काल की होनी चाहिए। लेकिन प्राचीनतम चमकीले फर्श वाले घरो के नीचे मिस केन्यन ने एक और पुरानी बस्ती के अवशेष पाए, चमकीले फर्श वाले लोगो ने इन्ही बस्तियो के वासियो को हराकर बस्तियो पर कब्जा कर लिया होगा। यहा, अछूती चट्टान तक, के मकान बिलकुल अलग किस्म की ईंटो के बने थे, जो बाद के किसी काल मे कभी उपयोग मे नही लायी गयी। स्थल पर प्राप्त पकी हुई मिट्टी के एक पुराने माडेल से हमे मालूम होता है कि घर मधुमक्खी के छत्तो के समान थे, और उनके गिर्द भी एक विशाल पत्थरो की दीवार थी—अब तक, प्राप्त दीवारो मे यही सबसे पुरानी है।

खोज क्रान्तिकारी थी। बस्तिया बसाकर जीवनयापन कब से आरम्भ हुआ, इसके बारे मे हमारी सभी धारणाएँ लडखडा गयी। अभी तक इसके बारे मे पार्थिव प्रमाण के रूप मे केवल कुछ गावो के अपर्याप्त अवशेष मात्र थे, पुरानी झोपडियो के समूह मात्र, जिन्हे पाचवी सहस्राब्दी ईसापूर्व का माना गया था। और इनसे जो पता चलता था वह हम अपने अनुमान से ही जानते थे—आदमी ने जब शिकार और भोजन-सग्रह के अलावा खेती करना भी शुरू कर दिया, तो वह अपने लिए झोपडिया बनाने लगा और स्वभावत उन्ही स्थलो पर रहने लगा जहा अच्छी मिट्टी और पानी के कारण खेती की सुविधा थी। जेरिको मे हम और पीछे, सातवी सहस्राब्दी ईसापूर्व मे कही पहुँच जाते है, और हमे काफी बडे-बडे एकाशो मे सगठित समाज का पता चलता है (दीवार के भीतर करीब तीन हजार आदमियो के रहने लायक स्थान है), जिसके सदस्य एक साथ मिलकर नगर की दीवार बनाने जैसा बडा काम भी कर सकते थे, और जिसकी अपनी कोई न कोई सामाजिक आचार-सहिता भी अवश्य रही होगी। इसके अलावा, जेरिको अपने ढग का अकेला नगर भी नही हो सकता क्योकि इसके निवासी अपने से अधिक शक्तिशाली और उन्नत पडोसियो या शत्रुओ (जैसा चमकीले फर्श वाले लोगो के अवशेषो से पता चलता है) के विरुद्ध सगठित थे, क्योकि बडी दीवार का शत्रु से रक्षा के अलावा और कोई अर्थ न था। जेरिको के उत्खनन से मानव की आदि प्रगति के इतिहास

का चक्र दो-तीन हजार साल पीछे घूम गया है, और उस क्रान्तिकारी काल की परिस्थितियो का पूर्णत अप्रत्याशित चित्र हमारे सामने आ गया है जब मानव ने खेती करना और श्रम करके जीविकोपार्जन आरम्भ किया था।

(82) चश्मे के पास एक खाइयोंदार टीला है, जो अनेक जेरिको के खण्डहरों से बना है। यह एक सत्तर फुट ऊँची पहाडी है, जिसकी चोटी से एक नखलिस्तान दीख पड़ता है, जिसके खजूर वृक्षों और बगीचों के बीच आधनिक गांव है। पुराने टीले की तलहटी पर मिस केन्यन के अभियान दल का घर और केम्प है।
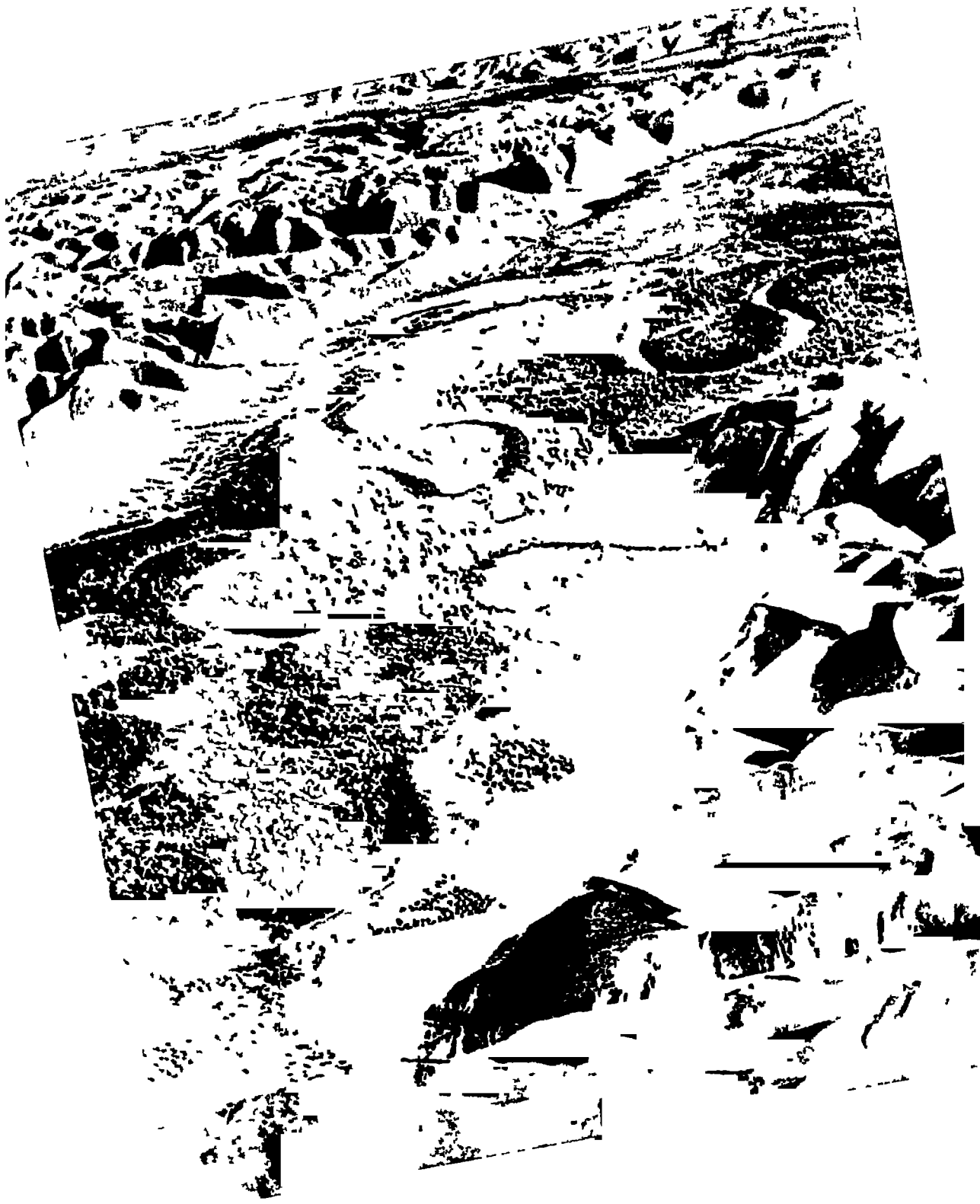
(83) जॉर्डन घाटी। समुद्र तल से 1,200 फुट नीची इस गहरी घाटी में जॉर्डन नदी बेत और झाऊ से भरे दलदलों के बीच नागिन की तरह टेढ़ी-मेढ़ी बहती है। घाटी के किनारे सूखे कीचड के है जिनमें कुछ भी नहीं उगता। सिर्फ एक जगह पर मीठे पानी के चश्मे कीचड को सींचते है और एक उपजाऊ नखलिस्तान बन गया है। यहाँ, आसान खेती की सम्भावनाओं से आकर्षित होकर, नवपाषाण काल के लोगों ने लगभग 7,000 ईसा पूर्व में जेरिको का पहला नगर बसाया।

(84) पाषाण काल के एक समतल छत वाले घर का एक हिस्सा। यह मकान ऐसे लोगों ने बनाया था जिन्होंने मिट्टी के बर्तन बनाना और पकाना तक नहीं सीखा था। लेकिन दीवारें ईंटों की ही बनी है, और दीवारों तथा फर्श पर एक प्लास्टर लगा है, जो रंगा और अच्छी तरह चमकाया गया था। ये खण्डहर लगभग 6,000 ईसा पूर्व के हैं।

(85) मिस केन्यन ने अपना काम टीले के शिखर से नहीं बल्कि उसके पूर्वी ढाल से (जहाँ की ऊपरी पर्तें मौसम के प्रभाव के कारण क्षत हो चुकी थीं) शुरू किया, और सबसे पहले जो अवशेष मिले वे 3,000 और 2,500 ईसा पूर्व के बीच के थे। यहाँ ढाल पर एक बड़ा गड्ढा खोदा गया था, जो एक के ऊपर एक लदे सभी स्तरों को काटता था, और ये स्तर ही नगर के इतिहास की क्रमिक अवस्थाओं को प्रकट करते है। गड्ढे की तलहटी में उत्खनक उस स्तर तक जा पहुँचे तो अछूती चट्टान पर टिका था और जिसे लगभग 7,000 ईसा पूर्व का समझा जा सकता था। फोटोग्राफ में दीखने वाली सीढ़ियाँ मिट्टी को काट-कर बनायी गयी थीं और कर्मचारी इनका इस्तेमाल करते थे।
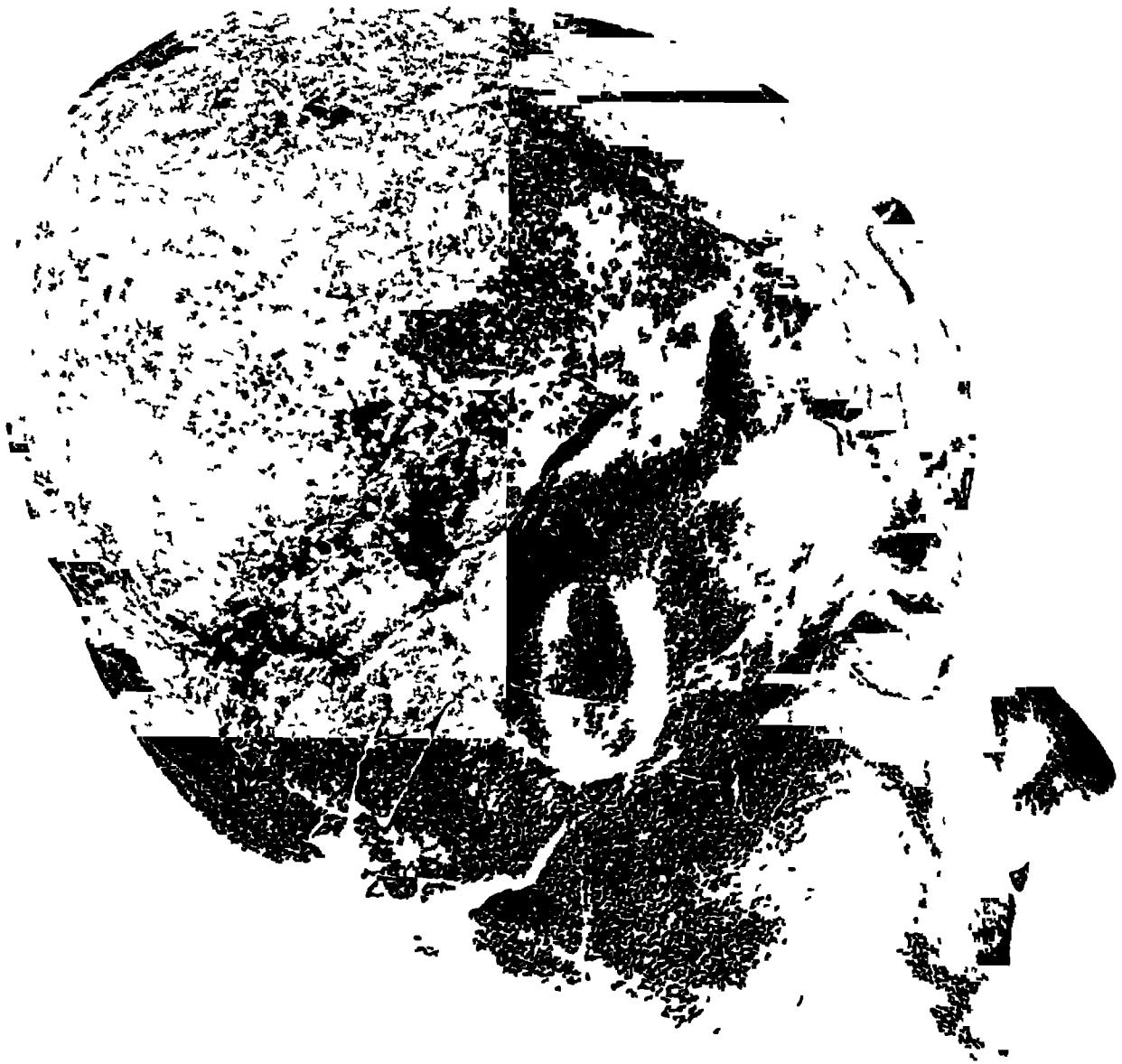
(86, 87) लेकिन ये लोग अपने बारे में इससे कहीं अधिक विलक्षण और अन्तरंग प्रमाण छोड गये है। चिकने फर्शों के नीचे कब्रें थी जिनमें उनके शव थे, लेकिन शव आमतौर पर सिर विहीन थे। वे लोग मृतकों की खोपडिया अलग करके, उससे मास और त्वचा निकालकर, उस पर प्लास्टर से उस आदमी का यथावत चेहरा बनाते थे। ये जीवन्त पोर्ट्रेट, जिनमें कौडिया लगाकर आखे बनायी जाती थी और इस प्रकार अंगों के अकन में एक स्वेदनीयता व्याप्त हो जाती थी, नवपाषाणकालीन मानव की अपूर्व कृतिया है और किसी भी युग की कला में इनका उच्च स्थान है।

(88) एक गहरी खाई में प्राचीनतम दीवार की सतह दीख रही है। इसके निर्माताओं ने पहले लगभग 30 फुट चोडी और दस फुट गहरी खाई ठोस चट्टान मे खोदी, फिर खाई के भीतरी किनारे पर मिट्टी और ककडों के भराव मे दीवार बनायी, यह अब भी करीब बीस फुट की ऊँचाई तक मौजूद है।

(89) अनगढ पत्थरों की एक विशाल नगर-दीवार के भीतरी सतह के सहारे चिकने फर्श वाले लोगों के मकान बनाये जाते थे। यह फोटोग्राफ के ऊपरी भाग में देखा जा सकता है। लेकिन उसके नीचे एक और पत्थर की दीवार है (एक कामगर उस पर खड़ा है), जो प्राचीनतम जेरिको की नगर-दीवार है।
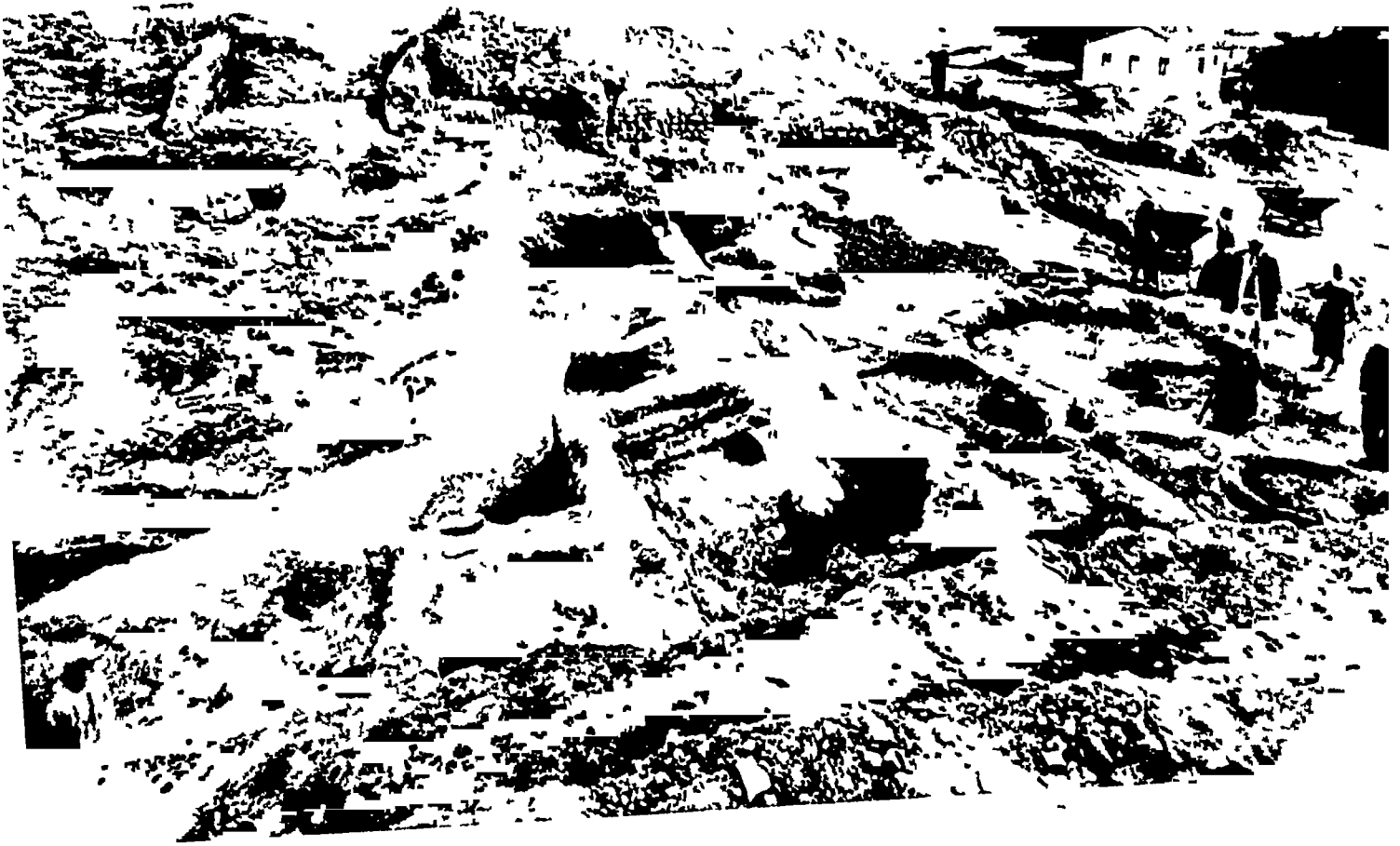
(90) उस समय के घर वृत्ताकार थे, उनके फर्श बाहरी जमीन की सतह से काफी नीचे होते थे और सीढ़ियो से वहां पहुचा जा सकता था। दीवारे (कच्ची ईंटों से बनी) अन्दर को झुकी रहती थी, जिनसे मक्खी के घर का-सा आकार बन जाता था।

अरिकमेदु और ब्रह्मगिरि

सन् 1939 के आरम्भ की वात है। मैं मदरास सग्रहालय मे दक्षिण भारत की प्रागैति-हासिक वस्तुओ के एक विशाल मग्रह का निरीक्षण कर रहा था। सहसा मेरा ध्यान एक किस्म के मिट्टी के वर्तन की ओर आकर्पित हुआ जो मेरे लिए सर्वथा नया था। मैंने सुपरिण्टेण्डेण्ट से उसका समय जानना चाहा तो उन्होने उत्तर दिया, 'एक हज़ार वर्ष की सीमा के भीतर भी उसका समय वताना मुश्किल है।' सचाई यह थी कि दक्षिण के पुरातत्व के वारे मे कुछ भी मालूम नही था,

उत्साही सग्राहको ने अपहृत कब्रिस्तानो से तरह-तरह की वस्तुए तो इकट्ठी कर ली थी, लेकिन न कुछ वैज्ञानिक कार्य किया गया था और न वास्तविक ज्ञान का अर्जन हुआ था। पाच साल बाद; उसी सग्रहालय मे, मॉर्टिमर ह्वीलर ने, जो 'आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' के नये निदेशक नियुक्त हुए थे, एक आलमारी मे बर्तनो के कुछ टुकडे पाये। उसने फौरन पहचान लिया कि वे भारतीय नही बल्कि यूनानी-रोम है—पहली शताब्दी ईसापूर्व से पहली शताब्दी ई० के बीच किसी समय के मदिरापात्रो के अवशेष। वे कहा से आये थे ? कुछ वर्षों पहले, फ्रासीसियो ने दक्षिण-पूर्वी समुद्र तट पर, पाडिचेरी के तनिक दक्षिण मे स्थित, अरिकमेडु मे उत्खनन-कार्य किया था; वही ये टुकडे मिले थे। ह्वीलर ने फ्रासीसी अधिकारियो से बातचीत की और उसे उसी स्थान पर खुदाई करने की आज्ञा मिल गयी।

वहा टूटे हुए मिट्टी के बर्तनो के अलावा कुछ नही मिला, लेकिन वैज्ञानिक निष्कर्ष अत्यधिक महत्त्वपूर्ण थे। भूमध्य सागरीय मदिरा पात्रो के साथ-साथ, उत्तरी इटली के अरेज़ो नामक स्थान पर पहली शताब्दी ई० मे बने हुए बर्तनो के टुकडे भी मिले। इन बर्तनो के कुछ टुकडो पर निर्माताओ के नाम अकित थे, और ये ऐसे स्तर मे मिले थे जिसे स्पष्टत पहचाना जा सकता था। फलत इनकी मदद से ऐतिहासिक कालक्रम निर्धारित हुआ। सोचा जाने लगा कि अरिकमेडु एक व्यस्त बन्दरगाह था, जिसे यूनान और इटली से दक्षिण भारत के बीच आने-जाने वाले पूर्वी व्यापारी उपयोग करते थे। लेकिन उन्ही स्तरो पर भारत-निर्मित बर्तन भी थे, और चूकि अरेजो के बर्तनो को काफी निश्चयपूर्वक 20-50 ई० के बीच का समझा जाता था, इसलिए भारतीय बर्तन भी उसी काल के होने चाहिए। एक विशिष्ट स्थानीय बर्तन थी चिकनी काली मिट्टी की तश्तरी, जिसके चपटे पेंदे का अलकरण चक्राकित पैटर्न का था जिसमे दातेदार किनारो वाले बेलन से बनायी गयी दो या तीन सकेन्द्रीय पट्टिया थी, वे ई० सन् से पहले की अन्तिम शताब्दियो मे यूनान और इटली मे समान रूप से निर्मित काले चक्राकित भाडो की प्रतिलिपिया जैसी दीखती है, और अरिकमेडु मे प्राप्त बर्तन सचमुच अरेजो के बर्तनो से पहले के थे। दूसरा बर्तन, जिसे अधिक निश्चित रूप से भारतीय माना गया है, 'काला और लाल' या 'काला और भूरा' था, यह कटोरे की आकृति का था और इसके भीतरी-बाहरी दोनो सिरे काले थे तथा शेष बाहरी सतह लाल या भूरी थी—बाहरी रग उस भट्टी की प्रकृति (अर्थात् भट्टी आक्सीकारक थी या अवकारक) पर निर्भर था जिसमे बर्तन को पकाया गया था। विभिन्न रूपाकारो के बहुसख्यक बर्तन भी मिले—भूरे या लाल बर्तन, लोहित या चमकीले लाल रग के लेप से रगे हुए, उनकी बनावट अपेक्षया कम विशिष्ट थी, लेकिन आकृतिया अनेक प्रकार की बन सकती थी। सभी बर्तन समकालीन और तुलनात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थे। कई प्रकार के बहुसख्यक बर्तनो का काल-निर्धारण, जो पहले नही हो सका था, अब पहली बार—पहली शताब्दी ई० के पहले पचास सालो की सीमा मे—सभव हो सका। उसी स्थल मे, अरेज़ो के बर्तनो वाली सतह के ठीक नीचे वाले स्तरो से अलकृत बर्तनो के टुकडे मिले, जिनका अलकरण रग कर, खोद कर या छेद करके किया गया था। इनका काल निश्चयपूर्वक पहली या पहली-दूसरी शताब्दी

ईसापूर्व निर्धारित किया जा सकता था । उचित ढग से की गयी एक मामूली खुदाई से दक्षिण भारत की प्रागैतिहासिक सस्कृतियो के कालक्रम की नीव पड गयी ।

अरिकमेदु से प्राप्त निष्कर्षों के महत्त्व की जाच अगला कदम था ।

भारतीय पुरातत्व की एक कठिन समस्या थी दक्षिण की महापापाणी कब्रो का काल-निर्धारण । मैसूर से हैदरावाद तक, अनेक स्थानो पर ढूहे और प्रस्तर-वृत्त वाले विशाल कब्रिस्तान थे, उनमे से अनेक को खोदा और उनकी वस्तुओ का अपहरण किया जा चुका था । सभी कब्रे एक ही किस्म की थी । मिट्टी मे एक गड्ढा खोदा जाता था और उसमे विशाल शिलाखडो का एक प्रकोष्ठ वनाया जाता था—शिलाखड इतने वडे-वडे होते थे कि चारो दीवारो के लिए एक-एक तथा फर्श और छत के लिए एक-एक काफी था । प्रकोष्ठ सात फुट लम्वा और चार फुट चौडा होता था, और एक ओर के शिलाखड पर ऊपर की ओर एक वडा छेद होता था, जिससे उपहार भीतर पहुचाए जा सकते थे । इस छेद तक एक 'लुप्त' रास्ता पहुँचता था, लेकिन लाश को दफनाने के वाद छेद को एक चपटे शिलाखड से वन्द करके रास्ते पर दीवार खडी कर दी या मिट्टी भर दी जाती थी । प्रकोष्ठ की दीवारो और गड्ढे की दीवारो के वीच की जगह मे ककड-पत्थर भर दिये जाते थे । इस सबके ऊपर, मिट्टी के ढेर पर, या तो भीतर की ओर झुकी हुई विना मसाले की चिनी हुई दीवारें खडी कर दी जाती थी कि एक ढलवा टीला वन जाय, या फिर गड्ढे के चारो ओर वडे-वडे पत्थरो को एक गोले मे लगा दिया जाता था ताकि उनके भीतर टीला सुरक्षित रह सके । लगभग इसी तरह की कब्रें, जिनमे इसी तरह की विचित्र छेदयुक्त शिलायें हैं, काकेशस क्षेत्र, फिलिस्तीन, सार्डीनिया और स्पेन, उत्तर-पश्चिमी यूरोप और ब्रिटिश द्वीप समूह मे भी मिली है । दोनो मे किसी पारस्परिक सम्वन्ध की वात सोचना स्वाभाविक ही था । ब्रिटिश की महापाषाणी कब्रें लगभग 2000 ईसापूर्व की हैं, इसी आधार पर कुछ विद्वान् दक्षिण भारतीय कब्रो को भी उतनी ही पुरानी मानने को उन्मुख थे । कुछ कब्रो से लोहे की वस्तुए भी निकली थी, जबकि लोहा ब्रिटेन मे लगभग 500 ईसापूर्व मे ही पहुचा था । दक्षिण भारत मे लोहा कव पहुचा, यह कहना मुश्किल था ।

समुद्र-तट से दूर कुछ अन्य स्थलो पर भी अवैज्ञानिक खुदाइयाँ हुई थी और वहा पर भी अरिकमेदु जैसे वर्तन मिले थे । व्रह्मगिरि ऐसा ही एक स्थल था । वहा महापापाणी कब्रें तथा एक नगर का स्थल मिले है । नगर-स्थल पर पालिशदार पत्थर की कुल्हाडिया, चकमक पत्थर के टुकडे और रगीन वर्तन भी मिले थे । 1947 मे मॉर्टिमर ने व्रह्मगिरि मे काम शुरु किया । उसने अनेक कब्रो की, जिनमे मिट्टी के वर्तन और लोहे की वस्तुए थे, सफाई की, और स्तरो के विशद अध्ययन के फलस्वरूप, उस क्षेत्र मे तीन विशिष्ट सस्कृतियो के क्रम की स्थापना की । मिट्टी के वर्तनो की पहचान से सिद्ध हुआ कि माध्यमिक सस्कृति उन लोगो की थी जिन्होने महापापाणी कब्रें वनायी और जिन्हे उन्ही कब्रो मे दफनाया गया । इस सस्कृति के साथ-साथ तथा वाद मे एक और सस्कृति हुई जिसमे चक्राकित वर्तन, जिन्हे अरिकमेदु मे पहली शताब्दी ई० का माना गया था, वने । महा-पापाणी कब्र-निर्माताओ की सस्कृति के नीचे पापाणकालीन सस्कृति है, जो अपने स्तरीकरण और
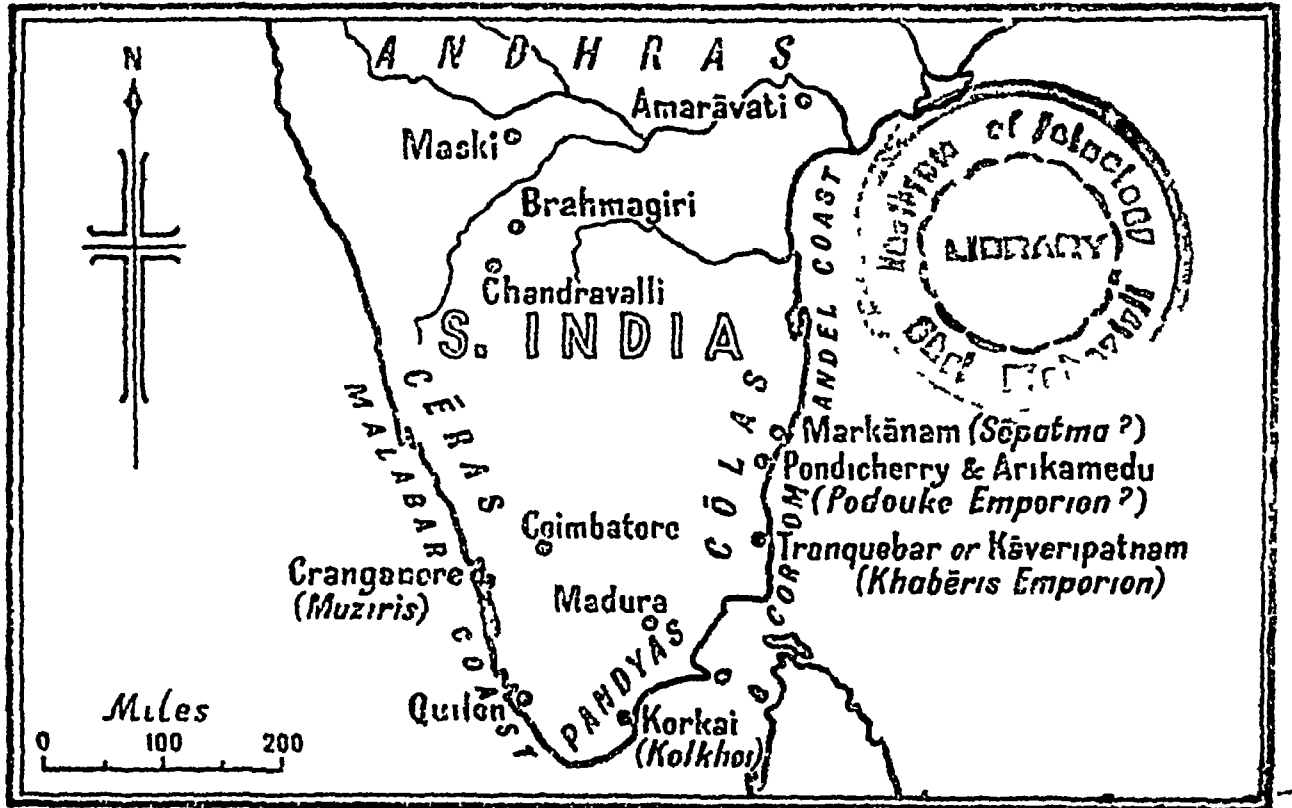
स्वभाव से दो भागो मे विभाजित है। इनमे से निचली वाली, प्राचीनतर, असली मिट्टी पर आधारित सस्कृति अधिक पुरानी हैं, ऊपरी परत मे एक-दो ताँबे के औजार भी मिले है, लेकिन प्रधानता पत्थर की ही है। मिट्टी के बर्तन हाथो से बने और कभी-कभी रगे हुए है। मॉर्टिमर ह्वीलर ने एक अन्य स्थल, चन्द्रवल्ली, का उत्खनन भी किया था। दोनो स्थानो के प्रमाणो से लगता है कि लगभग 200 ईसापूर्व मे नये तरह के लोग आये थे, जो कुम्हार के चाक पर अपने बर्तन बनाते थे, जिनके पास लोहे के औजार और हथियार थे और जो महापाषाणी कब्रो मे मुर्दे दफनाते थे, लेकिन चूकि स्तरीकरण मात्र प्रतिस्थापन न होकर परस्परव्यापी है, इसलिए स्पष्ट है कि वहा पर बस्ती हमेशा बनी रही और हम निष्कर्ष निकाल सकते है कि दक्षिण भारत मे पाषाण काल लगभग 200 ईसापूर्व तक रहा। महापाषाणी सस्कृति की अवधि बहुत अधिक नही मानी जा सकती, और तीनो स्थलो के प्रमाणो से यह पता चलता है कि पहली शताब्दी ई० के आसपास कभी 'आध्र' सस्कृति ने उसका स्थान ले लिया। यह सस्कृति उन लोगो की थी जो चाक पर बनाए गए या महापाषाणी अतीत से उत्तराधिकृत चक्राकित बर्तनो को रगते थे, और इतने सस्कृत थे कि अपने सिक्को के अलावा सम्राट् आगस्टस और सम्राट् टाइबेरियस के चादी के सिक्को का भी उपयोग करते थे, जो उन तक रोम के साथ व्यापार के फलस्वरूप पहुचते थे। यह आध्र सस्कृति तीसरी शताब्दी ई० तक रही।

इन सवका परिणाम यह हुआ है कि दक्षिण भारत के आदिकालीन पुरातत्व को एक सुदृढ कालक्रम का आधार प्राप्त हो गया है। समस्याए अव भी शेष हैं, किन्तु इन उत्खननो के—जो छोटे पैमाने पर होते हुए भी ठोस वैज्ञानिक विधियो के अनुसार हुई थी – परिणामस्वरूप मुख्य रूप-रेखाए निर्धारित हो चुकी है, और सग्रहालय के प्रदर्श, जो पहले अर्थहीन थे, अव ज्ञात इतिहास के मूल्यवान दृष्टान्त वन गये हैं।

(92) नदी-तट के नीचे चट्टानी कगार से ईंटों की दीवारों के टूटे-फूटे सिरे आगे को निकले है, लेकिन अपहर्ताओं ने अपना काम खूबी से किया था और सिर्फ नींवें रह गयी है—वह भी सिर्फ अलग-अलग टुकड़ों में।

(93) नदी के किनारे-किनारे मार्टिमर ह्वीलर ने एक लम्बी खाई खोदी, जो बिना खुदी मिट्टी की पतली दीवारों से एक जैसे वर्गों में बटी थी। खाई के समानान्तर तथा प्रत्येक वर्ग के हर तरफ सतही मिट्टी पर खंटिया गाडकर क्षेतिज मापें की गयी थी।

(94) खुदाई ज्यों-ज्यों गहराई की ओर बढ़ती गई, खाई की दीवारों पर निशान लगा दिये गये ताकि ऊर्ध्व मापें ली जा सकें। प्रत्येक वस्तु जिस स्थान और जिस स्तर पर मिली उसका ठीक-ठीक लेखा रखना इस विधि से आसान हो गया। असली खण्डहरों से, जो टूटी हुई दीवारें मात्र थे, अपेक्षया बहुत कम पता चलता था, और जानकारी की प्राप्ति के लिए उत्खनकों को वस्तुओं पर निर्भर रहना था—और यहां पर 'वस्तुएँ' थीं मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े।
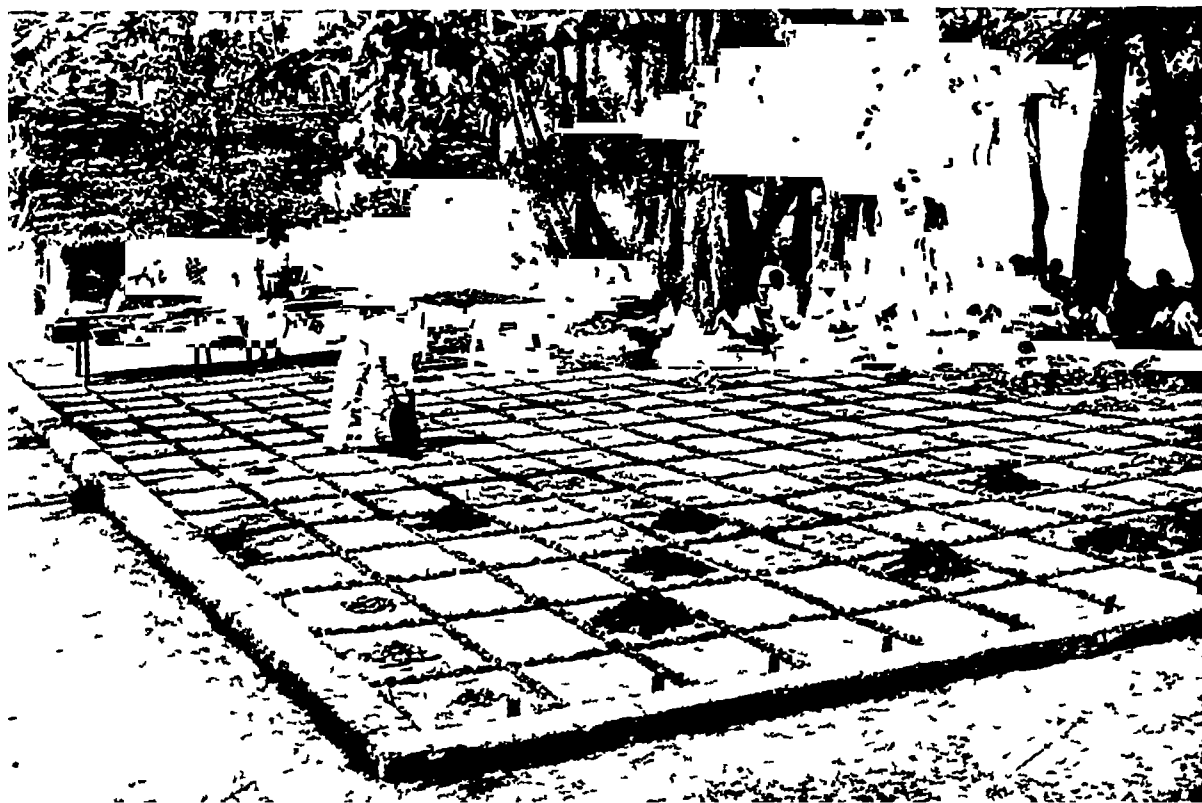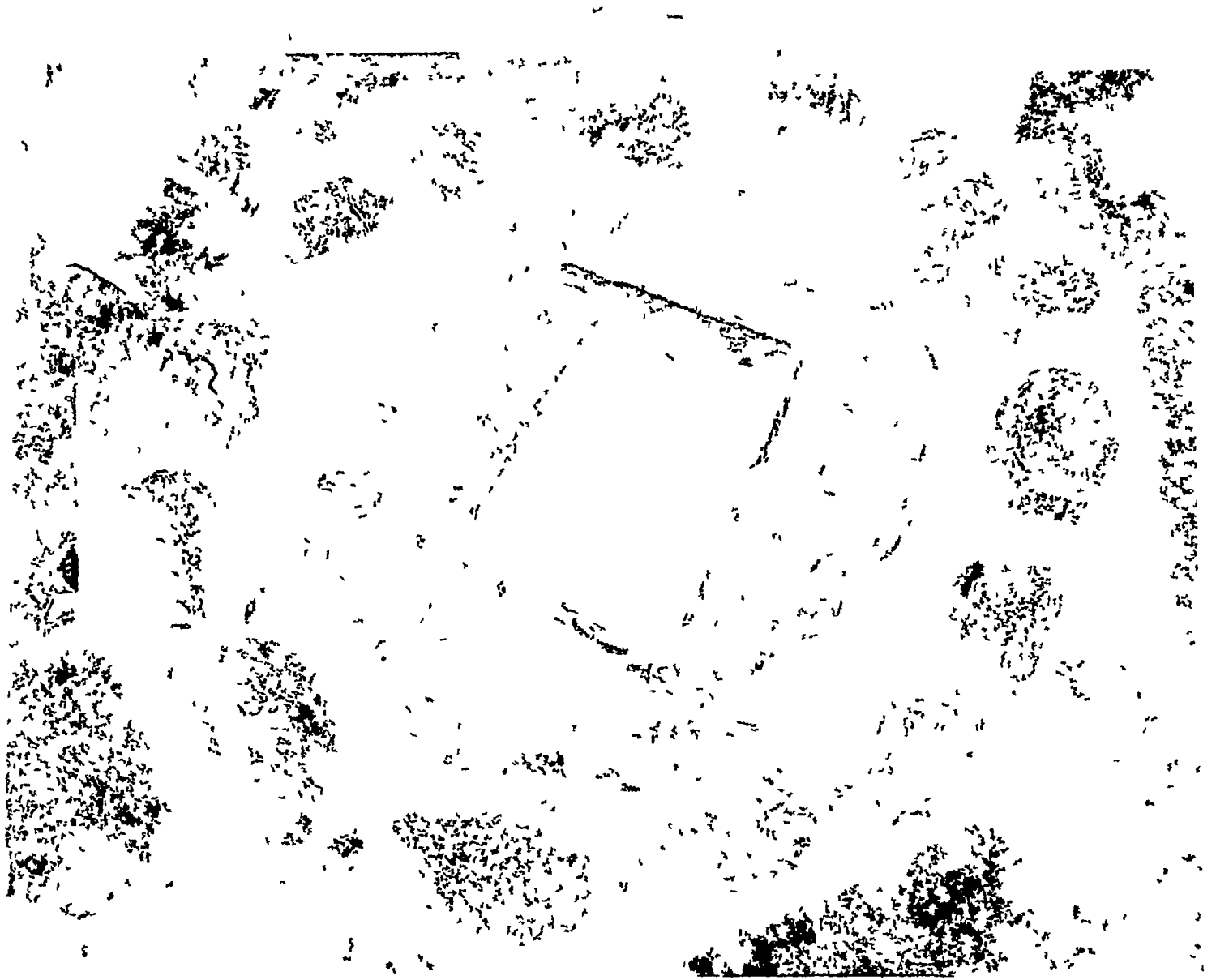
(95) लेकिन मिट्टी के बर्तनों के टुकडो से वास्तविक ऐतिहासिक जानकारी की प्राप्ति के लिए आवश्यक था कि उनमें से प्रत्येक का सतर्क रिकार्ड रखा जाय। उत्खनित स्थान के पास समतल भूमि पर एक चारखाना बनाया गया, जिसमे वर्गों पर क्रमाक खाई के क्षेतिज खण्डो और ऊर्ध्व स्तरो के अनुकूल लिख दिये गये थे, खाई के क्षेत्र के प्रत्येक खण्ड तथा प्रत्येक स्तर पर प्राप्त मृद्भाड-खण्डो को यथोचित वर्ग में रख दिया जाता था ताकि अवसर मिलने पर उनका निरीक्षण और विश्लेषण हो सके। इस तरह उत्खनक प्रत्येक क्रमिक स्तर में मौजूद वस्तुओ की ठीक-ठीक जानकारी पा सके तथा नगर के इतिहास की विभिन्न अवस्थाओं मे प्रयुक्त मृद्भाडों का परिवर्तन जान सके।

(96) उत्खनन के बाद एक महापाषाणी समाधि॥ बीच में वह आयताकार प्रकोष्ठ दीख रहा है जिसमें अस्थिया और उपहार रखे जाते थे, तथा उसके गोल छेद को बाहर से शिला रखकर बन्द किया जा सकता था। ताबूत के चारो ओर पत्थरो का भराव है, और उसके भी चारो ओर, किन्तु जमीन के तल पर, बडी-बडी चट्टानो का घेरा है, जो पहले मिट्टी के टीले का आधार था।
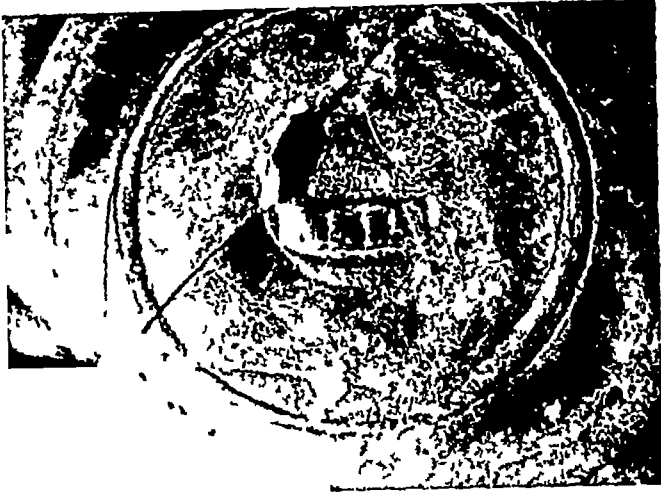
(97) एक आयातित 'आरेताइन' तश्तरी की पेंदी, जिस पर कुम्हार की मुहर लगी है—ATTI (उलट-कर लिखी गयी)। पब्लियस ऐटियस 11 ईसा पूर्व और 16 ईस्वी के बीच अरेजो (या शायद नेपिल्स के समीप पजुओली) में एक कारखाना चलता था।

(98, 99) ब्रह्मगिरि से प्राप्त कुछ 'चक्रांकित' पात्र। ब्रह्मगिरि से प्राप्त 'आन्ध्र' सस्कृति के रंगीन मृद्भांड।
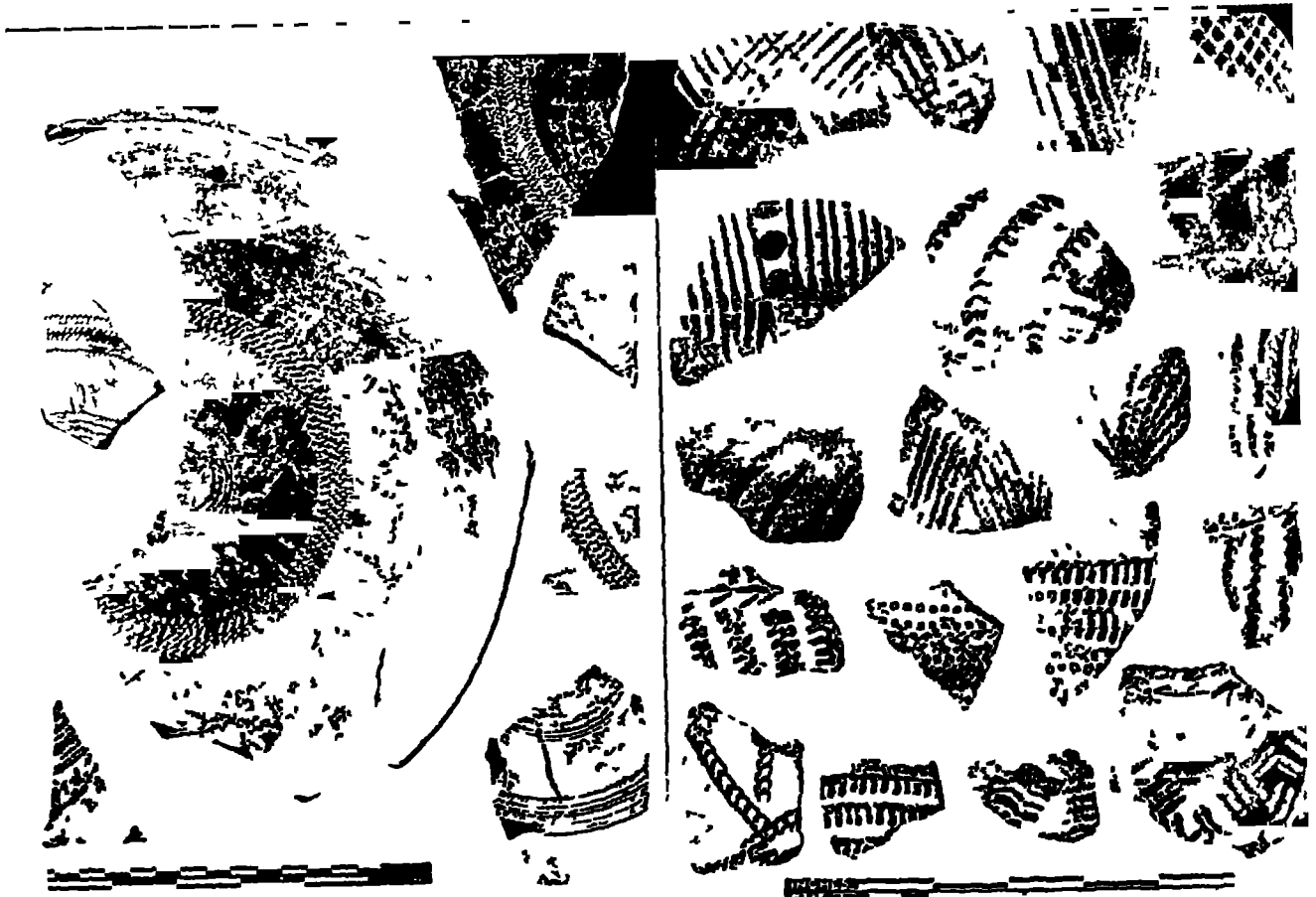
रस शम्र-उगरित

एक सीरियाई किसान की आकस्मिक खोज के कारण सीरियाई समुद्र तट पर, लताकिया के तनिक उत्तर मे, स्थित रस शम्र के दो टीलो की तरफ ध्यान गया। स्थल का वैज्ञानिक उत्खनन 1929 मे आरम्भ हुआ और वर्षो सफलतापूर्वक जारी रहा। डाक्टर क्लॉड शीफर ने अपनी अत्यधिक मतर्क कार्य-विधि तथा उपलब्ध प्रमाणो की श्रेष्ठ व्याख्या के बल पर मृद्भाडो, कास्य-वस्तुओं आदि का एक ऐतिहासिक कालक्रम, जो 2,000 वर्षों के अरसे मे फैला है, पता लगाया है। इस काम के लिए सभी पुराविद् उसके आभारी है। लेकिन जनसामान्य की दिलचस्पी की अनेक चीजो मे से दो प्रमुख है। प्रथम, ऐजियाई ससार के साथ उगरित (यही नगर का पुराना नाम था) का सम्बन्ध; द्वितीय, प्रारम्भिक सीरिया के इतिहास और धर्म पर लिखित प्रलेखो द्वारा पडने वाला प्रकाश।

उगरित फिनीशियाइयो का शहर और बन्दरगाह था, तथा सीरियाई तट के किनारे बसे नगरो मे सब से उत्तरी था। तायर और सिदोन, जिनके नाम मशहूर है, अब भूमध्यसागर के गर्भ मे है। बाइब्लस की खुदाई की गयी है, जिसके फलस्वरूप अमूल्य वस्तुए मिली है—बढिया सोने का काम, सिलखडी के फूलदान जिनपर मिस्री फराऊनो के नाम अकित हैं, एक स्थानीय राजा अहिरम का ताबूत जिसमे एक प्राचीनतम फिनीशियाई मूलपाठ है, लेकिन कुल मिलाकर इतिहास मे बाइब्लस का अशदान बहुत अधिक नही है। अर्वद की समुद्र के सामने वाली विशाल दीवार भर बाकी है। (असुर राजा ने यरुशलम के हेजेकिया को अपने सदेश मे दर्पोक्ति लिखी थी, 'कहा है अर्वद के देवगण !') । अमाथस के बारे मे, स्मृति-समाधियो को छोडकर, कुछ नही मालूम। उगरित के बारे मे जानकारी सबसे कम थी, लेकिन आज उसका महत्त्व सर्वोपरि है।

तायर, सिदोन और बाइब्लस मे प्राप्त मिकीनी मृद्भांडो के टुकडो से हम मे से कई पुराविदो को लगा था कि ग्रीक-भाषी मिकीनियाई सागरचारियो के प्रभाव मे आकर सीरियाई समुद्र-तट के फिनीशियाई—जो अब तक तटवर्ती यातायात से ही सन्तुष्ट थे और लेबनान की देवदारु की लकडिया तथा तायरी बैंगनी रग से रगी वस्तुओं को मिस्र ले जाया करते थे—सहसा दूर-दूर की यात्रा करने लगे, और उन्होने दक्षिणी फ्रास के मार्सेली, स्पेनी तट पर, तथा कार्थेज मे व्यापारिक अड्डे स्थापित किये। यह केवल प्रमाणरहित सन्देह मात्र था। लेकिन अब डाक्टर शीफर

ने उगरित मे क्नोसस के मुलायम पतले फूलदान पाये है, जिससे सिद्ध हो सका है कि उन्नीसवी शताब्दी ईसा पूर्व मे ही फिनीशियाई नगर का सम्बन्ध मिनोई क्रीत के साथ था, और 1400 ईसा पूर्व के बाद तो, जब तक मिकीनियो ने क्रीत को परास्त करके मिन्नेस के वश का खात्मा कर दिया था, उगरित एक प्रकार से मिकीनी उपनिवेश ही बन गया। शहर चारो ओर से अनगढ पत्थरो की विशाल दीवारो से घिरा है जिनमे महराबदार निर्गम द्वार हैं—ये दीवारे यूनानी पेलोपोनेस के तिरिन्स की दीवारो जैसी है। इस नगर से जुडे हुए बन्दरगाह-शहर मे धनी व्यापारी अपने घरो के फर्शो के नीचे, महराबदार प्रस्तर-समाधियो मे दफन हैं—ये समाधियाँ क्रीत, साइप्रस और मिकीनी की आदि समाधियो जैसी दीखती हैं और मृतको के साथ रखी गयी वस्तुएँ मुख्यत मिकीनियाई है। स्पष्ट है कि नगर मे मिकीनियाई यूनानियो की एक बस्ती थी और वे स्थानीय समाज के अगुआ, और अत्यधिक समृद्धिशाली व्यापारी समुदाय के प्रमुख व्यापारी थे। साथ ही, वे, निस्सन्दिग्ध रूप से, फिनीशियाई प्रसार के मुख्य सचालक भी थे, जिसके फलस्वरूप समस्त भूमध्य सागरीय प्रदेश पर मिश्रित फिनीशियाई सस्कृति—जिसमे मिस्र, मेसोपोटामिया, अनातूलिया की तथा ऐजियाई कलाओ का योगदान था—का फैलाव हुआ। यह बात पुराविदो की व्यावसायिक रुचि मात्र की नही है, यह तो इतिहासज्ञो के लिए भी, जो आधुनिक ससार के विकास का आदि स्रोत प्राचीन मे खोजते है, एक अनिवार्य प्रमाण है।

डाक्टर शीफर की दूसरी खोज भी ऐसी ही थी और किसी को उसका आभास न हो सका था। पहली दृष्टि मे यह खोज केवल वैज्ञानिक प्राच्यविदो की रुचि की मालूम पडती है, लेकिन वास्तव मे है कही अधिक सख्यक लोगो की दिलचस्पी की।

तेरहवी शताब्दो की एक विशाल इमारत मे, जिसे डाक्टर शीफर पुष्ट आधारो पर उगरित के प्रधान पुरोहित—शायद दागोन देवता के पुरोहित—का घर समझते थे, उन्हे अभिलिखित मृद्फलको का एक बडा ढेर मिला, जिनमे से अनेक पर धार्मिक पाठ था। बाद मे, राजप्रासाद मे, शीफर को फलको से भरा राजकीय अभिलेखागार मिला (फलक तब भी भौगोलिक समूहो मे व्यवस्थित थे), जिनमे उगरित के राजा का हित्ती राजाओ तथा उनके मित्र-राजाओ, तथा कार्केमिश और अमोराइट के राजाओ के साथ पत्रव्यवहार भी है। राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से अन्तिम पत्र व्यवहार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, लेकिन सबसे गहरा प्रभाव तो धार्मिक पाठो का पडता है।

इनमे लम्बी पौराणिक कविताएँ हैं। इनसे हमे पहली बार आरम्भिक कैनानाइटो (जिनके साथ हिब्रू लोगो का अति घनिष्ठ सम्बन्ध था) के धार्मिक विश्वासो का पता चला हे, इसी सम्बन्ध के कारण ये कविताए हिब्रुओ के प्राचीन धर्म पर भी प्रकाश डाल सकती हैं। कभी-कभी उनसे 'ओल्ड टेस्टामेट' की कोई समस्या हल हो जाती है या कोई अज्ञात दृष्टान्त मिल जाता है। 2वें भजन मे, देवताओ की सभा की अध्यक्षता करते हुए जेहोवा देवताओ मे कहते हैं

'मैं कह चुका हूँ "आप देवता हैं
आप सभी सर्वोच्च के बेटे हैं,

लेकिन आप भी आदमियो की तरह मरेंगे
और राजाओ की तरह आपका भी पतन होगा ।"

इसे पढकर, एक प्रत्यक्ष विरोधाभास के कारण, परेशानी मे पड जाना स्वाभाविक है । लेकिन उगरित की कविताओ से हमे पता चलता है कि 'सर्वोच्च' का अर्थ जेहोवा नही है, बल्कि 'ईल्यन' (फिनीगियाई देवकुल का मुख्य देवता तथा अन्य सभी देवताओ का, जिनके पतन की पूर्वसूचना भजन मे दी गयी है, पिता) का सर्वप्रचलित दूसरा नाम है । अब भजन का अर्थ स्पष्ट हो जाता है । अक्सर सम्बन्ध स्पष्ट है किन्तु अर्थ का पता लगाना मुश्किल है । योद्धा केरेथ के बारे मे एक फिनीगियाई कथन है, जिसके कुछ विवरण बाइविल की गिडियन की कथा से मिलते-जुलते हैं । फिलिस्तीन के दक्षिण मे स्थित नजब के राज्य केरेथ को उसके देवता, 'एल', का आदेश मिलता है कि वह तराह को फिलिस्तीन से बाहर निकाल दे । हममे से जो लोग जानते है कि तराह अब्राहम का पिता था, उलझन मे पड जाते हैं । फिर पता लगता है कि जबूलन जाति तराह के और अगर जाति केरेथ के पक्ष मे थी तो यह उलझन और वढ जाती है । 'ओल्ड टेस्टामेट' के अध्ययन पर इन प्राचीन पाठो के समग्र प्रभाव की बात तो अभी नही की जा सकती, लेकिन इतना अवश्य है कि उगरित मे सर्वथा अप्रत्याशित ढग से प्राप्त पुरोहित-पुस्तकालय के कारण इजराइल के पडोसियो और पूर्वजो के धार्मिक विश्वासो की जानकारी होने पर अध्ययन अधिक पूर्ण हो जायेगा ।

(100) इस हवाई फोटो में दो टीले दिखाई दे रहे हैं, जिनका उत्खनन डाक्टर शीफर ने किया था। समुद्रतट अधिक आकर्षक नहीं है और उस पर बन्दरगाह भी कम सख्या में हैं। खाडी उथली है और उसका तट सफेद बालुकामय है। यही उसके आधुनिक नाम 'द ह्वाइट हार्बर' का कारण है। यही कारण है कि पुराने जमाने के छोटे-छोटे जहाज सुरक्षित रूप से यहा ठहर सकते थे। लगभग तट पर ही छोटा टीला है, जो बन्दरगाह-नगर का अवशेष हैं जहा मिकोनी व्यापारी अपने व्यापार में लगे रहते थे और उन्होंने अपने बढिया मकान बनवाये थे। तट से कुछ दूर चलने पर बडा टीला है जिसके नीचे एक प्राचीर-युक्त नगर के—जहा कभी राजप्रासाद मन्दिर और महापुजारी का घर था—खण्डहर छिपे हैं।
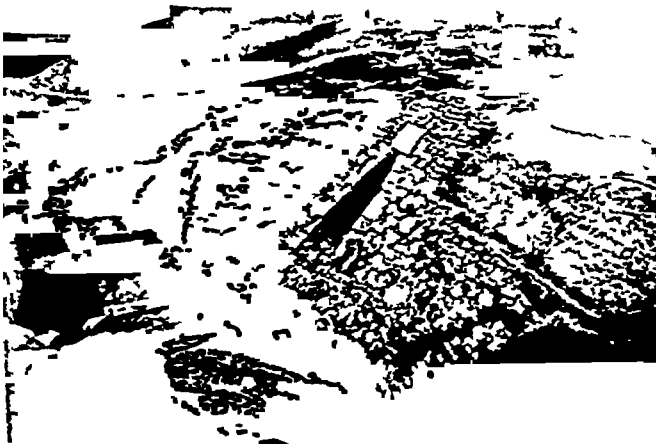
(101) पत्थरो से पुश्तावन्द ढाल—अनातूलियाइयों सीखे हुए विलक्षण सामरिक वास्तु की विशिष्टता—से विशाल नगर-प्राचीर उठती थी, उसके आरपार एक महराबयुक्त निर्गम द्वार है, जिसमें समकोण पर मोड है ताकि उसकी सुरक्षा अधिक अच्छी तरह से हो सके। हित्तियों की राजधानी बोगाजकाय की दीवारों में भी इसी प्रकार के निर्गम द्वार थे, लेकिन यूनान की मुख्य भूमि पर तिरिन्स की मिकोनी दीवारों के साथ इनकी समानता द्रष्टव्य है।

(102, 103) पश्चिमी एशिया का आम रिवाज था कि जिस मकान में लोग रहते थे, और उनके बाद उनके परिवार रहते थे, उसी मकान की सीमाओं में मृतकों को अन्त्येष्टि की जाय. बाबुल में तो यह आम कायदा था। लेकिन उगरित की समाधियो और बाबुल की कच्ची ईंटो से बनी कब्रो में कोई समानता नहीं है। उगरित की समाधिया पत्थरो को साथ-साथ रखकर बनी है, जिन्हे चूनिया पत्थर के टुकडो को खूबसूरती से लगाकर चिकना दिया गया है, पत्थर की सीढिया प्रवेशद्वार तक पहुचाती है और सीढियो के दोनों ओर दीवारों पर अक्सर उपहार रखने के लिए आले हैं, प्रकोष्ठ के फर्श पर पत्थर लगे है तथा पत्थर की ही महराबें है, और ऊपर की ओर एक खिडकी है. जिसमें से परिवार के लोग अपने पूर्वजो की आत्माओं के प्रति तर्पण रख देते थे। उगरित के व्यापारियों की शक्ति और सम्पत्ति इतनी अधिक थी कि ये समाधियां ईजियन की अन्य ऐसी समाधियो से कही अधिक अच्छी हैं, वैभव और शिल्पकौशल में इन समाधियो से श्रेष्ठतर विशाल गुम्बददार 'थोलस समाधिया— जैसे, मिकोनी के तथाकथित 'अत्रेउस का कोषागार' या 'अगामेम्नन की समाधि'।

(104, 105) समाधियों में मौजूद वस्तुओं में सबसे अधिक सख्या में रगीन मिट्टी के पात्र है, कुछ यहां प्रदर्शित है। ये मिकीनी में प्राप्त नमूनो के है और उगरित में उन्हें विदेश से आयात किया हुआ ही माना जा सकता है। समाधियों में उनके उपयोग का अर्थ यही है कि बन्दरगाह के निवासी मिकीनियाई व्यापारी स्वय को सदैव मिकीनियाई ही (एशियाई नहीं) समझते रहे, और यद्यपि व्यापार के कारण उन्होंने अपना जीवन फिनीशियाइयों के बीच बिताया था, फिर भी दूसरी दुनिया में अपने साथ वे स्वदेश की ही वस्तु ले जाना चाहते थे।

(106) फिनीशियाई अन्य लोगों की कृतियों के अनुकरण में अत्यन्त कुशल थे, और उन्होंने मिस्री और एजियाई कला में अनुकरण योग्य वस्तुएं फौरन तलाश कर ली। वे हाथीदांत के काम में मशहूर थे और हाथीदांत का यह ढक्कन निस्सदेह किसी फिनीशियाई शिल्पी ने ही उकेरा था, किन्तु विषय-वस्तु और शैली क्रीत से ली गयी है तथा देवी मिनोई मूर्त्तियों का सुपरिचित घाघरा पहने हुए है।

(107) दूसरी ओर, यह सोने का प्याला इस बात का प्रमाण है कि सर्वथा भिन्न स्रोतों से प्राप्त अभिप्रायो और रचना-शैलियों के सम्मिश्रण में फिनीशियाई कलाकार कितना कुशल था। यहा उसने एजियाई और मिस्री दोनो प्रभाव ग्रहण किये है, किन्तु मिस्री प्रभाव अधिक होते हुए भी यह प्याला नील की घाटी में हरगिज नही बन सकता था, यह फिनीशियाई कला का श्रेष्ठ और विशिष्ट उदाहरण है।
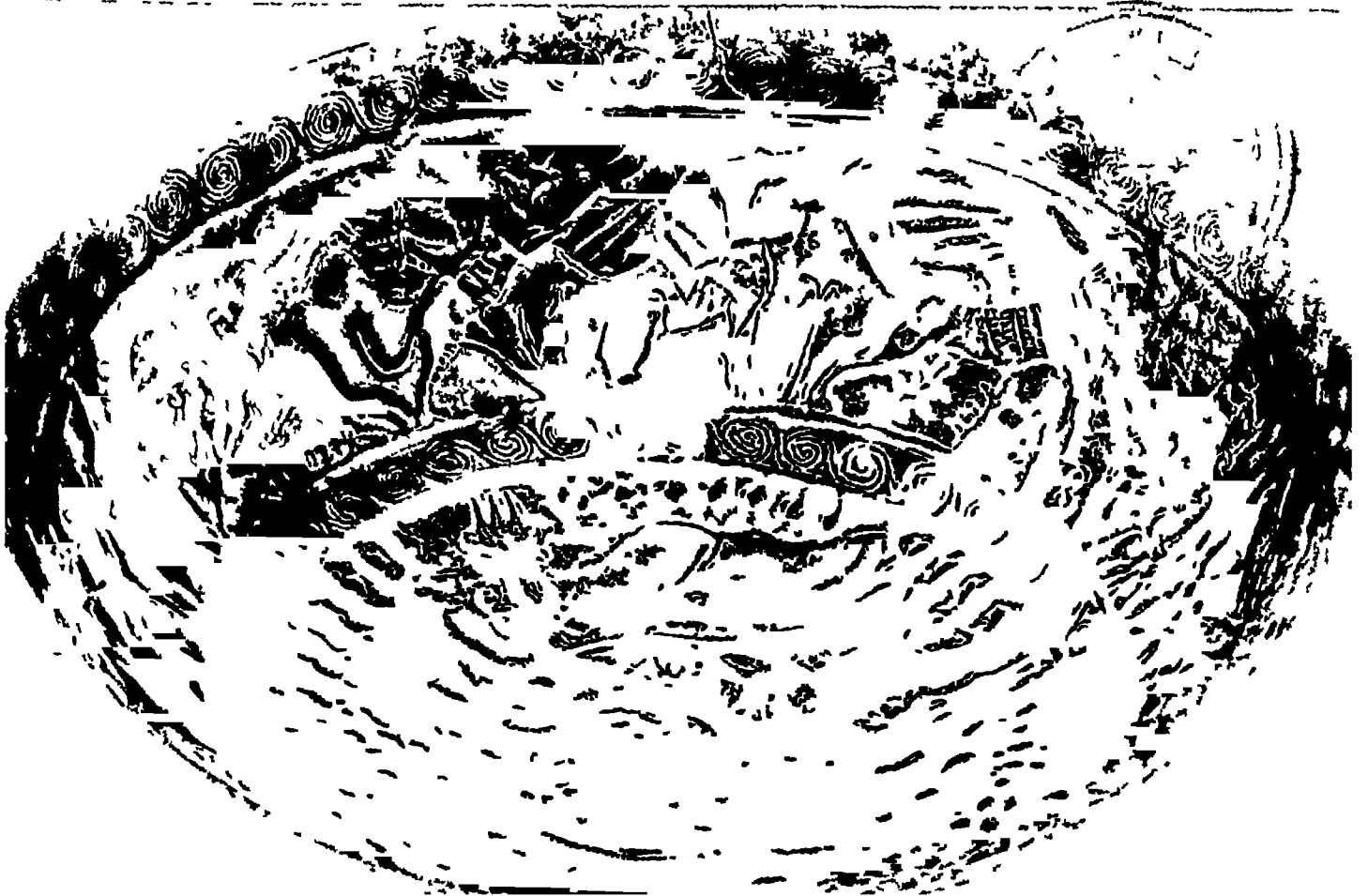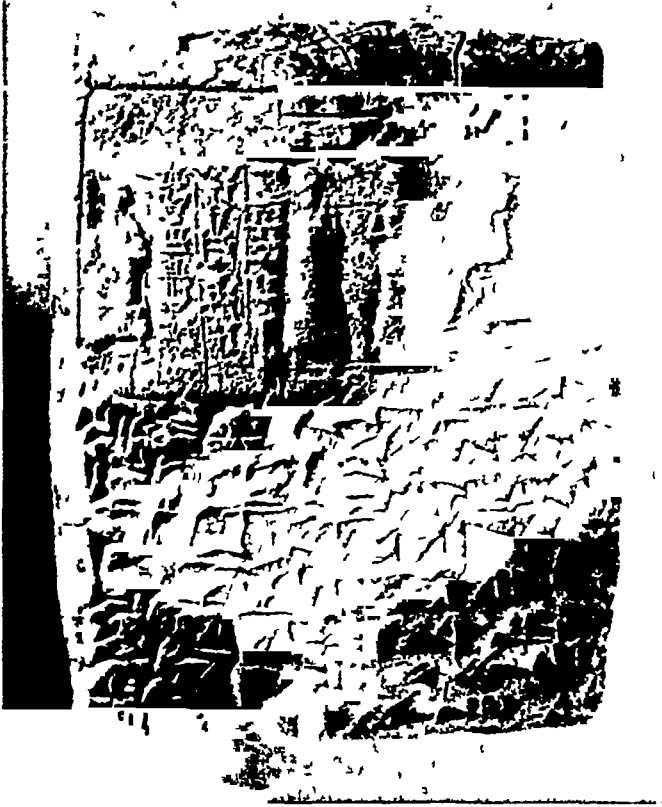
(108) उगरित के राजा बेलनाकार 'राजवंशीय' मुद्रायें प्रयोग करते थे। ये बाबुली मुद्राओं जैसी होती थीं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती थीं, इस मुद्रा पर निकमद द्वितीय का नाम लिखा है और इसमें राजा अपने इष्ट देवता की उपस्थिति में खड़ा है।

समस्त पश्चिमी एशिया में राजनीति की भाषा अक्कादी थी, जो बाबुली कीलाकार लिपि में लिखी जाती थी। पत्रों पर राजा की मुहर लगाकर दस्तखत होते थे, मुहर गीली मिट्टी पर लगाई या (अगर मुहर बेलनाकर हुई तो) फेलाई जाती थी, यह आवश्यक नहीं था कि नाम भी अक्कादी में ही लिखा जाय—वह विभिन्न देशों को अपनी भाषाओं (और शायद अपनी लिपि में भी) लिखा जा सकता था।

(109) हित्तियों के महान् राजा और उगरित के निकमद राजा के बीच सश्रय सधि की वार्ताओं और शर्तों से सम्बन्धित कई फलकों पर एक गोल दबाकर लगाने वाली मुद्रा है, जिसपर हित्ती चित्र-लिपि में, बोगाज़काय के राजा सप्पिलुलिउमा तथा उसकी रानी तवनन्ना के नाम अंकित है।

(110) कारमेकिश के राजा इनि-तेशुब ने एक विदेशी व्यापारी (जो शायद उसका प्रजाजन था) की हत्या के अपराधी कुछ नागरिको को जुर्माना अदा करने के आज्ञापत्र में एक बेलनाकार मुद्रा का उपयोग किया है, जिसमे लिखावट कीलाकार और चित्रलिपि दोनो मे है।

(111) महापुजारी के घर में प्राप्त फलको मे से कुछ सर्वथा नयी किस्म के है। ये मामूली कीलाकार चिह्नो किन्तु फिनीशियाई भाषा मे लिखे गये थे, और प्रत्येक कीलाकार चिह्न बाबुली और अक्कादी की भाति दो व्यजनो और एक स्वर के मिलने से बने (साधारणत) पदाश को नही बल्कि उस पदाश के पहले व्यजन को व्यक्त करता है। उगरित का कोई कातिब शायद अपनी अलग भाषा में लिखना चाहता था और जब उसने पाया कि बाबुली पदांश उसके फिनीशियाई शब्दो के उपयुक्त नही हैं, तो उसने अक्षर-प्रणाली का सूत्रपात कर दिया। वस्तुत उसकी प्रणाली प्रचलित नहीं हो सकी, और परवर्ती फिनीशियाई वर्णमाला, जिससे यूनानी और अंग्रेजी भाषाओं की वर्णमालाये निकली है, का प्रारम्भ सीरिया में अन्यत्र हुआ था, लेकिन उगरित के कातिब को इस विवेकपूर्ण विचार का श्रेय तो मिलना ही चाहिए। यह सब से पुराना वर्ण-लिखित पाठ्य है।
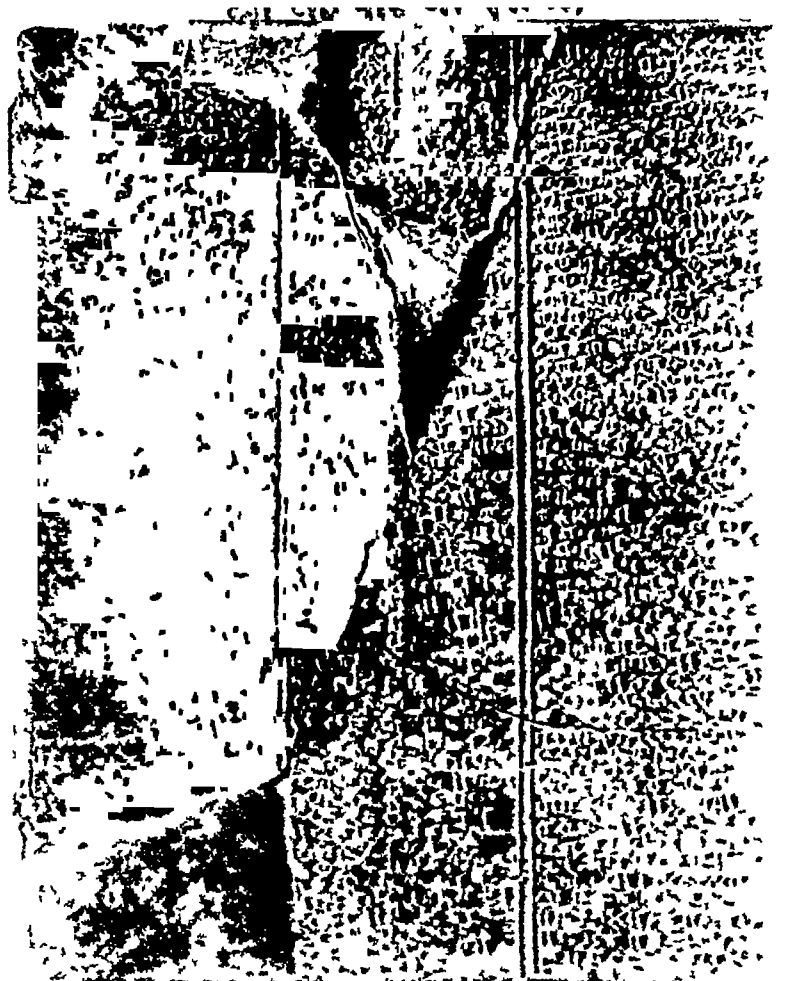
(112) और यह है महापुजारी के पुस्तकालय में प्राप्त एक धार्मिक फलक, जिसमे 'केरेथ की कथा' का कुछ अंश दिया गया है।

सरहिन्द 1

यह कहानी एक उत्खनन की नही वरन् बीसियो उत्खननो की है। पुरानी दुनिया की खोज मे जितना दुस्साहस पुराविदो ने इन उत्खननो मे दिखाया है वह विलक्षण है। तिब्बत से परे चीनी तुर्किस्तान है। इसके दक्षिण मे वीरान और अलघ्य कुन लुन पर्वत श्रेणी, पश्चिम मे 'ससार की छत' पामीर पर्वत, उत्तर मे एक अन्य पर्वत श्रेणी अल्ताई है, तथा पूर्व मे यह कुख्यात गोवी मरुभूमि मे जा मिलता है। यह प्रदेश लगभग पूरा का पूरा पथरीले बजरो और परिवर्ती बालू के टीलो का प्रदेश है।

कुन-लुन पर्वत श्रेणी की तराई मे कुछ नखलिस्तान हैं, जहा छोटे पैमाने पर 'शहरी' जीवन सभव है—पृष्ठ 119 पर दिये गये नक्शे मे काशगर, यारकन्द, खोतन (जो कभी एक राज्य

की राजधानी था), अन-ह्‌सी, और सू-चाऊ दिखाए गये हैं, लेकिन उत्तर से दक्षिण लगभग 250 मील और पूर्व से पश्चिम लगभग 1500 मील के क्षेत्र मे वीरान रेगिस्तान फैला है—सूखी हुई नदियो के पेटे और शायद कही-कही शताब्दियो पहले सूख गये पेडो के तने एक निर्जीव देश की विषण्णता को और बढाते है।

लेकिन एक जमाना था जब मौसम के परिवर्तन ने सारी जिन्दगी को नष्ट नही किया था और यह दो ससारो को मिलाने वाला राजमार्ग था। वहा तब नदिया बहती थी और लोग रहते व खेती करते थे तथा चीन और पश्चिम-भारत और अफगानिस्तान—जहा सिकन्दर महान् के अनुगामियो ने बैक्ट्रिया साम्राज्य की स्थापना की थी—के बीच काफिले आते-जाते थे। चीनी साहित्य मे इन यात्रियो का जिक्र है लेकिन केवल भारत से चीन जाने वाले बौद्ध यात्रियो का, तुर्किस्तान के सामाजिक और राजनैतिक इतिहास का जिक्र कही नही है, यद्यपि वह इतिहास निश्चयत महत्त्वपूर्ण होगा।

भारतीय सार्वजनिक सेवा के ऑरेल स्टीन ने उस अज्ञात देश का अन्वेषण किया तो मानो उसके जीवन की महत्त्वाकाक्षा पूर्ण हो गयी। 1900-1 तथा 1906-8 मे आयोजित दो पृथक् अभियानो मे उसने चीनी तुर्किस्तान का अद्‌भुत पुरातात्विक एव भौगोलिक सर्वेक्षण किया। भारतीय सर्वेक्षण विभाग के दो-तीन मुसलमानो के साथ उसने (दल मे वही एकमात्र यूरोपीय था) 20,000 फुट ऊँचे दर्रों से बार-बार पामीर पर्वत को पार किया; अपने दल के साथ उसने तकलामकन रेगिस्तान को, जहा वह सबसे ज्यादा चौडा था, उत्तर से दक्षिण पार किया—पानी के लिए उसने ऊँटो पर बर्फ लदवा रखा था और पानी की आखिरी बूद खत्म होते-होते वह अपने दुस्साहस और यात्रा-विधि के जोर पर अपने लक्ष्य तक पहुच गया। उसने पैदल या टट्टू पर सवार होकर 10,000 मील की यात्रा की। प्राचीन स्थलो पर डेरे डालकर उसने उस समय खुदाई की जब तापमान शून्य से बारह अश कम होता था और उसके फाउण्टेनपेन की स्याही जम जाती थी। उसका एक भारतीय सर्वेक्षक अशक्त हो गया तो उसे घर भेज दिया गया। हिमान्धता के कारण एक की आखे जाती रही, और अभियान समाप्त होते-होते पाला मारने के कारण स्टीन के पैरो की अगुलियाँ नष्ट हो गयी और उसे उपचार के लिए 300 मील के सफर के बाद पर्वत पार तिब्बत ले जाया गया। लेकिन इससे वह मूल्यवान पुरावशेषो की 100 पेटिया तैयार कराकरब्रिटिश सग्रहालय को भेज चुका था, तथा उसके विस्तृत सर्वेक्षण के फलस्वरूप ऐसे क्षेत्र के चौरानवे बडे-बडे नक्शे तैयार हुए, जिसके मानचित्र तब तक तैयार नही हुए थे।

एक आकर्षक खोज थी 'पुरानी दीवार'। विख्यात 'चीन की विशाल दीवार' मगोल आक्रमण से चीन साम्राज्य की रक्षा करती थी, अब, इस विख्यात दीवार के 'जेट दरवाजे' से लगभग 200 मील पूर्व मे, स्टीन को दूसरी विशाल सामरिक दीवार मिली, जो पूर्व-पश्चिम दिशा मे थी और हूणो के पूर्वजो से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मार्गों की सुरक्षा के लिए बनायी गयी थी, स्टीन ने 100 मील तक इस दीवार को खोज निकाला। पहरेदारो के घरो की खुदाई से बहुसख्यक सरकारी

प्रलेख मिले जिनसे सिद्ध हुआ कि दीवार का निर्माण दूसरी शताब्दी ईसापूर्व मे हुआ था—यही वह समय था जब हान-वश के सम्राटो ने चीनी साम्राज्य का अधिकतम विस्तार किया—और 57 ईसा-पूर्व तक उस पर कब्जा किए रहे थे।

'पुरानी दीवार' के पीछे के सुरक्षित प्रदेश मे, जो अब वीरान है, ऐतिहासिक अवशेष भरे पडे थे। एक के बाद एक स्टीन ने मन्दिरो और घरो की खुदाई की। मन्दिरो मे उसे सगमर-मरी चूने की मूरतें, उन्चित्र और भित्तिचित्र मिले तथा घरो मे हजारो लिखित दस्तावेज। लकडी, भोज-पत्र, ताड-पत्र, कागज या रेशम पर लिखे दस्तावेज अलग-अलग लिपियो और भाषाओ मे थे, अनेक पजाब के कुषाण शासको द्वारा प्रयुक्त प्राचीन भारतीय ब्राह्मी लिपि मे थे, कुछ बुखारा और समरकन्द के निवासी ईरानियो की लिपि और भाषा 'अरमाइक' मे थे, अनेक 'खरोष्ठि' मे थे, जो, सिक्को और अभिलेखो के आधार पर, उत्तर-पश्चिमी भारत की लिपि थी, बहुसख्यक चीनी भाषा मे थे और कुछ तो ऐसी भाषाओ मे थे जिनका पता अभी तक नही चला है, इन सभी के सम्मिलित आधार पर कम से कम तुर्किस्तान के राजनीतिक इतिहास की रूपरेखा तो बनायी जा सकती थी।

तुर्किस्तान वस्तुत राष्ट्रो का सगम-स्थल था। शुरू-शुरू मे हान सम्राट् तारिम काठे पर अपने अधिकार की रक्षा करते थे, उनके सैनिक अधिकतर सागदियाना के भारतीय-शक लोग थे, जो उत्तरी हूणो के परम्परागत शत्रु थे क्योकि हूणो ने ही उन्हे तुर्किस्तान से बाहर निकाला था। इन्ही भारतीय-शको के एक कबीले से कुषाण शासक आए थे, और तक्षशिला को अपनी राज-धानी बनाकर पजाब पर आधिपत्य कर लेने के बाद, तुर्किस्तान पर उनका प्रभाव गहरा हो उठा और उन्ही के कारण बौद्ध धर्म तुर्किस्तान मे फैल सका। यही कारण है कि भारतीय लिपि के कुछ प्राचीनतम उदाहरण भारत से दूर तुर्किस्तान मे मिलते है और मन्दिर मूर्त्ति-शिल्प पजाब की यूनानी बौद्ध शैली मे है। लेकिन तुर्किस्तान मे भारतीय सम्प्रदाय का मिलन चीनी सम्प्रदाय के साथ हुआ और साथ-साथ बुखारा से होकर आने वाला कुछ ईरानी प्रभाव भी दीखता है, सुन्दर वस्तुएँ विभिन्न कलाओ के पारस्परिक प्रभावो को भी स्पष्ट करती हैं।

लगभग 220 ईस्वी मे हान-वश का पतन हुआ तथा देश अपने ही भरोसे रह गया, यद्यपि कभी-कभी ताड् सम्राट् अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश करते रहे। उत्तर मे उइगर नामक तुर्की कबीला प्रमुख था, दक्षिण मे तिब्बती लोग। लगभग 760 ईस्वी मे तिब्बतियो ने जबर्दस्ती तुर्किस्तान पर कब्जा कर लिया और एक शताब्दी तक किये रखा। तब चीनी सम्राट् ने फिर अपना आधिपत्य स्थापित किया, और दसवी शताब्दी के आरम्भ मे जब ताड् वश का पतन हुआ तो चीनियो का आधिपत्य फिर जाता रहा। इन सभी लोगो और घटनाओ के लिखित दस्तावेज स्टीन ने इमारतो के खडहरो से खोद निकाले हैं।

लेकिन अब रेगिस्तान के कदम बढते जा रहे थे और कभी के गुजान देश के बडे-बडे भूभाग वीरान हो गए, खती और जिन्दगी नखलिस्तानो की सकरी सीमाओ मे सिमट गयी। पूर्व-पश्चिम का विशाल व्यापार-मार्ग फिर भी यात्रियो द्वारा प्रयोग किया जाता रहा, चीनी यात्री

बौद्धधर्म के जन्मस्थान भारत गये और पवित्र ग्रथो व चित्रो के सग्रहो सहित चीन लौटे ताकि उनके चीनी बौद्धो की धार्मिक शिक्षा और अच्छी हो सके , तेरहवी शताब्दी के अन्त मे वेनिस-निवासी मार्को-

नक्शा, जिसमे कुन-लुन पर्वत-श्रेणी की तलहटी के नगर दिखाए गए है।
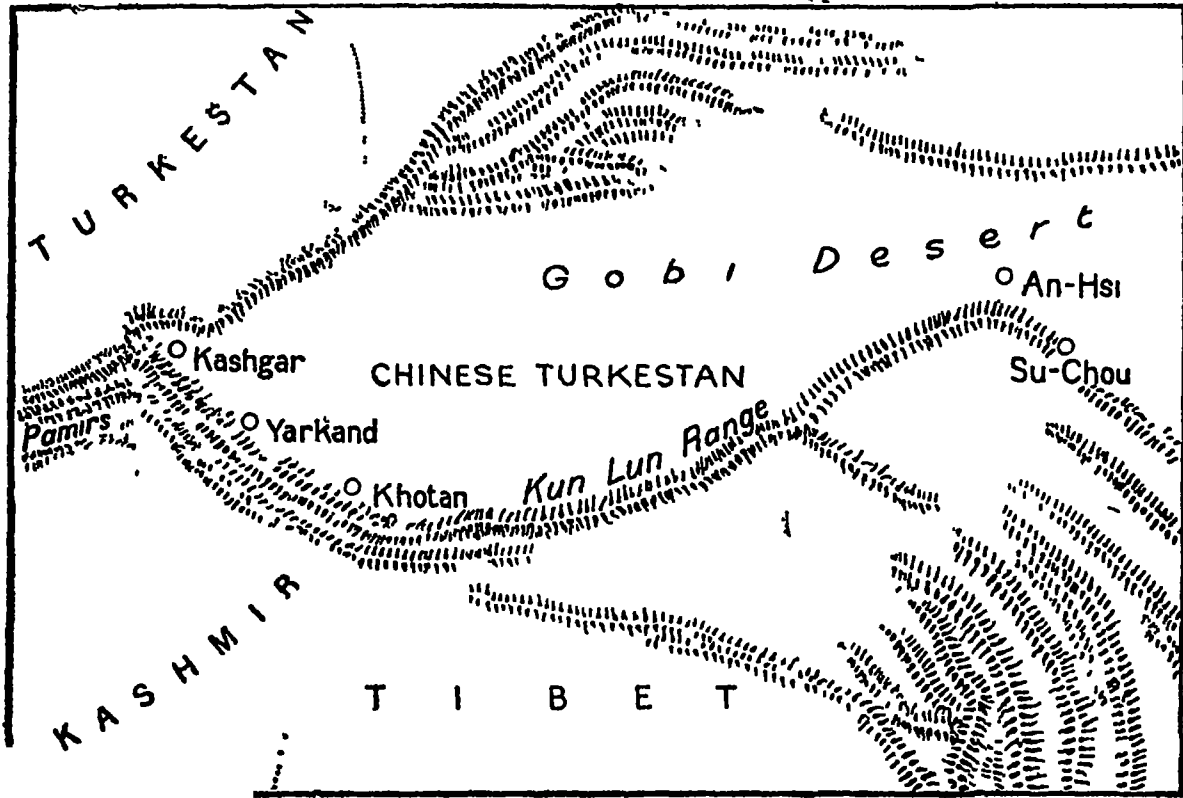
पोलो इसी मार्ग से गुजरा और उसने 'लूप' रेगिस्तान का भयकर वर्णन किया है, लेकिन यातायात कम होता गया और क्रमश चीन और पश्चिम के बीच सम्बन्ध बिलकुल समाप्त हो गया ।
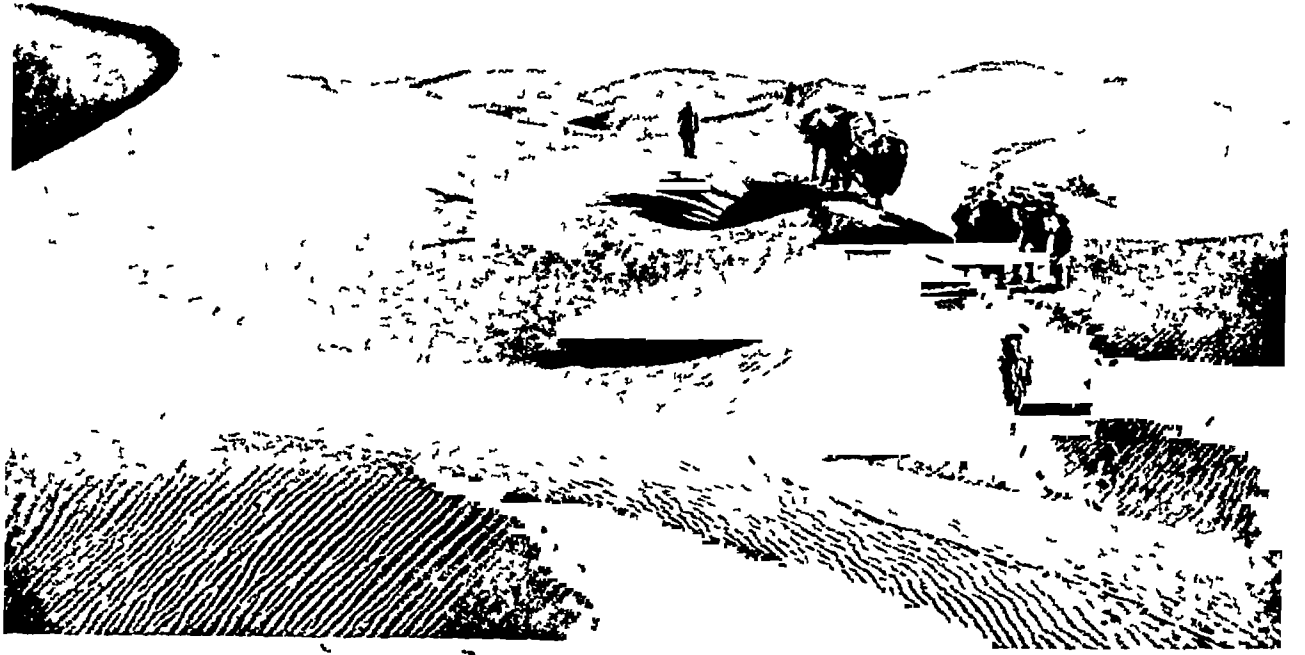
(114) तकलामकन रेगिस्तान के बालू के टीले।

(115) बालू में दफन मकानों के खण्डहर। मकानों के बनाने का तरीका इस प्रकार था लकडी का एक ढांचा बनाकर उसमें सरपत भर दी जाती थी और बाहर-भीतर से पलस्तर कर दिया जाता था। जब लोग उनमें रहना बन्द कर देते थे और वे लगातार जगह बदलती बालू में दब जाते थे तो उनके निचले हिस्से तो ठीक बने रहते थे लेकिन ऊपरी हिस्सों पर लगे प्लास्टर और चटाइयां हवा के लगातार आघात से विनष्ट हो जाती थीं और दीवारों के टूटे-फूटे खम्भे मात्र बचे रह जाते थे। इस चित्र में ऐसा ही एक खण्डहर दिखाया गया है, जिसके पास ही शहतूत के दो पेड़ों के ठूंठ खडे हैं।

(116) ये प्रलेख (फोटोग्राफ में प्रदर्शित अधिकांश आलेख 'दीवार' के प्रहरी-निवासो में पाये गये थे) विशुद्ध काल-निर्धारण में सहायक होने के साथ-साथ 'पश्चिमी क्षेत्रों के सेनाध्यक्ष' के अधीन सैनिक प्रतिरक्षा प्रबन्ध के बारे में विस्तृत जानकारी भी प्रदान करते है। सेनाध्यक्ष का काम कठिन था, यह उसके बार-बार के आज्ञापत्रों से सिद्ध है जिनमें सेनाओं के राशन में कमी और स्थानीय टुकडियो को खुद फसल उगाने और चारा पैदा करने के आदेश दिये गये हैं, ३३० ईस्वी तक (यह अन्तिम तारीख है) सूखा पडने लगा था। अफसर चीनी थे लेकिन सैनिको को बर्बर कहा गया है, अर्थात् वे भारतीय-शक वेतनभोगी थे, लेकिन चूंकि उन्हें वस्त्र और शस्त्र सेना के सग्रह से प्राप्त होते थे, इसलिए वे निश्चय ही चीनी सैनिको के समकक्ष रहे होंगे। यह एक अलग-थलग सैनिक चौकी थी, एक प्रलेख से, जिस पर एक सम्राट् के शासन के सोलहवें साल की तारीख है जबकि सम्राट् की मृत्यु सिंहासनारूढ होने के तीन साल बाद ही हो गयी थी, लगता है कि शाही मुख्यालय के साथ समस्त पत्रव्यवहार चौदह साल तक कटा रहा था।
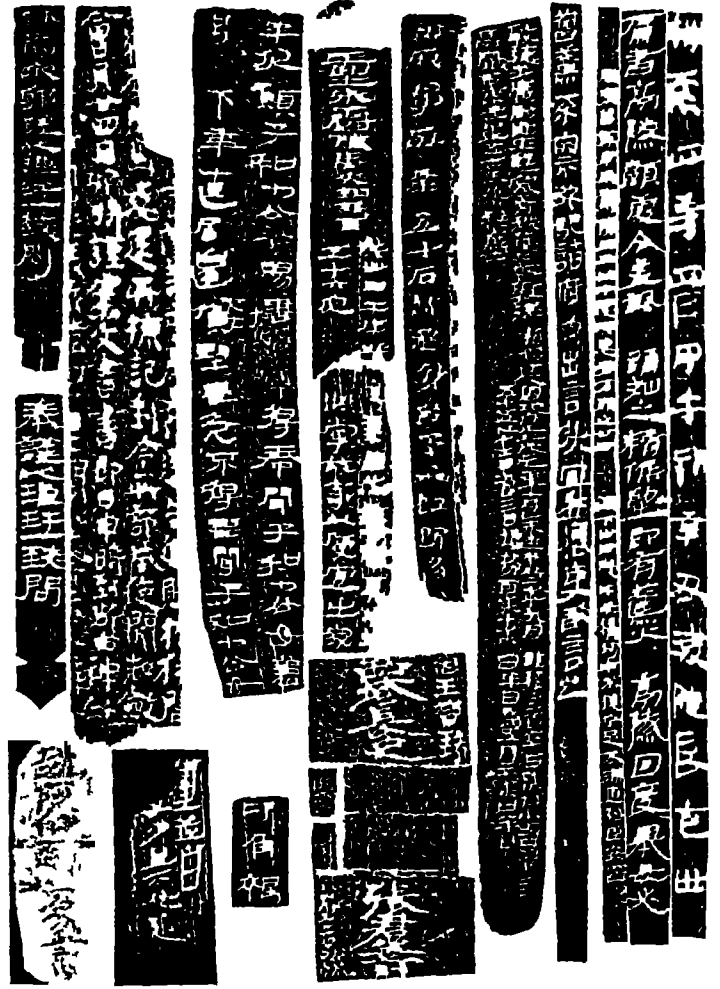
(117) बालू की पर्त के नीचे बहुत कुछ मिलना शेष था। जहा इमारत बौद्ध मठ थी, वहां दीवारो पर मसाले (स्टको) के उच्चित्र बने थे, जिनके अधिकाश अब भी यथास्थान है। इनकी विषयवस्तु, शैली और तकनीक पजाब के स्तूपों और मठो के उच्चित्रो के ही समान है और ये निश्चयत भारतीय कलाकारो द्वारा निर्मित है।
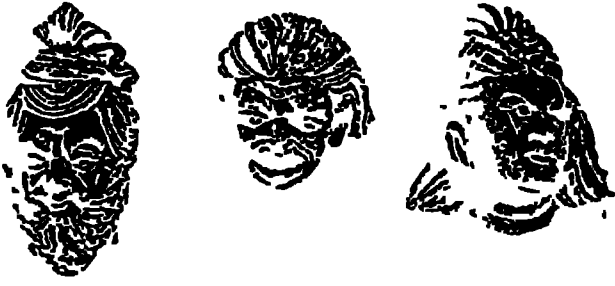
(118) अनेक उच्चित्रों में, और विशेषत आकृतियों के सिरों में यूनानी-रोमक प्रभाव स्पष्ट है, केन्द्र में प्रदर्शित ढाल सीधे अथेना की यूनानी ढाल से प्रेरित है, जिसपर गॉरगॉन का सिर भी बना है।

(119) भित्तिचित्र अधिक महत्त्वपूर्ण थे। मिरान के बौद्ध मठ से, जो 250 और 300 ईस्वी के बीच निर्जन हो गया था, स्टोन ने भित्तिचित्र प्राप्त किये, जिनके बारे में कहा जा सकता है कि उनमें प्राचीन तुर्किस्तान को सार्वभौमिक प्रवृत्ति स्पष्ट लक्षित है। पहली दृष्टि में लगेगा कि हम अजन्ता की गुफाओं में हैं, ओर सच तो यह है कि विश्वविख्यात अजन्ता भित्तिचित्रों से ये काफी प्रभावित है, लेकिन यहां प्रदर्शित अंश में बायीं ओर बैठी युवती भारतीय नहीं है और शायद किसी फारसी लघुचित्र से आयी होगी। दायीं ओर का पुरुष शायद रोमक चित्र है और बीच में उपस्थित 'अमोरिनो' भी प्राचीन है।
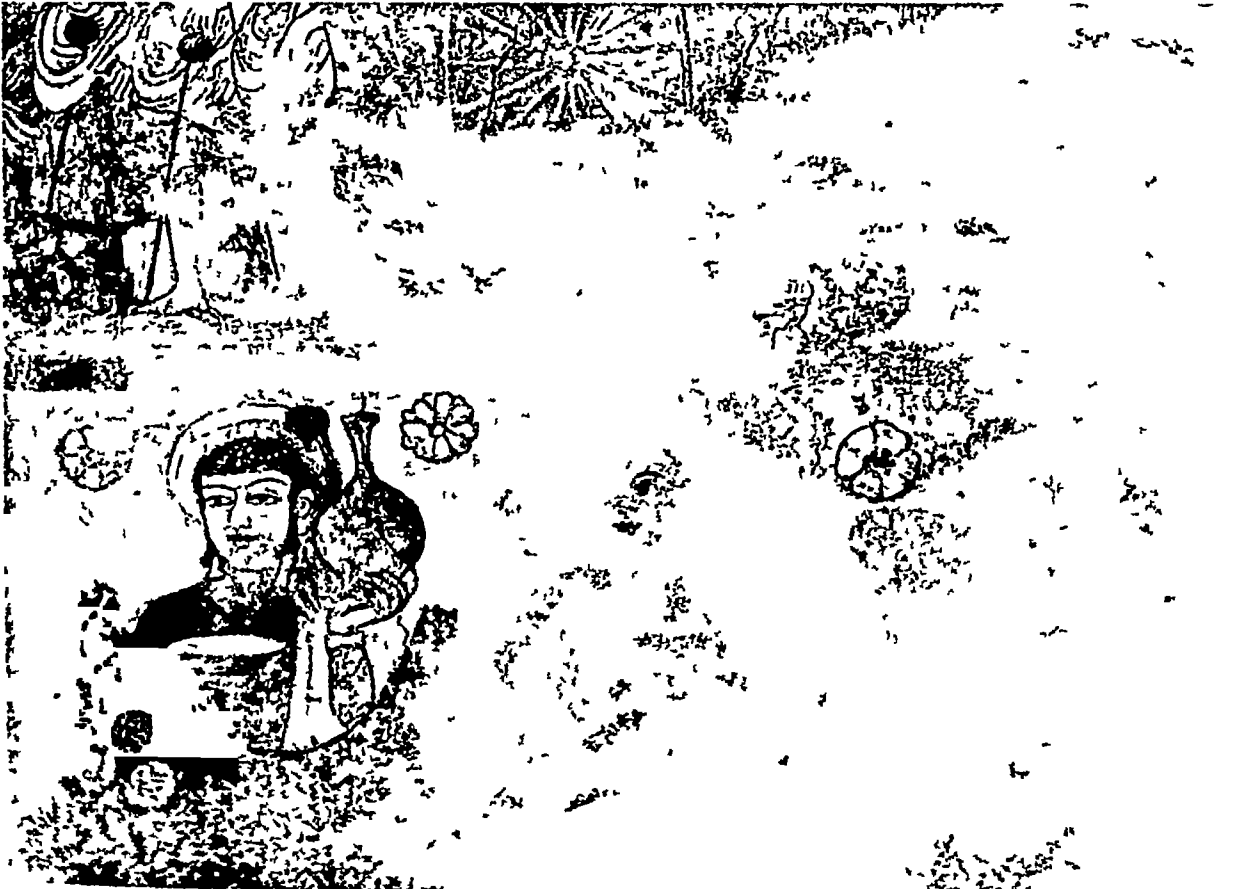
यात्री के मार्ग के पूर्वी छोर पर ऐमी जगहे है जहाँ नदी की घाटी के साथ की पहाडी दीवार पर बुद्ध के अनेक गुहा-मन्दिर है। शायद कोई श्रान्त पथिक स्वदेश की मीमा पर ठहर गया था और उसने चट्टान मे एक मन्दिर खोद दिया था, उसकी भावना से प्रेरित होकर शायद दूसरो ने भी वही किया था और इस प्रकार एक भिक्षु-समाज प्रारम्भ हो गया था। स्टीन ने ऐसे मन्दिरो का एक समूह अर-तम के वाग मे पाया, मन्दिर खण्डहर और वीरान थे। फिर उसे ता-शीह के दक्षिण मे 'वहुबुद्ध घाटी' मिली, यह समूह पहले से कही अधिक वडा था, अच्छी दशा मे था और उसमे एक भिक्षु-समाज रहता था। लेकिन उसकी महानतम खोज थी तुन-हुआङ् नामक चीनी नगर के पास 'सहस्रबुद्ध गुफाएँ'। ये गुफाएँ सर्वथा अज्ञात न थी, क्योकि १८७९ मे हगरी का एक दल वहाँ गया था। ये एकदम वीरान भी न थी, वेशक वे टूटी-फूटी दशा मे थी और अधिकाश मन्दिरो के सेहन विनष्ट हो गए थे, फिर भी लोग साल मे एक वार उत्सव के लिए वहा एकत्र होते थे और कुछ ताओवादी भिक्षु यहाँ रहते थे, एक भिक्षु ने अपने प्रिय मन्दिर की मरम्मत के लिए धन भी एकत्र किया था। स्टीन के वहाँ जाने का असली कारण एक अफवाह थी कि प्राचीन प्रलेखो से भरा हुआ एक दीवार से वन्द मन्दिर दो साल पहले किसी भिक्षु को मिला था। स्थल पर पहुँच कर जाच करने पर अफवाह सच सिद्ध हुई। अपने चीनी दुभाषिये को साथ लेकर स्टीन सरकारी तौर पर भिक्षु के पास गया और उसने पुनर्स्थापित मन्दिर को दिखाने का आग्रह किया। ऊँचे उप-मन्दिर मे कुछ समय पहले अच्छी तरह रग-रोगन किया गया था, उससे तथा मुख्य मन्दिर को जाने वाले ऊँचे रास्ते से गुजरते हुए 'मै दाहिनी ओर देखने से अपने को रोक न सका, जहाँ विना प्लास्टर की हुई ईटों की दीवार अपने पीछे एक मन्दिर छुपाए थी।' पाडुलिपिया वहा थी लेकिन उन्हे देखा कैसे जाय ? इससे भी मुश्किल मवाल था, उन्हे पाया कैसे जाय ? चातुरी सदैव पुराविदो की सहायक होती है, किन्तु यहा पर तो अत्यधिक चातुरी आवश्यक थी।

नए उपमन्दिर के नए भित्तिचित्रो मे से एक मे हुएन-साङ् को भारत से वापसी यात्रा मे दिखाया गया था; उसके घोडे की पीठ पर हस्तलिपियो के वडल लदे थे और वह तेज वहते पानी को पार कर रहा था। यह शुभ शकुन था और स्टीन अपने चीनी सरक्षक सन्त के वारे मे सविस्तार वोलने लगा, रात्रि के लिए विदा होते समय तक उसने भिक्षु पर अपना रग जमा दिया था। वह अपने दुभापिये को भी वही छोड गया ताकि वह पुजारी से स्टीन को गुप्त खजाने का कम से कम एक अश दिखाने की सिफारिश कर सके। काफी रात गये दुभापिया स्टीन के खेमे मे आया तो उसके साथ कुडलियो का एक वडल था—कुछ वौद्ध पुस्तको के चीनी अनुवाद, प्रत्येक के अन्त मे एक टिप्पणी थी कि हुएन-साङ् खुद उन्हे भारत मे लाया था और अनुवाद भी उसने ही किया था। यह एक चमत्कार था और था शुभ शकुन जिसे नजरअन्दाज करना असम्भव था। हुएन-साङ् पुस्तको को इसलिए लाया था कि चीनियो को वौद्ध धर्म की अधिक अच्छी शिक्षा दी जा सके, और 1200 से अधिक वर्षों के दौरान वे किसी को दिखाई तक न पडी और उसका उद्देश्य ही विफल हो गया, अब हुएन-साङ् का निष्ठावान अनुगामी, पुस्तको की पुनर्प्राप्ति के तत्काल वाद, आ गया है, और

सरहिन्द 2
सहस्रबुद्ध

भारत मे बुद्ध की जीवन-लीला के स्थलो की लम्बी यात्रा करने वाले एक चीनी यात्री का नाम आज भी आदर से लिया जाता है। हुएन-साङ् ने लगभग ६५० ईस्वी मे जिस मार्ग से यात्रा की थी, उसे सावधानी से लिखा था और उसकी पुस्तक 'सी-यू-की' सभी चीनी अधिकारियो की जानी-पहचानी है। साथ ही, दन्तकथाओ के फलस्वरूप उसकी प्रामाणिक कथा मे अनेक प्रकार की चमत्कारपूर्ण और अलौकिक घटनाएँ भी जुड गयी हैं। ऑरेल स्टीन ने भारत मे हुएन-साङ् के मार्ग पर चलने के बाद तुर्किस्तान मे भी उसका अनुसरण करते हुए कहा था कि साधु-प्रकृति हुएन-साङ् उसका विशेष सरक्षक था। चीनी अधिकारियो के साथ वार्तालाप के दौरान वह 'ताङ्-वश के महान् भिक्षु' की स्मृति मे आदर सूचक कथन नही भूलता था।

रातो तक लगातार वह चित्रो और पाडुलिपियो के भारी वडल लाद-लादकर लाता रहा । स्टीन जब 'महस्र बुद्ध' गुफाओ से रवाना हुआ तो उसके पास बारह भरी हुई पेटिया थी । बाद मे वह फिर वापस आया और अन्त मे उसी एक गुफा से प्राप्त पाडुलिपियो से भरी चौबीस पेटिया तथा चित्रो व अन्य कलाकृतियो से भरी पाच पेटिया ब्रिटिश सग्रहालय पहुची । पुरातत्व के इतिहास मे यह 'उपलब्धि' बेमिसाल है ।

उसकी केवल एक इच्छा है कि उनका अध्ययन और मानवता के कल्याण के लिए विदेश मे प्रकाशन किया जाय, प्रत्यक्षत यह तो हुएन-साङ् का ही कार्य था।

भिक्षु के हाथ-पाव फूल गए—नखलिस्तान मे बैठे उसके सरक्षक सुनेंगे कि वह विश्वास-घात कर रहा है तो क्या कहेगे?—लेकिन दैवी निर्देश पर विश्वास होता था। पार्श्व मन्दिर का द्वार खोल दिया गया और पहले दुभापिये और फिर स्टीन को भीतर प्रवेश मिल गया। उनकी आखो के सामने आश्चर्यजनक दृश्य था—500 घनफुट हस्तलिपिया, कुडलिया, बडलो मे बधी और पर्त पर पर्त, दस फुट की ऊचाई तक, लगभग पूरे कमरे मे बेतरतीवी से लदी।

भिक्षु उनके देखने को वडल निकालने लगा। पहले मे मोटी कुडलिया थी, लगभग एक फुट ऊची और अक्सर दस या अधिक गज लम्बी। ये बौद्ध धर्मग्रन्थो के चीनी अनुवाद थे, सभी को लगातार काम मे लाया गया था लेकिन फिर भी वे अच्छी दशा मे थे, इस सूखी घाटी के एक पहाड मे काटी गयी एक कोठरी मे, जिसका दरवाजा इँटो से चिनकर रगीन प्लास्टर से पक्का कर दिया गया था, परिस्थितिया बहुत अच्छी थी और नवी शताब्दी के मध्य से रखे रहने पर भी हस्तलिपियो को जरा भी नुकसान नही पहुचा था। फिर तिब्बती कुडलिया आयी। ये भी धार्मिक पाठ थी। फिर प्राचीन ब्राह्मी लिपि मे लिखी कुडलिया मिली। बूढे ताओवादी भिक्षु के लिए ये चीनी धर्म-ग्रन्थो की तुलना मे बहुत कम रोचक थी, और इसके बाद वाली कुडलिया तो उसके लिए बिलकुल व्यर्थ थी, लेकिन स्टीन के लिए तो वही सर्वोत्तम उपहार थी। रगीन टाट से बधे एक बडे बडल को खोलने पर उसने पाया कि उसमे तो महीन रेशमी या लिनेन के कपडे पर बने चित्र हैं—मन्दिरो के ध्वज जिन पर बुद्ध या बुद्ध-गाथा के चित्र अकित थे, ये भारतीय शैली मे थे, दो या तीन फुट लम्बे पतले पट्टियो जैसे। दूसरे बंडलो मे और बडे, रेशमी कपडे पर बने हुए चित्र थे, छ फुट लम्बे और छ फुट चौडे। इन पर अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वैसे दृश्य अकित थे जैसे अधिक कृत्रिम गुफाओ मे प्राचीन भित्तिचित्र होते थे। कुल मिलाकर यह तो आरम्भिक पूर्वीय कला का भडार था। भिक्षु अपने मूल्य-वान् बौद्ध धर्मग्रन्थो की ओर से स्टीन का ध्यान हटाना चाहता था, इसलिए वह आतुरतापूर्वक इन चित्रो जैसी व्यर्थ वस्तुओ को खोज-खोजकर स्टीन के हाथ मे ठूसता जाता था। भिक्षु के लिए दूसरी व्यर्थ वस्तुए थी—अग्राह्य भाषा मे लिखी हुई हस्तलिपिया। स्टीन ने उन्हे सावधानी से बाधकर अलग रख दिया ताकि उनका 'अधिक सूक्ष्म निरीक्षण' किया जा सके, और इस 'निरीक्षण' के लिए उन्हे अपने खेमे मे लाना तो आवश्यक था ही। लेकिन उस समय उसने उन्हें वही रहने दिया। दिन वीतने पर उसने फिर भिक्षु के साथ अपने दोनो के आदश एव भिक्षु हुएन-साङ् की वातें करना शुरू कर दिया। उसने कहा कि हुएन-साङ् की इच्छा थी कि उसके सग्रह पश्चिमी विद्वानो को उपलब्ध होने चाहिए। उसने कहा कि इन वस्तुओ को जाने देकर ताओ भिक्षु धर्म की दृष्टि से ऊपर उठ जायेगा। उसने सकेत तो अवश्य किया कि भिक्षु ने अपनी धार्मिकता के कारण जिस मन्दिर के मूल वैभव की पुनर्स्थापना का प्रयास किया था, उसके लाभार्थ समुचित अनुदान भी प्राप्त होगा लेकिन ज्यादा जोर नही दिया। वहुत रात गए दुभापिया वह वडल लेकर खेमे मे आया। उसके वाद, मा॰

(125) ताओ पुजारी वडलो को जिन वस्तुओं को सर्वाधिक मूल्यवान् मानता था वे थी बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में चीनी पाठ्य । उनमें से कुछ यहा दिखाये गये है । वे अनेक किस्मो के थे । फोटोग्राफ में क्रम-सख्यक १, २ और ३ असली पांडुलिपि थे, लेकिन क्रमसख्यक १ पुरानी किस्म की कुडली था, और २ व ३ पुस्तक रूप में थे। क्रमसख्यक ४ शिला-भिलेखो पर 'स्याही लगाकर प्राप्त' एक छोटी सी पुस्तक है। क्रमसख्यक ५ और लकडी के ब्लाको द्वारा मुद्रित बौद्ध पाठ्य है और प्रत्येक के शीर्ष पर एक लकडी की इग्रेविंग है , कुडली, क्रमाक ६ का समय 864 ईस्वी है—कैक्स्टन के अपनी पहली पुस्तक छापने से छ सौ वर्ष पहले ।
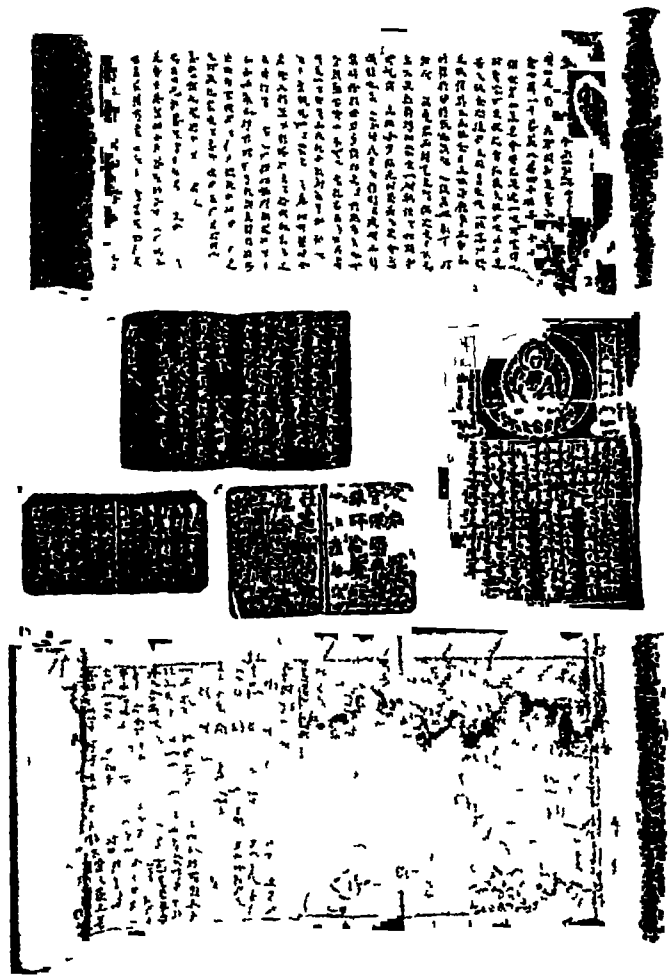
(126) इस बहुभाषिक सग्रह में मौजूद गैर-चीनी प्रलेख स्टोन की दृष्टि में अधिक महत्त्वपूर्ण थे । यहा प्रदर्शित पाठ्यो में से क्रमसख्यक १ ताडपत्रों पर सस्कृत में लिखित है, क्रमसख्यक २ एक कागज की कुडली है जो प्रारम्भिक तुर्की भाषा में एक मानिकी 'पाप स्वीकारोक्ति' है, क्रमसख्यक ३ 'रूनी तुर्की' में एक पुस्तक है, क्रमसख्यक ४ और ६ पुस्तक रूप में उइगर पाठ्य हैं, क्रमसख्यक ५ मध्य एशियाई ब्राह्मी में घसीट लिखा गया है—एक चीनी हस्त-लिपि की पुश्त पर, क्रमसख्यक ८ सोगदी है और क्रम-सख्यक ९ तिब्बती । सुदूरपूर्वी भाषाओं के अध्येताओं को ऐसा विशाल भडार पहले कभी नहीं मिला था।
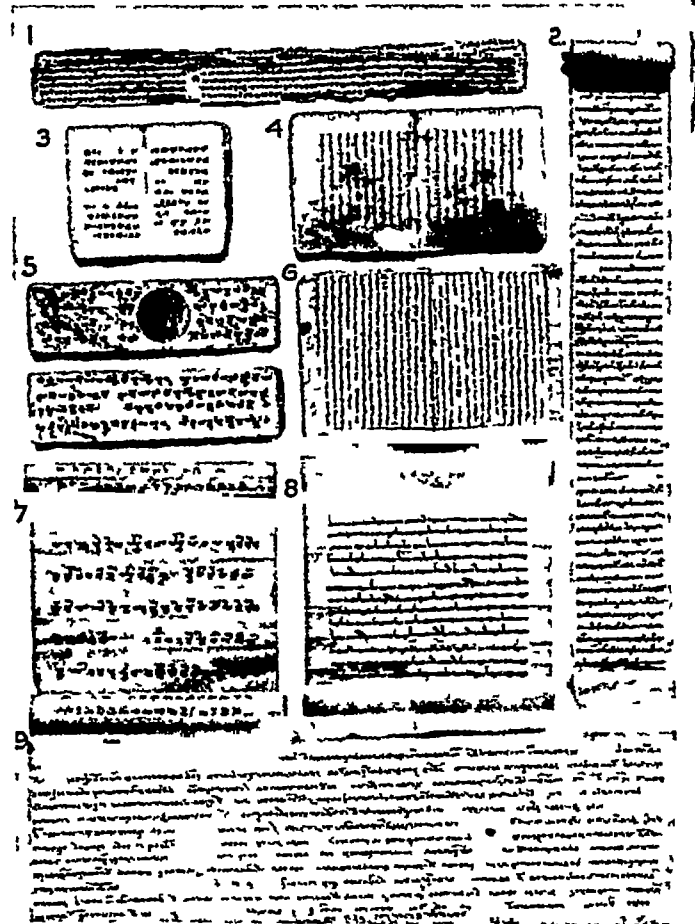
(123) पहले हर मन्दिर में एक उपशाला थी, जो मुलायम चट्टान के उपक्षय के कारण अब बिल्कुल नष्ट हो चुकी है। उपशाला से एक गलियारा मुख्य मन्दिर तक, जो पैंतालीस फुट भुजा वाले वर्ग जैसा हो सकता था, जाता था, उसकी सभी दीवारों और छत पर प्लास्टर था और भित्तिचित्र बने थे और प्रवेशद्वार के सामने एक चबूतरा या गर्भगृह होता था, जिसमें बुद्ध की एक विशाल स्टको मूर्ति तथा उनके अनुचरों या अनुयाइयों की छोटी-छोटी मूर्तियां थीं।

(124) एक मन्दिर के अन्तर्भाग के, जहां तार् चित्र अभी भी सुरक्षित हैं इस फोटोग्राफ में जलकरण की महत्ता द्रष्टव्य है। कई बार धार्मिक किन्तु कलाविहीन पुनर्स्थापकों के प्रयासों के फलस्वरूप भित्तिचित्र और मूर्तियां (और भी अधिक) नष्ट हो गयीं।

(127, 128) बहुत महीन रेशमी जाला कपड़ा ध्वज, जिन पर बुद्ध के अवतार बोधिसत्त्वो के चित्र अंकित है। मूल चित्र लगभग दो फुट लम्बे है। विपयवस्तु निश्चय ही बौद्धधर्म के आदि स्थान भारत से ली गयी हे, किन्तु उसका प्रतिपादन विशुद्ध चीनी है, चीनी चित्रकारो ने चित्राकन ठीक उसी तरह किया है जेसे इतालवी अथवा फ्लैंडर्स निवासी चित्रकारों ने ईसाइयो की 'बाइविल' की विपयवस्तुओ का अकन किया था।

(129) रेशमी कपडे पर बना एक विशाल चित्र (असली लम्बाई ४ फुट ६ इंच), जिसका समय 864 ईस्वी है। मुख्य आकृतिया बुद्ध के विभिन्न अवतार है, आधार के समानान्तर छोटी आकृतिया मन्दिर को चित्र प्रदान करने वाले प्रदाताओ की है।

(130) रेशम पर हाथ से काढा हुआ एक $5\frac{1}{2}$ फुट लम्बा चित्र। बुद्ध को अपने शिष्यो के बीच दिखाया गया है, नीचे की छोटी आकृतिया प्रदाताओ की है। ताङ्कालीन चित्रो जैसे असली बौद्ध धार्मिक चित्र चीन या जापान मे बच नहीं पाये है, यही कारण है कि सहस्रबुद्ध गुफायें सुदूरपूर्वी कला के प्रारम्भिक इतिहास पर सर्वथा नवीन प्रकाश डालती है।
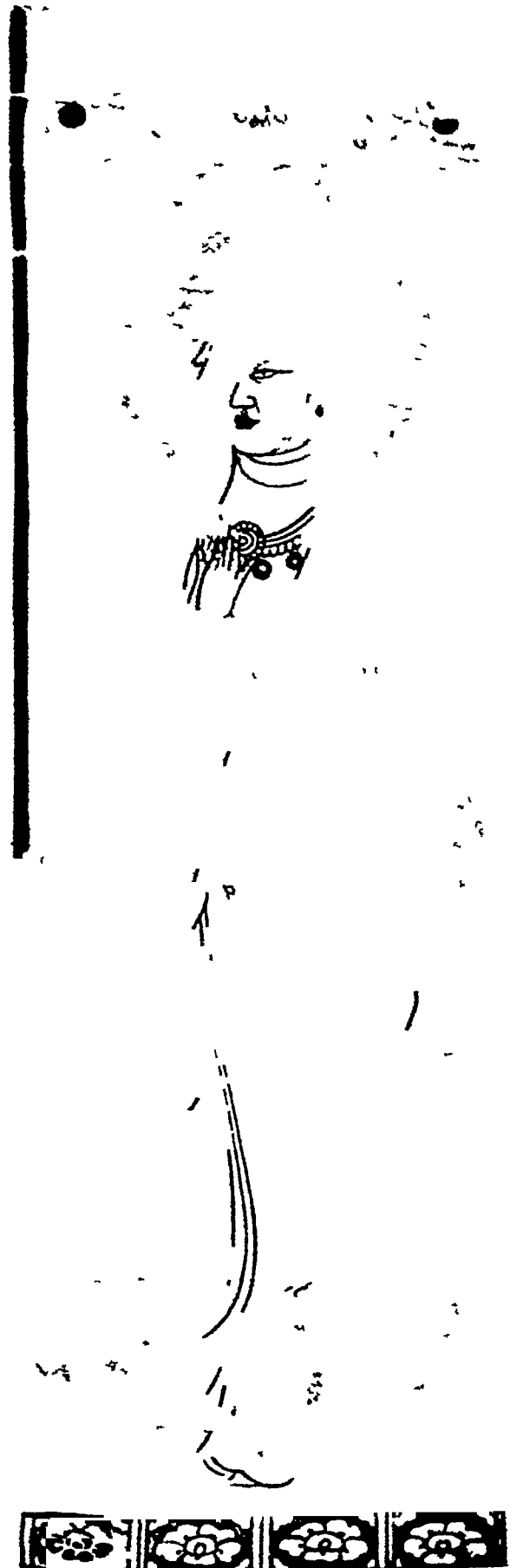
चित्रलेख दूर-दूर स्थित जगहो—उतरी सीरिया मे अलप्पो और कारकेमिश, तारस पर्वत के उत्तर मे इव्रिज, मध्य लघु एशिया मे बोगाजकाय, और आयनी समुद्रतट पर स्मरना के पास— पर भी मिले थे, उसने कहा कि ये सभी हित्ती थे, उनकी प्रकृति एव विस्तार से सिद्ध है कि हित्ती किसी समय मे दुनिया की एक बडी ताकत थे, उनका साम्राज्य मिस्र या बाबुल के साम्राज्यो जितना बडा था, उनकी अपनी विशिष्ट सस्कृति और लिपि थी।

(131) तारकूमूवा (तारकोत-देमास) मुद्रा, जिससे हित्ती चित्रलिपि का विकास प्रारंभ हुआ।

क्या यह विचित्र लिपि पढी जा सकती है ? सेस खुद इस काम मे जुट गया। उसने 'द्विभाषिक'—अर्थात् हित्ती चित्रलिपि और बाबुली कीलाकार लिपि दोनो मे अभिलिखित मुद्रा की बात सुनी थी; मुद्रा गायब हो चुकी थी, लेकिन बहुत कोशिश करने पर उसे ब्रिटिश सग्रहालय मे उसकी एक विद्युत-मुद्राकित प्रतिलिपि मिल ही गयी, जिसके आधार पर उसने दो या तीन सकेतो का अर्थ लगाया। लेकिन पाठ इतना कम था कि अधिक उपयोगी न था, सच्ची प्रगति के लिए तो

करतीपी और हित्ती चित्रलिपि

प्रोफेमर नेस ने 1879 मे हित्तियो की खोज की। उस समय उनके वारे मे जो कुछ भी मालूम था वह नत्र 'ओल्ड टेस्टामेट' मे यत्र-तत्र जिक्र नर आधारित था। एक अपवाद को छोडकर, 'ओल्ड टेस्टामेट' मे हित्तियो को, हिब्रू पैगम्वरो के ममय मे फिलिस्तीन-निवासी अनेक मामूली कवीलो मे से एक वताया गया है। लेकिन कुछ वर्प पहले, सीरिया के एक नगर हामा (प्राचीन हमथ) मे पत्थरो पर विचित्र चित्रलिपि मे खचित अभिलेख प्रकाशित हुए थे। अव सेस ने कहा कि यही

पता लगाये, वे 'राज्य', 'नगर', 'देश', और 'ईश्वर' के भाव सकेत थे। फिर अनुमान से, कुछ जगहो के नामो—कारकेमिश, हमथ, और तियाना—तथा क्रिया 'मैं हूँ' का पता लगा। 1934 मे, बोगाज़-काय मे खुदाई करते हुए, कर्ट बितेल ने मिट्टी पर अनेक मुद्राओ के निशान पाए, जो विख्यात तारक-देमस मुद्रा की भाति, द्विभाषिक थे। इनके कारण कुछ राजसी नाम सामने आए और कुछ सकेतो को पहचाना गया। लेकिन, एक बार फिर, मुद्राओ के अभिलेख इतने सक्षिप्त थे कि ज्यादा काम न आ सके। वस्तुत दुनिया भर के विद्वानो के परिश्रम के बल पर, कुछ समय के भीतर, चित्रलिपि-अभिलेखो की भाषा की प्रकृति और रचना के बारे मे समुचित सगत जानकारी प्राप्त हो सकी, लेकिन अनुवाद की बात आयी (और अनुवाद के अनेक प्रयास किए गए) तो विद्वान् एकमत न हो सके, परिणाम भी सुखद न हुआ। उनके अनुसार अभिलेखो मे एक से एक ऊलजलूल बाते लिखी थी, जिन पर सामान्य जन का विश्वास नही जमता था और वह केवल यही आशा कर सकता था कि यह अनुवादको की ही गलती है, वरना बुद्धिमान् व्यक्ति अविनाशी पत्थरो पर इतने श्रमपूर्वक बेकार की बात क्यो खोदेंगे !

1947 की वसन्त ऋतु मे मै अकारा पहुंचा, तो सग्रहालय निदेशक ने उत्तेजित स्वर मे मुझे बताया कि अभी-अभी प्रोफेसर बॉसर्ट का, जो इस समय दक्षिण के दौरे पर थे, तार आया है जिसमे लिखा है कि उन्होने अदाना के पूर्व मे स्थित पहाडो पर एक नया हित्ती स्थान पाया है जहाँ द्विभाषिक अभिलेखो के मिलने की पूरी सम्भावना है। मैं स्वय काफी उत्तेजित हो उठा। मैने पूछा कि यह स्थान कही एक पहाड के किनारे पर स्थित पथरीला पठार तो नही है, जिसके पास एक घाटी है और जिसमे एक सिहासन पर (जिस पर ढेरो अभिलेख है) बैठे किसी देवता या राजा की मूर्ति है ? डाक्टर कोषे ने उत्तर दिया, 'हाँ, वही स्थान है, लेकिन आपको कैसे मालूम ?' मुझे मालूम था। पहली लडाई मे मेरे नीचे स्मरना का एक अग्रेज मिस्टर हाइकिसन, काम करता था, वह सिलीशिया के पहाडो मे शिकार का शौकीन था और एक बार (उसने मुझे बताया था) वह ठीक ऐसी जगह पर जा पहुँचा था। मैने इस सूचना से लाभ नही उठाया था, लेकिन अब, एक स्कूल शिक्षक से यही बात सुनकर बॉसर्ट ने फौरन इसका लाभ उठाया था; वह पठार पर चढा था, सिंहासन था, मूर्ति थी जो अब गिरकर भग्न हो गयी थी; और उस पर ढेरो अभिलेख थे।

अभिलेख हित्ती मे नही बल्कि फिनीशियाई मे था जिसे पढा जा सकता है। लेकिन स्थल पर लदे झाडी-झखाड मे तलाश करने पर उसे बसाल्ट पत्थर के टुकड़े मिले जिन पर हित्ती चित्रलेख थे। यहाँ पर दोनो लिपिया प्रयोग की जाती थी, तो फिर द्विभाषिक—दोनो लिपियो मे एक पाठ—भी अवश्य होना चाहिए !

1947 के पतझड में 'तुर्की हिस्टारिकल सोसायटी' ने एक दल के लिए धन का प्रबन्ध किया। दल के नेता बॉसर्ट और एक अनुभवी क्षेत्र-पुराविद् डाक्टर बहादर अल्कीम थे। उनके पहले ही मौसम मे महान् खोज सम्भव हो सकी। उन्होने एक परकोटे सहित पहाडी नगर खोद निकालना, जिसमे उच्चित्रों से खूब अलकृत एक शाही महल था। इन्ही के बीच तीन लम्बे फिनीशियाई अभिलेख तथा

वहुत अधिक सामग्री की ज़रूरत थी। 1902 और 1906 के वीच जर्मन विद्वान् मेसर्श्मिट ने उस समय तक ज्ञात सभी हित्ती अभिलेखो का सग्रह प्रकाशित किया, ताकि विद्वानो को आगे काम करने का एक आधार मिले। विद्वानो ने काम भी किया, लेकिन परिणाम अधिक न निकला।

इसी वीच हित्ती समस्या के वारे मे कुछ और भी मालूम हो चुका था। मिस्र से प्रसिद्ध 'अमरना घाटी के पत्र' मिले, मृद्फलक जो फराऊन अखनातन (1375-1358 ईसापूर्व) के विदेश विभाग के अभिलेख थे। सभी कीलाकार लिपि मे और सभी अक्कादी (बाबुली) भाषा (जो उस समय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की भाषा थी) मे थे, और उनसे सिद्ध हो गया कि हित्ती उस समय वहुत वडी ताकत थे और उनका राजा खुद को फराऊन के बराबर समझता था, सेस का विवाद-ग्रस्त सिद्धान्त इस प्रकार पुष्ट हुआ और साथ ही हित्तियो के प्रति विद्वानो की रुचि भी बढी।

'अमरना घाटी के पत्रो' मे से दो ऐसे थे, जो कीलाकार लिपि, किन्तु किसी अज्ञात भाषा, मे लिखे गये थे। 1893 मे, हित्ती राजधानी बोगाज़काय मे भी मृद्फलको के टुकडे मिले जो उसी भाषा और कीलाकार लिपि मे थे। परिणामस्वरूप एक जमन दल बोगाज़काय मे खुदाई करने लगा और काम शुरू करते ही बहुसख्यक मृद्फलक मिलने लगे, सभी कीलाकार लिपि मे थे, किन्तु अधि-काश अक्कादी भाषा मे और कुछ उन दो मिस्री फलको की अज्ञात भाषा मे थे। कीलाकार सकेत जाने-पहचाने थे, इसलिए बोगाज़काय अभिलेखो का लिप्यतर किया गया और इस प्रकार कुछ प्रगति तो हुई। 1915 मे चेक विद्वान फ्रेडरिक ह्राज़्नी ने 'द सॉल्यूशन ऑफ हित्ती प्राब्लेम' का प्रकाशन किया, जिसका साराश यह था कि 'हित्ती मुख्यत एक भारोपीय भाषा' है। इस सिद्धान्त के अनुसार, अनातूलिया-वासी भी ग्रीक जैसी कोई भाषा व्यवहार करते थे, लोगो को यह विचारमात्र वुरा लगा और ह्राज़्नी के सिद्धान्त का घोर विरोध हुआ। लेकिन ह्राज़्नी अपने तर्क पर दृढ रहा और अन्य विद्वानो ने उसके सिद्धान्तो के अनुसार काम किया। 1919 मे ही, स्विट्ज़रलैंडवासी एमिल फॉरर ने घोषणा की कि बोगाज़काय मृद्फलको मे कम से कम छ अनातूलियाई भाषाएँ या वोलियाँ मौजूद हैं और उनमे से कम से कम तीन भारोपीय थी। अन्त मे, अनेक देशो के विद्वानो के सतत परिश्रम के बाद बोगाज़काय चित्रलेखो को पढा और अनूदित किया जा सका और प्राचीन इतिहास मे कई नए अध्याय जुड गये। लेकिन कीलाकार फलको से उन चित्रलिपि मे लिखित अभिलेखो पर कोई रोशनी न पड सकी, जिनके वल पर सेस ने हित्तियो को 'खोज' निकाला था।

वाद मे, ज्यो-ज्यो चित्रलिपि-अभिलेख अधिकाधिक सख्या मे मिलते गये, त्यो-त्यो उन्हे पढने की आवश्यकता भी वढती गयी। प्रथम विश्वयुद्ध से पहले के तीन सालो मे ब्रिटिश सग्रहालय का एक दल कार्केमिश गया और उसने लगभग उतने ही नए अभिलेख खोज निकाले जितने मेसर्श्मिट ने दस साल पहले अपने सग्रह मे एकत्र किये थे। लेकिन द्विभाषिक अभिलेख एक भी न मिला। एक भी चित्रात्मक सकेत या अभिलेख मे निहित किसी विशेष भाषा की ध्वनि या मूल्य नही मालूम था, इसलिए चित्रात्मक सकेतो की अनेकानेक पक्तियो का अर्थ ढूंढ निकालना लगभग असम्भव काम था। इसके वावजूद विद्वानो ने समस्या को हल करने का यत्न जारी रखा। सवसे पहले कुछ सकेतो के अर्थ सेस ने

(133) यह है हामा (हामथ) से प्राप्त एक अभिलिखित बेसाल्ट ब्लाक। हित्ती समस्या का आरम्भ इसी से हुआ। 1822 में बर्कहार्ट ने इन शिलाखडो को पहली बार देखा था, 'फिलिस्तीन अन्वेषण फड' ने 1871 में पहली बार प्रकाशित किया था, और दमिश्क का एक ईसाई मिशनरी विलियम राइट 1872 में उन्हे कुस्तुनतुनिया ले गया। राइट ने कहा था कि वे शायद हित्ती हैं, लेकिन जब तक वे अलग-अलग स्थानीय अजूबे रहे, राइट के सुझाव को अधिक महत्त्व नहीं दिया गया।

(134) लेकिन जब यह पता लगा कि रहस्यमय चित्रलेख सिर्फ हामथ में नही मिले थे, बल्कि उत्तरी सीरिया और फिलिस्तीन मे खूब फैले थे तो फिर मामला ही बदल गया। यह कारकेमिश से प्राप्त एक विशाल अभिलिखित प्रस्तर खड है, और स्पष्ट है कि इसकी व हामथ की लिपि समान है। इन स्मारको में सकेत उभरवा उकेरे गये है ओर भीतरी विवरण भी खूब दिया गया है—यह अलकरण-प्रणाली किसी प्रासाद या सार्वजनिक भवन की सजावट के सर्वथा उपयुक्त थी।
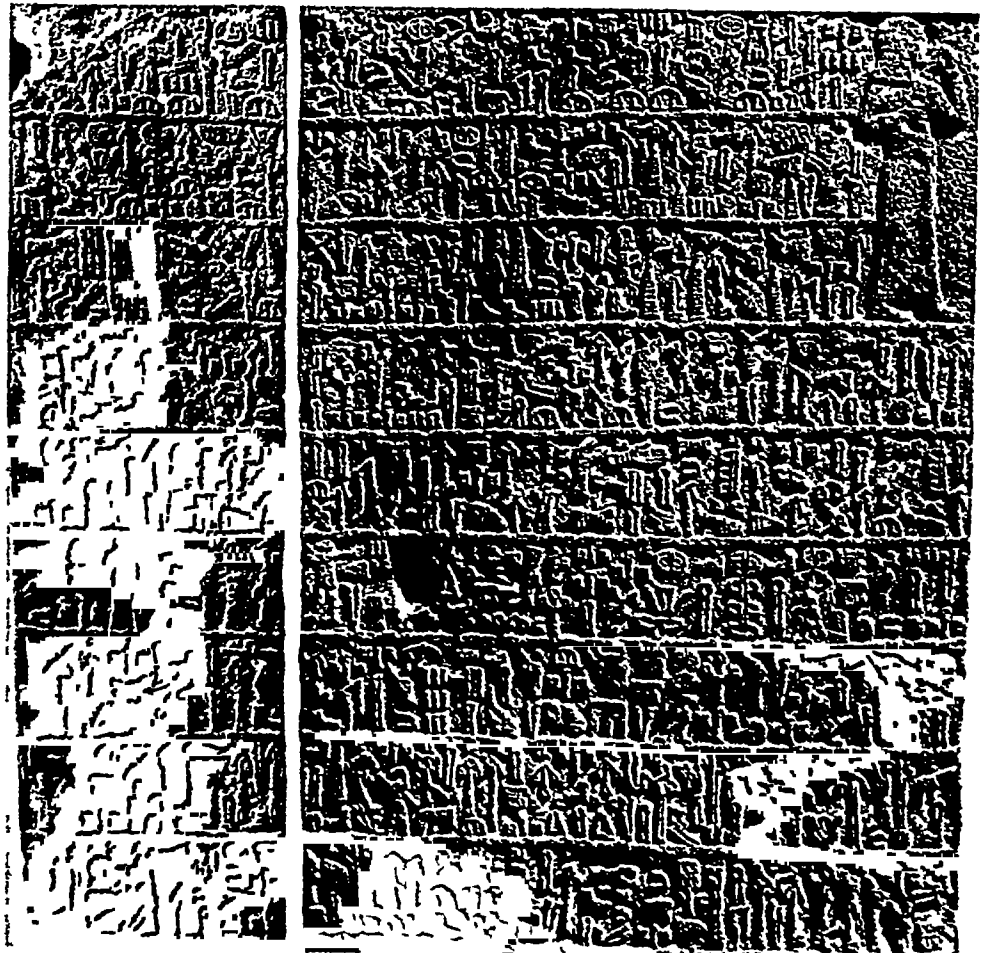
एक ही चित्रलिपि-अभिलेख के दो पाठ (जो फिनीशियाई की प्रतिलिपि सिद्ध किये जा सकते थे) मिले। आज के विद्वान् बाबुल की कीलाकार लिपि या मिस्र की चित्रलिपि को आसानी से पढ लेते हैं, लेकिन हित्ती को भी उतने ही विश्वास से पढ पाने मे अभी समय लगेगा, वैज्ञानिक निष्कर्ष जल्दबाजी मे नही प्राप्त हो सकते। लेकिन चाबी मिल गयी है, और एक अन्य ऐतिहासिक रहस्य के उद्घाटन का उपाय पुरातत्व ने प्रदान कर दिया है।

(132) परिज्ञेय हित्ती स्मारकों का व्यापक विभाजन इस नक्शे में देखा जा सकता है। आज अनेक अन्य भी ज्ञात है लेकिन सेस के समय में ही ज्ञात स्मारक ही उसके सिद्धान्त की सत्यता सिद्ध करने को पर्याप्त थे।
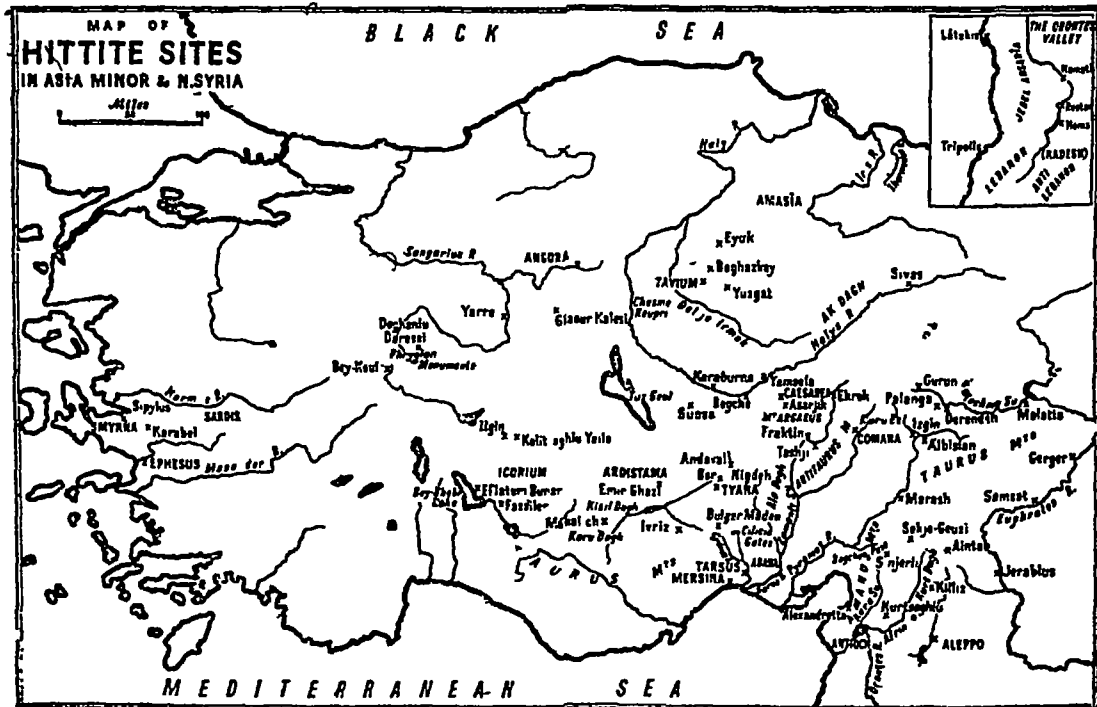
(139) आधुनिक स्मिरना नगर के पीछे सिपीलस पर्वत की चट्टानों में उकेरा गया यह तीस फुट ऊचा उच्चित्र यूनानियों के समय में भी विख्यात था—पौसानियस का कथन था कि यह लघु एशिया मे देवी मा की प्राचीनतम मूर्त्ति थी। लेकिन मूर्त्ति के चेहरे के पास आले मे चित्रलेख हैं, जिनके बल पर सेस ने उन्हें हित्ती साबित किया।

(141) इसका प्रकार, टॉरस पर्वत के उत्तर में स्थित इवरिज के विशाल प्रस्तर-उत्कोर्णन में मुख्य आकृति के सिर के पास के अभिलेख से सिद्ध हो गया कि वही हित्ती है। इस चित्र मे, राजा कृषि-देवता को पूजा कर रहा है और देवता के एक हाथ मे अगूरो का गुच्छा व दूसरे मे गेहूँ की बाल है।

(140) पहले से विख्यात, यासिलीकाया के प्रस्तर-उत्कीर्णनों ने सेस के तर्क को निर्विवाद सिद्ध कर दिया। इन उत्कीर्णनों में हित्ती देवकुल के देवता प्रदर्शित हैं और उनके नाम हित्ती चित्रलिपि में लिखे गये है। यासिलीकाया बोगाजकॉय के विशाल-खण्हरों से सिर्फ दो मील दूर स्थित है, अपने उत्कीर्ण तोरणों के, जिनमें से एक 'सिंहद्वार' यहां दिखाया गया है, कारण बोगाजकॉय को राजधानी माना गया। सेस का तर्क था कि यदि बोगाजकॉय वह केन्द्र था जिससे अनातूलिया और उत्तरी सीरिया के सुदूर स्थित स्मारकों का फैलाव हुआ तो फिर एक विशाल हित्ती साम्राज्य की बात अतिरंजन नहीं है।
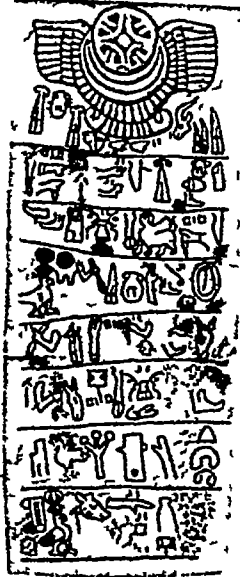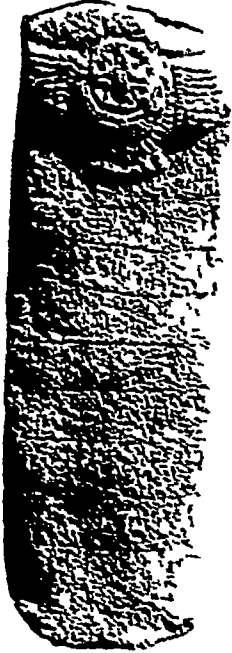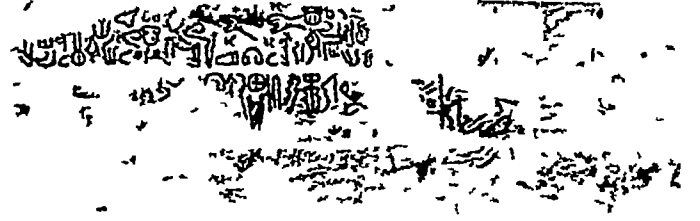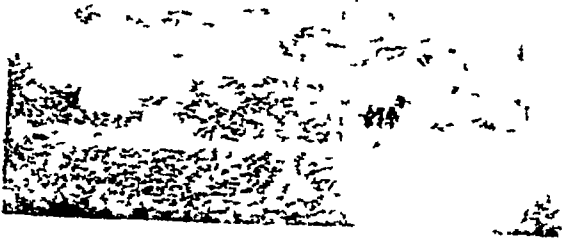
(135, 137) स्मारक कम महत्त्व का होता था तो एक प्रवाही लिपि अपनायी गयी थी, संकेत पत्थर की समतल सतह पर खोदे गये हैं और अपेक्षया काफी सरलीकृत हैं, लेकिन अनिवार्यत वे उच्चित्र अभिलेखों जैसे ही है। हस्त-प्रतिलिपि में वे साफ दीखते हैं।

(138) चित्रलेखों से ढका हुआ यह शेर आज के सीरिया की उत्तरी सीमा पर टॉरस पर्वत की तलहटी पर स्थित मारश में पाया गया था।

(144) यहा, तोरणद्वार पर कोने की सिंह-शिला के पास, महान् फिनीशियाई अभिलेख का एक अंश दीखता है, जो द्विभाषिक है। इसमें प्रासाद-निर्माता ने आत्म-प्रशंसा की है, 'मै बारिकबाल का भृत्य, बाल का अनुचर, असितवन्दाज हू, जिसे दनूना के राजा अवरिकुस ने महान् बना दिया। बाल ने मुझे दनूना का माता-पिता-सा बना दिया, और मैने अपनी ओर से दनूना को प्यार किया। मैने सूर्योदय से सूर्यास्त तक अदाना मैदान की जमीन को बढ़ाया, और मेरे समय में हर प्रकार का आनन्द था, भरपूर भोजन था, सभी सुविधायें थीं, आदि, आदि।' असितवन्दाज शायद अवरिकुस का बेटा था और लगभग 730 ईसा पूर्व में राज्य करता था। बॉसर्ट जब पहली बार स्थल पर आया था तो राजा की जो मूर्ति उसे गिरी और खण्डित मिली थी, उस पर भी यह अभिलेख उत्कीर्ण था।

(145) यहां दो उत्कीर्ण उच्चित्रों के दोनों ओर, विशाल शिला-पट्ट अभिलेखो से भरे हैं; ये अभिलेख फिनीशियाई भाषा में असितवन्दाज के लम्बे पाठ्य के हित्ती रूपान्तर है। एक आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि इस अभिलेख में राजा स्वय को मोप्सस का, जो यूनानी कथा का नायक है वंशज बतलाता है, और उसकी प्रजा, दनूना, शायद होमर की 'दनान्स' है—इस प्रकार यहाँ पर यूनान और एशिया के बीच एक कडी मौजूद है। करतोपी की खुदाइयां अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण थीं, लेकिन इन समानान्तर पाठ्यों की खोज से—जिनके आधार पर हित्ती चित्रलेखों का अनुवाद किया जा सकता है—तो उनका महत्त्व अत्यधिक बढ गया है।
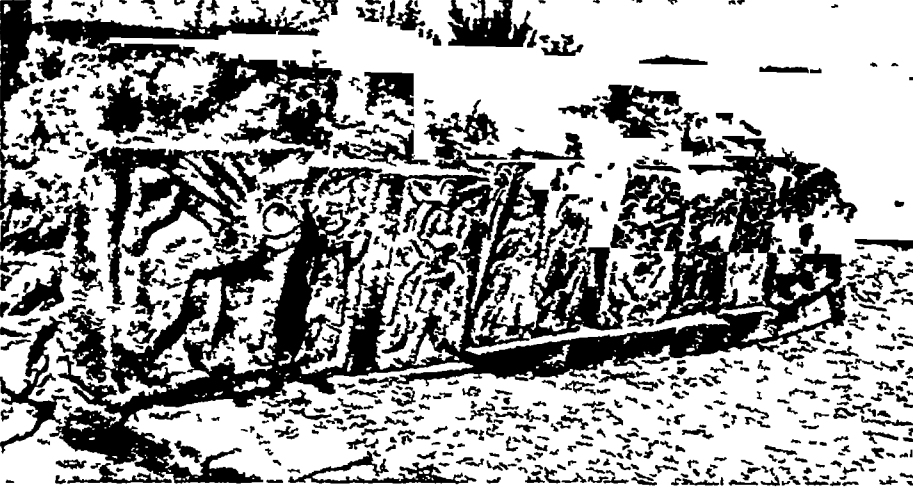
(142) तक्षित शिलाओं की एक कतार। करतीपी एक प्रान्तीय राजधानी और एक छोटे शासक का आवास थी और उसकी सजावट के लिए नियुक्त कलाकार ऊंचे दर्जे के न थे, वे हित्ती परम्परा में काम करते थे किन्तु उनका कौशल उदासीन था। अन्य स्थानों के समान यहा पर भी एक अर्थहीन जमाव-सा दीखता है—परस्पर असम्बद्ध शिलायें पास-पास रखी हुई आदमियों और देवताओं और पशुओं के दृश्यों का जमघट जो हमारे लिए बेमानी है। शायद वे हमें नामालूम किसी कथा को दिखलाने वाले क्रमिक दृश्य है और हमारे पास 'शब्दों में लिखित पुस्तक' हो तभी उनका अर्थ हमारे लिए कुछ हो सकेगा। हमारे अपने मध्ययुगीन गिरजों में 'ओल्ड टेस्टामेंट' के दृश्यों को प्रस्तुत करने वाली उत्कीर्ण मूर्तियों की शृंखलायें मौजूद हैं, ये उत्कीर्णन वृत्तान्त के अनुसार विवेकपूर्ण ढग से चुने गये थे, लेकिन बाइबिल से अपरिचित किसी व्यक्ति के लिए उनका अर्थ समझना मुश्किल है।

(143) एक शिला अपूर्व है। इसमें तूफानी समुद्र पर एक जहाज दिखाया गया है पाल खुले हैं, मल्लाह पूरी शक्ति से पतवार चला रहे है, कप्तान खडा होकर देवताओं की अर्चना कर रहा है मानो उनसे सहायता का याचक हो, इसी दौरान, एक आदमी नीचे मछलियों के बीच फेंक दिया गया है। सोचा जा सकता है कि यह उस कथा का एक दृश्य है जिसे यहूदियों ने 'जोनाह की कथा' रूप में अपना लिया है, स्थानीय दन्तकथा है कि अलेक्जेंड्रेटा के तनिक उत्तर में स्थित एक खाडी में 'जोनाज स्तम्भ' में जोनाह उतरा था—यह कथा उपरोक्त अनुमान को और पुष्ट करती है।

विशाल मन्दिर या प्रासाद स्थलो के ऊचे-ऊचे टीले खडहरो से भरे क्षेत्र मे सर्वाधिक प्रमुख थे। उनके आस-पास तथा बीच-बीच मे अनेक छोटे और नीचे टीले थे जिनकी व्याख्या आवश्यक थी। उन्हे खोदा गया, तो पता चला कि वे चबूतरे थे जिनपर रहने के मकान बनाए गए थ। मकानो की दीवारे बनाने का तरीका इस प्रकार था खम्भे बनाकर उनके बीच की जगह को घास-फूस और मिट्टी से भरकर सफाई से प्लस्तर कर दिया जाता था तथा छते फूस की थी। इस तरह पहली बार पता चला कि प्राचीन सभ्यता का घरेलू वास्तु किस प्रकार का था, जो आज के युकाटन किसानो के घरो जैसा ही था। बाद मे पता लगा कि बहुत पहले मन्दिरो की छते भी फूस की होती थी। लेकिन अधिक महत्त्वपूर्ण इमारतो के लिए इन मामूली निर्माण-विधियो का परित्याग कर दिया गया। 'एक्रोपोलिस' की ऊचाई पर 'महलो' का एक समूह था, जिनकी दीवारें रोडी-ककडो को मसाले से जोडकर बनी थी, तथा रास्तो और द्वारो की छते पत्थरो की नुकीली मेहराबदार थी। पुराविदो के अनुसार वास्तु की ये नवीनताएँ 652 ईस्वी के आसपास आयी। एक ही आकार-प्रकार के कम-से-कम बारह 'महल' थे और शायद वे पुजारियो के निवास-स्थान थे। शायद उन्हे पुजारियो द्वारा सचालित किन्ही सस्कारो के लिए भी प्रयुक्त किया जाता था, क्योकि उनमे से पाच के भीतर, एक जैसे कमरो मे, सिहासन या बेच, जो कभी बडी कुशलतापूर्वक उत्खचित थे, पाये गये थे। अभियान-दल ने एक प्रस्तर-उच्चित्र पाया था जिसमे इसी प्रकार का सस्कार प्रदर्शित था, इसमे अकित सिहासन जैसे सिहासन कमरो मे मिले थे।

शताब्दियो के दौरान मन्दिरो का बार-बार परिवर्धन और पुर्ननिर्माण किया गया था। अत कई क्रमिक शैलिया देखी जा सकती थी, और कभी-कभी तो, उनसे सम्बद्ध अकेले खडे स्मारको की सहायता से उन शैलियो का काल-निर्धारण भी काफी शुद्ध किया जा सकता था। यही कारण है कि वास्तु के इतिहास के सर्वोत्तम प्रमाण मन्दिर थे। 'महामन्दिर' शायद सबसे ज्यादा ज्ञानदायक था।

प्राचीनतम उत्खनित इमारत (यह भी अपने से पुरानी इमारत के खडहर पर खडी थी) एक सात फुट ऊचे विशाल चबूतरे पर खडी थी और चबूतरे पर सीढियो से पहुचा जा सकता था (बाद के जमाने मे तो इमारत एक ऊचे पिरामिड पर खडी की जाती थी)। चबूतरे के किनारो से काफी हटकर ककड-पत्थर का एक करीब नौ फुट ऊचा विशाल आयताकार चबूतरा था जिसके दो भाग थे ऊपरी हिस्सा थोडा पीछे को हटा हुआ था मानो पिरामिड की शुरुआत के लिए हटाया गया हो, उसके कोने गोल थे और दीवारो पर खसके थे, पैतालीस फुट चौडी सीढिया उसके समतल शीर्ष पर पहुँचाती थी। इस चौडे चबूतरे पर दूसरा, अपेक्षया सादा, पक्का चबूतरा था (बीच की सीढिया उसमे भी थी) जिसके सामने एक वेदी थी और जिसके ऊपर मन्दिर था—एक लम्बा और नीचा कमरा, जिस मे सामने की ओर तीन चौडे दरवाजे थे और पीछे एक बेंच जो शायद मूरतो या प्रस्तर-पट्टो के लिए थी। छत समतल थी या नुकीले लकडी के ढाचे पर भूसा ढक दिया गया था। पूरी इमारत पर गचकारी थी, लेकिन लगता है कि अलकरण नही था।

पाइद्राज़ नेग्राज़

सन् 1899 की बात है। तियोबर्त मेलर नामक एक यात्री को उत्तरी गुआटेमाला के जगलो मे प्राचीन माया के खडहरो का एक समूह पाया। वहा के निवासी उसे पाइद्राज नेग्राज—काले पत्थर – कहते थे। 1930 मे पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय के सग्रहालय ने स्थल के उत्खनन का निश्चय किया, और दस वर्षों तक लिण्टन सैटर्थवेट जूनियर के निर्देशन मे उत्खनन-कार्य जारी रहा। अभियान के निश्चित उद्देश्य थे। अनेक माया स्थल ज्ञात थे, किन्तु उत्खननार्थ पाइद्राज के चुनाव का कारण था। पहले से रिकार्ड मे दर्ज सतही अवशेषो मे ऐसे स्मारको की एक लम्बी शृंखला थी जिनका काल-निर्धारण किया जा चुका था और वे अति आरम्भिक से लेकर अन्तिम 'प्राचीन साम्राज्य' काल तक के, अर्थात् लगभग 300 ईस्वी से लेकर लगभग 800 ईस्वी तक के थे। आशा थी कि इनकी मदद मे मौजूद इमारतो का भी, जिनके बारे मे कुछ भी मालूम न था, काल-निर्धारण किया जा सकेगा। नयी कलाकृतियो का तो निश्चयत स्वागत होगा ही, किन्तु उत्खननो का उद्देश्य माया वास्तु के इतिहास का पता लगाना था।

अब तक की सारी इमारते एकदम सादी और अनलकृत है, लेकिन अगली अवस्था मे अलकंरण-प्रियता, जो उत्तर मय सभ्यता की विशिष्टता है, स्पष्ट लक्षित है। मूल चबूतरे पर पहुचाने वाली सीढिया अब एक प्रक्षिप्त आधार से दो भागो मे विभाजित है और प्रक्षिप्त आधार पर एक लम्बा उत्कीर्ण प्रस्तर पट्ट है। इसी तरह का एक प्रस्तर-पट्ट सीढियो से परे चबूतरे के सामने एक आधार पर स्थापित है। ऊपरी पद पर पहुँचाने वाली सीढियो के विभाजक कटाव को गारे-चूने-

(146) एक पुनर्गठित रेखाचित्र, जिसमें पाइद्राज नेग्राज का विशाल मन्दिर अपनी अन्तिम अवस्था में दिखाया गया है। पुरानी और कम ऊ चे चबूतरे वाली इमारत परवर्ती इमारत के नीचे दब गयी थी।
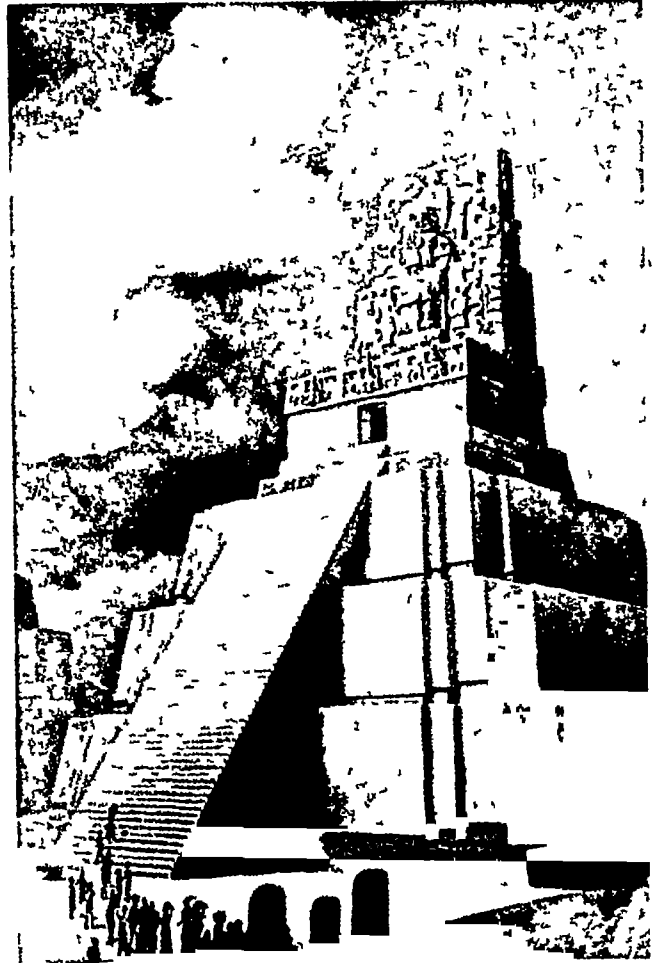
(147) विशाल मन्दिर द्वितीय का पुनर्नवीकृत चित्र। पृष्ठ 144 के रेखाचित्र तथा पृष्ठ 147 के इसी प्रकार के मन्दिर से तुलनीय।

पत्थर से भर दिया गया है और उसके सामने के भाग पर एक श्रेष्ठ उत्कीर्ण प्रस्तर उच्चित्र है। मुख्य सीढियो के दोनो ओर, दीवारो के बीच वाले खसके देवताओ के बडे-बडे गचकारी के मुखौटे है। मन्दिर को फिर से बनाया गया है। तीनो द्वारो को शायद गोप्यता के लिए सकरा कर दिया और पीछे के भाग को ठोस मसाले का बनाया गया है, जो शायद उत्कीर्ण प्रस्तर 'कघे' को, जो परवर्ती मय मन्दिर की छत का सामान्य अलकरण है, सहारा देने के लिए है। इस कारण मन्दिर का अन्तर्भाग काफी छोटा हो गया है, मूर्त्तियो की पुरानी बेच अब एक सकरी आलमारी से अधिक नही है और पीछे की दीवार पर एक आला वेदी का काम देता है जो अब चबूतरे के अपने पुराने स्थान से हटा दी गयी है। आकार कम करके इस प्रकार वास्तुक कमरे पर पत्थर की छत चढ़ा पाया था।

जब मन्दिर टूट-फूट गया तो अवसर का लाभ उठाकर उसमे आमूल परिवर्तन कर दिया गया। पुराने ढांचे को आधार बनाकर उसके चारो ओर और ऊपर नया भवन खडा किया गया। मूल चबूतरा घटाकर महत्त्वहीन कर दिया गया, निचले पद की ऊचाई दूनी की गयी (अब यह चालीस फुट हो गयी) और रुकावटें दो की जगह चार हो गयी। इस तरह अब वह ऐसे सीढीदार
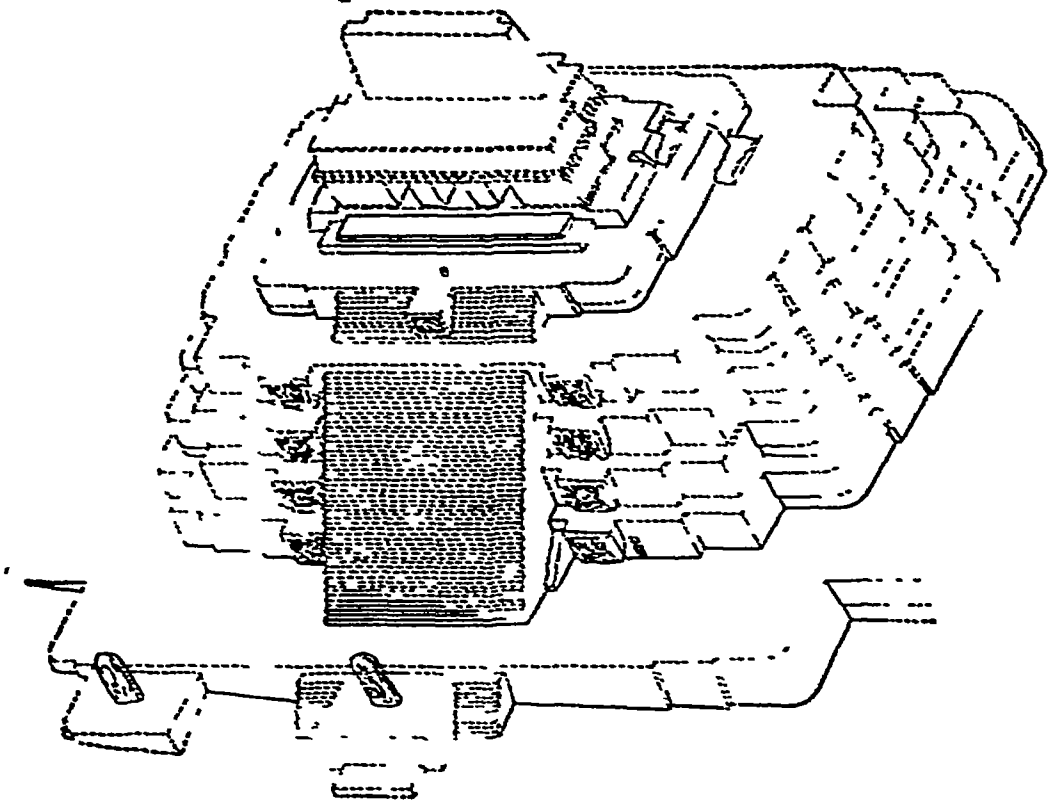
पिरामिड जैसा दीखने लगा, जिसका शीर्ष समतल चबूतरा हो और जिस पर पहुचने के लिए सीढियां हो। चबूतरे पर शायद दूसरा पद था जिस पर मन्दिर था, लेकिन यह विनष्ट हो चुका है।

अगली अवस्था मे चबूतरे की ऊचाई वही रही और उसके गोल कोने तथा बगल की दीवारो के खसके बने रहे, लेकिन सामने सीढियो के दोनो ओर नये खसके बनाये गए और पहली अवस्था का मूल चबूतरा पुनर्स्थापित हुआ, उसका अगला भाग आगे बढाया गया ताकि उसका महत्त्व पहले जैसा हो जाय तथा उस पर पहुंचने के लिए सीढियां बनायी गयी। पहले चबूतरे पर दूसरा पद उठाया गया, उनकी ऊचाई केवल छ फुट थी और उसकी सीढियो को एक मध्य कटाव द्वारा दो भागो मे कर दिया गया और कटाव मे वेदी बनायी गयी। इस दूसरे चबूतरे पर मन्दिर था, ऊची कुर्सी पर बना हुआ और उसका नक्शा भी मूल मन्दिर के नक्शे जैसा था।

(149) पुराने मय नगर जगल में गुम हो गये है, सिर्फ कहीं-कही पर पेडो के ऊपर सबसे ऊंची इमारतों के शीर्ष दिखलाई पडते हैं। उत्खनकों का पहला काम होता है खडहरों पर उगे जंगलो की सफाई करना। यह है पाइद्राज नेग्राज से कुछ पूर्व स्थित स्थल तिकल का मन्दिर, जहा फिलाडेल्फिया दल आज कल कार्यरत है। घने जगल का एक हिस्सा काटा जा चुका है और एक तीखे ढलुवा पिरामिड के आकार वाले आधार के शीर्ष पर मन्दिर की दीवारें दीख पडती है, और उसका मुख्य द्वार तो साफ-साफ दीखता है। अग्र भाग के स्टको अलकरण का काफी भाग गिर चुका है, लेकिन छत के ऊपर अलकारक 'कधे' का कुछ हिस्सा अभी भी शेष है, इसी 'कधे' के बडे पैमाने के उत्कीर्ण चित्र भवन के सबसे अधिक प्रभावशाली अग थे।

यह सारा वर्णन बहुत कठिन और दुर्बोध विवरणो से भरा और शायद इस पुस्तक के लिए अनावश्यक भी मालूम पड सकता है । इस वर्णन को यहा प्रस्तुत करने का कारण जन सामान्य की इसमे दिलचस्पी नही बल्कि यह दिखलाना है कि मध्य अमरीकी वास्तु के इतिहास का पता लगाने का प्रयास करने वाले पुराविद का काम कितना जटिल होता है । एक बात तो काफी साफ है वहा के जगलो मे यात्रा करने वाले लोगो का ध्यान सबसे पहले जिन सूक्ष्म उत्कीर्णन युक्त प्रस्तरो की ओर आकर्षित हुआ था, वे मय सभ्यता के काफी बाद के युग मे बने थे । पाइद्राज नेग्राज का अन्तिम काल-निर्धारित स्मारक अपने निर्माण के 150 वर्ष के भीतर ही वीरान होकर खडहर बन गया । लेकिन पहली बार हमे पुनर्निर्माणो की शृखला मिली है, जिससे शैलियो के क्रम का पता तो चलता ही है, साथ ही यह भी मालूम होता है कि प्रत्येक शैली कितने समय तक प्रचलित रही । हमारे ज्ञान मे यह अभिवृद्धि निर्माण की अवस्थाओ और प्रस्तर पट्टो व वेदियो के सम्बन्ध के कारण हुई है ।

पत्थरो पर अधिकतर उत्कीर्णन तारीखे हैं, लेकिन वे मय सवत् के अनुसार है, और विद्वान् अभी तक मय प्रणाली और हमारी आधुनिक प्रणाली का सम्बन्ध नही स्थापित कर पाए हैं । ऊपर कहा गया है कि पत्थर के नुकीले मेहराब लगभग 652 ईस्वी मे बनाये गये थे , यह तारीख व्याख्या के कई सिद्धान्तो मे से एक के अनुसार है, और इसमे शुद्धि-अशुद्धि दोनो की काफी गुजाइश है । मय इतिहास की समय-सारणी ठीक-ठीक तैयार हो सके, इसके लिए अभी काफी काम बाकी है, लेकिन आधुनिक उत्खनन की श्रमसाध्य विधियो के कारण इमारतो का आपेक्षिक काल-क्रम निर्धारित किया जा रहा है, और अभिलिखित वस्तुए ज्यो-ज्यो अधिक सख्यक होती जायेगी त्यो-त्यो तारीखें हमारे कैलेंडर के हिसाब से तय करना अधिक सभव होता जायेगा । इस दौरान, इस जटिल एव सस्कृत सभ्यता की विभिन्न कलाओ के नये नमूने प्राप्त होते जा रहे है और मानव की अतीत की उपलब्धियो के बारे मे समारा ज्ञान बढता जा रहा है और हम सीख रहे है कि पूरी तरह समझे बिना भी प्रशसा कैसे की जा सकती है ।
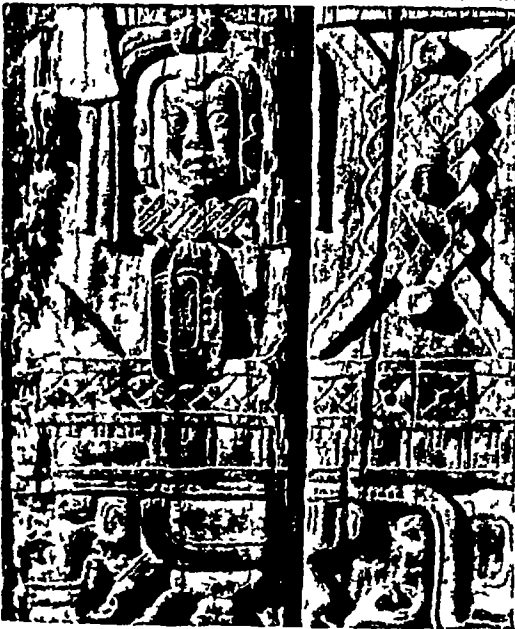
148 मन्दिरो और पुजारियों के 'भवनों' तथा दरवाजों के सरदल अक्सर बडी सूक्ष्मतापूर्वक उत्कीर्ण थे, लेकिन इन्हें सामान्यत लकडी के लिये निकाल लिया गया है। पाइद्राज नेग्राज की एक विरल 'खाज' थी लकडी का एक विशाल उत्कीर्ण तख्ता, जो बहुत अच्छी, दशा में था , इस फोटोग्राफ में उसी का एक विवरण प्रदर्शित है। जब यह याद आता है कि कलाकार के पास सिर्फ पत्थर के औजार थे तो उसकी कला की विशिष्टता पर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता।

(152) यह छोटी-सी इमारत पाइद्राज नेग्राज में सर्वाधिक सुरक्षित मय इमारत है। दरवाजे के दायीं ओर की दीवारें अपनी असली ऊंचाई तक खडी है और उनकी छत भी कायम है—स्थल की सभी इमारतों में से इसी एक इमारत की छत कायम है। खुदाई के आरम्भ से पहले दरवाजा मलबे में दबा था; दायीं ओर की खिडकी को इमारत में प्रवेश के इच्छुक खजाने की तलाश में लगे लोगों ने चौडा कर दिया है।

(153) पुजारियों के 'भवनो' में प्राप्त सिंहासनो में से एक यह है; यह अनगढ चिनाई से बनी एक बेंच है जिस पर कभी प्लास्टर चढा था और जो शायद कभी उच्चित्रों से अलंकृत थी। सिर्फ इसी को देखने पर लगता था कि यह सिर्फ घरेलू बेंच या आलमारी है और जिस इमारत में यह है वह सिर्फ एक काफी बडा मकान है, और इसी कारण शायद पुजारी का घर है।

(154) लेकिन ऐसी बेंचों की असली प्रकृति तब मालूम पडी जब पत्थर की भी ऐसी ही बेंचें मिलीं, चित्र में प्रदर्शित बेंच (जो अब फिलाडेल्फिया में है) जैसी बेंचों पर उच्चित्र उत्कीर्ण थे, यह बेंच खडित रूप में मिली थी लेकिन लगभग पूरी थी। पीछे के कुरेदकर बनाये गये दिलहों में पुजारियों के सिर है, तथा शेष अलंकरण 'चित्र-संकेतों' से हुआ है। अधिकाश संकेत मयपचाग के हिसाब से तारीखें हैं।
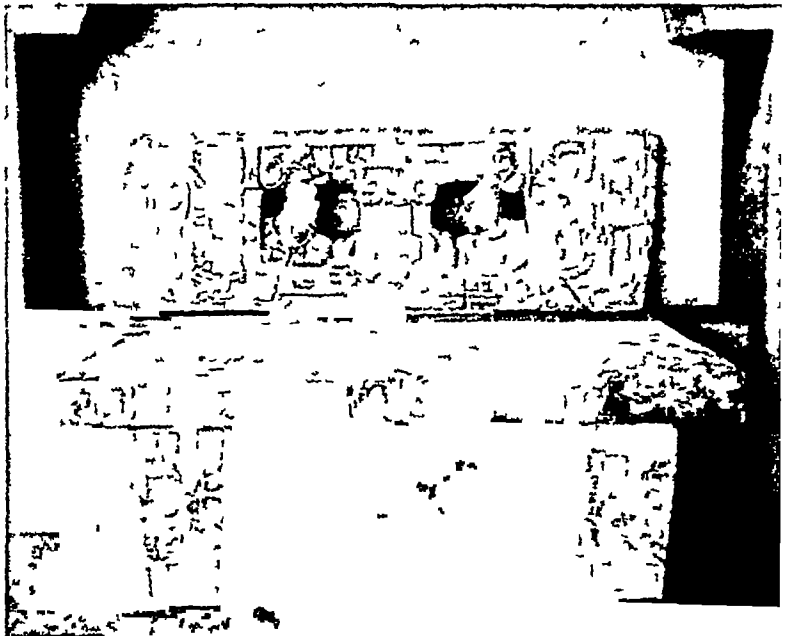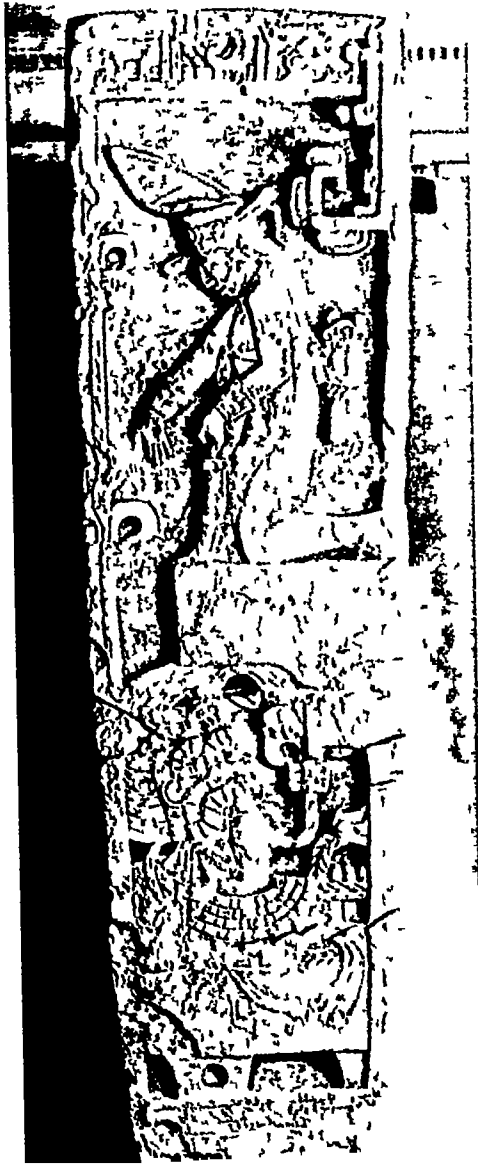
(150) 1899 में तियोबर्ट मेलर को प्राप्त एक उत्कीर्ण-प्रस्तर-पट्ट। इस प्रस्तर-पट्ट के कारण भी पाइद्राज नेग्राज की ओर ध्यान आकर्षित हुआ। अब यह फिलाडेल्फिया के विश्वविद्यालय संग्रहालय में है।

(151) पाइद्राज नेग्राज का एक सुन्दर प्रस्तर-पट्ट, जो अब फिलाडेल्फिया में है।

(157) विशाल मन्दिर के उत्खनन की अन्तिम अवस्था। दायी ओर, परवर्ती इमारत के ऊपरी चबूतरोंको हटा दिया गया है और प्रथम अवस्था का चबूतरा तथा मन्दिर की दीवारे दीखने लगी है। लेकिन दूसरी अवस्था के अग्रभाग पर अन्तिम अवस्था का एक बडा स्टको मुखौटा छोड दिया गया है। बीच के सोपान का दाया भाग साफ कर दिया गया है ताकि सबसे पहले वाली सीढिया तथा मूल चबूतरे के सामने की निचली सीढिया दीख सके। उसके बायी ओर मध्यावस्था की सीढी जमीन से उठती हुई दिखाई दे रही है, अन्तिम सोपान की कुछ सीढिया ही नीचे रह गयी है।

(155) 'सिहासनों' की धार्मिक प्रकृति के प्रति निर्णायक तर्क प्रस्तुत किया इस प्रस्तर-उच्चित्र ने, जिसमें एक धार्मिक सस्कार प्रदर्शित है। यह अभी तक प्राप्त सर्वोत्तम मय उच्चित्र है, लेकिन बहुत ज्यादा क्षत है , इस क्षय का सबसे बडा कारण यह है कि इसकी आकृतियां अधिकतर गोलीय थीं इसलिये ज्यादा आसानी से टूट-फूट गयीं।

(156) सर्वोत्तम पुरातात्विक कलाकार मिस लुइजी बेकर के इस पुनर्नवीकरण में उच्चित्र को अपनी पहले की दशा में दिखाया गया है। चित्र 154 में प्रदर्शित उत्कीर्ण सिहासन के समान सिहासन पर आसीन एक मय प्रधान या धर्माधीश चबूतरे के नीचे बैठे अपने सात दरबारियों में से एक को आदेश दे रहा है, बायीं ओर राज्य के तीन उच्च अधिकारी हैं तथा दायीं ओर चार नौकर, जिनमें से एक बूढा है और चार जवान । अत , पाइद्राज नेग्राज के 'प्रासादों' के प्रस्तर-सिहासन का उपयोग उत्सव के अवसरों पर भी होता था, और प्रासाद केवल निवासस्थान न थे बल्कि उनमें ऐसे प्रकोष्ठ भी थे जहां ये उत्सव आयोजित किए जाते थे।
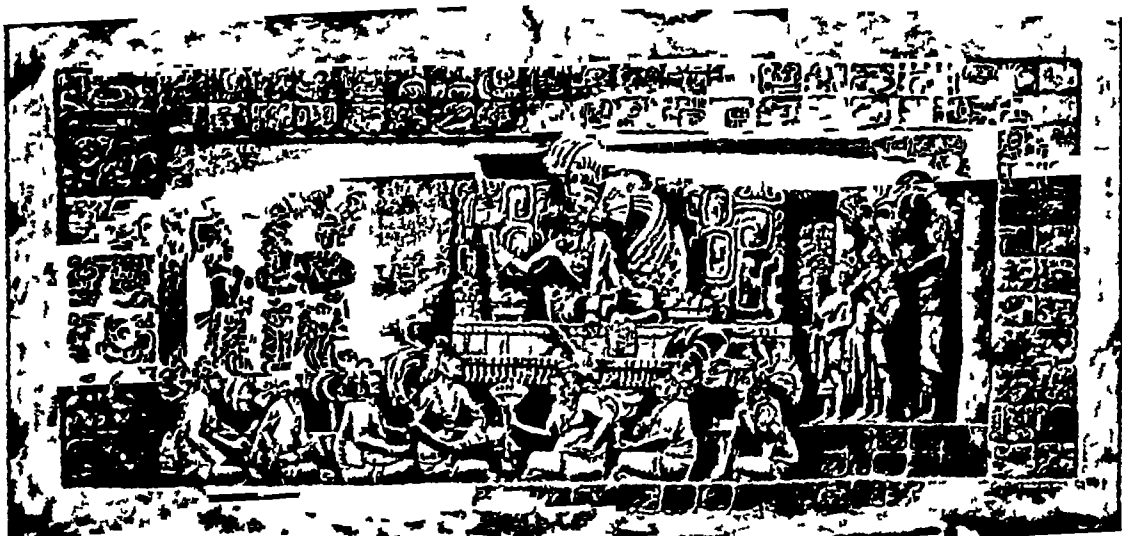
शासकों के कब्रिस्तान से दीखते थे। मिट्टी और पत्थर के बडे-बडे ढेरो को खोदकर अलग कर दिया गया, तो खनको को पत्थरो से भरे आयताकार गड्ढे मिले जिनकी दीवारो पर लट्ठे जडे थे। उन्हें हटाने पर गड्ढे के एक सिरे पर सात से सोलह घोडो तक के ककाल (घोडो को फरसो से कत्ल किया गया था) तथा लकडी की भारी गाडियो के अवशेष मिले, एक गड्ढे मे तो चार पहियो वाला हल्का रथ मिला। कही-कही पर तम्बू बनाने के लट्ठो के बडल और उनके साथ कास्य-पात्र व गाजे के बीज भी मिले। ये वस्तुए एक दूसरे ज्यादा गहरे आयताकार गड्ढे के उत्तरी सिरे पर एक पटिया पर मिली थी। इस गड्ढे की दीवारों और छत पर मजबूत पटरे लगे हुए थे जो मजबूत खम्भो के सहारे अपने स्थान पर जमे थे। यही मुख्य समाधि थी। और उसमे बर्फ का एक विशाल खड रखा था।

सभी समाधियो की अनधिकृत खुदाई पहले की जा चुकी थी। पुराने समाधि-खनको ने शायद इतनी गहराई तक खुदाई की थी कि हमेशा जमी रहने वाली मिट्टी तक जा पहुँचे थे, लेकिन पानी नही निकला था। लेकिन जब डाकुओ ने गड्ढे के भराव को गडबड कर दिया तो ऊपरी मिट्टी की नमी रिस-रिस कर पटरो से रक्षित गड्ढे मे पहुचने लगी और क्रमश गड्ढा लबालब भर गया। तब गर्मी के ताप से दूर यह पानी जम गया और डाकू जो कुछ भी समाधियो के भीतर छोड गये थे, इस ठडे गोदाम मे परिरक्षित रहता आया। तब रुदेन्को ने उन्हे खोला। बर्फ की सिल के नीचे, समाधि के फर्श पर पडी वस्तुए हल्की-हल्की दीखने लगी, तो उत्खनन के सामान्य तरीके छोडने पडे। रुदेन्को ने एक आसान तरीका अपनाया। उसने उबलता हुआ पानी बर्फ पर डाल दिया, फिर उसे पम्प करके बाहर निकाल दिया—और समाधि की वस्तुऐ निरावरण सामने थी।

समाधि मे तनो को खोखला करके बनाए ताबूतो मे दो शव थे—एक राजा का, और दूसरा उसकी पत्नी या प्रिय रक्षिता का। सोने-चादी की वस्तुए, जिन्होने डाकुओं को आकर्षित किया था, गायब थी, लेकिन जो कुछ मिला वह मिस्र के पहाडो को काटकर बनाई गयी समाधियो के अलावा पुराविदो को कही नही मिल सकता, मिस्र की वायुरुद्ध मुद्राकित गुफाओ की भाति-यहा पर बर्फ ने आदमी की सर्वाधिक नाशवान वस्तुओ को सुरक्षित रखा था। कालीने, कसीदाकारी और जडाऊ नमदे के पर्दे लगभग पूरे के पूरे मिले, और उनसे पाचवी शताब्दी ईसापूर्व के खानाबदोशो की सस्कृति का अनायास उद्घाटन हो गया।

हेरोदोतस ने अपने समय के शक राजाओ की समाधियो का वर्णन किया था, जो ऊपरी द्नीपर के किनारे स्थित एक सुनसान मैदान मे दफनाए गए थे (उन मे से एक बल्गारिया मे निकोपोल के पास अविकल रूप मे मिला है)। शव सलेपित थे। राजा के शव को निचले पटरे-लगे गड्ढे मे रखकर, उसकी छत पर राजा की एक रक्षिता, उसके घोड़े, पानपात्र-वाहक और रसोइए के शवो को रखकर कब्र को पूर दिया और उस पर एक विशाल टीला बना दिया जाता था। एक साल बाद, उसके पचास सर्वाधिक विश्वासपात्र आदमियो को मार कर, उनके

पाज़ीरिक की जमी हुई समाधियां

पश्चिमी साइबेरिया मे, अल्ताई पर्वत-श्रेणी के उत्तर मे तथा मीस्क नगर के दक्षिण-पूर्व मे लगभग 130 मील दूर, एक छोटी सी नदी की घाटी मे पाज़ीरिक नामक एक स्थान है। रूसी पुराविद् रुदेन्को ने वहाँ खुदाइया करायी थी। खोज की परिस्थितियो और प्राप्त वस्तुओ की प्रकृति की दृष्टि से वे खुदाइया अपूर्व थी और उनका ऐतिहासिक महत्त्व बहुत अधिक है। पाज़ीरिक मे कभी कोई बस्ती नही रही। सुनसान घाटी मे विशाल टीले थे, जो किसी खानाबदोश जाति के

पाज़ीरिक की जमी हुई समाधियां

मैदानो के दक्षिण मे वस्तिया वसाकर रहने वाले लोग दूसरी दुनिया मे रहते थे। और परस्पर अज्ञात जातियो व राष्ट्रो मे विभाजित थे, लेकिन घास के मैदानो के खानावदोशो का अपना एक स्वच्छन्द समुदाय था—फलत , पाजीरिक की एक ही समाधि मे पुरुप निश्चयत मगोल है लेकिन स्त्री भरोपीय। और वे शक हो या मगोल, लडाके श्रेष्ठ थे। वे जमकर लडाई लडने से वचते थे—दारा ने उन्हे पराजित करने का सकल्प किया तो उन्होने यही किया था। लेकिन जव कभी खराव मौसम के कारण भुखमरी हो जाती थी या जनसख्या अधिक हो जाने पर आत्म-विश्वास वढ जाता था या दूसरे पक्ष की निर्वलता को देखकर उनका लोभ वढ जाता था, तो वे समृद्ध दक्षिणी राज्यो पर—जहा की सम्पत्ति का पता उन्हे अपने घोडो और घर मे वने रगीन नमदो के व्यापार के कारण था—हमला कर देते थे और लूट का माल लेकर वापस आ जाते थे। ऐसे हमलो से डरने के कारण दक्षिण के शासक उन्हे 'दानेगेरड', शान्ति वनाये रखने की रिश्वत, देने को तैयार रहते थे। इस तरह, व्यापार, रिश्वत और युद्ध के जरिये मैदानी खानावदोशो को सभ्य ससार की सभी वस्तुए प्राप्त हो जाती थी। और वे वस्तुए विशाल घास के मैदान के आर-पार हाथों-हाथ पहुच जाती थी। पूर्वी यूरोप और एशिया के राज्यो और साम्राज्यो के वीच सम्पर्क वहुत कम था; लेकिन एक हद तक खानावदोश मध्यस्थ का काम करते थे और प्रत्येक की कलाओ की कुछ जानकारी दूसरे तक पहुचाते थे। क्रीमिया और उक्रइन की टीलेदार समाधियो मे सोने की चीजे, यूनानी शिल्पियो द्वारा निर्मित वढिया किस्म के जवाहरात, और पाचवी शताव्दी के एथेन्स के कारखानो के रजित मृद्‌भाड मिलते है, लेकिन इनके साथ-साथ स्थानीय शिल्पियों द्वारा निर्मित कास्य और सोने के आभूपण भी है जिनपर अजीवोगरीव हरकत करती हुई अत्यधिक अलकृत पशु आकृतिया है—इस अजीव कला को केवल 'शक' कहा जा सकता है, और धातु की ऐसी ही वस्तुए तथा मानव के शरीर पर गुदी हुई ऐसी ही आकृतिया पाजीरिक मे मिली है। चीन की कला पर इनका काफी प्रभाव पडा है। भूभाग के इसी छोर पर, साइवेरियाई समाधियो मे, स्थानीय नमदो के साथ-साथ ईरानी कालीन और चीनी रेशम भी है, और दूर उत्तर, मगोलिया के नोइन नामक स्थान पर एक समाधि पाटी गयी है जिसमे चीनी, शक और यूनानी वस्तुए है। यूनानी वस्तुओ से (फिर चाहे वे पश्चिमी एशिया मे ही क्यो न वनाई गयी हो) सिद्ध होता है कि ईसा पूर्व की अन्तिम शताब्दियो मे, खानावदोशो ने यूनानी कला को चीन की सीमाओ तक पहुचा दिया था।

हम विशेषज्ञता के युग मे जीवित है और विद्वान् अपना शोधकार्य एक ही क्षेत्र मे सीमित रखते है। उत्कृष्ट प्राचीन कलाकृतियो की उत्पादक सभ्यताओ मे से किसी एक—यूनान और मिस्र, मेसोपोटामिया और फारस, भारत और चीन—पर ध्यान केन्द्रित करते है, और उनका अलग-अलग विवेचन करते है, मानो उनकी कलाओ का विकास शून्य मे हुआ है। सचाई, वेशक, इसके विपरीत है। लेकिन, अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य, कूटनीतिक सम्बन्धो, विजय-युद्धो और जन-स्थानान्तरणो पर खूव ध्यान देने के वावजूद हमे भूलना नही चाहिए कि घास के मैदानो के घुमन्तू

मृत घोडो की पीठ पर विठाकर, टीले के गिर्द एक गोले मे खडा कर दिया जाता था। हेरोदोतस ने 'हशीश' पीने की शको की आदत की वात भी लिखी है, तीन खम्भो पर एक तम्बू खडा करके उसके भीतर एक पत्थर सफेद गर्म कर के उस पर गाजे के बीज डाल दिये जाते थे तो उनसे एक गाढा धुआ निकलकर तम्बू मे भर जाता था, तव वे खूव जोर-जोर से सास लेकर धुआ अपने भीतर खीचते थे और नशे मे मत्त होकर चीखते-चिल्लाते थे। पाज़ीरिक की समाधिया हेरोदोतस के विवरण के अनुरूप है, वहा भी शवो को दफनाने की वही क्रिया थी और शायद वहा भी राजा के पचास विश्वासपात्रो को मारकर टीले के गिर्द घोडो पर बिठाया जाता था यद्यपि इस प्रकार के सस्कार का कोई चिन्ह अव शेष नही है। हा, पाज़ीरिक की समाधिया गाजा पीने की क्रिया की साक्षी अवश्य है। पाज़ीरिक की समाधियो को एक सुनसान घाटी मे बनाने का कारण भी हेरोदोतस मे ही मिलता है। फारस के सम्राट् दारा ने शक राजा के पास सवाद भेजा था कि हमारी अधीनता स्वीकार करो या युद्ध करो। शक राजा ने उत्तर दिया 'हमारे पास न नगर हैं और न उपजाऊ खेत, इसलिए हमे डर नही है कि आप उन्हे विजित या विनष्ट कर देंगे। फिर हम युद्ध क्यो करें ? लेकिन अगर आप युद्ध करना चाहते हैं, और वह भी जल्दी ही, तो हम आपको बताते है कि हमारे पूर्वजो की समाधिया है, आइए, उनका पता लगाकर नाश करने की कोशिश कीजिए और तभी आपको पता चलेगा कि समाधियो के लिए हम लडेंगे या नही।' शक राजाओ को किसी गुप्त स्थान मे दफनाया गया था, जो उनके जाति भाइयो को ही मालूम था।

'लेकिन,' प्रश्न किया जा सकता है, 'बल्गारिया और पश्चिमी साइवेरिया के बीच की दूरी 2,500 मील है : हेरोदोतस द्वारा एक के वर्णन और दूसरी जगह प्राप्त मृतक-सस्कारो की समानता क्या सयोग मात्र ही नही है ?'

कारपेथियन पहाडो की तलहटी से पूर्व की ओर एक विशाल खुला हुआ घास का-मैदान शुरू होता है जो पचास अश अक्षाश के लगभग समानान्तर है। क्रीमिया की तरफ से समस्त दक्षिणी रूस के आरपार, कैस्पियन सागर और अराल सागर के गिर्द, विशाल अल्ताई पर्वत-श्रेणी के उत्तरी सिरे के साथ-साथ, वैकाल झील के परे मगोलिया तक यह मैदान फैला है। खानावदोशो के लिए यह आदर्श भूभाग था, जहा वे घास के मैदानो पर दूर-दूर तक विचरण कर सकते थे। और पूर्व से पश्चिम तक देशो की सीमाए भी न थी कि खानावदोशो को वाधा होती। स्वभावत कवीलो के घुडसवार पुरुष और भारी ढकी हुई गाडिया, जो उनकी स्त्रियो की चलती-फिरती झोपडिया थी, नए चरागाहो की तरफ वढा करते थे और स्पष्टत सभी कवीले एक ही जाति के न थे। पश्चिम मे गेती और तॉरी, अगथिर्सी और न्यूरी (भेडिये मे परिवर्तित मनुष्य), वूदिनी (जिन्होने लकडी की वस्तिया वनायी थी और जो पृथक् भाषा वोलते थे), गेलोनी (जो खेती करते थे) और सारोमेट थे। सुदूर पूर्व मे मगोल भी खानावदोश थे। लेकिन भूभाग की प्रकृति के कारण उनकी सस्कृति, और जीवन-पद्धति एक जैसी हो गयी। घास के
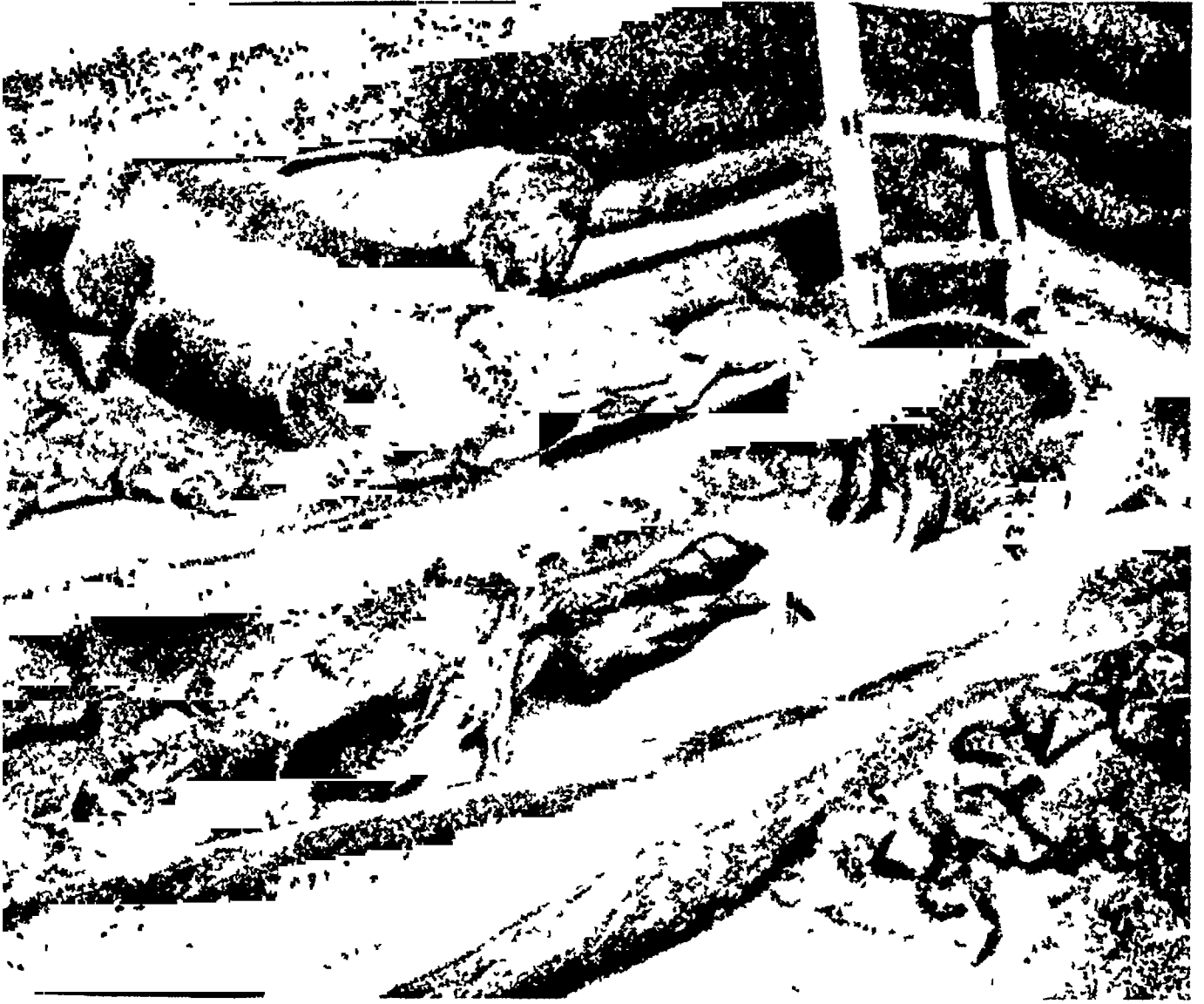
(158) मुख्य गड्ढे की समतल तलहटी पर, समाधि प्रकोष्ठ से ऊपर के तल पर, राजा के घोडों की हड्डियां तथा कबीले की यात्रा के दौरान स्त्रियों-बच्चों और घरेलू सामान को ढोने वाली भारी गाडियों या हान युग के चीनी रथ जैसे एक हलके रथ (जैसा यहां है) के अवशेष मिले थे, यह चीनी और खानाबदोशाई संस्कृतियों के बीच की एक कडी है। यहा पर 'हशीश' पीने वालों के तम्बुओं के लम्बे बांस मौजूद थे।

(159) निचले स्तर पर, लक्डी से मढे गड्ढे पर ताबूत है, जो एक तने को खोखला करके बनाया गया है। पुराने समाधि-डाकू, जो सुवर्णाभूषण आदि चुरा ले गये, अक्सर शवों के टुकडे-टुकडे कर डालते थे ताकि अंगूठियों, कडों आदि को उतारा जा सके, यहां पर असाधारण रूप से कम काट-कूट हुई है, हालांकि आभूषण आदि एकदम गायब है।

खानावदोशो ने भी अपना अशदान किया था, उनका मौलिक योगदान तो शायद अधिक न था, लेकिन पुरानी दुनिया के दो छोरो को मिलाने वाले सम्पर्क-सूत्र और इसलिए मानव की प्रगति मे सहायक वे अवश्य थे। पाज़ीरिक की यही शिक्षा है।
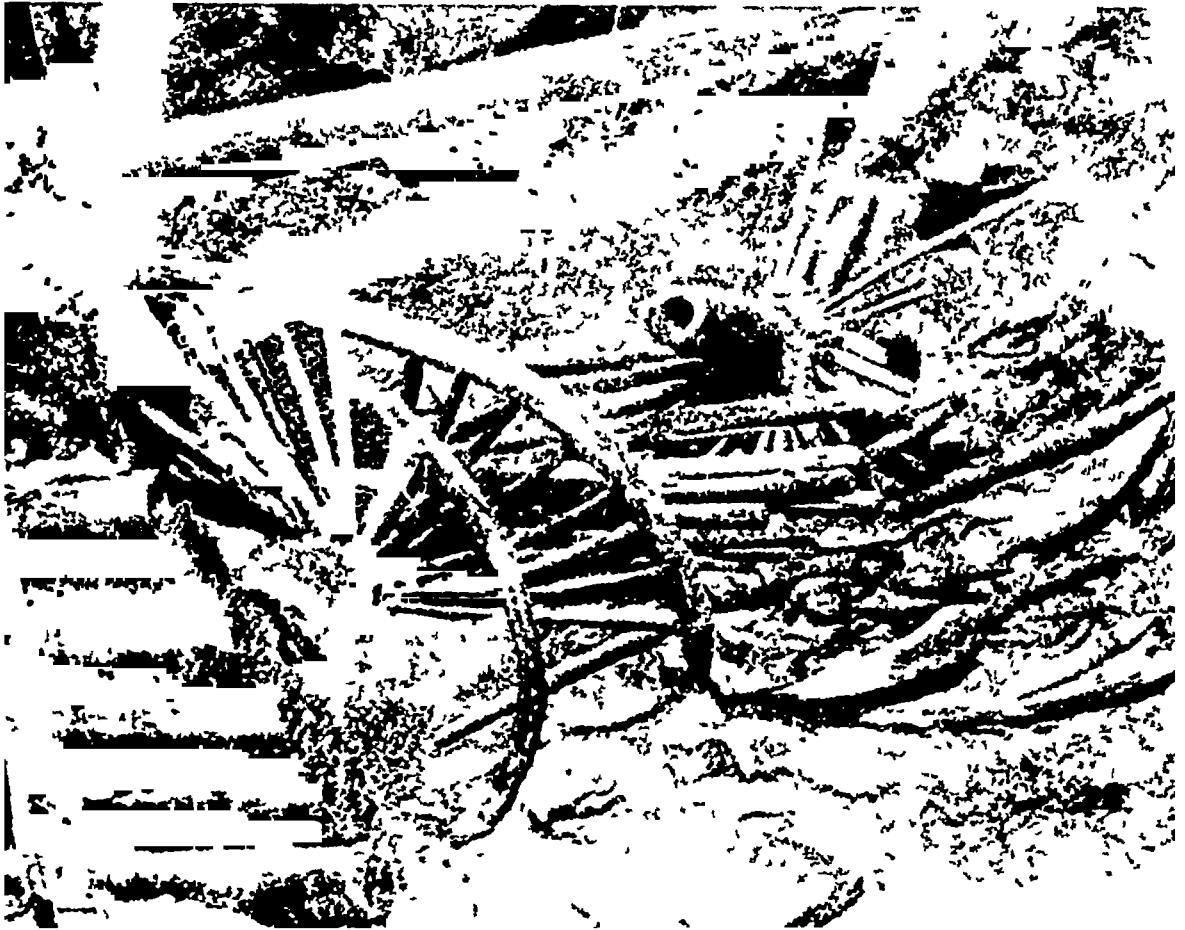
(162) यह खूबसूरत कालीन, जो साढे छ' फुट लम्बी और लगभग छ फुट चौडी है, निश्चयत ईरानी है, जैसा कि बाहरी बार्डर के घुडसवारो की पोशाकों से सिद्ध है, अगले बार्डर तथा बीच के वर्गों के आकारी पैटर्न भी ईरानी है। ये पैटर्न निनेवे में लायार्ड को प्राप्त एक पत्थर की ड्योढी के पैटर्नों जैसे है, ड्योढी को इस तरह तराश कर बनाया गया है कि वह ईरानी कालीन जैसी दीखे। बुनाई की सूक्ष्मता (एक वर्ग इच में 184 गाठे है) से अनुमान होता है कि यह अवश्य ही शाही बुनकरो ने बनायी होगी और अपने सीमान्त पर शान्ति बनाये रखने के लिये शाह ने इसे 'दानेगेल्ड' में दिया होगा।
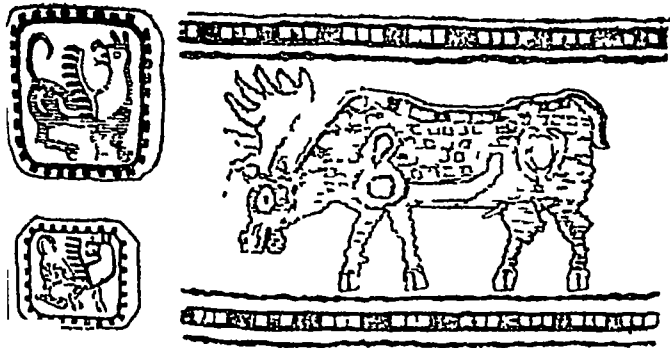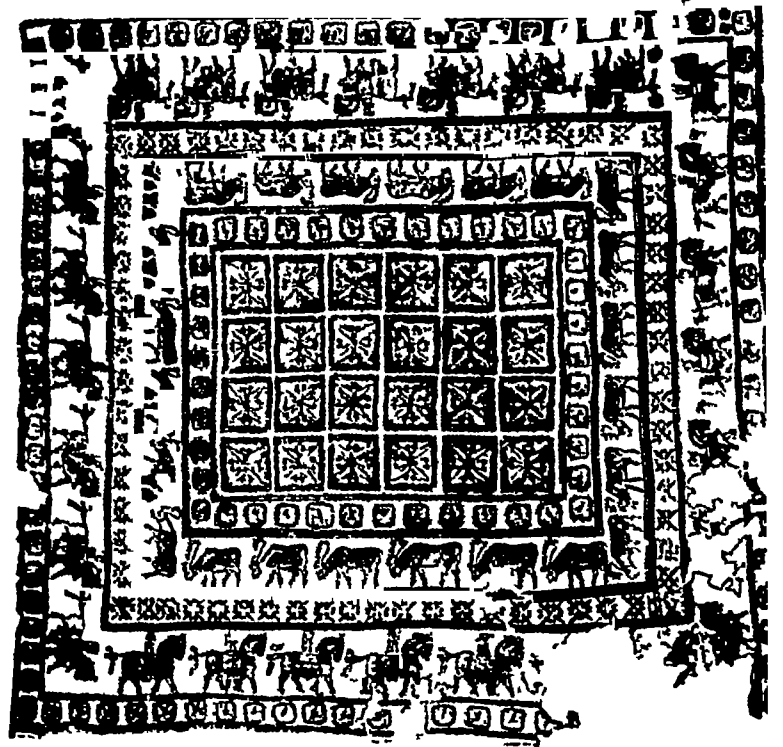
(163) विशाल कालीन के कुछ अभिप्राय, जिन्हे आवर्धित इसलिये किया गया है कि पशु आकृतियों का प्रतिपादन स्पष्ट दीख सके।

(164) स्वयं शकों द्वारा निर्मित वस्तुएं बिल्कुल अलग किस्म की थी। वे बुनी हुई न थीं, बल्कि पीट-पीट कर बनाये गये नमदे की थी। नमदे के टुकड़े अनेक रंगों में रंग लिये जाते थे और हलके रग के ऊन की पीठिका पर स्त्रियां उन टुकडों को टांक-टांककर एक डिजाइन बनाती थी—कभी-कभी तो टुकड़े एक दूसरे के ऊपर भी टाके जाते थे। यह नक्काशी का काम खुले पैटर्नों में सबसे अधिक प्रभावशाली था। कथाओ के जानवर के इस चित्र में सीग शकों की 'पशु' शैली में है, लेकिन लगता है कि इसके पख चीनी कला से प्रभावित है।
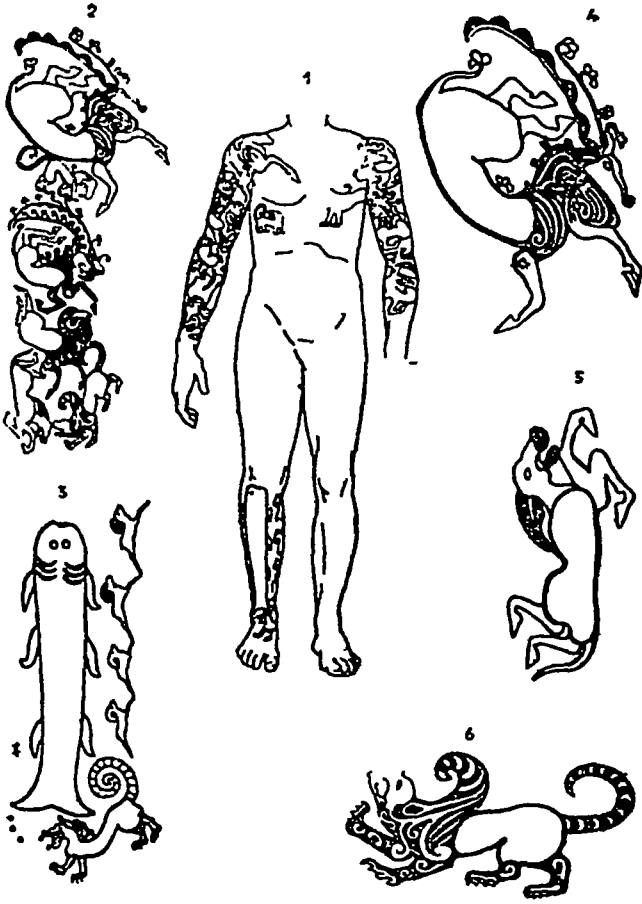
(160) सर्वाधिक विलक्षण बात तो यह थी कि शवों पर खूब गुदने गुदे थे। हेरोदोतस ने साफ लिखा है कि शक लोग अपने शरीर गुदवाते थे, लेकिन किसी को शकों के शवों के इतनी अधिक परिरक्षित अवस्था में मिलने की आशा न थी कि गुदने भी ठीक-ठीक बने रहें। साथ के रेखाचित्र में एक शरीर दिखाया गया है और उसके साथ पैटर्नों के विवरण हैं। ये सभी पैटर्न पशु आकृतियों को विभिन्न रूप देकर बनाये गये हैं, जो क्रीमिया से मंगोलिया तक खानाबदोशों की कला की विशिष्टता है।

(161) यह नमूना है एक जमाये हुए नमदे पर पशु आकृतियों के पैटर्न का। यह नमूना पाजीरिक में नहीं बल्कि मंगोलिया के नोइन नामक स्थान में पाया गया था। यह दक्षिणी रूस में प्राप्त अनेक धातु वस्तुओं के समान है, और चीनी कला में भी इस का अनुकरण है।

सटन हू

ससेक्स के समुद्र-तट से छ मील दूर, डेबेन नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित सटन हू ग्यारह स्तूपों या मृतक-सस्कार-टीलो का एक समूह है। इस समूह के सबसे बड़े टीले का उत्खनन चार दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण था। प्रथम, क्षेत्र-कार्य बढ़िया ढग से किया गया था ; द्वितीय, ब्रिटेन मे उत्खनित किसी भी स्थान पर इतना बडा कोश—पूर्वी ऐंग्लिया मे राज्य करने वाले एक आदि सैक्सन राजा का सम्पूर्ण समाधि-फर्नीचर—नही मिला , तृतीय, जिन वस्तुओ को किसी भी उपचार से परे समझा जा सकता था उनके पुनर्नवीकरण मे कुशल प्रयोगशाला-कार्य के महत्त्व का यह श्रेष्ठ उदाहरण है , अन्तिम, इग्लैंड के पुरातत्त्व के इतिहास की सर्वश्रेष्ठ 'खोज' को उसकी स्वत्वाधिकारिणी श्रीमती प्रेरी ने जिस सौजन्य के साथ राष्ट्रार्पित कर दिया, वह भी द्रष्टव्य है।

टीला कभी अण्डाकार था लेकिन अब मौसम के कारण अशत क्षरित हो गया था। बालू का वह टीला घास और सिवार से ढका था तथा उसके भीतर एक जहाज़ दफन था। जहाज़ कोई नमूना नही बल्कि अस्सी फुट लम्बा असली सागरचारी जहाज़ था, जिसकी चौदह फुट लम्बी शहतीर काम मे लायी जा चुकी थी ; उसमे पाल या मस्तूल न था और अड़तीस पतवारें उसे

(165) उसी नक्काशी की तकनीक में यह विचित्र दृश्य बनाया गया है जिसके अर्थ का पता लगाना मुश्किल है। उत्खनकों का विचार था कि बैठी हुई आकृति किसी देवता या न्यायाधीश की है और दृश्य किसी संस्कार का है। ब्रिटिश सग्रहालय के श्री आर० डी० बार्नेट ने एक दूरस्थ शक जाति के बारे में हेरोदोतस का विवरण उद्धृत किया है— 'खल्वाट अरगीफियाई पेडों के नीचे रहते हैं, न्यायाधीश बनते है और भगोड़ों को शरण देते हैं।' इस चित्र का घुडसवार शायद न्याय या आश्रय का इच्छुक है।

(166) शोभावस्त्रों की बुनाई का एक नमूना यह टुकडा है जो काठी की गद्दी की तरह प्रयोग किया जाता था। एक ही दृश्य भूरी और नीली पीठिका पर एकान्तर से दोहराया गया है। यह एक विशिष्ट ईरानी दृश्य है जिसमें चार स्त्रियां (शायद दो बडी और दो छोटी स्त्रियां) एक वेदी पर धूप जला रही हैं, ईरानी समानान्तर कृतिया, जो मुद्रा-तक्षण में मिलती हैं, लगभग 450 ईसा पूर्व की हैं और इस समाधि को भी इसी समय का समझना चाहिए।

(167) वस्त्रों के अतिरिक्त अधिकांश वस्तुए शक हैं इन सभी प्रस्तर-तक्षण में वही विशिष्ट 'पशु' शैली है जो शक कला के आकने का सर्वोन्नम मापदण्ड है। दक्षिणी रूस में मूलत प्राप्त तथा हानवश में चीनी कला में पुनर्प्राप्त ढाली हुई धातु की सुपरिचित आकृतियां पाजीरिक की वर्फ ढकी समाधियों में लकडी में मौजूद है—जैसा अन्यत्र नहीं हो सका।

निस्सदेह एक राजा की स्मृति मे यह महान् पोत-अन्त्येप्टि अर्पित थी। उस राजा के खाने-पीने के वर्तन चादी के थे, कवच मे सोने का अलकरण था, व्यक्तिगत आभूपण स्वर्णकार-कला के श्रेष्ठतम उदाहरण थे, और सुन्दर पर्स मे सफर-खर्च के लिए स्वर्ण-मुद्राये भरी थी। अन्त्येष्टि की तारीख भी निश्चित है। चादी के थाल (चित्र 174) पर कुस्तुनतुनिया के सम्राट् अनस्तासियस (491–518 ईस्वी) की मुद्राये अकित है, लेकिन यह काफी पुरानी कुलागत वस्तु रही होगी ; सिक्कों का प्रमाण निश्चयात्मक है और उनसे 650 और 660 ईस्वी के वीच का समय निर्धारित होता है। इससे सिद्ध है कि यह शून्य समाधि एक सैक्सन आक्रमणकारी को अर्पित थी, जिसने पूर्वी ऐंग्लिया मे अपना राज्य स्थापित किया था और जिसकी मृत्यु उसी दशक मे हुई थी।

पहली सभावना है कि यह पेगन राजा ईथेलहेयर था (और पोत-अन्त्येप्टि एक पेगन सस्कार है) जो 654 मे सिहासनारूढ हुआ और यार्क शायर के विनवायेड युद्ध मे 655 मे मारा गया; यदि उसका शव न लाया गया हो तो फिर शून्य समाधि बनाने का कारण स्पष्ट है। दूसरी ओर, उसका भाई और उत्तराधिकारी ईथेलवाल्ड ईसाई था और किसी ईसाई का इस अन्त्येप्टि सस्कार द्वारा पेगन धर्म के प्रति अपने लगाव का परिचय देना असंभव-सा दीखता है। दूसरी सभावना है कि यह ईथेलहेयर के पिता अन्ना का स्मारक है। अन्ना ईसाई था और सटन हू के पास स्थित ब्लाइथवर्ग की सस्कारित भूमि पर दफनाया वताया जाता है, उसके उत्तराधिकारी पेगन पुत्र ने अपने पिता की इच्छानुसार ही उसकी अन्त्येष्टि की होगी, लेकिन चूकि उसे ईसाइयो के स्वर्ग पर कोई आस्था न थी इसलिए उसने वृद्ध की आत्मा की शान्ति के लिए कुछ भी उठा न रखने का निश्चय किया होगा और पारम्परिक सस्कार सम्पन्न करके अपने पिता के लिए वल्हल्ल पहुचने का मार्ग प्रशस्त कर दिया होगा। वस्तुत यह विश्वास करने का जी होता है कि शाही कब्रिस्तान मे अन्तिम और सबसे बढिया कब्र अन्तिम पेगन राजा की श्रद्धा का सुफल थी, जिसने नवोदित ईसाई धर्म के विरोध मे उसे बनवाया था।

समाधि फर्नीचर का सबसे रोचक गुण है उसकी विविधता। सिक्के मेरोविंगियाई हैं, फ्रास मे ढले हुए। अनस्तासियस की थाली और चाँदी के चम्मच (जिनमे से दो पर क्रमश. 'सॉल' और 'पॉल' खुदा है) कुस्तुनतुनिया के हैं और थाली शायद वपतिस्मा का उपहार है। सलीथाकार अलकरण युक्त चादी के प्याले (शुरू-शुरू मे इनकी सख्या दस थी, लेकिन कुछ का विनाश हो गया) पश्चिमी एशिया के हैं। चादी का एक वड़ा प्याला, जिसकी वाटे अलकृत थी और जिसके वीच मे एक प्राचीन शीश उभरा था, भूमध्यसागरीय है और शायद सिकन्दरिया मे वना। कासे का एक प्याला भी, जिस पर पशुओ की आकृतियां खुदी थी, शायद मिस्री है। एक लटक्ता हुआ कांसे का प्याला, जिम पर कलईदार चकत्ते जडे है, मामूली सैक्सन किस्म का है, लेकिन इसमे एक और विशेपता है—वीच मे एक ऊर्ध्व अवलम्ब जिस पर कलईदार कासे की एक मछली नाचती है ; सभव है कि यह उर्फा (प्राचीन एदेसा) मे वनने वाले 'मछली-प्यालो' जैसी किसी सीरियाई मूल की अनुकृति हो। शिरस्त्राण और ढाल, जो असली अस्त्र थे (वे क्षत हुए थे और उनकी मरम्मत

चलाती थी जो दिशा-परिवर्तन का भी काम करती थी। उसे नदी के मुहाने से सूखे मे खीचकर वालू मे उसी के लिए खोदी गयी खाई मे मे रख दिया गया था, फिर जहाज के मध्य भाग मे एक छतदार केविन मे उपहारो को रखकर जहाज़ के ऊपर और चारो ओर बालू उलीची गयी थी; जव गड्ढा जमीन के तल तक भर गया और जहाज़ छिप गया तो उस पर घास का स्तूप बना दिया गया। जहाज़ की लकडी तो सारी नष्ट हो गयी। गीली बालू मे उत्खनको को रग के धब्बे मिले—और मिली लोहे की समस्त कीलें जो कभी जहाज के विभिन्न भागो को जकडे हुए थी और ठसाठस भरी वालू के कारण आज भी यथास्थान थी। अत्यधिक सावधानी से भरी हुई बालू को हटाया गया तो धब्बेदार पर्त और कीले खुल गयी, केबिन की छत के गिरने से पहले उसमे जो साफ बालू घुस गयी थी उस पर पडी रग की ढलुवा रेखाओं को नोट करके केबिन का आकार-प्रकार भी मालूम किया गया।

सभी वस्तुएँ केविन के भीतर व्यवस्थित रखी थी। अधिक व्यक्तिगत वस्तुए, आभूषण और शस्त्र, पश्चिमी सिरे पर थे। लेकिन उसमे शव एक भी न था, कभी भी न था, वह शून्य-समाधि थी। लेकिन ऐसा नही कि इस कारण उपहार कम मूल्यवान थे। उत्खनको के सामने जैसा शाही खजाना खुला पडा था वैसा पाने की आशा ब्रिटिश पुराविदो ने स्वप्न मे भी न की थी, लेकिन वस्तुओ की दशा वहुत खराव थी इसलिए उनकी जिम्मेदारी बहुत बढ गयी। सोना बेशक नाशवान नही है और सोना काफी था, लेकिन लगभग सदा सोने की वस्तुए किसी अन्य पदार्थ से बनी वस्तुओ की आभूषण मात्र थी, और वह पदार्थ या तो पूरी तरह नष्ट हो गया था या इतना सड-गल चुका था कि पहचान मे ही न आता था। इसलिए पहला काम था फोटोग्राफी, रेखाचित्रो और टिप्पणो द्वारा सोने के प्रत्येक टुकडे की विशुद्ध स्थिति तथा अन्य वस्तुओ के साथ उसके सम्बन्ध का लेखा-जोखा रखना, ताकि बाद मे पूरी वस्तु का पुनर्निर्माण किया जा सके, येह काम अच्छी तरह पूरा हुआ। चादी की कुछ चीजें पूरी तरह नष्ट हो गयी थी, कुछ बची थी लेकिन चादी जैसी नही दीखती थी। कासा बुरी तरह और लोहा उससे भी ज्यादा नष्ट हो चुका था, लकड़ी और चमडे का तो वालू पर अस्थायी धब्बा मात्र, या अधिक-से-अधिक सिकुडी हुई चीज़ का टुकडा, रह गया था। कभी-कभी क्षेत्र-टिप्पण पुनर्नवीकारक के निर्देश के लिए काफी थे (थैली का ढक्कन ऐसी ही चीज थी), लेकिन कभी-कभी उसका काम लगभग असभव-सा अवश्य रहा होगा। ब्रिटिश सग्रहालय की डाक्टर प्लेंडरलीथ की प्रयोगशाला मे, विनष्ट धातु के लगभग पुनर्निर्माण के सिलसिले मे चमत्कार घटित हुए (ऐसा पहले भी हो चुका था), और श्री हर्वर्ट मार्थन की विशेष नियुक्ति के बाद तो सचमुच पुनर्नवीकरण के चमत्कार हुए। सिर्फ चालीस साल पहले जिस चीज को कूडा कहकर फेंक दिया जाता, अव कौशल एव असीम धैर्य के वल पर इतनी अच्छी तरह उसे आकृति दी गयी और फिट किया व मढा गया कि सग्रहालय मे उस व्यर्थ पदार्थ की अपूर्व सुन्दर और दिलचस्प प्रदर्शनी का आयोजन किया जा सका। यह कथन अत्युक्ति नही है कि सटन हू कोष प्रयोगशाला तकनीक की महती उपलब्धि है। और उस तकनीक की सानी दूसरी नही है।
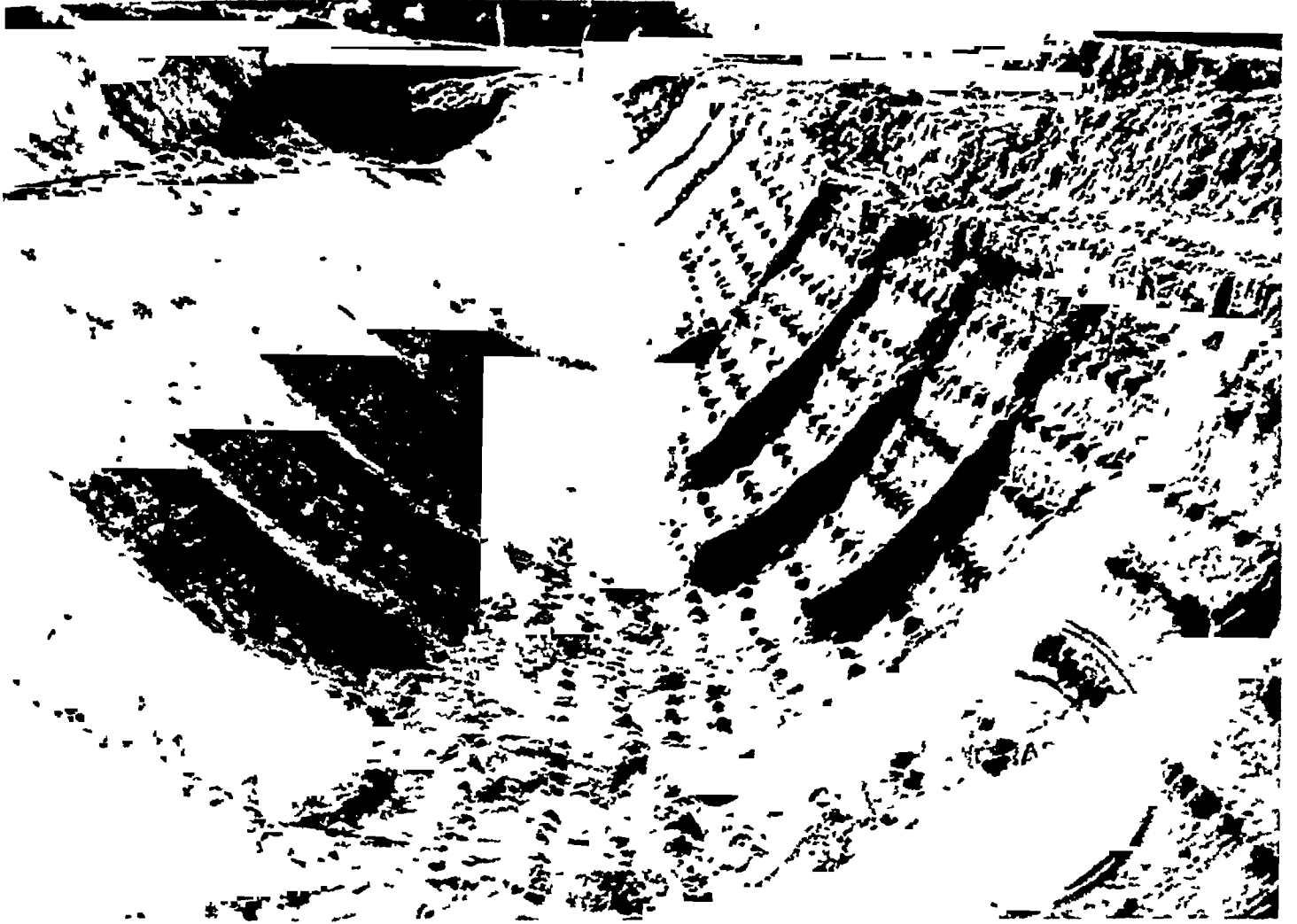
(168) जहाज का भीतरी भाग, उसके पृष्ठ भाग की ओर देखते हुए। उत्खनकों द्वारा बालू को हटाने पर कीलो के सिर दीखने लगे, तब धब्बेदार पर्त मिली जो जहाज के शहतीरो—मुडी हुई लकडियो और प्यालेनुमा आकार से—बनी थी, दोनों ओर ऊपर ऊर्ध्व कावले दीख रहे है, जिनके जरिये जहाज के ऊपरी भाग पर डाड अटकाने की कीलों के जोडे लगे रहते थे। जहाज की लकडी शेष नहीं है, लेकिन उसकी बनावट का कोई भी विवरण कम नहीं है।

(169) ढाल के बीच का विशाल उभार, इसके कुछ हिस्से पर काँसे का मुलम्मा चढा है और चपटी मुठिया स्वर्णजटित याकूत से अलकृत है।

की गयी थी), स्वीडेन के हैं, जिन्हें सभवत राजा अन्ना या उसका कोई योद्धा लाया था। इसके विपरीत, आभूषण पूर्वी ऐंग्ल्याई हैं। केण्ट के जूट लोग वहुत समय से सोने के सुन्दर आभूषण वनाया करते थे जिनमे एक लेप करके याकूत चिपकाये जाते थे और उनकी तकनीक सटन हू आभूषणो की भी है; लेकि पूर्वी ऐंग्लियाई स्वर्णकारो ने तकनीक और जडाऊ काम की प्रकृति दोनो प्रकार से केण्ट स्वर्णकारो के काम मे सुधार किया—उन्होने वहुरगी काच की पच्चीकारी (कास्यपिनो के निर्माण मे परवर्ती रोमक-ब्रिटिश स्वर्णकार इसी विधि का उपयोग करते थे) को अपना कर तराशे हुए याकूतो से सयुक्त करके सर्वोत्तम आभूषणो को अलकृत किया।

यह एक अत्यन्त सार्वभौम सभ्यता हमारे सामने है, जिसकी विलास-सामग्रिया समस्त यूरोप और पश्चिमी एशिया से प्राप्त होती थी। सातवी शताब्दी ईस्वी के 'अन्धे युगो' मे भी ऐसी सभ्यता हो सकती है, यह कल्पना ही सभव न थी। सटन हू के आभूषणो मे आविष्कार-क्षमता और डिजायन-कौशल तथा श्रमसाध्य निर्माण भी स्पष्ट दीखते हैं। इनसे अनुमान होता है कि, श्री ब्रूस-पिटफर्ड के अनुसार, सातवी शताब्दी के अन्त और आठवी शताब्दी के प्रारम्भ मे नार्थम्वरलैंड मे फूलने फलने तथा 'लिंडिसफार्न गॉस्पेल्स' की दीप्ति जैसी महान् कलाकृतियो को जन्म देने वाली कला के श्रेष्ठ विकास मे पूर्वी ऐंग्लिया का भी अशदान था, जिसका आभास भी अभी तक किसी को न था।

(173) क्षत धातु के सैकड़ों छोटे-छोटे टुकड़ों से मिस्टर मार्यन ने इस शिरस्त्राण का पुनर्नवीकरण किया था। यह लोहे का बना था और दूसरी धातुएँ इस पर चढ़ायी गयी थीं। शीर्ष पर चांदी चढ़ी थी और उस पर त्रिशूल-पैटर्न खुदे थे। मुख्य भाग में चांदी के मुलम्मेयुक्त कांसे के बहुत पतले पत्तर लगे थे और उभरी हुई आकृतियां बनी थीं—वर्गाकार पैनेल मुलम्मेदार टीन की पत्तियों से जकड़े थे।

[illegible] ढाल लकडी की बनी थी और उस पर चमडा मढ़ा था। किनारे पर सब ओर कांसे के मुलम्मे के छोटे-छोटे पशुओं के सिर थे, उभार पर एक चिडिया की आकृति थी ओर उसके नीचे एक ड्रेगन जेसा देत्य, जो कासे के मुलम्मे के थे। बायी ओर की ऊर्ध्व पत्ती एक सजावटी बधनी है, दायीं ओर की दो मुठियों को, जिनमें बाह की पट्टी के सिरे बांधे जाते थे, सन्तुलित करने के विचार से शायद उपरोक्त पत्ती रखी गयी थी। विशेष बात यह हे कि छोटे जानवरों के कुछ सिर तथा अन्य आकृतियों के कुछ भाग पुराने जमाने में खो गये या क्षत हो गये थे और सोने की पत्ती युक्त प्लास्टर से उनकी मरम्मत की गयी थी या उनके स्थान पर लगाया गया था, ऐसा प्रत्यक्षत युद्ध के मतलब से नहीं बल्कि अन्त्येष्टि के समय अच्छा लगने की दृष्टि से किया गया था।
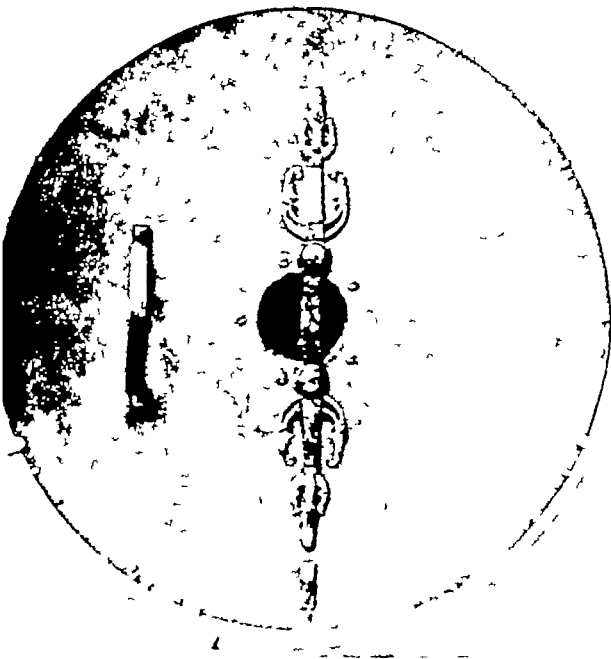
(171) ढाल का पिछला भाग, जिसमें बांह की पट्टी और उभार के पीछे की मुठिया दीख रही है मुठिया को दोनो ओर कांसे के मुलम्मे के जडाऊ काम से सजाया गया था। नीचे लगी छोटी-सी चीज चादी का पानी चढा छल्ला था, ढाल का उपयोग न होने पर उसे इसी छल्ले से लटकाया जा सकता था।

(172) ढाल के उभार के नीचे की पक्षी-आकृति के इस फोटोग्राफ में ढाल का सूक्ष्म अलंकरण स्पष्ट दीखता है—उसके शरीर पर जटिल फीते जैसी डिजायन है, उसकी याकृती आख मानो घूर रही है तथा दांत मुड़े हुए तीखे है।

(177) मद्यपान के सीग पर मढी चांदी पर उभरे अलकरण का मुख्य अभिप्राय सांप है—दो सांप आपस में गुथे है या एक सांप विलक्षण कुंडली मारे बैठा है।

(178) पांच इच से अधिक लम्बा और लगभग एक पौण्ड वज़न का यह पेटी का बकमुआ ठोस सोने का बना है। डिजायन में पशु-पक्षी शामिल है, जो अत्यधिक रीतीयित लेकिन ऊपर के गुम्फित पैटर्न की कुडलियों में उन्हे पहचान पाना बडा मुश्किल है। मध्य भाग में, खाली जगहों में भरे काले मसाले के कारण उच्चित्र पट्टिया और उभरी हुई दीखती हैं, लेकिन इसमें लेपसज्जित बेलबूटे का काम, जो पूर्वी ऐंग्लिया के स्वर्णकारों के काम की विशिष्टता थी, बिल्कुल नहीं है। यह किसी हद तक स्वीडेन के काम की तरह है, लेकिन बना यह शायद इंगलैण्ड में ही था।

(179) दो काटों में से एक। यह हिस्सो में बनाया जाता था जिन्हे वस्त्र के दोनों ओर टांक दिया जाता था। बीच में परस्पर गथ जाने वाले फन्दे थे जो जोड दिये जाते थे और पिन (काटे के एक अर्धांश पर एक सोने की जजीर से जुडी) को फन्दों से गुजार दिया जाता था ताकि वे आपस में मजबूती से बध जाए। काटे सोने के है और उनमें तराशे हुए याकूत तथा बहुरगे कांच के टुकडे जडे है। सिरों को डिजाइन में चार परस्पर-गुम्फित सुअर है जो याकूत की सतह पर लगे हैं—यह अभिप्राय सैक्सन नहीं वरन् केल्टिन है।
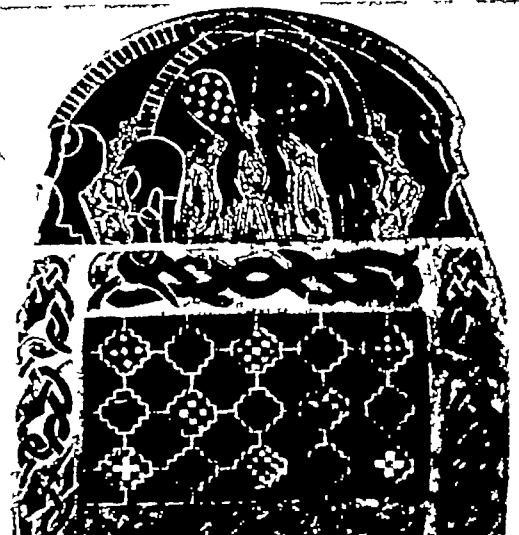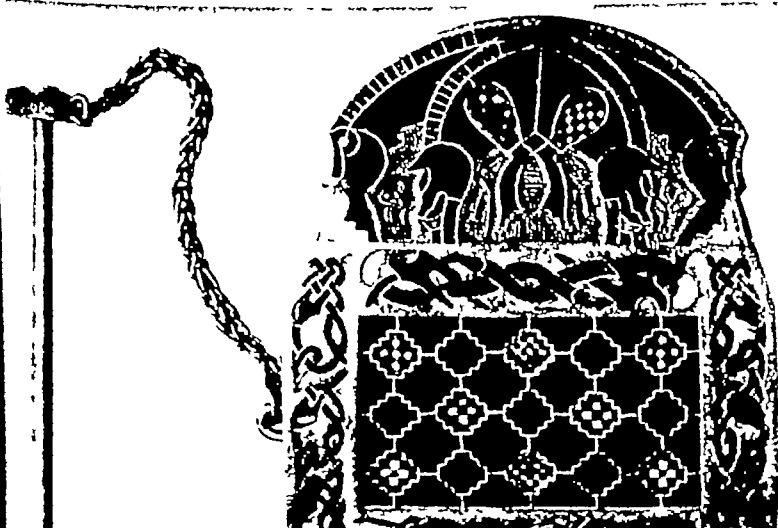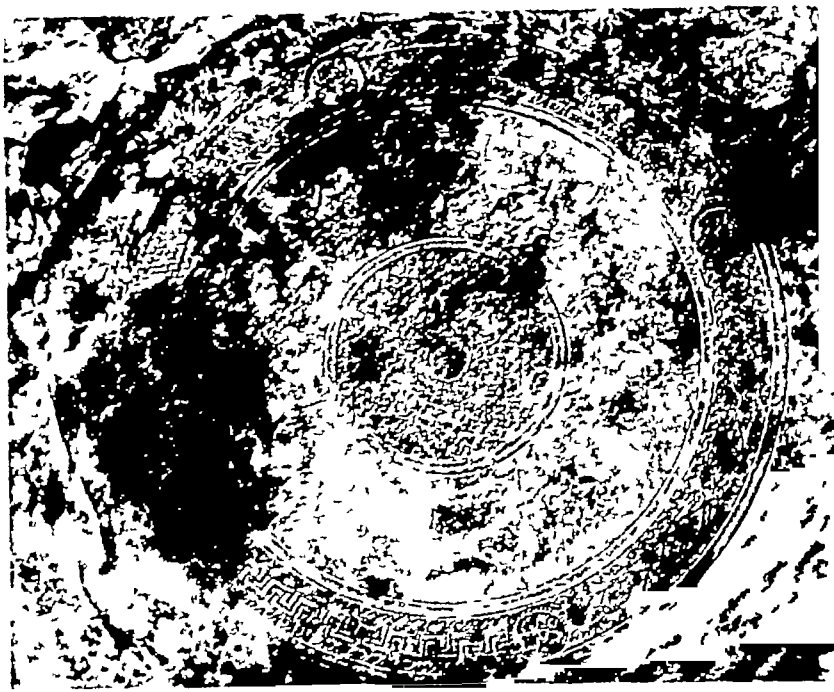
(174) अनस्तासियस तश्तरी। चांदी की इस बडी थाली या तश्तरी का व्यास 27 इंच है। यह कुस्तुन-तुनिया की है। 491 और 518 ईस्वी के बीच इसका निर्माण ऐसी शैली में हुआ था, जो सौ साल पहले ही अप्रचलित हो चुकी थी। विशेषज्ञों का मत है कि 'इतनी बडी थाली पर इतना सूक्ष्म और क्षीण अलंकरण' इतना अधिक बेडौल है कि इसे 'पुराने फार्मूले से चिपटे रहने वाले किसी मामूली कारीगर' की कृति समझना चाहिए, लेकिन शायद इस मत से हर आदमी सहमत न होगा। सम्भव है कि निर्माता ने लघु पेटर्न, जो स्वयं अधिक ध्यान आकर्षित नहीं करता, इसलिए चुना था कि वह सादी चमकीली धातु की सकेन्द्रिक पट्टियों और उत्खचित सतह का अन्तर स्पष्ट करना चाहता था। इसमें निश्चय ही वह सफल हुआ है।

(175) पश्चिमी एशिया मे बने चांदी के दस प्यालों में से दो इस चित्र में प्रदर्शित है। कीलाकार डिजायन शायद ईसाई है, और चूंकि सातवीं शताब्दी की किस्म के हे इसलिए उन्हें कुछ समय पहले ही प्राप्त किया गया होगा और शायद राजा अन्ना उन्हें अपने लिए लाया होगा। उनका व्यास 9 इंच है, अत वे रखने के काम में बखूबी आ सकते हैं।

(176) आरोक (एक पशु जो अब विलुप्त है) के सींग से बना एक मद्यपान का सींग, जिस पर चांदी मढी है। सींग क्षत था, इसलिए अब उसकी जगह पर प्लास्टिक लगा दिया गया है। इसमें डेढ गैलन से अधिक पेय आता था, अत, सामूहिक मदिरा-पार्टियों में इसका उपयोग होता होगा, जब एक ही सींग से सभी पीते थे। विवरण के लिए चित्र 177 देखिए।
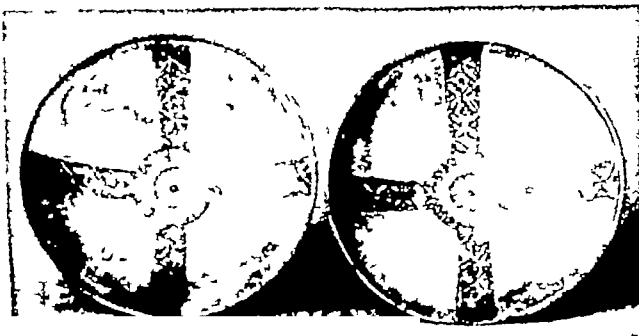
Bibliography

NIMRUD

LAYARD, AUSTEN HENRY
Nineveh and Its Remains London, 1850

MALLOWAN, M E. L
Twenty-five Years of Mesopotamian Discovery London British School of Archaeology in Iraq, 1957

BARNETT, R D
The Nimrud Ivories in the British Museum London, 1957

WISEMAN, D J
"A New Stela of Assur-nasir-pal II," *Iraq*, vol XIV, p 24

TROY AND MYCENAE

SCHLIEMANN, HEINRICH *Mycenae A Narrative of Researches and Discoveries at Mycenae and Tiryns* London· John Murray, 1878

MAIDEN CASTLE

WHEELER, SIR MORTIMER
Maiden Castle, Dorset (Reports of the Research Committee of the Society of Antiquaries of London, No XII) Oxford, 1943.

FAYUM AND OXYRHYNCHUS

No proper account of the excavations has been published The first volume of the series *Oxyrhynchus Papyri*, which as a whole deals with the texts discovered, contains in its preface a summary description of the sites, etc The *Sayings of Jesus* were published separately by the Egypt Exploration Society and Oxford University Press.

ANYANG

Very little has yet been published on the subject The best account (although it is not up to date) is CREEL, H G *The Birth of China* New York Frederick Ungar Publishing Co

KNOSSOS

EVANS, A J
The Palace of Minos London Macmillan & Co , 1921–1936

PENDLEBURY, J D S
The Archaeology of Crete London Methuen & Co , 1939
For the decipherment of the script, see VENTRIS, MICHAEL, and CHADWICK, JOHN, in the *Journal of Hellenic Studies*, LXIII (1953), 84–103

UR

WOOLLEY, SIR LEONARD
Excavations at Ur. London. Ernest Benn, 1954.

MOHENJO-DARO

MARSHALL, SIR JOHN
Mohenjo-daro and the Indus Civilisation London, 1931

MACKAY, E J H
Further Excavations at Mohenjo-daro Delhi, 1938
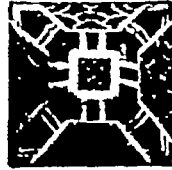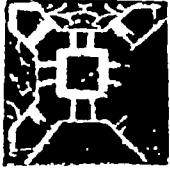
(180-181) तकनीक की दृष्टि से, योद्धा के तेग-बन्द से प्राप्त ये छोटे-छोटे पिरामिडाकार आभूषण समस्त ट्यूटन संसार में अपूर्व हैं। वे सोने और तराशे हुए याक़ूत के बने हैं और उन पर कांच की पच्चीकारी है। सबसे विशेष बात यह है कि पिरामिडों के कोण और सिरे सोने में बनाकर उन पर पत्थर नहीं जड़े गये हैं, बल्कि याक़ूतों को ही तराश कर वांछित आकार दिया गया है। इन सूक्ष्म खंडों को जोड़ना एक महान कलाकार द्वारा ही संभव था।

(182) सटन हू में प्राप्त अमूल्य वस्तुओं में सर्वाधिक सुन्दर वस्तु थी राजा के पर्स का ढक्कन। पर्स स्वयं, जिसमें सैंतीस सोने के सिक्के और पांच स्वर्ण-खंड थे, शायद चमड़े का बना था। ढक्कन पीछे के किनारे पर जुड़ा था और पर्स के सामने वाले भाग पर टंकी हुई एक खिसकनी वाली अड़ानी में फंसा दिया जाता था। हड्डी या हाथी दांत का बना हुआ ढक्कन 7½ इंच लम्बा था और उसके किनारों पर सोने की ज़रदोज़ी का काम था। हड्डी में याक़ूत के दंड और पट्टियों तथा सोने के बार्डर-युक्त पच्चीकारी के कांच को धंसा दिया गया था, और सारी सतह पर भी सोने, याक़ूत और मोजेक के अलंकरण पैनेल और दायरे थे। ऊपर सोने की तीन पट्टियां हैं जो पेटी या कंधे की पट्टी में कीलों से ठोंक दी जाती थीं। दो जानवरों के बीच में एक आदमी तथा बत्तख पकड़ते हुए गिद्ध का कोई विशिष्ट अर्थ था जिसे हम समझ नहीं पाते, लेकिन अलंकरण की दृष्टि से उनका मूल्य बेहिसाब और सम्पूर्ण कृति का शिल्प भव्य है। पृथ्वी के गर्भ से प्राप्त और कौशलपूर्वक पुनर्निर्मित, केवल इसी विलक्षण वस्तु के लिये अन्ना और ईथेलहियर के नाम हमारी श्रद्धा के पात्र हैं।
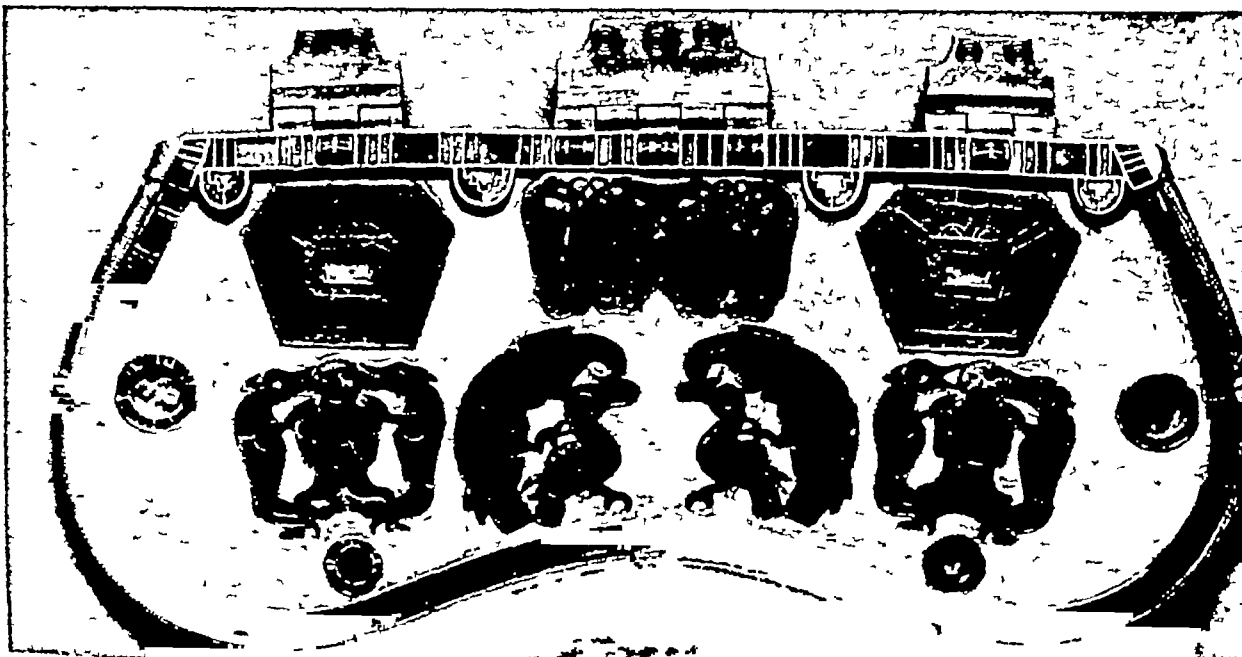
able of Illustrations

NIMRUD

ROY AND MYCENAE

MAIDEN CASTLE

THE FAYUM AND OXYRHYNCHUS

ANYANG

BIBLIOGRAPHY

WHEELER, SIR MORTIMER
has written on Mohenjo-daro in *Ancient India* (Delhi), No 3 (1947)
These are all official reports, there is no popular book on the subject, but see PIGGOTT, STUART *Prehistoric India* London Penguin Books, 1950, and WHEELER, SIR MORTIMER *5,000 Years of Pakistan* London Johnson Publishers, 1950

TUTANKHAMUN'S TOMB

CARTER, HOWARD, and MACE, A C
The Tomb of Tut-Ankh-Amun London Cassell & Co., 1933

FOX, PENELOPE
Tutankhamun's Treasure London and New York Oxford University Press, 1951

JERICHO

KENYON, KATHLEEN
Digging Up Jericho London: Ernest Benn, 1957

ARCHAEOLOGY IN THE HOLY LAND London Ernest Benn, 1960

WHEELER, MARGARET
Walls of Jericho London Chatto & Windus, 1956

ARIKAMEDU AND BRAHMAGIRI

WHEELER, SIR MORTIMER
"Arikamedu," *Ancient India*, No 2 (1946), "Brahmagiri and Chandravalli," *Ancient India*, No 4 (1948)

UGARIT

There is no English account of the excavations, which are still in progress Dr Claude Schaeffer has published very full annual reports in *Syria* from 1929 onward and has dealt with special points of interest in the three volumes of *Ugaritica* that have appeared to date The political tablets are described in *Ugaritica III*

SERINDIA I AND II

STEIN, M AUREL
Sand-buried Ruins of Khotan London, 1904, *Ruins of Desert Cathay* London Macmillan & Co, 1912

KARATEPE

Field reports have been published in the Turkish journal *Belleten*, a good general account is given in CERAM, C W *Narrow Pass, Black Mountain* London Sidgwick & Jackson and Victor Gollancz, 1956

PIEDRAS NEGRAS

There is no proper publication as yet Short reports have appeared in the *Museum Bulletin* of the University of Pennsylvania

PAZYRYK

BELL, MAURICE
Druides, Heros, Centaures Paris Librairie Plon, 1955, gives a good popular resume in French

The Illustrated London News,
July 11, 1953, and February 12, 1955, carried excellent illustrated accounts

TALBOT RICE, TAMARA
The Scythians London Thames and Hudson, 1957

SUTTON HOO

BRUCE-MITFORD, R L S
The Sutton Hoo Ship Burial London British Museum, 1957 This guide to the British Museum collection contains references to other reports and articles as well

RAS SHAMRA-UGARIT

SERINDIA I

SERINDIA II

KARATEPE

PIEDRAS NEGRAS

TABLE OF ILLUSTRATIONS

KNOSSOS

UR OF THE CHALDEES

MOHENJO-DARO

THE TOMB OF TUTANKHAMUN

JERICHO

ARIKAMEDU AND BRAHMAGIRI

THE FROZEN TOMBS OF PAZYRYK

SUTTON HOO

Acknowledgements

Ashmolean Museum, Oxford 46–54
Barnett, R D 158–167
Britain-China Friendship Association 34, 35, 37–42
British Museum 1–5, 11, 36, 134–137, 168–182
British Museum, and University Museum, University of Pennsylvania 55–62
British School of Archaeology in Iraq 6–10
British School of Archaeology in Jerusalem 82, 84–90
Centre National de la Recherche Scientifique, Paris 100–112
Department of Archaeology, Government of India 63–75, 91–99, 113–122, 123–130
Egypt Exploration Society, and Oxford University Press 32, 33
Griffith Institute, Ashmolean Museum, Oxford 76–81
Institute of Archaeology, University of London 138–141
Palestine Exploration Society 131, 133
Popper, Paul 83
Sidgwick and Jackson, Ltd 145
Society of Antiquaries of London, and Institute of Archaeology, University of London 12–21, 22–31
Turk Tarih Kurumu 142–144
University Museum, University of Pennsylvania 146–157
Warner, Ph L 43